https://ataunnabi.blogspot.com/

# اُلجھا ہے پاؤں یار کا
# زُلفِ دراز میں

علامہ محمد ارشد القادری
شارح ترمذی، اولڈ راوین رول آف آنر

مکتبہ تعلیم و تربیت اسلامی لاہور

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari
Scanned by CamScanner

https://ataunnabi.blogspot.com/

# "زلفِ دراز میں"

○

ازرشحاتِ فکر

## "علامہ محمد ارشد القادری"

اولڈ راوین، شارحِ ترمذی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/

جملہ حقوق بحق مصنف محفوظ ہیں


نام کتاب : ''الجھا ہے پاؤں یار کا زلفِ دراز میں''

مصنف : حضرت علامہ مولانا محمد ارشد القادری رضوی

پروف ریڈنگ : مولانا محمد عثمان قادری، صاحبزادہ محمد عاکف قادری
مولانا محمد مظہر اقبال قادری

فائنل پروف ریڈنگ : مولانا محمد صدیق خان قادری، سید راشد علی گیلانی

کمپوزنگ : محمد مبین قادری

پرنٹرز : احمد طاہر اسلامک پبلی کیشنز

سن اشاعت : اپریل 2009

تعداد : 1100 گیارہ سو

ملنے کا پتہ : جامعہ اسلامیہ رضویہ مرکز تعلیم وتربیت اسلامی رچنا ٹاؤن شاہدرہ لاہور

رابطہ نمبر : 042-7962152




# فہرست مضامین


| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -1 | انتساب | 20 |
| -2 | کوہ ہمالہ شخصیت | 21 |
| -3 | توجہ فرمایئے | 23 |
| -4 | مزار فیض الانوار | 25 |
| -5 | حد اعتدال | 27 |
| -6 | انا ولا غیری | 28 |
| -7 | تکلم قرآن | 28 |
| -8 | کلمہ پڑھایا | 30 |
| -9 | کچھ مخزن احمدی کے حوالے سے | 31 |
| -10 | آپ کے ہیرو (Hero) | 32 |
| -11 | سرچشمہ سرمدی | 32 |
| -12 | قلم کی آواز | 33 |
| -13 | انداز تکلم | 35 |
| -14 | غور فرمائیں | 35 |
| -15 | بدعت کا بازار سرگرم | 36 |
| -16 | پہچان لیا | 37 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/




| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
| --- | --- | --- |
| 17- | نقد و جرح | 38 |
| 18- | اللہ تعالیٰ کی جلالت کی قسم | 38 |
| 19- | کیوں جناب والا | 39 |
| 20- | دائمی سکون | 41 |
| 21- | مرد میداں | 42 |
| 22- | ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے مزار پر حاضری | 42 |
| 23- | صداقت کا جنازہ | 42 |
| 24- | سیّد احمد شہید صاحب فرماتے ہیں | 43 |
| 25- | مزارات اولیاء | 44 |
| 26- | غبارے کی ہوا نکل گئی | 44 |
| 27- | شور و ہنگامہ | 47 |
| 28- | سیّد احمد شہید صاحب فرماتے ہیں | 47 |
| 29- | کھانے کی تلاش میں سرگرداں | 48 |
| 30- | اے جدو امجدہ | 50 |
| 31- | قبر پر مانگتے نظر آتے ہیں | 51 |
| 32- | توجہ طلب چیز | 52 |
| 33- | پوچھ سکتا ہوں | 53 |
| 34- | سوچنے سمجھنے کی صلاحیت | 54 |





| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
| --- | --- | --- |
| 35- | اندھیرے میں نظر آئے | 54 |
| 36- | تازہ دم ہو جائیے | 55 |
| 37- | اس وقت امت کا مرض | 56 |
| 38- | فیصلہ قارئین پر چھوڑتا ہوں | 57 |
| 39- | لو آپ اپنے دام میں صیاد آ گیا | 57 |
| 40- | نقطۂ نظر | 58 |
| 41- | کور بینی | 59 |
| 42- | ایصال ثواب | 59 |
| 43- | شرک کا تانا بانا | 60 |
| 44- | کوہ گراں گرنے والا ہے | 61 |
| 45- | تحریری قلابازیاں | 62 |
| 46- | انگور مزیدار تھے | 63 |
| 47- | تبرک تقسیم | 63 |
| 48- | جیت کس کی ہوگی | 64 |
| 49- | حکم شرک لگائیے | 65 |
| 50- | دم خم نہیں رہا | 66 |
| 51- | حق و صداقت کا علم بلند فرمائیے | 66 |
| 52- | آپ کو یاد ہوگا | 67 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/




| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -53 | زبان کو تالا لگ جائے گا | 68 |
| -54 | شرک پارٹس (Shirk Parts) | 68 |
| -55 | اس گھر کو آگ لگ گئی گھر کے چراغ سے | 69 |
| -56 | بیک جنبشِ قلم | 70 |
| -57 | عزت و وقار | 70 |
| -58 | امیر حمزہ صاحب رقمطراز ہیں | 71 |
| -59 | مولوی سید محمد علی شاہ صاحب لکھتے ہیں | 72 |
| -60 | مہر تصدیق | 73 |
| -61 | مدعا ثابت نہ کر سکا | 73 |
| -62 | مجمع لوٹ لیا | 75 |
| -63 | صاحب صدر گرامی قدر | 75 |
| -64 | زہر آلود تیر | 76 |
| -65 | شور تو آپ نے بھی خوب مچایا ہے | 76 |
| -66 | جو مزاج یار میں آئے | 77 |
| -67 | کرامات اہلحدیث | 78 |
| -68 | اس کتاب کے صفحہ نمبر ۲ پر لکھا ہے | 78 |
| -69 | مجدد الف ثانی رحمتہ اللہ علیہ | 79 |





| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -70 | حضرت مجدد الف ثانی رحمتہ اللہ علیہ نے قاضی جی کا ہاتھ پکڑ لیا | 80 |
| -71 | دورنگی کیوں | 80 |
| -72 | مزارات والے آنے والوں کو پہچانتے ہیں | 81 |
| -73 | فوراً چٹھی حاضر | 83 |
| -74 | کیا نظر پائی ہے | 83 |
| -75 | انوکھا طریق کار | 84 |
| -76 | صبح کی نماز میں لمبی قرأت | 85 |
| -77 | عین نماز میں اعانت | 86 |
| -78 | آپ کی بارگاہ میں استدعا | 87 |
| -79 | ہم تنگ نظر نہیں ہیں | 87 |
| -80 | سوا اس کے کیا کہوں | 88 |
| -81 | میں اس عارفانہ تجاہل کے صدقے | 89 |
| -82 | لگاؤ فتویٰ شرک | 89 |
| -83 | آپ کو سیر کراؤں | 90 |
| -84 | کپڑے لاؤ | 91 |
| -85 | ننگ دھڑ نگ | 91 |
| -86 | قاضی صاحب اور مجذوب | 92 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/




| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -87 | یدطولیٰ رکھتے ہیں | 92 |
| -88 | دل فرحاں وشاداں | 93 |
| -89 | تلاش کمالات | 94 |
| -90 | انداز دلبرانہ | 95 |
| -91 | لڑکا ہوگا | 95 |
| -92 | علم مافی الارحام | 96 |
| -93 | امام مسجد نبوی ﷺ | 97 |
| -94 | حافظ دروغ گورا حافظہ باشد | 97 |
| -95 | سچ بتاؤں | 98 |
| -96 | جلال دین عرف جلو | 98 |
| -97 | فرزند ہوا | 99 |
| -98 | نالائق! اپنا لینا ہے تو لکھوی کی جا | 100 |
| -99 | لائق نفرت | 100 |
| -100 | منازل سلوک | 101 |
| -101 | مولانا عبدالرحمٰن لکھوی صاحب کا تعارف | 102 |
| -102 | پیر طریقت کی تلاش | 102 |
| -103 | آپ ہی کو زیب ہے | 103 |





| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -104 | اکثر الہام ہوا کرتے تھے | 104 |
| -105 | اس کی نظر سے نظر ملی | 105 |
| -106 | ایک نظر دیکھا | 105 |
| -107 | اولیاء اللہ | 106 |
| -108 | نظر ڈال کر بے ہوش کر دیا | 107 |
| -109 | وسعت نظری | 107 |
| -110 | میاں پشو | 108 |
| -111 | کشمیر تنگ نظر گئی | 108 |
| -112 | میاں پشو پر عنایت | 110 |
| -113 | ان شاء اللہ کامل شفاء ہوگی | 110 |
| -114 | مطالعہ فرمایئے دل روشن ہوگا | 111 |
| -115 | گھوڑوں کی خرید وفروخت | 112 |
| -116 | القا کا ایک جملہ برداشت نہیں | 113 |
| -117 | سراسر باطل | 113 |
| -118 | ایک بار پھر مطالعہ فرمایئے | 114 |
| -119 | پرزور اعلان | 114 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/




| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -120 | دعائیں التجائیں | 115 |
| -121 | فکر و نظر کا علاج | 116 |
| -122 | تمام گناہوں سے توبہ | 117 |
| -123 | اس پر توجہ کی تو بے ہوش ہو گیا | 117 |
| -124 | توجہ کی! | 118 |
| -124A | ذرا اس توجہ کی برکات ملاحظہ فرمائیں | 118 |
| -125 | توجہ تھی یا بے ہوشی کا ٹیکہ (Injection) | 118 |
| -126 | لوز ٹاکنگ (Loose Talking) | 119 |
| -127 | مدت کا بگڑا پل میں ٹھیک | 120 |
| -128 | خواجہ نظام الدین اولیاء رحمۃ اللہ علیہ | 120 |
| -129 | سعد وجت | 121 |
| -130 | گہرا تعلق | 122 |
| -131 | بوڑھی بھینس | 123 |
| -132 | کیفیات قلبی | 123 |
| -133 | بھینس گابھن | 124 |
| -134 | زبان و ادب کے تقاضے فراموش | 125 |
| -135 | زمین و آسمان کے قلابے ملا دیتا | 125 |





| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -136 | لوڈ شیڈنگ | 126 |
| -137 | مصائب میں کدھر کا رخ کرنا چاہیے | 127 |
| -138 | ڈر لاحق ہوا | 127 |
| -139 | بہی کھاتہ ہی تبدیل | 128 |
| -140 | گندم کی کپاس آئی | 129 |
| -141 | جو منہ سے نکل گیا سو ہو گیا | 129 |
| -142 | دیکھئے ہوتا ہے کیا | 130 |
| -143 | بائیس روپے سے ایک دمڑی بھی اوپر نہ ہوئی | 131 |
| -144 | یہ امت وحدت کی لڑی میں پروئی جائے | 131 |
| -145 | خدا حافظ ہم تو جا رہے ہیں | 132 |
| -146 | "الجھا ہے پاؤں یار کا زلف دراز میں" | 133 |
| -147 | تفرقہ زہر قاتل ہے | 134 |
| -148 | یہ علم کی کونسی قسم ہے | 135 |
| -149 | آپ کے بزرگوں کا کہنا ہی کیا ہے | 135 |
| -150 | آج کل دکانداریاں زیادہ ہیں | 136 |
| -151 | نوٹ | 136 |
| -152 | سارا معاملہ اندرون خانہ | 137 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/




| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| 153- | بیراز تھا راز | 137 |
| 154- | نوائے وقت بن کر پوچھنا چاہتا ہوں | 138 |
| 155- | آپ جو فرمائیں | 138 |
| 156- | بزرگ رات کو ملے | 139 |
| 157- | مال روڈ لاہور | 140 |
| 158- | قاضی سلیمان منصور پوری کی خانقاہ کی طرف التفات | 141 |
| 159- | خانقاہ میں کسی قبر کے بارے استفسار | 142 |
| 160- | صاحب قبر سے جناب قاضی سلیمان منصور پوری کی ملاقات | 142 |
| 161- | دو ہی صورتیں | 143 |
| 162- | قاضی سلیمان صاحب کو صاحب قبر کی طرف سے دعوت | 143 |
| 163- | پوری پوری سی۔آئی۔ڈی | 144 |
| 164- | ایک بار بھی نہ ملے | 145 |
| 165- | صاحب قبر نیک وصالح آدمی ہیں | 145 |
| 166- | مضبوط تعلقات | 146 |
| 167- | صاحب قبر کی ہسٹری (History) بتادی | 147 |
| 168- | حواس معطل | 147 |
| 169- | ستم ظریفی | 148 |





| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| 170- | قبر وحشر | 149 |
| 171- | حق وصداقت | 149 |
| 172- | راز ونیاز کی باتیں | 150 |
| 173- | فیصلہ قارئین پر موقوف | 151 |
| 174- | جرم کی پاداش | 151 |
| 175- | مالی فوائد | 152 |
| 176- | کتاب رحمۃ اللعالمین کی عظمت | 154 |
| 177- | مجھ سے محبت چاہتے ہو | 154 |
| 178- | تحریر کا رعب | 155 |
| 179- | کمال نظر رسول اللہ ﷺ | 155 |
| 180- | اقبال کہتے ہیں | 156 |
| 181- | دنیا بھر کے ممالک پر نظر مبارک ہے | 156 |
| 182- | داغ صاف | 156 |
| 183- | منجھا موتی | 157 |
| 184- | حدیث قدسی | 158 |
| 185- | لکھو کی چلے جاؤ | 159 |
| 186- | دن کی روشنی میں ستاروں کا حساب | 160 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/




| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -187 | نادری تیار مولانا لکھوی کا پھر جانے سے انکار | 161 |
| -188 | منظرِ عام پر | 162 |
| -189 | تیسرا جہاز | 162 |
| -190 | نظرِ دور بین | 163 |
| -191 | آئندہ ہونیوالے واقعات | 164 |
| -192 | اس پر تاسف ہے | 164 |
| -193 | دو جہازوں کو پیش آنے والے حادثہ کی خبر | 165 |
| -194 | موازنہ میں کیا کروں | 166 |
| -195 | کسی کو کانوں کان خبر نہ ہو | 166 |
| -196 | مولانا شاہ احمد نورانی رحمۃ اللہ علیہ کی شفقت | 167 |
| -197 | مولانا عبد الرشید قادری رحمۃ اللہ علیہ کی تربیت | 167 |
| -198 | لیجئے زیرِ نظر لایئے یا کسی سے سن لیجئے | 168 |
| -199 | مائل الی الحق | 168 |
| -200 | نواب صدیق حسن خان بھوپالی کی التجاء | 169 |
| -201 | یہی ہمارا مقصود تھا | 170 |
| -202 | میرے دل کی صدا | 171 |
| -203 | ہمیں انتظار رہے گا | 171 |





| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -204 | بدعت کا بھوت | 172 |
| -205 | مصدقہ اطلاع | 173 |
| -206 | اظہار مافی الضمیر | 174 |
| -207 | مظلوم کی آہ | 174 |
| -208 | ترازو کا بٹہ | 175 |
| -209 | شرک پروف (Shirk Proof) | 176 |
| -210 | زبردست قانون | 177 |
| -211 | نعرۂ رسالت | 177 |
| -212 | زمرۂ مشرکین اور بھوپالی | 178 |
| -213 | کھلے لفظوں میں اعلان | 178 |
| -214 | بے لگام گھوڑا | 179 |
| -215 | تمہاری توحید اور ہمارا شرک | 180 |
| -216 | کتمانِ حق | 181 |
| -217 | راہِ اعتدال | 182 |
| -218 | عام الزام بندی | 183 |
| -219 | آپ کو مجاہد مان لیں | 183 |
| -220 | احساسِ ذمہ داری سے سبکدوش کیوں | 184 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/




| نمبرشمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -221 | سیلاب کا راستہ روک دیا | 185 |
| -222 | حملہ پسپا | 186 |
| -223 | غیر مقلدین کا ناطقہ بند | 187 |
| -224 | قاضی شوکاں مدد پر قادر ہیں | 188 |
| -225 | نواب بھوپالی بڑا تلملائے | 188 |
| -226 | امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ | 190 |
| -227 | ظاہر کچھ اور باطن کچھ | 191 |
| -228 | لب کشائی فرمایئے | 191 |
| -229 | خجالت اٹھانا پڑی | 192 |
| -230 | شیخ سنت مدد قاضی شوکاں مدد | 193 |
| -231 | راحت جاں | 193 |
| -232 | کھلے لفظوں میں طعن | 194 |
| -233 | در رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا منگتا | 195 |
| -234 | رحم کی بھیک | 196 |
| -235 | لغات عرب | 197 |





| نمبرشمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -236 | شہ داویلا نہ دہائی | 197 |
| -237 | آخر یہ راز کیا ہے | 198 |
| -238 | معاملہ طشت از بام | 198 |
| -239 | دولت لازوال | 199 |
| -240 | اظہار عقیدت | 200 |
| -241 | زبان وادب کے ضابطے معطل | 200 |
| -242 | حال دل سنایئے | 201 |
| -243 | مصائب وآلام کا علاج | 202 |
| -244 | مصیبت کسی پر بھی آسکتی ہے | 203 |
| -245 | یارسول اللہ ﷺ کہنا تقاضاء ایمان ہے | 204 |
| -246 | بناوٹی گرج | 205 |
| -247 | شکست فاش | 205 |
| -248 | ندا یارسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم | 206 |
| -249 | دلائل کی قوت | 207 |
| -250 | انداز محبت | 207 |
| -251 | دلائل کا راکٹ (Rocket of Arguments) | 208 |
| -252 | ترکش ٹوٹ گئی | 208 |
| [illegible] | [illegible] | 209 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/




| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -254 | عبد مصطفےٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم | 210 |
| -255 | شرک کی وادی | 211 |
| -256 | قطعاً زیب نہیں دیتا | 212 |
| -257 | وسیلہ | 212 |
| -258 | بانسری ٹوٹ گئی | 213 |
| -259 | آپ کی خواہش کے برعکس ہوا | 214 |
| -260 | زبان ہے یا کرائے کی موٹر سائیکل (Rent A Bike) | 214 |
| -261 | درگزر | 215 |
| -262 | آج لے اُن کی پناہ | 216 |
| -263 | نفرت کی ماں | 217 |
| -264 | تشفی قلب نصیب ہو | 217 |
| -265 | صحافت کی ڈگری | 218 |
| -266 | پھولوں کے تختے | 218 |
| -267 | صاف صاف انکار | 220 |
| -268 | موحد کہیں یا شرک نواز | 221 |
| -269 | عقل ماؤف | 221 |
| -270 | گاندھی یا مہدی منتظر | 222 |





| نمبر شمار | عنوان | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| -271 | کاش مٹ جائے یہ طرز فکر | 223 |
| -272 | مشرکوں کی تعریف وتوصیف | 224 |
| -273 | عالم ماکان وما یکون | 225 |
| -274 | امیر حمزہ صاحب کے گھر سے گواہی | 225 |
| -275 | اندرون خانہ کیا حال ہے | 230 |
| -276 | ایک اللہ کی بارگاہ میں سجدہ ریز | 231 |
| -277 | معیار حق | 231 |
| -278 | انوکھا انداز تبلیغ | 232 |
| -279 | فیصلہ کی گھڑی | 233 |
| -280 | مرکز ''الدعوۃ'' دہشت گردی کی علامت بن کر ابھر رہا ہے | 234 |
| -280A | کارواں | 234 |
| -281 | دست | 236 |
| -282 | رسالہ اہلحدیث بنام دعوت وارشاد مرید کے | 237 |


Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



# انتساب!

میں ان اوراق کو پیرِ طریقت، رہبرِ شریعت، واقفِ رموزِ حقیقت، قطبُ العالم، شیخِ کامل، محققِ اعظم، مدرسِ بے مثال، مفسرِ قرآن، محدثِ ذی شان، امام المتکلمین، جامع المعقول والمنقول، مرشدی، مولائی حضرت علامہ مولانا ابو محمد، محمد عبدالرشید قادری رضوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ بانی جامعہ غوثیہ مظہر الاسلام سمندری شریف کے نام کرنے کی سعادت حاصل کرتا ہوں جن کی نظرِ کیمیا گر نے مجھ جیسے ذرۂ بے نام کو مقام بخشا کہ میں احقاقِ حق اور ابطالِ باطل کی صلاحیت سے نوازا گیا۔

گر قبول افتد زہے عز و شرف۔

خادم العلماء

دانا محمد ارشد القادری رضوی

18 صفر المظفر ۱۴۳۰ھ

14 فروری 2009ء بروز ہفتہ

بعد ظہر



انتخاب : مولانا محمد مظہر اقبال قادری رضوی

عنوان : کوہِ ہمالہ شخصیت

حضرت علامہ محمد ارشد القادری رضوی شارح ترمذی مدظلہ العالی اہل سنت و جماعت کی وہ عظیم المرتبت شخصیت ہیں۔ جو ہر میدان میں استقامت کے پہاڑ ہیں۔ آپ سچے عاشقِ رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہیں۔ مسلکِ حق اہل سنت و جماعت کے عقائد و نظریات پر مقابلِ نظر سے مخالفین کا تعاقب فرماتے ہیں۔ گوناگوں مصروفیات کے باوجود بھی کسی سائل کو اس کی علمی پیاس بجھائے بغیر رخصت نہیں فرماتے۔ آپ کی زندگی جہدِ مسلسل سے لبریز ہے۔ کبھی آپ جامعہ اسلامیہ رضویہ مرکزِ تعلیم و تربیت اسلامی کی تعمیرات کروا رہے ہیں۔ کبھی مخالفین کے اعتراضات کے جوابات میں مصروف ہیں۔ کبھی شمعِ رسالت صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پروانوں میں عقائد کی پختگی کیلئے مجالس میں سوال و جواب کر رہے ہیں۔ کبھی درسِ قرآن و حدیث سے ایمان کو جلا بخش رہے ہیں۔ کبھی محافل میں [illegible] نوجوانوں میں انقلاب برپا فرما رہے ہیں۔ کبھی [illegible] سلوک کی منازل طے کروا رہے ہیں۔ الغرض کوئی میدان ایسا نہیں جہاں آپ کی خدمات [illegible] نہیں۔ آپ کی نظر میں وہ عظیم کمال ہے جو حالات پہ گہری نظر رکھنے کے ساتھ ساتھ درپیش چیلنجوں کا حل بھی پیش کرتی ہے۔ آپ ہر اس کام کو اولیت دیتے ہیں جس سے مسلک کو تقویت حاصل ہو۔ یہی وہ درد تھا جس نے آپ کو شرح

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



ترمذی جیسی عظیم نعت عظمیٰ پر قلم کو حرکت دینے پر آمادہ کیا۔ پہلی جلد عنقریب زیورِ طبع سے آراستہ ہو کر احباب کے ہاتھوں میں ہوگی جسے پڑھ کر ایک عظیم محقق کا احساس اجاگر ہوتا ہے۔ اہلِ درد حضرات سے اپیل ہے کہ وہ شرح ترمذی کے دوران لکھی جانے والی کتاب "الجھا ہے پاؤں یار کا زلفِ دراز میں" لیکر مطالعہ فرمائیں۔ اور عقائدِ حق پر اعتراضات کرنے والوں کا انجام بھی ملاحظہ فرمائیں۔ تعلیم و تربیت اسلامی اپنے عظیم قائد کی قیادت میں ترقی کی منازل برق رفتاری سے طے کر رہی ہے۔ اسی پلیٹ فارم سے تفسیر سورۂ یوسف کا آغاز مرکز تعلیم و تربیت اسلامی جامعہ اسلامیہ رضویہ عزیز ٹاؤن نزد گورنمنٹ ڈگری کالج برائے خواتین فیروز والہ رچنا ٹاؤن شاہدرہ لاہور میں مورخہ 16 مئی 2009ء بروز ہفتہ بعد از نمازِ عشاء ہوگا۔ انہی اوصافِ حمیدہ کیوجہ سے مرکز تعلیم و تربیت اسلامی کو شاہدرہ میں مرکز اہلِ سنت کی حیثیت حاصل ہے۔ تعلیم و تربیت اسلامی نے عوام اہلِ سنت کو حق و باطل نظریات میں فرق کرنے کا شعور دیا یہی خاصیت جامعہ اسلامیہ رضویہ کی مقبولیت کا سبب ہے۔ عظیم محقق کے عظیم مشن میں تعاون جہاں آخرت میں نفع بخش عمل ہے۔ وہاں دنیا میں بھی سر بلندی اور سرفرازی کا سبب ہے۔ اللہ تعالیٰ ہمیں اپنے عظیم رہبر کے سایہ عاطفت سے مستفیض ہونے اور آپ کی تحریر کردہ کتابوں، سی ڈیز، ڈی وی ڈیز، آڈیو، ویڈیو کیسٹیں بطورِ لنگر لیکر اپنے دوستوں، عزیزوں، رشتہ داروں کو تحفے میں دینے نیز جامعہ اسلامیہ رضویہ کی تعمیر و ترقی کو سعادتِ عظیم سمجھتے ہوئے تن، من، دھن سے خدمات سرانجام دینے کی توفیق عطا فرمائے۔ اور ہمیں اپنے قائد کے افکار پر عمل پیرا رہتے ہوئے زندگی بسر کرنے کی سعادت عطا فرمائے۔ آمین

منجانب: اراکینِ مجلسِ شوریٰ تعلیم و تربیت اسلامی پاکستان



# توجہ فرمایئے!

ایک عرصہ سے احباب مطالبہ کر رہے تھے کہ امیر حمزہ نے جو کتابیں اولیاء اللہ کے مزارات پر حاضری دینے، ان کی قبور پر کھڑے ہو کر دعا مانگنے اور انکی بارگاہوں سے تبرک وغیرہ لینے کے خلاف لکھی ہیں اور ان لوگوں کو مشرک قرار دیا ہے انہوں نے اولیاء کرام کی بارگاہوں میں حاضری کو جائز رکھا ہے اور اہلِ ایمان کو اللہ والوں کی قبروں پر حاضری دینے کی ترغیب دلاتے ہیں۔ میں نے عرصہ ہوا ان کتابوں کو پڑھا تھا اور انکا ایک مختصر سا جواب بھی لکھا تھا بس مصروفیات تو تھیں ہی اس کے علاوہ وسائل کے نہ ہونے کی وجہ سے وہ زیورِ طبع سے آراستہ نہ ہو سکا اس سال 2008ء ماہ رمضان المبارک ۱۴۲۹ھ میں میں حسبِ معمول حضرت داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری رحمۃ اللہ علیہ کی جامع مسجد میں سوالوں کے جوابات دے رہا تھا میں نے اس کا ذکر کیا۔ تو فوراً جناب کامران احمد صاحب نے وعدہ کر لیا کہ میں اس کو طبع کروانے میں تعاون کیلئے تیار ہوں۔ میں نے ان سے پوچھا آپ کا تعارف تو کہنے لگے میں حضرت مولانا ابو داؤد محمد صادق صاحب دامت برکاتہم العالیہ کا مرید ہوں بڑی خوشی ہوئی اور عید کے بعد انہوں نے خود تشریف لا کر اس پمفلٹ "الجھا ہے پاؤں یار کا زلفِ دراز میں" کی طباعت کا بندوبست کر دیا ہے انکا شکر گزار ہوں اور دعا کرتا ہوں اللہ تعالیٰ جناب کامران احمد قادری صاحب کو برکات سے مالا مال فرمائے۔

آمین بجاہ سید المرسلین ﷺ

میں تمام اہلِ اسلام سے گزارش کروں گا کہ وہ سب ملکر اس امت کی وحدت کیلئے جدوجہد کریں تا کہ اس امت کو پھر عظمتِ رفتہ میسر آئے۔ واللہ اس امت

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کا مرض شرک نہیں ہے بلکہ اس امت کا مرض خود غرضی خود پرستی اور ہوس مال وزر ہے اس مرض کا علاج صرف اور صرف عشق مصطفی ﷺ ہے اسی دوائی سے یہ امت مکمل صحت یاب ہو سکتی ہے کہ اس کو اطاعت ومحبت رسول اللہ ﷺ کے سمندر میں غرقاب کر دیا جائے۔ بقولِ اقبال:

قوتِ عشق سے ہر پست کو بالا کر دے
دہر میں اسم محمد ﷺ سے اجالا کر دے

محمد ارشد القادری

13 اکتوبر 2008ء

ہفتہ بعد ظہر، جامعہ اسلامیہ رضویہ



نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمْ

عزیز محترم محمد عاکف قادری زاد شرفہ نے مجھے وقفے وقفے سے مندرجہ ذیل کتابیں لا کر دیں

1- آسمانی جنت اور درباری جہنم
2- مذہبی وسیاسی باوے
3- شاہراہِ بہشت

میں نے ان کتب کا مطالعہ کیا۔ ان کے مؤلف کا نام "امیر حمزہ" ہے جنکے نام کے ساتھ "مولانا" بھی لکھا ہوا ہے ان کتابوں میں کیا ہے؟ اندر کا ایک جنون ہے جسے الفاظ کا جامہ پہنا کر سپرد قرطاس کر دیا گیا ہے جب اپنے جذبات واحساسات کو مؤلف نے صفحات کاغذ پر بکھیرا تو شاید وہ بے چارے یہ بھول گئے کہ کوئی ان کا تعاقب بھی کرے گا اور ان کے اس موقف کو سر عام تار تار کر دے گا، پھر ان کو اہل حق کے سامنے شرمندگی ہوگی، ندامت ہوگی اور قلم کو اعتدال پر نہ رکھنے اور زور قلم دکھاتے ہوئے حق سے ہٹ جانے کے باعث سرنگوں ہونا پڑے گا۔ وہ یہ بھی فراموش کر بیٹھے کہ جن کو وہ اپنا ہیرو بنا کر پیش کر رہے ہیں وہ بھی ان کے نہیں ہیں۔ جو طرز تحریر انہوں نے اپنایا وہ سراسر دیانت سے خالی ہے سب کچھ انہوں نے عدم علم کی بناء پر کیا ہے یا جان بوجھ کر یہ تو اللہ ہی جانتا ہے مجھے جو کچھ ان کتابوں میں نظر آیا وہ صرف اتنا ہے۔

## مزار فائض الانوار!

اگر کوئی مسلمان کسی بزرگ، اللہ تعالیٰ کے ولی کی قبر پر چلا جائے تو شرک! اگر کوئی مسلمان کسی کی قبر پر فاتحہ پڑھ ڈالے تو شرک! اگر کوئی مسلمان کسی ولی اللہ کے مزار

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



پر جا کر تبرک لے لے تو شرک! اگر کوئی کسی مسلمان کی قبر کی تعظیم کرے تو شرک! اگر کوئی مسلمان اللہ تعالٰی کے کسی ولی کی قبر پر حاضر ہو اور انکی قبر کو لائق تعظیم جانے تو یہ بھی شرک! اگر کوئی مسلمان کسی صاحب مزار سے سوال کر ڈالے تو شرک! اگر کوئی مسلمان کسی ولی اللہ کے مزار پر حاضر ہو اور صاحب قبر سے حصول برکت چاہے تو یہ بھی شرک! اگر کوئی مسلمان کسی قبر والے کو زندہ مان لے تو یہ بھی کھلم کھلا شرک! اگر کوئی کسی ولی اللہ کی قبر پر نیت وارادہ کر کے چلا جائے تو یہ بھی شرک! اگر کوئی مسلمان کسی قبر کو مزار فایض الانوار کہہ ڈالے تو شرک! ان کتب میں شرک شرک کی ایک گردان ہے جو بے وزن کر ڈالی گئی ہے۔

جو گردان بے وزن ہو اسکی کیا حیثیت ہوتی ہے۔ یہ تو کوئی ماہر فن ہی بتا سکتا ہے البتہ اتنا تو ابتدائی طالب علم کو بھی پتہ ہوتا ہے بے وزن گردان اور بے وزن بات کبھی لائق التفات نہیں ہوتی لائق توجہ صرف اور صرف وہی بات ہوتی ہے جو وزن دار ہو اور بے وزن بات اثر کھو دیتی ہے وزن اسی بات میں پیدا ہوتا ہے جو مبنی بر حقائق ہو اور وہ باتیں جن کا حقائق سے دور کا بھی تعلق نہ ہو وہ دل تک پہنچنا تو در کنار کان کے پردے تک انہیں گوارہ نہیں کرتے یہ کہاں کی دانشمندی ہے کہ کسی جسم کا ایک عضو زخمی ہو جائے تو اس حصے کا علاج کرنے کی بجائے اس کو بے یار و مددگار چھوڑ دیا جائے اسے موت کے منہ میں دھکیل دیا جائے اور اسے مردہ مان لیا جائے۔ عقلمندی کا تقاضا یہ ہے کہ اُمت مسلمہ میں وحدت پیدا کی جائے۔ کہ جسم کا وہ حصہ جو مجروح ہوا ہے اس کا کمال احتیاط سے علاج کروایا جائے تا کہ وہ صحت یاب ہو جائے پورا جسم توانا ہو اور امور زندگی بطریق احسن سر انجام دے سکے یہ امت نہ تو کبھی مردہ تھی نہ مردہ ہے اور نہ کبھی مردہ ہو گی بلکہ قیام قیامت تک زندہ و تابندہ رہے گی اس امت کا ایک ایک فرد قابل صد ستائش ہے اس اُمت کا ایک ایک فرد گوہر نایاب ہے اس امت کا ایک ایک فرد ذمہ دار ہے ضرورت صرف [illegible]



دے کر دلائل بتا کر حقائق سمجھا کر راہ حق پر گامزن کر دیا جائے یہی وقت کی ضرورت بھی ہے۔

## حدِ اعتدال:

میں پوری ذمہ داری سے عرض کرتا ہوں کہ میرا تیس سالہ تجربہ ہے اس امت کو آج بھی اگر پیار اور محبت سے اللہ و رسول (جل و علا و صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کے احکامات سنا کر صراط مستقیم کی طرف بلایا جائے تو ہرگز ہرگز تردد نہ کریں گے بلکہ دوڑ کر شامل زمرہ حق ہوں گے یہ وہ طریق کار ہے جس سے بگڑے ہوئے سنور سکتے ہیں گمراہ راہ صداقت پا سکتے ہیں اگر اب بھی اس طریق کار کو اختیار نہ کیا گیا تو آئندہ آنے والی نسلیں ہمیں الزام دیں گی کہ ہمارے اکابر کیسے نااہل تھے جنہوں نے اُمت مسلمہ کو ترقی دینے کی بجائے تنزل کی اندھیری وادیوں میں دھکیل دیا میں ہرگز بھی نہیں چاہتا اپنے قلم کو کسی کے خلاف چلاؤں اور اپنا وقت اس طرح ضائع کروں مگر جب کوئی دوسرا حد اعتدال سے نکل جائے صداقت کا دامن چھوڑ دے دیانت کو خیر آباد کہہ دے حق گوئی کو رخصت کر دے تو ان حالات میں مجھ پر لازم تھا میں احقاق حق اور ابطال باطل کروں تا کہ فضاء میں جو تکدر آیا ہے وہ صاف ہو جائے گرد و غبار چھٹ جائے اور مطلع بالکل واضح ہو جائے میں صمیم قلب سے کہتا ہوں کہ اس امت کا مرض شرک نہیں ہے بلکہ اس کا مرض خود غرضی ہے، خود پرستی ہے اور ہوس مال وزر ہے جب تک مرض تشخیص نہ ہو علاج ممکن نہیں جب مرض کی تشخیص ہو جائے تو علاج نہ صرف ممکن بلکہ آسان بھی ہو جاتا ہے اس امت کو وہ دوا چاہیے جو خود غرضی خود پرستی اور ہوس مال وزر کا شافی نسخہ ہو مجھے نہیں معلوم اس دور میں صاحبان علم کا مزاج کیوں اسقدر کڑوا ہو گیا ہے کہ جو بندہ بھی ان کی طرف متوجہ ہوتا ہے تلخی دیکھ کر سابقہ راہ کی طرف پلٹ جاتا ہے کبھی غور فرمایا آپ نے معاشرہ کے بگاڑ میں عوام ہی کا قصور ہے یا

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



آپ میں بھی کوئی کمی واقع ہوگئی ہے آپ نے کیوں موقع دیا ہے لوگ آپ کا مزاح اڑائیں اور آپ کو امت میں فتنہ کا سبب سمجھیں لوگوں میں نفاق پھیلانا اور نفاق پیدا کرنا یہ تو کوئی مشکل کام نہیں ہے ابھی دو چار مغلظات بکیں فتنہ کا بازار گرم ہو جائے گا لیکن یہ واقعی کمال ہے نفاق مٹانا اور اتفاق پیدا کرنا نفرتوں کو مٹانا محبت کا چراغ روشن کرنا فتنہ و فساد کا دروازہ بند کر کے محبت و پیار کی راہ ہموار کرنا ممکن ہے میری یہ بات سرسری نظر میں کسی کو نہ بھی پسند آئے مگر سینے میں دھڑکنے والا دل ضرور تصدیق کرے گا حق یہی ہے جو ابھی مذکور ہوا۔

## انا ولا غیری:

مجھے تو یہ سمجھ نہیں آتی جو لوگ تاریخ سے بھی واقفیت نہیں رکھتے وہ کیوں چھلانگ لگا کر میدان میں کود پڑتے ہیں اور ابھی سانس تک بھی معمول پر نہیں آتی اور فوراً یہ نعرہ لگا دیتے ہیں۔

| | |
|---|---|
| انا ولا غیری | بس میں ہوں اور کوئی نہیں |

I AM THE LAST

## نظمِ قرآن

امام شافعی رضی اللہ عنہ فرمایا کرتے تھے جو ادب عرب نظم قرآن یعنی تاریخ سے آگاہ نہ ہوا سے قرآن وحدیث کے بارے میں کچھ کہنے سے احتراز کرنا چاہیے آپ فرمایا کرتے تھے قرآن میں اوامر و نواہی ہیں مطلب یہ ہے قرآن میں کہا گیا ہے "یہ کرو" اور "یہ نہ کرو" لیکن آپ فرماتے ہیں کہ ہر کوئی اس کی تفصیل نہیں جانتا یہی وجہ ہے کہ بڑے بڑے ائمہ فرمایا کرتے تھے قرآن پاک کی تفسیر میں امام شافعی نے ہمیں راہ حق دکھائی۔ اس امت کی اصلاح کرنے کیلئے انہی راہوں پر چلنا ہوگا جن راہوں پر بڑے بڑے علماء کرام اور محدثین چلے تھے۔ اس سلسلے میں حضرت امام غزالی، حضرت امام فخر الدین رازی، حضرت



امام عبدالرحمن ابن جوزی، امام ربانی مجدد الف ثانی، علامہ فضل حق خیرآبادی، علامہ سراج احمد سرہندی، شیخ عبدالحق محدث دہلوی، حضرت شاہ عبدالرحیم محدث دہلوی، حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی اور حضرت مولانا حاجی امداد اللہ مہاجر مکی کا طرز عمل اپنایا جائے۔

میں اصلی بات کی طرف آتا ہوں چونکہ میں نے امیر حمزہ کی مؤلفات

1- آسمانی جنت اور درباری جہنم

2- مذہبی و سیاسی باوے

3- شاہراہ بہشت

مبنی بر صداقت کا پوری دیانت داری کے ساتھ مطالعہ کیا اور یہ جاننے کی کوشش کی ان کتب میں جو کچھ لکھا گیا وہ کس حد تک مبنی بر صداقت ہے اور تو کچھ کم نظر آیا مگر ایک چیز بڑی واضح اور بے نقاب نظر آئی۔ اور وہ ہے ہٹ دھری زبان و قلم کی بے لگامی بلکہ یوں لگتا ہے کہ جو کچھ لکھا گیا۔ یہ وہ تعصب کی عینک لگا کر لکھا گیا ہے اگر یہ عینک نہ لگی ہوتی تو ممکن ہے حق کی جانب راہ ملتی اور کچھ تو احقائق حق ہوتا مگر صرف ایک آنکھ سے دیکھا گیا دوسری آنکھ کو دیکھنے سے مطلقاً بند رکھا گیا اس میں کیا حکمت تھی یہ تو امیر حمزہ صاحب ہی بتا سکتے ہیں میں نے ابھی ذکر کیا تھا جو بندہ تاریخ سے واقف نہ ہو وہ علمی یتیم ہوتا ہے اس میں کوئی شک نہیں یہ دلائل قطعیہ سے ثابت ہے کہ برصغیر پاک ہند میں اسلام اولیاء کرام نے پھیلایا ہے جن میں حضرت علی بن عثمان ہجویری ثم لاہوری، المعروف بہ داتا گنج بخش، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی، حضرت بابا فرید الدین گنج شکر، حضرت خواجہ رضی الدین محمد باقی باللہ، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی، علامہ سراج احمد سرہندی، حضرت شیخ عبدالحق محدث دہلوی، علامہ فضل حق خیرآبادی، شاہ عبدالرحیم محدث دہلوی، حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی، حضرت مولانا حاجی امداد اللہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



مہاجر مکی اور امام احمد رضا خاں قادری کے نام سرفہرست ہیں (رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین)

## کلمہ پڑھایا:

حیرت کی بات ہے اگر کوئی شخص ان حضرات کے مقام ومرتبہ سے بھی آگاہ ہو اور ان کے کام سے بھی باخبر ہو تو کیسے ممکن ہے وہ ان حضرات پر تنقید کا بازار گرم کرے اگر نہیں یقین آتا تو اپنے باپ دادا کی فہرست کو دیکھیں تو ضرور پتہ چل جائے گا کہ ان کو کسی نہ کسی اللہ کے ولی نے کلمہ پڑھایا ہوگا اب جنہوں نے کلمہ پڑھا کر شرک سے بچایا بتوں کی پوجا پاٹ کرنے سے نجات دلائی اور ایک خالق ومالک اللہ وحدہ لاشریک کی عبادت کا درس دیا گیا ایسے محسنوں کے لئے ایسے ہی جذبات ہونے چاہیے جن کا اظہار مندرجہ بالا کتب میں کیا گیا ہے جو کچھ مذکورہ کتابوں میں لکھا گیا ہے جذباتی بگولا ہے۔ حقیقت سے اس کا کوئی تعلق نہیں۔ انشاء اللہ میں ابھی ثابت کر دکھاؤں گا جو جو الزام ہمارے اور ہمارے اکابرین پر لگائے گئے سب غلط وباطل ہیں الحمد اللہ ہمارا اور ان کا دامن ان تمام الزامات سے مبرّ ہ ہے۔

قیامت خیز ہے افسانہ پر درد وغم میرا
نہ کھلواؤ زبان میری نہ اُٹھواؤ قلم میرا

آیئے اب میں آپ کو آپ کے گھر کا کچھ حال سناؤں اگر حق وصداقت ابھی دنیا میں موجود ہے اور دیانت کا جنازہ نہیں نکلا غور فرمایئے آپ نے جو الزامات ہم گدایان دراولیاء پر چسپاں فرمائے ہیں کہیں آپ کا اپنا دامن تو ان میں نہیں الجھا ہوا آپ کی اپنی کتاب جو آپ کے گھر کی مؤلفہ ہے اور اس کا نام مخزن احمدی ہے جناب



سید احمد شہید صاحب کی سیرت پر رقم کی گئی ہے لیجئے آپ بھی اس کا مطالعہ فرمائیں تا کہ آپ کے علم میں خاطر خواہ اضافہ ہو پیش خدمت ہے۔

## کچھ مخزن احمدی کے حوالے سے:

انہیں امیر حمزہ صاحب نے کچھ لوگوں کو اپنا ہیرو بنا کر پیش کیا ہے۔ جن میں ایک نام سید احمد شہید صاحب کا بھی ہے۔ میں اس وقت انہی صاحب کو پیش کر رہا ہوں تا کہ امیر حمزہ صاحب غور فرمالیں جن کو انہوں نے اپنا لیڈر، رہنما اور قائد ورہبر بنا کر پیش کیا ہے جنکو اپنا مقتداء مانا ہے ان کا عمل مبارک کیا ہے میں نے غور وخوض کرنا شروع کیا تو ایک کتاب ہاتھ لگ گئی جس کا نام ہے "مخزن احمدی"۔ یہ کتاب فارسی زبان میں لکھی گئی ہے اس کے مؤلف کا نام "مولوی سید محمد علی شاہ ہے" جو سید احمد شہید کے بھانجے ہیں۔ مؤلف کی بابت سرورق پر لکھا ہے۔

"از تصنیف جناب فضیلت مآب کاشف رموز خفی وجلی علامی فہامی جناب مولوی سید محمد علی صاحب' تخلص علی سلمہ اللہ العلیٰ وبارک اللہ فی تصانیف للشیخ والشاب والصبی" میں عبارت کو قارئین کیلئے آسان کر دیتا ہوں تا کہ تفہیم میں آسانی ہو" یہ تصنیف جناب فضیلت مآب۔ رموز خفی وجلی کو آشکار کرنے والے بہت بڑے عالم اور عقل وفہم کے مبلغ جناب مولوی سید محمد علی شاہ صاحب کی ہے جنکا تخلص علی ہے۔ اللہ تعالیٰ انکو سلامتی، بلندی اور برکت عطا فرمائے اور ان کی تصانیف کو تمام بزرگوں جوانوں اور بچوں کے لئے مفید بنائے"۔

اس کتاب کے سرورق پر یہ بھی تحریر ہے۔

"کتاب فیض مآب در ذکر حضرت مولانا سید احمد صاحب قدس سرہ سرچشمۂ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



فیض سرمدی"۔

## آپ کے ہیرو (Hero):

جناب امیر حمزہ صاحب یہ وہی بزرگ ہیں جنکو آپ نے بطور ہیرو پیش فرمایا ہے اور انکی مدحت میں رطب اللسان ہوئے ہیں۔ چونکہ آپ کی کتابیں۔"شاہراہ بہشت" آسمانی جنت اور درباری جہنم، مذہبی و سیاسی باوے۔ ان کے موضوعات ہی مزارات بزرگان دین، انکی بارگاہوں میں حاضری ہے۔ وہاں دعا مانگنا اور وہاں سے تبرک لینا، ان اعمال کو کھلے لفظوں میں شرک وکفر سے تعبیر کیا گیا ہے۔

جس قدر بھی آپکی زبان اور قلم میں زور تھا وہ سب صرف کر دیا گیا ہے میں چونکہ اتحاد ملت کا داعی ہوں میں نہیں چاہتا امت مزید ٹکڑے ٹکڑے ہو جائے اور کافر الگ الگ کر کے تھوڑے تھوڑے سمجھ کر سب کو ختم کر دیں اور یہ تباہی اجتماعی طور پر مسلمانوں کی ہو۔ مجھے نہیں معلوم آپ نے کس زاویے سے لوگوں کا جائزہ لیا ہے اور ان کی اصلاح کا جو طریق کار اپنایا ہے وہ کون سی حکمت و دانائی کی صنف مبارک ہے۔ بہر حال یہ آپ ہی بہتر جانتے ہیں لیکن میں تو صرف اتنا ہی عرض کروں گا۔ جو زبان آپ نے استعمال فرمائی ہے اس سے سو گنا زیادہ سخت زبان استعمال کرنا مجھے آتی ہے مگر کیا مجال جو میں اپنی زبان اور قلم کو راہ حق سے بھٹکنے دوں۔ اللہ تعالیٰ میری زبان اور قلم کی حفاظت فرمائے وہی میرا مددگار ہے وہی میرا کارساز ہے، وہی میرا مشکل کشا ہے۔ اگر مخزن احمدی کے الفاظ ذہن سے نکل گئے ہیں تو تازہ فرمایئے۔

## سرچشمہ سرمدی:

کتاب فیض مآب در ذکر حضرت مولانا سید احمد صاحب قدس سرہٗ و سرچشمہ فیض



سرمدی میں نے بغیر کسی تبدیلی کے حوالہ جوں کا توں نقل کر دیا ہے۔ جو مولانا سید احمد صاحب کے بارے میں رقم کیا گیا ہے۔ اس عبارت کے ایک ایک لفظ پر غور فرمایئے آپ کو خود بخود معلوم ہو جائے گا آپ کے اپنے گھر کے بزرگوں کے بارے میں کیا جذبات ہیں اور دوسروں کیلئے آپ کے جذبات کیسے ہیں اگر ذکر آپ کے اپنے بزرگوں کا ہو تو ان کو بڑے آرام سے "فیضمآب" "فیض سے بھرپور" "سرچشمہ فیض سرمدی"۔ جس کا فیض ہمیشہ ہمیشہ جاری رہے۔ واہ واہ کیا بات ہے اپنوں کیلئے ایسا نرم گوشہ ایسی عقیدت کہ عقیدت کا سر جھوم جائے ایسا پیار کہ پیار بھی اس پر ناز کرے اور دوسرے بزرگوں کیلئے وہ زبان کی سختی کہ پڑھ کر دل گھبرا جائے حق پرستی اگر ایسی ہی ہوتی ہے تو آپ کو مبارک ہمارے ہاں تو حق اس کو کہتے ہیں جس میں اپنے پرائے کی تمیز کئے بغیر حکم لگایا جائے آپ نے جو انداز اختیار فرمایا وہ آپ کو مبارک ہو مگر اس سے اہل حق کو یقیناً اتفاق نہیں ہے۔ آپ کا قلم اپنے انداز میں چلا اور نامعلوم کیا کیا لکھتا چلا گیا اور اس لکھنے نے کس کس کا دل مجروح کیا خیر یہ تو اس کو احساس ہوتا ہے جو دل حق شناس رکھتا ہو اور جو دل حق شناس سے بیگانہ ہو اس کو ہم کیا کہہ سکتے ہیں خدا ہی ملکۂ حق شناسی عطا کرے۔ ورنہ آپ نے تو اس کا جنازہ نکال کر رکھ دیا ہے آپ خود دیکھ لیں کسی شخصیت کی بات تو در کنار ہے جس کتاب میں آپ کے ہیرو (Hero) کا ذکر ہو وہ کتاب ہی فیضمآب ہو جائے اور جن کا ذکر ہو وہ صاحب اللہ اللہ چشمہ فیض سرمدی

آپ ہی اپنی اداؤں پہ غور کیجئے حضور
ہم کچھ عرض کریں گے تو شکایت ہوگی

## قلم کی آواز:

آپ تو بڑے صاحب کمال معلوم ہوتے ہیں جب چاہیں اہل اسلام کو دین

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



وایمان سے خارج کریں جب چاہیں ان کو شرک و بدعت کے گہرے کھڈ میں ڈال دیں اور جب چاہیں ان کو راہ حق سے کوسوں دور کر دیں اور وہ وہ انداز اپنائیں کہ پڑھنے والا سوچتا ہی رہ جائے یا اللہ یہ کون لوگ ہیں جو اس قدر شقی ہو گئے ہیں کہ کلمہ پڑھنے والوں کو سنت پر عمل کرنے والوں کو بیک جنبشِ قلم مشرک قرار دے رہے ہیں۔ یہ سراسر زیادتی ہے۔ آپ کے قلم نے حق و صداقت کا خون کر دیا ہے۔ میں ضرور اس خونِ ناحق پر صدائے احتجاج بلند کروں گا۔ میں تو آج کل شرح ترمذی شریف پر کام کر رہا ہوں دوسرے تمام مشاغل سے ایک طرف پڑا ہوں۔ میں نے آج کل درس و تقاریر کو بھی مؤخر کر رکھا ہے۔ مگر آپ کی خدمت میں قلم لیئے حاضر ہوں اور اس ارادے سے شاید آپ کی فہم مبارک اور قلب اطہر تک میرے قلم کی آواز پہنچ جائے اور آپ اپنا زاویہ نگاہ بدل دیں جو لوگ قابل رحم ہوں ان پر اعتراضات کی بوچھاڑ نہیں کیا کرتے ان کو لائق ترحم خیال کر کے ان کی اصلاح نرم، شستہ اور شگفتہ الفاظ میں کیا کرتے ہیں تاکہ حق متین ہو اور باطل سرنگوں ہو۔ واللہ مجھے آپ کا یہ جارحانہ انداز قطعاً پسند نہیں آیا اگر آپ کبھی زحمت فرمائیں تو میری کسی نشست میں بن بتائے آ کر سن لیں مجھے دیکھ لیں میں شرک کا رد کس قدر زور دار طریقے سے کر رہا ہوں اور توحید باری تعالیٰ کو کس قدر دلائل قاہرہ سے اللہ تعالیٰ کے بندوں کے دلوں تک پہنچانے بلکہ راسخ کرنے کی کوشش کر رہا ہوں۔ میں (راقم الحروف) حضرت علی بن عثمان ہجویری رحمۃ اللہ علیہ کی جامع مسجد میں کھڑا ہو کر کہتا ہوں کہ غیر اللہ کو سجدہ حرام ہے۔ خواہ وہ قبر کسی اللہ تعالیٰ کے ولی کی ہو، خواہ وہ قبر کسی صحابی رسول ﷺ کی ہو، خواہ وہ قبر کسی نبی و رسول کی ہو اور خواہ وہ قبر انور رسول اللہ ﷺ ہی کی کیوں نہ ہو اس کو بھی سجدہ کرنا حرام ہے۔

مجھے نہیں معلوم اصلاح احوال ہیں اور قوم کی گرتی ہوئی صورت کو سنبھالنے میں آپ والا



انداز کیونکر موثر ہوگا۔ اس طرح آپ ایک فرقہ میں محدود ہو کر رہ جائیں گے دوسرے لوگ آپ کی طرف متوجہ نہیں ہونگے۔ کسی فرد کو حلقہ اسلام میں داخل کرنا بڑا مشکل کام ہے اور نکال باہر کرنا ایک جنبشِ لب ہے یہ قوم قابل رحم ہے اس پر رحم کیجئے اس کو مجتمع کرنے کی سعی فرمایئے بکھیرنے کی کوشش نہ فرمایئے ورنہ آپ اس امت کے مصلح شمار نہیں ہونگے۔ کہیں آپ کا شمار مفسدین میں نہ ہو جائے۔ اس طرف بھی غور کر لیجئے گا میں بروقت آگاہ کر رہا ہوں۔

## اندازِ تکلم:

میں اگر جذباتی انسان ہوتا تو میرا انداز بھی آپ جیسا ہوتا، دیکھ لیں میں نے قطعاً آپ والا انداز نہیں اپنایا آئندہ بھی جو کچھ آپ کی خدمت عالیہ میں پیش کروں گا وہ بھی نہایت متانت کے ساتھ ہوگا۔ تا کہ آپکو ایک نیا انداز تکلم ملے ایک نیا انداز تحریر میسر ہو، اور آپ کو معلوم ہو جائے آپ کے اپنائے ہوئے انداز سے کچھ بہتر ہو سکتا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد گرامی ہے:

"فَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ" (سورۃ یوسف: 76)

"ہر علم والے سے اوپر ایک علم والا ہے"۔

مزارات اولیاء اللہ کی مخالفت کرتے کرتے امیر حمزہ صاحب آپ اتنا دور نکل گئے کہ آپ کو اپنا مرنا بھی یاد تک نہیں رہا۔ میں اپنے پلّے سے کوئی بات نہیں کہتا بلکہ آپ کے بزرگ سید احمد شہید صاحب کو پیش کرتا ہوں۔

## غور فرمائیں:

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



یہ ہی آپ کے بزرگ ہیں نا، یہ آپ ہی کے ہیرو ہیں نا، بس پہچانیں اور غور فرمائیں دیکھیں وہ کیا کرتے ہیں اور آپ کیا کہتے ہیں یہ صرف اس لئے کر رہا ہوں کہ آپ کو آئینہ دکھانا ضروری تھا۔

اس وقت مخزن احمدی میرے سامنے ہے اس میں لکھا ہے:

''قریب نصف شب بوادی سرف کہ مزار فایض الانوار ستر معلی جناب میمونہ علیہا وعلی بعلہا الصلوۃ والسلام من اللہ الملک العلام رسیدیم از اتفاقات عجیبہ آنکہ آن روز ہیچ طعام نخوردہ بودم'' (مخزن احمدی 99)

''نصف شب کے قریب ہم مقام سرف پر پہنچے جہاں ام المومنین سیدہ میمونہ ان پر اور ان کے شوہر پر صلوۃ وسلام اللہ ملک العلام کی جانب سے، کا مزار فایض الانوار ہے یہ اتفاقات عجیبہ سے تھا کہ اس روز ہم نے کھانا نہ کھایا تھا''۔

## بدعت کا بازار سرگرم:

امید ہے کہ آپ نے غور سے پڑھ لیا ہوگا۔ کیسا کمال ہے اپنے گھر کے بزرگوں کا۔ وہ سب کچھ جو دوسروں کے لئے شرک ٹھہرا اپنے لئے سب جائز توحید کے عین مطابق نہ عقیدے میں خرابی نہ عمل میں کوتاہی کا باعث۔ ظاہر ہے اگر یہ عمل ہم کرتے تو ایک طوفان برپا کر دیا جاتا اور بڑے زوردار طریقے سے اعلان کیا جاتا کہ دیکھو لو کو یہ کیا شرک وبدعت کا بازار گرم کیا جا رہا ہے کہ رات کے اندھیرے میں وہ بھی آدھی رات کو مزار پر حاضری دی جا رہی ہے یہ تو کھلم کھلا شرک ہے اللہ تعالیٰ کو چھوڑ کر قبر کی طرف رجوع ہائے کتنا بڑا ستم ہے کیسی جہالت ہے کیسی بلا ٹوٹی ہے ان لوگوں پر مگر شاہ جی کے عمل پر مکمل خاموشی ہو بھی کیوں نا یہاں کوئی غیر تھوڑا ہے جو بغیر سوچے سمجھے زبان ہلا دی جائے قلم کو تحرک دے دیا



جائے یہ تو اپنے بزرگ ہیں یہ تو راہ حق میں سند وحجت ہیں اگر یہ دن کی بجائے رات کو بھی مزار مبارک پر حاضری دیں تو بالکل درست انکو تو کچھ نہیں کہا جا سکتا نا، اس لئے کہ ان کا ہر عمل موافق سنت ہوتا ہے ہاں اگر یہی عمل کوئی اور کرے وہ محمد ارشد القادری ہو یا محمد عثمان قادری فوراً فتوی تیار ملے گا اور ہوگا اتنا صاف شفاف کہ شرک سے بچنے کوئی وجہ ہی نہ ہوگا جو عطا کیا جائے اور پھر زور دے دے کر کہا جائے گا ایسا کرنا دین اسلام کے سراسر خلاف ہے اب آپ ہی سوچ بچار کیجئے آپ ہوش میں بھی ہیں یا مدہوشی میں سب کچھ ضبط تحریر میں آ گیا ہے۔ آپ تو مزارات کی حاضری کو شرک وبدعت سے تعبیر کرتے ہیں اور پھر جھٹ سے جہنم کا ڈراوا دیکر دوزخی ثابت کرنے کی سعی لا حاصل کرتے ہیں اب آپ کا قلم کیسے چلے گا لگتا تو یوں ہے چلنے کی بجائے جم جائے گا سیاہی سوکھ جائے گی آپ کا قلم چلنے سے صاف صاف انکار کر دے گا لکھو تو خود کچھ نہ سکیں گے الزام قلم و کاغذ پر آئے گا، چلئے جو مزاج یار میں آئے مگر اتنا تو مان لیجئے نا کہ آپ کے قلم سے غلطی ہوئی ہے جلد بازی میں لکھنا کچھ تھا لکھ کچھ گیا آپ اگر نہ بھی مانیں تو ہر پڑھنے والا تو مان ہی لے گا کہ امیر حمزہ کے قلم نے ٹھوکر کھائی ہے ورنہ اہل حق طعنہ دیں گے کہ تحریریں بھی ہوتا اور محررہ یوں بھی ہوتی ہے۔

الٰہی سمجھ کسی کو بھی ایسی خدا نہ دے
دے آدمی کو موت پر یہ بد ادا نہ دے

## پہچان لیا:

یہ وہی سید احمد شہید ہیں جن کو آپ نے ہیرو بنا کر پیش کیا تھا۔ آپ تو فرماتے ہیں مزارات پر جانا شرک، وہاں دعا مانگنا شرک، وہاں سے تبرک لینا شرک، وہاں سے کوئی چیز طلب کرنا شرک، وہاں جانے کا قصد کرنا شرک، وہاں حاضری دینا

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



شرک وہاں زیارت کو جانا شرک، گویا شرک، شرک کی ایک مشین آپ نے چلا رکھی ہے جو رو کے نہیں رکتی۔

کیوں جناب والا! اب آپ نے پہچان لیا یہ شاہ صاحب آپ ہی کے بزرگ ہیں آپ ہی کے سر کے تاج ہیں یہ میدان کارزار کے شہسوار بھی ہیں یہ راہ حق کے شہید بھی ہیں اور آئندہ آنے والی نسلوں کے رہبر و رہنما بھی ان کا تو کوئی عمل غلط نہیں ہو سکتا یہ جو کریں عین قرآن وحدیث کے مطابق ہوگا اس لئے کہ یہ آپ کے ہیرو ہیں آپ کے امام و پیشوا ہیں۔

## نقد و جرح:

آپ کی زبان وقلم کی زد سے بڑے بڑے اولیاء کرام بھی محفوظ نہیں رہے آپ نے سارا زور مزارات کے خلاف صرف کیا ہے کبھی حضرت خواجہ فریدالدین گنج شکر کے مزار پر تنقید کبھی حضرت بہاؤالدین ذکریا ملتانی کے مزار پر اعتراضات کبھی حضرت شاہ رکن عالم ملتانی کے مزار پر نقد و جرح کا بازار گرم پاکستان بھر کے بلکہ پوری دنیا کے اولیاء کرام کے مزارات پر وہ وہ رنگ بدل بدل کر زبان وقلم چلایا کہ خوف خدا نام کی کوئی چیز دور دور تک نظر نہیں آتی کبھی مزاج کا وہ عالم کہ اگر غیر مسلم بھی ایسا کرنا چاہتا تو ہرگز نہ کر پاتا اسکو یہ جرأت نہ ہوتی مگر آپ تو بڑے بہادر نکلے جوان بڑے بڑے بزرگوں کو اپنا بے تکلف............ سمجھ بیٹھے نتیجہ اللہ کے حوالے۔

دل کے پھپھولے جل اٹھے سینے کے داغ سے
اس گھر کو آگ لگ گئی گھر کے چراغ سے

## اللہ تعالیٰ کی جلالت کی قسم:

کم از کم میری سمجھ سے تو یہ بات بالا ہے آخر اس قدر اولیاء کرام کے مزارات پر



تنقید کیوں؟ اور اگر یہ سب کچھ دل کی اتھاہ گہرائیوں سے کہا جا رہا تھا اور لکھا تھا تو پھر اس میں اپنے بیگانے کی تمیز کیوں اگر جرم دونوں جگہ ایک ہو تو جو حکم پرائے پر لگے وہی اپنے پر بھی لگنا تقاضا دیانت ہے اور اگر ایسا نہ کیا جائے تو پھر کیا ہوگا آنے والی نسل بددیانتی کا طعنہ دے گی مگر اس کی آپ کو کیا پرواہ آپ کو تو اپنا ایک خاص مقصد پورا کرنا ہے جو صرف اور صرف اولیاء کرام کی مخالفت کر کے ہی حاصل ہو سکتا ہے اور وہ کیا ہے؟ جہاں سے آپ کو مالی امداد ملتی ہے وہاں پر یہی کچھ کر دکھایا جائے تو ملے گی ورنہ بند ہو جائے گی اور اگر ریال اور ڈالر آنا بند ہو گئے تو نہ آپ کے مرکز قائم ہونگے نہ اسلحہ آئے گا نہ گاڑیاں ہوں گی اور نہ ہی آنے جانے میں جہازوں کے ٹکٹ مل سکیں گے آخر اتنی ساری مراعات ترک کر کے صرف اولیاء اللہ کی عزت کیوں کی جائے مگر ہم اللہ تعالیٰ کی جلالت کی قسم اٹھا کر کہتے ہیں ہم ان تمام مراعات پر لعنت بھیجتے ہیں جو حضرات اولیاء کرام کی مخالفت کر کے میسر آئیں۔ ہم ان کو اپنا محسن جانتے ہیں اور ہم ہرگز محسن کش نہیں ہو سکتے مگر آپ جو چاہے آپ کا حسن کرشمہ ساز کرے۔ میں نے ابھی ابھی آپ کے ہیرو، آپ کے لیڈر، آپ کے رہنما اور سرچشمہ فیض سرمدی جناب سید احمد شہید صاحب کا عمل آپ کے سامنے رکھا ہے اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو ایک بار پھر تازہ فرمایئے۔

"نصف شب کے قریب ہم مقام سرف پر پہنچے جہاں ام المؤمنین سیدہ میمونہ رضی اللہ عنہا کا مزار فائض الانوار ہے یہ اتفاقات عجیبہ سے تھا کہ اس روز ہم نے کھانا نہ کھایا تھا" (مخزن احمدی ص 99)

## کیوں جناب والا:

اللہ تعالیٰ بھی بڑا کارساز ہے اس نے آپ کے دادا جان کو پہنچا دیا نا حضرت ام

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



المومنین میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے مزار فائض الانوار پر آپ کے ایک نقطہ نظر کی توفنی گھر سے ہوئی اور ابھی آگے آگے دیکھے ہوتا ہے کیا، جس عمل کو آپ نے کھلے لفظوں میں شرک سے تعبیر کیا ہے وہی عمل آپ کے ہیرو کر رہے ہیں اب ان پر کیا حکم لگے گا وہ تو آپ ہی بہتر جانتے ہیں ہم نے تو صرف آپ کو بتایا ہے کہ آپ کے اپنے گھر میں کیا کیا ہو رہا ہے اور میں نے پوری کوشش کی ہے کہ کمال دیانت کے ساتھ آپ کی تحریروں کا جائزہ لوں اور آپ کے سامنے کسی ایسی شخصیت کو نہیں کیا جس کو آپ الزام دیکر راہِ فرار اختیار کریں بلکہ ان کو آپ کی خدمت عالیہ میں لایا ہوں جن کو آپ لاکھ کوشش کر کے ہاتھ پاؤں مار کر بھی اپنے سے جدا نہیں کر سکتے۔ نامعلوم آپ نے مزاراتِ اولیاء پر اس قدر چڑھائی کیوں کر ڈالی اور اگر ان کے مزاراتِ مقدسہ پر حاضری دینا اتنا بڑا گناہ اور ناقابل معافی جرم تھا تو پھر آپ نے پہلے اپنے گھر کی خبر لی ہوتی تا کہ آپ کو آنے والی مصیبت کا سامنا نہ کرنا پڑتا۔ اب جب ہماری تحریریں اہل علم اور صاحبانِ عقل و دانش کی آنکھوں کے سامنے آئیں گی تو وہ آپ کی تحریروں کو بالائے طاق رکھیں گے اور یوں پکار اٹھیں گے یہ غلط لکھا ہے بالکل غلط ہے۔ اس لئے کہ اگر سب صحیح ہوتا تو کم از کم آپ کے بزرگ تو اس غلطی میں مبتلا نہ ہوتے اگر آپ یہ فرمائیں کہ وہ تو مجاہد فی سبیل اللہ ہیں عالم دین ہیں، آلِ رسول (صلی اللہ علیہ وسلم) ہیں شہید ہیں تو شاید آپکو یاد نہیں کہ آپ نے کئی شہیدوں پر بھر پور تنقید کی ہے بلکہ ان کا مزاح تک اڑانے کی پوری سعی کی ہے۔ اب تو آپ بھی کیا یاد کریں گے کسی نے آپ پر گرفت کی تھی۔ پھر آپ یوں گویا ہوں گے:

کس طرح فریاد کرتے ہیں بتادو پورا قاعدہ
اے اسیران چمن میں نوگرفتاروں میں ہوں



## دائمی سکون:

آپ کی ہوا کو بھی خبر نہ تھی، کوئی ہماری بھی خاں و تلاشی لے لے گا۔ اور یوں ہمارے اندرونی راز فاش کر دے گا۔ گرچہ نشتر لگنے سے درد ہوتا ہے مگر تمام فاسد مادہ زائل ہو جاتا ہے۔ اور آئندہ کیلئے مستقل آرام آجاتا ہے سکون مل جاتا ہے۔ عقل مند کی نظر نشتر پر نہیں بلکہ مریض کو دائمی سکون ملنے پر ہوتی ہے۔

آپ کو ایک غلط فہمی تھی کہ میں نے جس طرح قلم چلایا ہے وہ بڑا مؤثر ہو گا اور لوگ میرے پھیلائے ہوئے جال میں بڑی سادگی کے ساتھ جلد از جلد پھنستے چلے جائیں گے مگر شاید آپ کو یہ اندازہ تک نہ تھا کہ آپ نے جو جال بننے میں سال ہا سال صرف کر دیئے وہ چند لمحوں کی مار ہے جب تحقیق کی قینچی پھرے گی تو سب تار تار ہو جائے گا اس کا حلیہ تک باقی نہ رہے گا سو الحمد للہ ہم نے شستہ زبان کے ساتھ آپ کے بُنے ہوئے جال کا وہ حشر کر دیا ہے کہ اس کو کوئی جال ماننے کو بھی تیار نہ ہو گا آپ کے سارے تانے بانے جو آپ نے اولیاء کرام کے مزارات کے خلاف بُنے تھے ہم نے سب نسیاً منسیاً کر دیئے ہیں۔

امید کرتا ہوں میری اس تحریر کے بعد سکون رہے گا۔ آپ آئندہ جب قلم چلائیں گے تو سوچ سمجھ کر چلائیں گے۔ نیز اب آپ کے قلم میں وہ جوہر پیدا ہو گا جو حق نما ہو گا۔ آپ کو بھی شاید اللہ تعالیٰ حق کی طرف مائل کر ہی دے کوئی بڑی بات نہیں وہ بڑا کریم ہے اور اپنے حبیب کریم صلی اللہ علیہ وسلم کا تصدق وہ کچھ عطا کر دیتا ہے جو بندے کے وہم و گمان میں بھی نہیں ہوتا۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## مردِ میداں:

جو جو الزامات آپ نے مزارات پر حاضری دینے والوں پر لگائے ہیں، ان کی زد میں لا لا کر ان کو شرک شرک کی صلواتیں سنائی ہیں جو جو فتوے ان پر صادر فرمائے ہیں۔ دیانت کا تقاضا یہی ہے وہی فتوے وہی احکام وہی نرالی نرالی باتیں جو دوسروں کیلئے کی ہیں اب وقت آیا ہے اپنے گھر کے بزرگوں کو بھی وہی تحفہ عنایت فرمائیں تب ہم بھی آپ کو مردِ میداں جانیں، آپ کے قلم کو حق گو مانیں۔ مگر ایسا کیونکر ہوگا۔ چلو آپ جانیں آپ کا کام مگر ہم تو آپ کو پھر یاد کہیں گے آپ کو یاد ہوگا آپ نے کیا کیا شور مچایا تھا مزارات پر حاضری دینے والوں کے خلاف کیا کیا صلواتیں سنائی تھیں مزارات پر حاضر ہو کر سوال کرنے والوں کو اور کیسے نازیبا الفاظ سے متصف فرمایا تھا ان لوگوں کو جو مزارات اولیاء اللہ پر حاضری دیتے ہیں۔ اب اپنے لیڈر، اپنے ہیرو (Hero) اپنے رہبر، اپنے اُن خلیفۃ اللہ بالیقین کو بھی ملاحظہ فرمائیں وہ کس انداز سے ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی قبر پر حاضر ہوتے ہیں۔

## ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے مزار پر حاضری:

آیئے ملاحظہ فرمایئے آپ کے ہیرو جناب سید احمد شہید صاحب کیا فرماتے ہیں اور کہاں حاضر ہیں۔ ذرا غور سے مطالعہ فرمایئے شاید دل کی گہرائی تک پہنچے

دل سے جو بات نکلتی ہے اثر رکھتی ہے
پر نہیں طاقت پرواز مگر رکھتی ہے

## صداقت کا جنازہ:

آپ تو فرماتے ہیں قبروں والے مر گئے معاملہ ختم ہوا اب وہ نہیں سنتے نہیں



کچھ دیتے، نہ ہی کچھ کرنے کی طاقت رکھتے ہیں وہ بیچارے تو بے بس ہیں۔ لہٰذا وہاں جانے کی ضرورت نہیں نہ صرف یہ کہ قبروں پر حاضری نہیں دینی چاہیے بلکہ وہاں جانے کو آپ نے شرک سے تعبیر کیا ہے۔ اگر معاملہ واقعی ایسا نازک تھا تو پھر کم از کم آپ کے گھر میں تو اس کی نازکی کا پورا پورا لحاظ رہنا چاہیے تھا مگر نہیں رہا آخر کیوں؟ اس کا جواب شاید قیام قیامت تک بھی آپ سے نہ بن پائے اتنا تو میں ضرور عرض کروں گا آپ نے یہ اقدام بغیر سوچے سمجھے اٹھایا ہے اور یہ آپ کو بہت مہنگا پڑے گا۔ لیجئے مطالعہ فرمایئے اور اگر صداقت کا جنازہ ابھی نہیں نکلا، دیانت جہانِ فانی سے رخصت نہیں ہوئی، نور ہدایت ابھی چمک رہا ہے اور شرافت ابھی باقی ہے تو اب دو ہی صورتیں ہیں یا تو سید صاحب کو اپنے رہنماؤں کی صف سے خارج فرمایئے اور اپنا دامن پاک کیجئے یا پھر ان پر بھی شرک کا فتویٰ داغ دیجئے تاکہ آپ کی جوانمردی بیّن ہو اور آپ کی تحقیق پایہ ثبوت کو پہنچے اور آپ قرار واقعی محقق ٹھہریں۔ آپ نے موضوع تو اپنی پسند کا چنا مگر آپ یہ بھول گئے کہ جب آپ کی اس اولی لنگڑی تحقیق کا حال کھلے گا تو اہل دانش شکوہ کریں گے اہل قلم تاسف کا اظہار کریں گے اور اہل حق خون کے آنسو بہائیں گے اور آپ کے پلے کیا پڑے گا......؟ میں کچھ نہیں کہتا یہ تو فیصلہ قارئین ہی کریں گے آپ کی خدمت عالیہ میں تو صرف اتنا ہی عرض کروں گا کہ آپ کے ہیرو کیا فرماتے ہیں۔

## سید احمد شہید صاحب فرماتے ہیں:

''برائے زیارت در حجرۂ مقدسہ رفتم'' (مخزن احمدی 99)

''میں حضرت ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے حجرۂ مقدسہ کی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



زیارت کو حاضر ہوا''۔

## مزارات اولیاء:

کیوں جناب یہی وہ شرک تھا نا جس کو آپ نے حضرت داتا گنج بخش رحمۃ اللہ علیہ کی قبر انور پر حاضری دینے والوں کے کھاتے میں ڈالا تھا، یہی وہ شرک ہے نا جو آپ نے حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری رحمۃ اللہ علیہ کے حجرۂ مقدسہ کی زیارت کرنے والوں کیلئے ثابت فرمایا تھا۔ یہی ہے نا وہ خلاف قرآن وحدیث عقیدہ و عمل جو آپ نے مزارات اولیاء اللہ کی زیارت کو جانیوالوں کے پلے ڈالا تھا اور پھر شرک جیسا نا قابل معافی جرم انکے سر تھوپ دیا تھا۔

## غبارے کی ہوا نکل گئی:

اگر آپ ٹھنڈے دل ودماغ سے کام لیتے تو ہرگز آپ کا انداز وہ نہ ہوتا جو ''آسمانی جنت اور درباری جہنم'' ''مذہبی دسیاسی باوے'' اور ''شاہراہ بہشت'' میں ہے وہاں تو آپ نے بڑی بڑھکیں ماری ہیں گویا کوئی معرکہ سر کرلیا ہو جیسے کسی مخالفِ اسلام کو شکستِ فاش دی ہو اور پھر اس کو بطور فخر بیان کر رہے ہوں ویسے غبارہ آپ نے خوب پھلایا تھا مگر ہوا یوں کہ پھولتے ہی اس کی ساری ہوا نکل گئی اور ساتھ ایک زور دار دھماکہ بھی ہوا جس کی وجہ سے آپ کے غبارے کی ہوا نکلنے کا اعلان بھی ہوگیا، اب آپ لاکھ چھپائیں کچھ نہیں ہوا ہم اپنی جگہ قائم ہیں ہمارا موقف درست وصحیح ہے مگر اتنا تو بتایئے وہ دلائل کدھر گئے جو آپ نے مزرات اولیاء، پر حاضری دینے والوں کے خلاف قائم کیے تھے ہوگئے ناہبا منشور اڑگئی نہ خاک، بہہ گیا نہ پانی معاملہ ہوگیا نا ٹھنڈا، اللہ کا لاکھ شکر ہے کہ معاملہ تو ٹھنڈا ہوگیا اسی میں خیر ہے اسی میں بھلائی ہے



ویسے اب تو آپ کو بھی مان ہی جانا چاہیے جس جرم کی پاداش میں آپ ہم پر برستے رہے ہمیں صلواتیں سناتے رہے ہیں شرک، بدعت، گمراہی، جہالت، بے ادبی اور نا معلوم کیا کیا، نا کردہ گناہ ہمارے کھاتے میں ڈالتے رہے ہیں وہ جرم بعینہ آپ کے گھر میں بھی ہوتا رہا ہے اور آپکے بزرگوں کو اسی جرم میں مبتلا ہم نے دکھا دیا ہے اور حوالہ بھی آپ کے گھر کا ہے ابھی تو صرف آپکے ایک بزرگ کو آپ کے ایک رہبر کو، آپ کے ایک لیڈر کو ہیں نے آپکی خدمت میں پیش کیا ہے، آگے آگے دیکھیے ہوتا ہے کیا؟! اگر مزارات صحابہ اور اولیاء پر حاضری شرک ہے اور قبوری عقیدہ باطل ہے تو اب اس پر قائم رہیے گا فرار نہ ہو جایئے گا اور ہاں اگر آپ راہ فرار اختیار بھی کرنا چاہیں گے تو لوگ ہرگز آپکو فرار نہ ہونے دیں گے وہ صاف صاف کہیں گے، اور آپ سے ببانگ دہل سوال کریں گے جو جرم آپ نے ہمارے کھاتے میں ڈال کر ہمیں جہنم رسید کرنے کی سعی لا حاصل فرمائی تھی وہی جرم آپکے اپنے دامن سے بھی برآمد ہوگیا، آپ کہیے کیا کہتے ہیں لگایئے فتویٰ، کیجیے وہی زبان استعمال جو ہمارے لیے کی تھی، یہ جرم تو آپ کے گھر میں بھی ہوتا رہا ہے یہ کوئی دیانت نہیں، دوسرا جرم کرے تو حکم لگاؤ، سزائیں سناؤ، دوھایاں دو، ڈھنڈورا پیٹو، شور مچاؤ، شرک، شرک، شرک کی رٹ لگاؤ اگر اپنے گھر میں یہی سب کچھ ہو جائے تو نہ شور، نہ ہنگامہ، نہ شرک، نہ بدعت بلکہ بالکل خاموشی آخر کیوں؟ لگاؤ فتویٰ تا کہ صداقت ظاہر ہو، اب آپ چپ ہی رہیں گے گویا موت معنوی طاری ہوگئی ہے، سوچتے ہونگے یہ کیا ہوگیا ہے ہمیں کیا معلوم تھا یوں بھی ہو جائے گا ہم نے تو بڑے زوردار طریقے سے گرفت کی تھی اور کئی نوجوان ہمارے جال میں آپھنسے تھے اب کیا کریں کدھر جائیں کیا جواب دیں کیا رنگ اپنائیں جو ہمارا بھرم رہ جائے لگاؤ فتویٰ تا کہ صداقت ظاہر ہو، اب تو آپ کو چپ نہیں

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



رہنا چاہیے بلکہ کھل کر بولنا چاہیے مگر ایسا ہوگا نہیں، کہاں گئیں اب وہ بڑھکیں جو زور زور سے ماری جارہی تھیں عوام الناس کو پوری طرح باور کرانے کی کوشش کی جارہی تھی کہ حضرت علی بن عثمان ہجویری المعروف بہ داتا گنج بخش، حضرت سلطان باہو، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی شیخ احمد سرہندی، حضرت خواجہ رضی الدین محمد باقی باللہ، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت بہاؤ الدین ذکریا ملتانی، حضرت بابا فرید الدین گنج شکر، رحمۃ اللہ علیہم اجمعین اور دیگر بزرگان دین کے مزارت پر حاضری دینا شرک ہے آپ نے شرک کی وہ چکی چلائی ہے کہ اسکی گھاں گھاں میں آپ کی اپنی آواز بھی صاف سنائی نہ دی اور اسی نیم بے ہوشی کے عالم میں صفحوں پر صفحے سیاہ کرتے چلے گئے اور اپنے تائیں یہ سمجھتے رہے کہ میں بڑا قلمکار ہوں میں بڑا فنکار ہوں میں تو بہت بڑی چیز ہوں جی ہاں ایسے ہی ہوتا ہے جب ضابطہ بھی خود ہی بنایا جائے اور منضبط بھی خود ہی کیا جائے تو پھر کب ہوش رہتا ہے میں نے کیا کیا، کیا کہا اور کب کیا کہاں کیا اور کیا کیا، یہ سب تو اسی بندے کو یاد رہتا ہے جو پُر سکون ماحول میں ہو اور حق وصداقت کا دامن تھامے ہوئے ہو اور جب دامن حق وصداقت ہی چھوڑ دیا جائے تو پھر کب ہوش رہتی ہے۔

اور ہوش میں جو نہ ہو وہ کیا نہ کرے

## شور و ہنگامہ:

امیر حمزہ صاحب آپ نے اپنی کتابوں "آسمانی جنت اور درباری جہنم" "مذہبی و سیاسی باوے" اور "شاہراہ بہشت" میں بڑا شور مچایا تھا شرک ہو گیا، شرک ہو گیا، شرک ہو گیا جب آپ نے اپنے دعوے کو دلائل کے جہاں میں اتارا



تو شرک، شرک، شرک کی رٹ پر جو دلیل قائم فرمائی وہ تھی درباروں، مزاروں اور قبروں پر حاضری جس کو آپ نے قبوری عقیدہ قرار دیا اور اس کو صریح الفاظ میں شرک سے تعبیر کیا اور ذرا برابر پرواہ اس بات کی نہ کی کہ اس وقت امت مسلمہ کو مشرک قرار دینا کمال نہیں اس امت کی اصلاح کرنا اور اس کو جہنم سے بچانا کمال ہے۔ جس زور دار طریقے سے آپ نے صدا بلند کی ہر سننے والا یہ محسوس کر رہا تھا شاید یہ آواز حق نما ہے مگر جب بغور جائزہ لیا گیا تو پتا چلا کہ یہ صدا خلاف عقل ہی نہیں بلکہ خلاف خانہ بھی ہے۔ اور خانہ تلاشی لی گئی تو اس صدا کا جنازہ نکل گیا اور دل نے تھک کر کے گواہی دی کہ یہ سب جھوٹ ہے جو سنا گیا آسمانی جنت اور درباری جہنم میں آخر یہی شور و ہنگامہ برپا کیا ہے نا، بار بار دعوت دی ہے لوگو حق کی طرف آؤ۔ درباری حاضری چھوڑ دو، اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں حاضر ہو جاؤ۔ واہ کیا حسنِ عمل کی دعوت ہے۔ جن کو آپ نے موحد، توحید کے علمبردار بنا کر پیش فرمایا تھا۔ وہ خود اس جرم میں مبتلا پائے گئے جس کا آپ رد فرما رہے تھے۔ اور گواہی بھی آپ کے اپنے گھر سے مل گئی لیجیے ایک بار پھر تازہ فرمایئے اپنے بزرگوں کا عمل مبارک:

## سید احمد شہید صاحب فرماتے ہیں:

"بطلب نان پیش ہر کس ور یدم و بمطلب نرسیدم بناچار برائے زیارت در حجرہ مقدسہ رفتم"۔ (مخزن احمدی 99)

میں نے ادھر ادھر بہت کوشش کی مگر کھانا نہ ملا چار و ناچار بغرض زیارت حجرہ مقدسہ سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا پر حاضر ہوا"۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## کھانے کی تلاش میں سرگرداں:

شاہ جی اوّل تو اپنے طور پر کھانے کی تلاش میں سرگرداں رہے لیکن جب انہیں کھانا ملنے کی کوئی امید نہ رہی تو حضرت ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ عنھا کے حجرہ مقدسہ پر حاضری دینے کے لیے کشاں کشاں چلے آئے "شاہراہ بہشت" "تذبیو سیاسی باوے" اور "آسمانی جنت درباری جہنم" ان کتابوں میں جو کچھ مرقوم ہے وہ سب مزارات ہی کی مخالفت ہے بار بار قبوری عقیدہ کہہ کہہ کر رد بالغ کیا گیا اور یوں معلوم ہوتا ہے جیسے قبروں سے کوئی خاص قسم کا بیر ہے مزہ تو جب ہے کہ آپ بھی قبروں پر نہ جائیں بلکہ مر جانے والوں کو بھی پاس ہی رکھ لیں ظاہر ہے میرا یہ جملہ بُرا تو لگے گا مگر اتنا سخت تو نہیں ہے جتنا سخت آپ نے لکھا ہے، خوف خدا بھی کسی چیز کا نام ہے وہ اگر تھوڑا سا بھی ہوتا تو قلم یوں بے لگام تو نہ چلتا بلکہ کچھ تو خیال ہوتا امت مسلمہ میں افتراق پیدا کرنا تو کوئی کمال نہیں کمال تو یہ ہے کہ اس امت کے افراد کی اصلاح کر کے انکو راہ حق پر گامزن کر دیا جائے، مگر جو روش آپ نے اپنائی ہے وہ نہ تو تقاضاء دیانت ہے، نہ ہی شرافت اسکی اجازت دیتی ہے، نہ حقائق اس طرف مائل ہیں نہ اس دور میں یہ طریق اسلام ہے، اب تو ہم سوال کرنے میں حق بجانب ہوں تا کہ آخر سید احمد شہید صاحب، مزار فائض الانوار پر کیا لینے گئے تھے؟ انہیں سیدہ میمونہ ام المومنین کی وفات یاد نہ تھی اگر تھی تو پھر وہاں کیوں گے جب آپ یہ قاعدہ بیان کرتے ہیں کہ مر جانے والے مر گئے اور اب ان سے کسی طرح کی کوئی امید وابستہ کرنا سراسر



جہالت، شرک وبدعت ہے تو آخر شاہ جی کو یہ قاعدہ کلیہ مستحضر نہ تھا، ان کی قوت حافظہ انتہائی کمزور تھی جو سب کچھ بھول بھال گئے اور جھٹ کر کے حضرت ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ عنھا کے مزار شریف پر حاضر ہو گئے، آپ کے بیان کردہ ضابطے کا کیسا جنازہ نکالا شاہ صاحب نے اور آپ نے جو بڑھکیں ماری تھیں ان پر کیا کوہ قیامت توڑا سید صاحب نے آپکو کہیں کا نہ چھوڑا الگتا نہیں آپکو یہ سب کچھ آپ کے عقیدے کے مطابق شرک ہے تو اٹھایئے قلم اور رد فرمایئے اس شرک عظیم کا اور بھی جو اس راہ میں حائل ہوا اسکو بھی راستے سے پرے کر دیجئے بلکہ راستہ صاف کر دیجئے تا کہ آئندہ مسافر بڑی آسانی کے ساتھ منزل مقصود تک پہنچ سکیں اور انکو ذرہ برابر دقت نہ ہو، اب اگر وہی الفاظ استعمال ہوں، وہی انداز تکلم ہو، وہی طریق جارحیت ہو، وہی بلند و بانگ دعوے ہوں تو مزہ آجائے مگر اب تو آپ ایسے خاموش ہوں گے جیسے جاں تن سے جدا ہے، سانس کی آمد ورفت منقطع ہو گئی ہے اس لیے کہ اب کوئی غیر تھوڑا حاضر حجرۂ مقدسہ ہے بلکہ اپنے ہیرو ہیں اپنے رہبر ہیں، اپنے لیڈر ہیں اپنے موحد ہیں یہ جو کریں سب درست اور دوسرے جو کریں وہ سب غلط دونوں جگہ نہ الفاظ ایک جیسے، نہ ہی طرز فکر ایک جیسا، نہ فتوی ایک جیسا، نہ گرجنے برسنے کا انداز ایک جیسا، لگتا ہے یہ کوئی حکمت ہے جو صرف آپ سمجھتے ہیں دوسرا کوئی اسکا عشر عشیر بھی نہیں جان سکتا، اگر بات یہاں تک ہی ہوتی تو شاید آپ دھوبی پٹکا مار کر بچ نکلتے مگر معاملہ کچھ اور بھی سنگین نوعیت کا ہے، لیجئے اپنے دھڑکتے دل پر ہاتھ رکھیے اور اسکو تسلی دیجئے اور حق سننے کی ہمت پیدا کیجئے تا کہ آپکو بھی حق گوئی کی دولت نصیب ہو، آپ موحد ہیں آپ تو کسی کی کوئی رعایت نہیں فرماتے، آپ صرف اللہ تعالی کو راضی کرنا چاہتے ہیں، آپ کو کیا غرض کسی کی ذات پات یا جماعتی تعلق سے لیجئے آنکھیں کھولیے اور دن کی روشنی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



میں مطالعہ فرمائیے ان شاء اللہ حق واضح ہو جائے گا سید احمد شہید صاحب فرماتے ہیں اور انکا یہ فرمانا آپ کے نزدیک کس درجے میں ہے وہ تو ہمیں معلوم ہی ہے کہ آپکے نزدیک تو سید صاحب حق گو ہیں حق پرست ہیں حق کی خاطر جہاد کرتے رہے ہیں، حق کی راہ میں جان دے دی تھی، اور مرتبہ شہادت پر فائز ہوئے ہیں وہ خلیفۃ اللہ بالیقین بھی ہیں لہذا وہ کیسے غلط کہہ سکتے ہیں اور کیسے غلط کر سکتے ہیں۔

## اے جدہ امجدہ:

"وپیش تربت شریفہ گدایانہ ندا کردہ گفتم کہ اے جدہ امجدہ من مہمان شما استم چیز خوردنی، عطا فرما"۔ (مخزن احمد، 99)

"سید احمد شہید صاحب ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ عنھا کی قبر شریف کے پاس بلکہ قبر انور کے سامنے کھڑے ہو کر گدایانہ ندا کرتے ہیں اے میری جدہ امجدہ یعنی اے میری دادی جان میں آپکا مہمان ہوں کھانے کو کچھ عنایت فرمائیے"۔

کیوں امیر حمزہ صاحب یہ عبارت جناب والا کی نظر سے نہ گزاری تھی یہ انداز گدایانہ آپکو یاد نہ تھا جو آپ نے آنکھیں بند کر کے قبوری عقیدہ، قبوری عقیدہ کی رٹ لگائی اور آنکھیں نیم کھلی تھیں کہ قبوری عقیدے کو شرک سے موسوم کر دیا اور پھر وہ وہ جملے کسے کہ پڑھنے والا ورطہ حیرت میں پڑ جاتا ہے اب تو آپ کو ہوش آ ہی گیا ہوگا اب تو آپ بڑی سرعت سے اس عمل پر شرک کا فتوی صادر فرمائیں گے، آخر آپ موحد ہیں حق پرست ہیں آپ تو صرف اللہ تعالی ہی سے ڈرتے ہیں کیا مجال جو غیر اللہ سے ذرا بھی خوف کھائیں وہ تو آپکے خمیر میں ہی نہیں ہے ہم بھی امید کرتے ہیں آپکا قلم حق و صداقت کے تمام تقاضوں کو پورا کرے گا اور پوری توانائی کے ساتھ اور پوری غیرت



دینی کے ساتھ آپ سید احمد صاحب کے ساتھ بھی وہی سلوک فرمائیں گے جو دوسرے مسلمانوں سے فرمایا ہے کھولیے زبان مبارک اٹھائیے قلم انور اور صفحات قرطاس پر بکھیرئے اپنے نظریات وعقائد تا کہ ساری دنیا آپ کا حق سن سکے پڑھ سکے اور محسوس کر سکے اب آپ اندر بیٹھ کر روئیں گے آنسو بہائیں گے ہائے شاہ جی آپ نے یہ کیا کر دیا آپ کیوں چلے گئے قبر انور سیدہ میمونہ پر آخر ہم سے مشورہ کر لیا ہوتا ہمیں پوچھ لیا ہوتا ہمارے پلے تو کچھ رہنے نہ دیا آپ نے ہم جسکو شرک کہتے تھے آپ نے وہ سب کچھ کر دکھایا، آخر اب ہم کدھر جائیں۔ کچھ بھی نہیں صرف آپ شاہ جی کو اپنی جماعت سے خارج کر دیں اور کہہ دیں کہ ہمارے نہیں، ہیں بس اتنی ہی بات ہے آپ ایسے پھنسے ہیں کہ انکار کر سکیں گے نہ اقرار، اقرار کریں تو مجرم؟ انکار کریں تو مجرم بس فیصلہ گھر میں بیٹھ کر ہی کیجئے گا کیا کرنا ہے ہم نے آپکو آئینہ دکھا دیا ہے اور آئینہ کبھی بھی خیانت نہیں کرتا جیسی شکل ہوگی بالکل ویسی ہی دکھائے گا تبدیلی نہیں آنے دیتا،

ہم نے جو آئینہ دکھایا تو برا مان گئے

## قبر پر مانگتے نظر آتے ہیں:

میں اور کچھ نہیں کہتا، صرف اللہ تعالی کے مبارک نام کا واسطہ دیکر عرض کرتا ہوں، جنکو آپ نے اپنا ہیرو (Hero) اور اپنا لیڈر (Leader) تسلیم کیا ہے، اور انکے قصیدے پڑھتے پڑھتے آپکا گلا خشک ہوا جاتا ہے، جنکی مدحت کرتے کرتے آپکی زبان نہیں تھکتی، جنکی تعریف میں آپکا قلم دوڑا جاتا ہے کہیں رکنے کا نام تک نہیں لیتا، جنکو آپ موحد شرک سے پاک، حسن العقیدہ، حسن العمل، لیڈر، رہنما، اور نجانے کن کن القابات سے نوازتے ہیں اب تو وہ بھی قبر پر مانگتے نظر آتے ہیں، اور یوں بات کرتے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



ہیں، جیسے زندوں سے کی جاتی ہے آپ تو فرماتے کہ قبروں والے بے خبر ہیں، نہیں سنتے نہیں جانتے نہیں پکھ دیتے تو آخر یہ کیا ہے؟ کیوں نداء کی جارہی ہے کیوں دادی جان سے روٹی مانگی جارہی ہے

WHAT IS THE RESON OF THIS MATTER ?

WHAT IS THE COUSE OF THIS MATTER ?

IS IT YOUR FAITH? IS IT YOUR RELIGION ?

IS IT THE FACT? WHAT IS YOUR ANSWER ?

YES OR NO

## توجہ طلب چیز:

☆ کیا قبر کے سامنے کھڑے ہو کر گدایانہ نداء کرنا آپ کے مذہب میں شرک نہیں؟

☆ کیا قبر انور پر حاضر ہو کر صاحب قبر سے گفتگو کرنا یہ شرک کے زمرے میں نہیں آتا؟

☆ کیا قبر والوں کو "یا" کے صیغہ سے نداء کرنا اور ان کو اپنا رشتہ یاد دلانا یہ شرک نہیں؟

☆ کیا صاحب قبر کو اپنا تعلق رشتہ یاد دلا کر یوں عرض کرنا اے جدہ امجدہ میں صرف آپ کا پوتا ہی نہیں بلکہ آپ کا مہمان بھی ہوں شرک نہیں؟

☆ کیا قبر والوں سے کھانے پینے کی کوئی چیز طلب کرنا شرک تو نہیں؟

سوال کا جواب ہاں یا ناں میں آنا چاہیے۔

اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو میں سید احمد شہید صاحب کے الفاظ ایک بار پھر آپ کو یاد کروا دیتا ہوں۔ مطالعہ فرمایئے:

"پیش تربت شریفہ گدایانہ نداء کردہ گفتم کہ اے جدہ امجدہ من مہمان شما ستم



چیز خوردنی عنایت فرما" (مخزن احمدی 99)

"سید احمد شہید صاحب قبر انور کے بالکل سامنے کھڑے ہو کر عرض کرتے ہیں کہ یا جدہ امجدہ یعنی اے دادی جان میں آپ کا مہمان ہوں کچھ کھانے کو دیجئے"۔

☆ کیوں جناب امیر حمزہ صاحب قبوری عقیدہ کیسا ہے؟

شرک ہے نا۔

☆ قبر والوں کو صیغہ "یا" کے ساتھ نداء کرنا کیسا ہے؟

شرک ہے نا۔

☆ قبر والوں سے گدایانہ نداء کرنا کیسا ہے؟

شرک ہے یا نا۔

☆ قبر والوں سے کھانے کو کچھ مانگنا کیسا ہے؟

شرک ہے یا نا۔

## پوچھ سکتا ہوں:

میں کچھ بھی نہیں کہتا مگر ایک بات پوچھ سکتا ہوں اجازت ہے جو کچھ میں نے اوپر تحریر کیا ہے۔ وہ سب کچھ آپ کے گھر کے بزرگ کرتے رہے ہیں یا نہیں جواب یقیناً ہاں میں ہے۔

## "کرتے رہے ہیں"

اگر یہ سب کچھ آپ کے بزرگ کرتے رہے ہیں تو آپ ایسا کرنے والوں کو مشرک ٹھہرا سکتے ہیں؟ جواب صرف آپ سے درکار ہے ورنہ قارئین تو یقین کر چکے جو جرم آپ نے دوسروں کے سر تھوپا تھا۔ وہی جرم آپ کے بزرگ آپ کے ہیرو

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



(Hero) اور آپ کے لیڈر (Leader) مجاہد فی سبیل اللہ بھی کر رہے ہیں۔ تو فتویٰ بھی جدا جدا نہیں ہونا چاہیے۔ فتویٰ دونوں جگہ ایک ہونا چاہیے کہ جرم دونوں جگہ ایک ہے۔

## سوچنے سمجھنے کی صلاحیت:

اگر آپ میں سوچنے سمجھنے کی صلاحیت ہے تو پھر غور فرمایئے آپ کے قلم سے جلدی جلدی میں کیا کچھ صادر ہو گیا۔ مجھے یوں لگتا ہے جیسے آپ لکھتے وقت ہوش میں نہ تھے۔ اگر باہوش ہوتے تو اپنے گھر کے بزرگوں کی کتابیں تو پوری طرح نظر سے گذاری ہوتیں۔ میں تو صرف اتنا عرض کروں گا صحافی ہونے کا ادّعا الگ چیز ہے اور صحافی ہونا دوسری چیز، کہاں صحافت اور کہاں آپ کی مساعی مبارکہ دونوں میں زمین و آسمان کا فرق ہے۔ ابھی تو میں نے ایک حوالہ پیش کیا ہے آگے آگے دیکھیں ہوتا ہے کیا۔

## اندھیرے میں نظر آئے:

آپ تو اپنی مؤلفات میں بار بار اعلان کر چکے ہیں۔ قبوری عقیدہ شرک ہے قبر والوں سے مانگنا شرک ہے وہ کسی کو کیا عطا کرے جو خود ہی مر گیا ہو۔ شاید تھوڑی دیر کے بعد میں آپ کے گھر کے بزرگوں سے کرامات کا صدور بھی ذکر کروں گا۔

پھر تو آپ کی آنکھیں پوری طرح کھل جائیں گی۔ اور عین ممکن ہے کہ آپ کو اندھیرے میں بھی نظر آنے لگے گا یہ بھی کرامت ہی ہوگی اگر آپ کو اندھیرے میں نظر آنے لگ گیا اگرچہ حال آپ کے اپنے ہی خاں دکا ہوگا۔ لگتا ہے آپ اپنے مضامین نیم بے ہوشی کے عالم میں لکھ گئے ہیں اور ہوش میں جو نہ ہو وہ کیا نہ کرے اگر



آپ ہوش میں ہوتے تو آپ کو اپنے بزرگ سید احمد شہید صاحب کی حیات مبارکہ اور ان کا عمل مبارک بھی یاد ہوتا۔ اگر یاد ہوتا تو آپ ان کو اپنا لیڈر خدا پرست، شرک سے کوسوں دور، مجاہد فی سبیل اللہ کیسے کہتے۔ اگر آپ کو پتہ ہوتا کہ آپ کے بزرگ بھی اسی لائن میں لگے نظر آتے ہیں تو رنگِ تحریر جداگانہ ہوتا۔

☆ آپ تو درباری حاضری کو جہنم سے تعبیر کرتے ہیں۔

☆ آپ تو قبوری حاضری کو شرک کہتے ہیں۔

## تازہ دم ہو جایئے:

آپکے بزرگ تو حاضری سے آگے نکل کر گداگری کرنے پر آ گئے ہیں اگر آپ کے حافظے سے اتر گیا ہو تو عرض کرتا ہوں لیجئے تازہ دم ہو جایئے تاکہ اچھی طرح ذہن نشین ہو جائے۔

جناب سید احمد شہید صاحب حضرت سیدتنا میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی بارگاہ میں عرض کرتے ہیں:

"پیش تربت شریفہ گدایانہ ندا کردہ گفتم کہ اے جدہ امجدہ من مہمان شما ہستم چیزی خوردنی عطا فرما" (مخزن احمدی 99)

"قبر شریف کے سامنے گدایانہ ندا کرتے ہوئے کہتے ہیں یا جدہ امجدہ میں آپ کا مہمان ہوں کھانے کو کچھ عطا فرما دیجئے"۔

☆ اگر قبر پر حاضری شرک ہے تو آپ کے امام و پیشوا نے دی

☆ اگر قبر پر جا کر کھڑے ہونا شرک ہے تو شاہ صاحب قبر پر حاضر کھڑے ہیں وہ بھی بطور مہمان۔

☆ اگر قبر کو مزار شریف کہنا شرک ہے تو آپ کے ہیرو (HERO) مزار

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



شریف اور قبر شریف بھی کہہ رہے ہیں۔

☆ اگر قبر والوں سے کچھ عرض کرنا شرک ہے تو وہ بھی آپ کے لیڈر (LEADER) سے آپ کے رہبر راہنما سے سرزد ہو رہا ہے۔

☆ اگر قبر والوں کو "یا" کے صیغے سے ندا کرنا شرک ہے تو وہ بھی آپ کے امام کر رہے ہیں۔

اگر یہ عقیدہ رکھنا شرک ہے کہ قبر والے جانتے پہچانتے ہیں تو آپ کے ہیرو مجاہد فی سبیل اللہ اعلان کر رہے ہیں قبر والے جانتے ہیں پہچانتے ہیں تبھی تو عرض کرتے ہیں چیز خوردنی عطا فرما۔

## اس وقت امت کا مرض:

نامعلوم آپ نے کس بند کمرے میں بیٹھ کر قلم کو جنبش دی، کس جنگل میں جلوہ فرما ہو کر قلم کو تحرک دیا، کس وادیٔ ناشناس میں گم ہو کر یہ سب کچھ لکھ ڈالا کاش آپ نے تاریخ اقوام عالم کا مطالعہ کیا ہوتا کاش آپ کسی ذی شعور آدمی کی صحبت میں رہے ہوتے جو آپ کو اس امت کا مرض تشخیص کر کے بتاتا اور پھر اس مرض کا علاج بھی تجویز کرتا نہ تو آپ کو اس امت کا مرض سمجھ آیا اور نہ ہی اس کے علاج کا پتا چلا اب آپ خود ہی غور فرمائیں آخر کیا کیا جائے جو ڈاکٹر مرض کی تشخیص کیے بغیر دوا دے دے اس کو آپ کتنا بڑا عقل مند کہیں گے آخر خود ہی غور کیجئے ہم کیا عرض کریں آپ کو نہ مرض امت کا پتا نہ علاج ملت کی خبر، آخر آپ کا کیا کیا جائے۔ آپ کو کسی ماہر ڈاکٹر سے اپنا علاج کروانا چاہیے کہ آپ خود بیمار ہیں اور بیمار بیماری میں کسی دوسرے کا کیا علاج کرے جب تک خود صحت مند نہ ہو جائے۔ سنیے اس امت کا مرض شرک نہیں ہے اس امت کا مرض خود غرضی ہے، خود پرستی اور ہوس مال و زر ہے اس مرض کا علاج



کرنا چاہیے جو امت کا مرض ہی نہیں اس کا علاج کیا۔ آپ پہلے خود اپنا علاج کروائیں جب آپ صحت یاب ہو جائیں گے تو پھر دوسروں کے امراض کا علاج کرنے کی سعی فرمایئے گا۔

مشورہ دیا ہے آپکو وہ بھی مفت

## فیصلہ قارئین پر چھوڑتا ہوں:

لگتا ہے کہ آپ نے قلم کو جلد بازی میں بے لگام چھوڑ دیا تھا اب پتا چلے گا کہ کون کتنے پانی میں ہے آپ پر تو ایک جنوں طاری تھا اس میں آپ نے نامعلوم کیا کیا لکھ ڈالا غالبًا یہ ہوا کہ آپ نے کسی سے مشورہ بھی نہیں لیا تھا۔ آپ کو کوئی مشورہ دینے کی پوزیشن (POSITION) میں ہی نہیں تھا بہر نوع کچھ بھی تھا آپ نے بغیر سوچے سمجھے حضرات اولیاء کرام کی خدمت دین کا انکار کر دیا اور وہ بھی کھلے لفظوں میں:

## لو آپ اپنے دام میں صیاد آ گیا:

چلئے جو کچھ بھی ہوا سو ہوا تھوڑی دیر سے ہی ہم نے آپ کو مطلع کر دیا ہے کچھ کیا ہوتا ہے اگر آپ کے گھر کا معاملہ یہاں تک بھی رہتا تو شاید آپ کوئی نہ کوئی راہ نکال ہی لیتے مگر معاملہ آپ کی دسترس سے بہت آگے نکل چکا ہے آپ کے بھاگنے کے تمام راستے بند ہیں۔ بلکہ آپ نے خود ہی ایک ایک کر کے تمام دروازے بند کر دیئے ہیں۔

اللہ کی جلالت کی قسم ہم آپ کی خاں و تلاشی نہ لیتے نہ طشت از بام کرتے اور نہ ہی آپ کے بزرگوں کو اس طرح لا کر میدان میں کھڑا کرتے اگر آپ نے حضرات اولیاء کرام حضرت داتا گنج بخش علی ہجویری، حضرت شیخ عبد القادر جیلانی غوث اعظم، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت بابا فرید الدین گنج شکر، حضرت خواجہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



بہاالدین زکریا ملتانی، حضرت علاؤ الدین صابر کلیری حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی، حضرت امام احمد رضا خاں قادری محدث بریلوی اور دیگر بزرگانِ دین رحمتہ اللہ علیہم اجمعین کو اپنی تحریروں میں موردِ الزام نہ ٹھہرایا ہوتا:

**الجھا ہے پاؤں یار کا زلفِ دراز میں**

**لو آپ اپنے دام میں صیاد آگیا**

## نقطۂ نظر:

آپ نے بار بار اپنی تحریروں میں فرمایا ہے، فاتحہ، ختم ثابت نہیں جناب آپ ہم سے کیا پوچھتے ہیں آپ اپنے ہی اکابر سے پوچھئے۔

اگر آپ کو اپنے گھر سے اس کی شہادت مل جائے تو وہ زیادہ اہم ہوگی بجائے اس کے کہ ہم آپ کو کوئی دلیل پیش کریں یا شہادت دیں۔ میں پورے زور سے کہوں گا آپ جس نقطۂ نظر کو لے کر نکلے تھے وہ چونکہ سرے سے ہی کمزور تھا اس لئے آپ باوجود کہ سینکڑوں صفحات سیاہ کر چکے اپنے نقطۂ نظر کو ثابت کرنے میں ناکام رہے ہیں اور آئندہ قیام قیامت تک آپ اس نقطۂ نظر کو کسی بھی زاویے سے ثابت نہ کر سکیں گے۔ میں نے کوئی لمبی چوڑی ابحاث نہیں چھیڑیں بلکہ سیدھا سیدھا موقف آپ کی خدمت عالیہ میں پیش کیا ہے اور جب ضرورت دلیل کی پڑی تو آپ کے ہیرو کو آپ کی خدمت مقدسہ میں لا کھڑا کیا تاکہ آپ بچ نکلنے کی کوشش بھی کریں تو بچ کر نکل نہ سکیں۔



## کور بینی:

آپ نے چونکہ فاتحہ و ختم کے خلاف بہت زور صرف کیا ہے اور بار بار اعلان کیا ہے کہ یہ ثابت نہیں ہے۔ چلئے ہم آپ کو دکھا ہی دیتے ہیں۔ مطالعہ فرمایئے تاکہ آپ کی آنکھیں بھی روشن ہو جائیں اور آپ کو صحیح نظر آنے لگے اور آپ کی کور بینی اللہ کرے محو ہو جائے اور بڑا واضح واضح حق نظر آئے اور دیکھنے کے بعد اس کو تسلیم کرنے کی ہمت بھی پیدا ہو جائے میں نے واللہ صرف اور صرف اصلاح کی غرض سے ہی یہ لکھا ہے ورنہ مجھے ہرگز ضرورت نہ تھی کہ میں آپ کی جنونی قسم کی باتوں کا جواب دیتا بہر حال میں حق کو پوری قوت سے غالب آنے کی صلاحیت سے بھرپور مانتا ہوں اور مجھے یقین کامل ہے حق پورے زور سے غالب آکر ہی رہے گا۔ صاحب مخزن احمدی رقم طراز ہیں۔ ''آنگاہ سلام کردم و فاتحہ و اخلاص خوانده بروح پر فتوحش فرستادم'' (مخزن احمدی 99)

''وہیں کھڑے کھڑے ام المومنین حضرت میمونہ رضی اللہ عنہا کی خدمت اقدس میں سلام عرض کیا، سورۃ فاتحہ پڑھی، سورۃ اخلاص کی تلاوت کی تاکہ سیدہ کی روح پُرفتوح کو ثواب پہنچایا جائے''۔

## ایصالِ ثواب:

ہم اگر فاتحہ پڑھیں، اگر ہم سورہ اخلاص ''قل ھو اللہ احد الخ'' تلاوت کر لیں تو فوراً شرک و بدعت کی نہ ختم ہونے والی گردان شروع کر دی جاتی ہے وہ بھی بے وزن۔ آپ آنکھیں کھول کر دن کی روشنی میں مطالعہ فرمائیں جس کو آپ نے نامقبول عمل قرار دیا تھا اور اس کی مخالفت کو اپنے اوپر لازم جانا تھا اور اس کی تردید میں قلم کو بے لگام کر

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



دیا تھا اور اپنے جذبات کو حدود ادب سے بھی آزاد کر دیا تھا وہ انداز اپنایا تھا کہ گویا اس جہاں میں اب آپ ہی کا راج ہے دوسرا کوئی آپ کی تحریروں کو تنقید کا نشانہ بنا ہی نہیں سکتا تو یاد رکھنا چاہیے تھا اب بھی اس دنیا میں حق قائم ہے، صداقت موجود ہے، دیانت کی جان میں جان ہے۔ آپ لاکھ کوشش کریں کہ صرف آپ ہی کا نقطۂ نظر ساری امت مان لے تو یہ کبھی بھی ممکن نہیں ہے۔ دوسروں کو تو آپ تب قائل کر سکتے تھے اگر آپ کے اپنے گھر میں وہ تمام اعمال کبھی نہ ہوئے ہوتے ہم نے تو آپ کی خدمت میں آپ کے لیڈر، آپ کے ہیرو اور آپ کے خلیفۃ اللہ بالیقین کو پیش کر دیا ہے وہ بھی فاتحہ پڑھنے کے قائل ہیں وہ بھی سورہ اخلاص پڑھ کر ایصال ثواب کرتے ہیں اور ابھی ابھی مخزن احمدی کا حوالہ آپ کی خدمت میں پیش کیا:

کیوں جناب اب تو ہم آپ سے سوال کرنے کے حقدار ہیں نا اگر آپ کے بزرگ قبر انور پر حاضری دیں۔

اگر آپ کے بزرگ قبر منور پر سلام عرض کریں

اگر آپ کے بزرگ قبر پر فاتحہ خوانی کریں اور ان کو ایصال ثواب کریں تو یہ بالکل درست اور یہی دین وایمان اور اگر یہی عمل دوسرے کریں تو بلا روک ٹوک بدعت، گمراہی شرک اور خلاف اسلام آخر یہ دورنگی کیوں؟

دورنگی چھوڑ دے یک رنگ ہو جا
سراسر موم ہو یا سنگ ہو جا

## شرک کا تانا بانا:

[illegible] حقیقت:...شور سے حضرات اولیا اکرام علیہم الرضوان پر شرک کا تانابانا



تھا۔ وہ آپ کے گھر کے بزرگ نے تار تار کر دیا آپ نے مخزن احمدی کا مطالعہ نہیں فرمایا تھا اگر ایک نظر بھی اسے دیکھا ہوتا تو ضرور شاہ صاحب سے منہ پھیر لیتے اور ان کو اسی صف میں لا کر کھڑا کرتے جہاں دوسروں کو کیا۔

چلئے مان لیتے ہیں کہ آپ کو ان کے بارے میں معلومات نہ تھیں اور آپ نے لاعلمی میں سید صاحب کو اپنے ہیرو کے طور پر پیش کر دیا۔ اب علم ہو جانے کے بعد تو اظہار برأت ضروری ہے نا۔ وہ کیجئے اس کے بغیر چارہ ہی نہیں اب آپ شرک کی زد سے بھی بچ سکتے ہیں جب صاف صاف اعلان کریں کہ وہ ہمارے بزرگ نہیں ہیں اور ان کیلئے بھی وہی زبان استعمال کریں جو دوسروں کے لئے کی ہے پھر تو کچھ پتا چلے کہ آپ حق گوئی اور بے باکی کے اہل ہیں۔

یہ تو آپ کی سمجھ مبارک میں آ ہی گیا ہوگا کہ سید احمد شہید صاحب آپ کے ہادی و مرشد، خلیفۃ اللہ بالیقین سیف الھند۔ فاتحہ کے بھی قائل ہیں ایصالِ ثواب کو بھی مانتے ہیں قبر والوں کو زندہ بھی تسلیم کرتے ہیں۔ اور یہ بھی مانتے ہیں کہ وہ سن لیتے ہیں اور سننے کے بعد آنے والوں کو پہچان بھی لیتے ہیں۔ وہ یہ بھی عقیدہ رکھتے ہیں قبر والے مانگنے پر بھی عطا کرتے ہیں اب صرف اتنا باقی ہے قبر والے جو عطا کرتے ہیں وہ نظر بھی آتا ہے یا نہیں یہ بھی اپنے مرشد و ہادی کی زبانی سنئے:

## کوہِ گراں گرنے والا ہے:

ذرا دل کو تھام لیجئے آپ کے عقیدہ پر کوہِ گراں گرنے والا ہے جو کچھ زیر این آیا چور چور ہو جائے گا آپ کے عقیدے کا محل لگا ہے زمین بوس ہونے، عقل ودانش کو مضبوطی سے تھام رکھیے کہیں چلتی نہ بنے اب تو ذہنی طور پر آپ سننے کے لائق ہو ہی گئے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



ہوں گے۔ تو پھر سن لیجے آپ حیران نہ ہوں میں نے ایک لفظ بھی پلے سے نہیں لگایا بلکہ اسی طرح نقل کر رہا ہوں جس طرح آپ کے بزرگ فرماتے ہیں جیسے ان کو قبر سے فیض ملا ہے۔ اب یہ فیصلہ بھی آپ نے اپنے ہی گھر میں بیٹھ کر کرنا ہے کہ آپ کے ہادی و مرشد خلیفۃ اللہ بالیقین سچ بولتے ہیں یا جھوٹی کہانی سناتے ہیں۔ بہر حال سن لیجے۔

''آنگاہ نشستہ سر بر قبرش نہادہ بودم از رزاق مطلق و دانائے برحق دو خوشہ انگور تازہ بدستم افتادہ طرفہ تر آن کہ آن ایام سرما بود و ہیچ جا انگور تازہ میسر نبود'' (مخزن احمدی 99)

''ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی قبر انور پر سر رکھ دیا اسی وقت رزاق مطلق اور دانائے برحق نے دو تازہ انگور کے گچھے میرے ہاتھ میں دے دیے۔ طرفہ تر یہ کہ وہ موسم سرما تھا اور اس وقت انگور تازہ میسر نہ تھے''۔

## تحریری قلابازیاں:

ایمان سے کہیے، قبر پر حاضری باعث عطا ہوئی کہ نہیں، آپ تو اس کو ''قبوری عقیدہ'' کہتے ہیں اور باطل عقیدہ قرار دیتے ہیں اب تو آپ کے ہیرو بھی قبر شریف پر ہیں۔ بلکہ مزار فائض الانوار پر حاضر ہیں نہ صرف حاضر ہیں اپنی دادی جان حضرت ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی قبر منور پر سر بھی رکھ دیا ہے۔ آپ کی وہ بڑھکیں، آپکا وہ جارحانہ طریق کار، آپ کی وہ پھبتیاں، آپ کی وہ مزاح اندازیاں، آپ کی وہ قلابازیاں آپ کی تحریر کا وہ رنگ...... کدھر گیا۔ اب بولیں کہیں یہ سب کیا ہے ہمارا قبروں پر حاضری دینا ہمارا صرف مزارات اولیاء پر جانا شرک اور آپ کے دادا جان کا مزار پر جانا، وہاں جا کر بیٹھ جانا، گدایانہ نداء کرنا، منگتا بن کر مانگنے لگ



جانا، نہ صرف دست سوال دراز کرنا بلکہ اپنا سر بھی قبر انور پر رکھ دینا اور پھر وہاں سے دو تازہ انگوروں کے گچھے مل جانا یہ سب کیا ہے اس کو اب آپ کس زمرے میں رکھیں گے اس کو اب کونسا عمل قرار دیں۔ کیا اس کو قبوری عقیدہ کہیں گے؟ کیا اس کو مشرکانہ طرز عمل قرار دیں گے؟ کیا اس کو قبر سے مانگنا قرار دیں گے کیا اس کو راہ حق سے علیحدگی قرار دیں یا نہیں بس فیصلہ آپ خود کریں اور قارئین نے تو فیصلہ دے دیا کہ جو کچھ امیر حمزہ صاحب نے اپنی کتابوں ''مذہبی و سیاسی باوے'' آسمانی جنت اور درباری جہنم'' اور ''شاہراہ بہشت'' میں لکھا ہے سب غلط ہے وہ حقیقت سے بہت دور ہے اس کو سراسر جہل اور بدیانتی پر ہی محمول کرنا چاہیے۔

## انگور مزے دار تھے:

شاہ جی جب حجرۂ مقدسہ سے دو تازہ تازہ انگوروں کے دو خوشے لے کر باہر تشریف لائے تو بیان کرتے ہیں وہ انگور بڑے ہی مزے دار تھے شاید کبھی پہلے اس طرح کے انگور انہوں نے تناول ہی نہ فرمائے تھے نہ صرف یہ کہ خود تناول فرمائے بلکہ ایک ایک دانہ ان کو بھی عطا فرمایا جو باہر موجود تھے۔

## تبرک تقسیم:

آپ ہی بتائیں یہ جو دو تازہ خوشے انگور کے ملے تھے ان کو شرک کہیں گے یا کچھ اور اگر یہ تبرک ہے تو پھر آپ نے جو مخالفت تبرک کی کی ہے وہ کس زمرے میں جائیگی اور جو تقسیم تبرک ہوا وہ کیا تھا۔ لگتا ہے آپ کو اپنی کی ہوئی بات یاد تک نہیں رہتی ورنہ یہ دو رخی کیوں ہوتی۔ میں چاہوں گا آپ اپنے دادا جان کی اپنی بات پڑھ لیں تا کہ قوت ایمان تازہ ہو جائے لیجئے حاضر ہے وہ عبارت جو مخزن احمدی میں ہے:

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



''از حجرہ بیرون شدم و یک یک دانہ بہر یک تقسیم کردم'' (مخزن احمدی 99)

''جب میں حجرہ شریف سے باہر آیا تو جو لوگ باہر موجود تھے ان میں سے ہر ایک کو ایک ایک دانہ انگور تازہ کا تقسیم کیا''۔

## جیت کس کی ہوگی:

حجرہ شریف سے باہر آنا اور پھر ان لوگوں میں جو باہر پہلے ہی تبرک کا انتظار کر رہے تھے ان میں ایک ایک دانہ تقسیم فرمانا سبحان اللہ کیا خوب مقام و مرتبہ ہے۔ اس نقطہ نظر کو اگر آپ کے اکابر کے درمیان پیش کیا جائے تو کیا ہوگا ابن تیمیہ صاحب تو اس طرح کے عمل کے مخالف ہیں ابن قیم بھی انکے قریب قریب ہیں اسی طرح ابن کثیر صاحب بھی انہی کے ہمنوا ہیں تقریباً ابن عبدالوہاب بخدی تو کھلم کھلا مخالفت کرتے ہیں مذکورہ بالا عمل کی علامہ وحید الزماں صاحب بھی سخت مخالف ہیں۔ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی بھی اس مسئلہ میں بڑے سخت گیر واقع ہوئے ہیں اگر ان حضرات کے درمیان لڑائی ہوگئی تو کیا ہوگا ظاہر ہے جب دنگل لگے گا تو اس میں جیت تو شاہ جی کی ہوگی نا آخر وہ سید السادات امام المجاہدین۔ خلیفۃ اللہ بالیقین ہیں۔

اس میدان میں اگر جیت شاہ جی کی ہوگی تو آپ تو اپنا سا منہ لے کر رہ جائیں گے نا۔ کل جو آپکو ہزیمت اٹھانا ہوگی تو آج ہی کچھ ایسا کیجئے کہ کل رسوائی نہ ہو عقل مند بندہ وہی ہوتا ہے جو کل کی سوچے آپکو بھی ہم صحیح مشورہ دیتے ہیں آج ہی موقف تبدیل کر کے سید السادات صاحب کے ہم نوا بن جایئے ورنہ.........آپ کو دیانتداری سے خیر کی طرف بلا رہے ہیں اسی میں آپ کا فائدہ ہوگا اگر اس کے خلاف کریں گے تو فائدے کی بجائے الٹا نقصان ہوگا۔ اولاً سید صاحب کا تبرک حاصل کرنا



ثانیاً اس کو حاضرین میں تقسیم کرنا وہ بھی اس قدر احتیاط کے ساتھ کہ کوئی محروم نہ رہ جائے اس لئے ایک ایک دانہ کر کے دیتے رہے جو آئے سو فیض پائے تبرک کھائے اور عیش دنیا و آخرت کا حقدار بن جائے اگر شاہ جی کا تبرک لینا اور پھر تقسیم کرنا ذہن سے اتر گیا ہے تو تازہ فرما لیجئے تا کہ سکون قلب میسر آئے۔

''از حجرہ بیرون شدم و یک یک دانہ ہر یک تقسیم کردم'' (مخزن احمدی 99)۔

''میں حجرہ شریف سے باہر آیا تو ہر کسی کو ان انگوروں سے ایک ایک دانہ تقسیم کیا''۔

اب بتایئے تبرک کے بارے میں کیا رائے ہے؟ چلئے یکدم سے جواب نہیں بن پا رہا تو کچھ توقف فرما لیجئے تا کہ جواب مستحضر ہو جائے جب یاد آ جائے تب جواب دے دیجئے گا مگر جواب دینا ضرور۔

## حکم شرک لگایئے:

ہم بھی تو یہ پوچھنے کا حق رکھتے ہیں نا، تبرک لینا کیا ہے؟ اسے حاصل کر کے، خود تناول کرنا کیا ہے؟ وہی تبرک جو مزار فائض الانوار سے ملا ہے اسکو آگے تقسیم کرنا وہ بھی دانہ دانہ کر کے کیا ہے؟ یہ تو سب کچھ آپ کی کتب میں شرک، بدعت اور گمراہی ہے۔ اگر یہ واقعی شرک ہے، بدعت ہے، اور گمراہی ہے تو اب سید السادات امام المجاہدین، خلیفۃ اللہ بالیقین پر کیا حکم لگے گا؟ لگایئے نا وہی حکم جو آپ کی کتب میں لگایا گیا ہے۔ اگر آپ کے ہاں آج بھی صداقت نام کی کوئی چیز موجود ہے، دیانت نام کی کوئی خوبی حاضر ہے اور شرافت نام کی کوئی شے آپ کے ہاں اب تک زندہ ہے تو وہی حکم سید صاحب پر لگایئے جو دوسرے مسلمانوں پر لگایا تھا۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## دم خم نہیں رہا:

مجھے معلوم ہے اب آپ چپ سادھ لیں گے کوئی جواب نہ دیں گے اب قلم حرکت میں آنے کی بجائے آپکی جیب میں گھس جائے گا شاید آپ یہ کہہ کر ٹال دینے کی کوشش کریں قلم خراب ہو گیا ہے سیاہی نہیں ہے اگر قلم خراب ہے تو ہم نیا حاضر کرنے کو تیار ہیں اگر سیاہی ختم ہے تو نئی بوتل بہم پہنچانے کیلئے ساعی ہونگے بس اب جواب ضرور آنا چاہیے ورنہ اہل علم طعنہ دیں گے کہ امیر حمزہ صاحب میں صداقت کا مظاہرہ کرنے کا دم خم نہیں رہا۔

کشتی بھی نہیں بدلی، دریا بھی نہیں بدلا
اور ڈوبنے والوں کا جذبہ بھی نہیں بدلا
ہے شوق سفر ایسا اک عمر سے یاروں نے
منزل بھی نہیں پائی رستہ بھی نہیں بدلا

## حق وصداقت کا علم بلند فرمایئے:

امیر حمزہ صاحب جب آپ نے مضامین لکھنے کا ارادہ کیا تھا تو کسی صاحب علم وفن سے مشورہ نہیں کیا ورنہ قلم یوں بے احتیاطی سے تو نہ چلتا جس طرح چلایا گیا ہے اور آج جو کچھ آپ پر بیت رہی ہے وہ تو نہ بیتتی مگر کیا کیا جائے قصور تو آپ کا اپنا ہی ہے نا ہم نے کب آپکو دعوت دی تھی کہ اس طرح قلمکاری فرمائیں تو ہم آپکی قلمی کاوش پر پانی پھیریں فرمایئے اب بھی وہی رٹ لگے گی قبر پر حاضری دینا، مزارات پر حاضری کیلئے جانا، وہاں جا کر منگتوں کی طرح سوال کرنا۔ اہل قبور سے کچھ طلب کرنا مانگنا اور انکو "یا" کے صیغے سے نداء کرنا اور یہ عقیدہ رکھنا کہ وہ سنتے ہیں اور یہاں [illegible]



عقیدہ ہے یہ سب شرک ہے، گمراہی ہے، بدعت ہے، میں نے آپکے ہیرو(Hero) آپکے لیڈر(Leader) آپکے امام المجاہدین جناب سید احمد شہید صاحب کو مزار پر جاتے دکھایا ہے وہاں جا کر گدایانہ ندا کرتے ہوئے دکھایا ہے اور پھر یہی نہیں بلکہ اپنا رشتہ بھی جتاتے ہوئے نظر آتے ہیں اگر یہ سب کچھ کرنا شرک ہے تو اب حکم آپ اپنے سید صاحب پر لگائیں ہم صرف اتنا عرض کریں گے کہ حق وصداقت کا علم بلند فرمایئے آپ ماشاء اللہ حق گوئی سے کام لیں سوال کا جواب ہاں یا ناں میں آنا چاہیے!

## آپ کو یاد ہو گا:

اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو میں سید احمد شہید صاحب کے الفاظ ایک بار پھر آپکو یاد کروا دیتا ہوں لیجئے مطالعہ فرمایئے۔ پیش تربت شریفہ گدایانہ ندا کردہ گفتم کہ اے جدہ امجدہ من مہمان شما ہستم چیزے خوردنی عطا فرما۔ (مخزن احمدی ۹۹)

سید احمد شہید صاحب ام المومنین حضرت میمونہ رضی اللہ عنھا کی قبر انور کے بالکل سامنے کھڑے ہو کر عرض کرتے ہیں۔

"یا جدہ امجدہ یعنی اے دادی جان میں آپ کا مہمان ہوں کچھ کھانے کو دیجئے"۔

بتایئے کہ یہ انداز مبارک کیسا ہے؟ آپ کو تو بہت پسند آیا ہو گا اس لئے کہ یہ سب کچھ آپکے بزرگ، آپکے رہبر، آپکے کے لیڈر(Leader) آپکے مصلح(Reformer) سے سرزد ہو رہا ہے اب نہ قلم کو تحرک ہو گا نہ زبان مبارک ہی حرکت میں آئے گی نہ صداقت کا نعرہ بلند ہو گا نہ بدعت کی مشین چلے گی نہ گمراہی کا بازار گرم ہو گا نہ شرک والا ہیوی بلڈوزر چلے گا اب تو بس خاموشی ہی ہو گی اور یوں لگے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



گا گویا آپ کے گھر میں انسان نام کی کوئی چیز موجود ہی نہیں ہے۔

## زبان کو تالا لگ جائے گا:

دوسروں پر اعتراض کرنا، انکی پگڑی اچھالنا، ان کو عروج و نزول کی سنا سنا کر اپنی جانب مائل کرنا، ان پر الزامات عائد کرنا، انکو بدعتی کہنا، انکو گمراہ کہنا، انکو مشرک تک کہتے ہوئے نہ شرمانا مگر اپنے گھر کی خبر نہ لینا اگر وہ سب کچھ اپنے گھر میں ہو جائے جسکو خود بدعت، گمراہی اور شرک قرار دیا تھا تو اب زبان کو تالا لگ جائے آخر کیوں؟ اب بھی جوانمردی کا مظاہرہ کرنا چاہیے اسی تیزی کے ساتھ بلا تأمل گھڑا گھڑایا فتویٰ..................شرک صادر کرنا چاہیے مگر ایسا ہوگا نہیں مجھے معلوم ہے میرا تیس سالہ تجربہ ہے اس قسم کے لوگ حملہ تو بڑا بڑھ چڑھ کر کرتے ہیں اور اگر جوابی کارروائی بھی اسی طرز پر ہو جائے تو پھر ایسی ٹھنڈ پڑتی ہے کہ سال ہا سال ہلکی سی حرکت بھی پیدا نہیں ہوتی بلکہ نیم مردہ کی سی کیفیت ہو جاتی ہے جواب آنا تو در کنار اندر بیٹھ کر روتے ہیں اور آہیں بھرتے ہیں ہائے کس کو چھیڑ لیا کاش ایسا نہ ہی کیا ہوتا۔ غور کرلیں میں نے آپکے صرف ایک بزرگ کو آپکی خدمتِ اقدس میں پیش کیا ہے اور وہ تمام ساز و سامان انکے ساتھ دکھایا ہے جسکو آپ بدعت گمراہی اور شرک کے پرزے قرار دے چکے ہیں اور وہ سب پرزے پوری طرح حرکت میں نظر آئے ہیں۔

## شرک پارٹس(Shirk Parts):

اس کلیہ سے لازم آتا ہے کہ وہ مشین چلی ہے اور پورے زور سے چلتی ہوئی اپنا کام کیے جا رہی ہے اب جناب جب کل وہ پرزے جنکو آپ نے شرک پارٹس قرار دیا تھا آپ کے گھر سے برآمد ہو گئے تو یہ مشین بھی آپ ہی کے گھر نصب(Fit) ہو گی اور



اس کا کام بھی آپکے اندر ہی ہو رہا ہوگا۔ افسوس ہوا ہے آپ نے بغیر سوچے سمجھے قلم چلایا ہے ہم پر وہ الزامات لگائے ہیں جو کچھ وزن نہیں رکھتے اگر آپ کی بات وزن دار ہوتی تو ضرور کچھ توجہ طلب ہوتی مگر وہ بے ہی بے وزن اپنا حال یہ ہے کہ دوسروں پر چڑھائی اور گھر کی خبر نہیں۔

ہم آہ بھی کرتے ہیں تو ہو جاتے ہیں بدنام
وہ قتل بھی کرتے ہیں تو چرچا نہیں ہوتا

## اس گھر کو آگ لگ گئی گھر کے چراغ سے:

امیر حمزہ صاحب نے درباروں پر حاضری دینے والوں، مزارات پر جانے والوں کو تنبیہ کرتے ہوئے لکھا ہے۔ ''اور درباروں پر جانے والوں سے گزارش کرتا ہوں کہ اللہ کیلئے ان کے درباروں پر جانے سے رک جاؤ۔ اپنا ایمان مال اور عزت بچالو''۔ (مذہبی و سیاسی باوے ۶۳)

میں بھی اللہ تعالیٰ کی وحدانیت کا واسطہ دے کر پوچھتا ہوں کیا واقعی دربار پر جانے سے قبر پر حاضری دینے سے مزار پر چلے جانے سے ایمان، مال اور عزت تینوں خطرے میں پڑ جاتے ہیں بلکہ محو ہو جاتے ہیں انکو بچانے کا واحد طریقہ یہ ہے کہ مزارات پر درباروں پر قبروں پر نہ جایا جائے ورنہ ایمان ضائع، مال تباہ اور عزت برباد، لگتا ہے مذہبی و سیاسی باوے لکھتے وقت آپ ہوش و حواس سے کوسوں دور جا چکے تھے اور دور دور تک حواسِ خمسہ کی حاضری نظر نہیں آتی اگر آپ ہوش و حواس میں ہوتے تو یوں کبھی نہ لکھتے بلکہ اگر لکھنے کے بعد مرحلہ اشاعت تک بھی ہوش آجاتا تو اس نظریے کو فوراً بدل دیتے الفاظ میں یکدم تبدیلی کرتے مگر ایسا ہوا نہیں اور مجھے تو یوں لگتا

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/

ہے کہ اب تک بھی آپ ہوش میں نہیں ہیں۔

## بیک جنبشِ قلم:

اگر ہم درباروں مزاروں پر چلے جائیں تو ایمان، مال اور عزت تینوں ذائل اور اگر سید احمد شہید صاحب چلے جائیں تو ایمان بھی سلامت، مال بھی بدستوار اور عزت بھی قائم آخر وہ کونسا قاعدہ ہے آپ کے بزرگ مزارات پر جائیں تو سب کچھ سلامت نہ ایمان ضائع نہ مال برباد، نہ عزت پر حرف اور ہم جائیں تو سب کچھ بیک جنبش قلم تباہ و برباد کیا دیانت کا تقاضا یہ نہیں دربار پر جانے والا اپنا ہو یا پرایا جو حکم کسی پرائے پر لگے وہی حکم اپنے پر لگے اگر ایسا ہوتا تو واقعی صداقت تھی مگر ایسا نہیں ہوا ہم درباروں پر جائیں تو ایمان، مال اور عزت سب لٹ جائیں کچھ باقی نہ بچے اور اگر آپ کے بزرگ سید احمد شہید صاحب چلے جائیں تو نہ ایمان کو خطرہ، نہ مال برباد نہ ہی عزت پر کوئی حرف سب بدستور قائم سبحان اللہ کیا قاعدہ کلیہ ہے۔

## عزت ووقار:

خود جو مرضی کرو سب جائز دوسرے ذرا آپ کے مزاج کے خلاف کریں تو فتویٰ تیار وہ بھی ایمان، مال اور عزت کے زائل ہونے کا اور سید صاحب چلے جائیں تو ویسے ہی صاحب عزت ووقار جس طرح پہلے تھے نہ انکی سیادت میں فرق آئے نہ انکا بزرگ ہونا متاثر ہو نہ انکی قیادت پر کوئی شک، وہ سید السادات بھی رہیں، امام المجاہدین بھی رہیں اور خلیفۃ اللہ بالیقین بھی یہ دورنگی آپ ہی کو مبارک ہو ہمیں ہمارا سیدھا سادھا سچا سُچا عقیدہ مبارک۔

اتنی نہ بڑھا پاکیٔ داماں کی حکایت



دامن کو ذرا دیکھ ذرا بند قبا دیکھ

اگر یقین نہیں آتا تو دکھاؤں آپکے لیڈر کو مزار فائض الانوار پر حاضر، مانگتا ہوا، لیجئے مطالعہ فرمایئے تا کہ آپ تازہ دم ہو جائیں اور آئندہ بزرگوں کے مزارات پر اعتراضات کرنے سے قبل اپنا دامن ضرور دیکھیں تا کہ قلم احتیاط سے چلے۔ ملاحظہ فرمایئے۔

سید السادات جناب سید احمد شہید صاحب فرماتے ہیں:

''میں نے ادھر ادھر بڑی کوشش کی کہ کھانے کو کچھ مل جائے مگر نہ ملا چاروناچار میں برائے زیارت حجرۂ مقدسہ حاضر ہوا''۔ (مخزن احمدی ۲۹)

یہاں تک تو حاضری دربار کا معاملہ تھا، اس کے بعد امیر حمزہ صاحب نے مزار و دربار کے تبرک و نیاز کی بات کی اور بڑی جوانمردی کا مظاہرہ فرمایا لیجئے مطالعہ فرمایئے لکھتے ہیں۔

## امیر حمزہ صاحب رقمطراز ہیں:

قارئین کرام! افطاری کا وقت ہوا چاہتا ہے اس دربار سے غیر اللہ کی نیازوں کا کھانا کیا۔ پانی پینے کو بھی دل نہیں چاہا ہم نے ''ون'' کے درخت دیکھے، ان کا سفید سیاہ پھل جسے پنجابی میں ''پیلو'' کہتے ہیں انہی سے روزہ افطار کیا اور غیر اللہ کی درباری نذر و نیاز سے اپنے شکم کو اللہ کی توفیق سے بچا لیا''۔ (مذہبی وسیاسی باوے ۶۳)

امیر حمزہ صاحب آپ نے دربار کی نذر و نیاز کی بجائے ''پیلو'' سے روزہ افطار کر کے بڑی ہی جوانمردی کا مظاہرہ کیا۔ پھر آپ نے اپنے عمل کو بطور تفاخر بیان کیا۔ آپ نے تو کمال ہی کر دیا کہ قبر کے قرب میں جو کچھ میسر تھا چھوڑ دیا۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



آپ کے رہبر آپکے ہیرو (Hero) نے تو نہ صرف قبر کے قرب سے کھایا بلکہ صاحب قبر سے گدا بن کر باقاعدہ مانگا اور قبر سے دو تازہ تازہ خوشے انگور کیبر آمد بھی ہو گئے اور شاہ جی نے بڑے مزے سے تناول فرمائے نہ صرف یہ کہ خود ہی تناول کیے بلکہ باہر نکل کر حجرۂ مقدسہ سے اپنے ساتھیوں میں بھی تقسیم کیے اگر چہ ایک ایک دانہ ہی انکے حصے میں آیا مگر محروم کسی کو نہ رکھا۔ سید السادات، واقف رموز خفی و جلی، امام المجاہدین اور خلیفۃ اللہ بالیقین تو دربار سے نذر و نیاز نہ صرف لیتے ہیں بلکہ سائل بن کر طلب کرتے ہیں منگتا بن کر نداء لگاتے ہیں اور ملنے پر خوب خوشی مناتے ہیں خود کھاتے ہیں اور دوسروں کو کھلاتے ہیں مگر آپ تو اپنے لیڈر کو بھی پیچھے چھوڑ گئے لیجیے ان کا عمل مبارک اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو تازہ فرمایئے۔

## مولوی سید محمد علی شاہ صاحب لکھتے ہیں:

سید احمد شہید صاحب ام المومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنھا کے مزار فایض الانوار پر حاضر ہوتے ہیں اور ایک منگتا کی طرح صدا لگاتے ہیں اے جدۂ امجدہ میں آپ کا مہمان ہوں کچھ کھانے کو عطا فرمایئے۔ پھر وہیں بیٹھ جاتے ہیں۔ سورہ فاتحہ و سورہ اخلاص پڑھ کر سیدہ کی روح پر فتوح کو ایصال ثواب کرتے ہیں.........تو دو تازہ خوشے انگور کے ان کے ہاتھ میں آجاتے ہیں پھر طرفہ یہ کہ یہ موسم بھی انگوروں کا نہیں ہوتا وہ ان انگوروں کو خود تناول فرماتے ہیں اور دوسروں میں حجرۂ مقدسہ سے باہر نکل کر ایک ایک دانہ تقسیم کرتے ہیں

"ویک یک دانہ بہر یک تقسیم کردم"



## مہر تصدیق:

کیوں جناب جس درباری نذر و نیاز سے آپ بالکل محفوظ رہے اور اپنے شکم کو بھی اللہ کی توفیق سے بچا لیا آپکے ہیرو کو کیا ہو گیا وہ نہ خود بچ سکے اور نہ دوسروں کو بچایا بلکہ خود بھی کھایا دوسروں کو بھی کھلایا فیصلہ آپ پر ہی چھوڑتا ہوں۔ جس کو آپ نے جائز نہ جانا اسی کو آپکے رہبر نے، آپکے لیڈر نے، آپکے امام المجاہدین نے اور آپکے خلیفۃ اللہ بالیقین نے جائز قرار دیا بلکہ خود تناول کر کے اس کے جواز پر مہر تصدیق ثبت فرمائی اب آپ فرمایئے یہ عمل کیسا تھا۔

خدا لگتی کہیے گا۔ فتوٰی دیانتداری سے دیجئے گا ورنہ اہل علم شکوہ کریں گے اور اہل حق شکایت کریں گے امیر حمزہ صاحب دیانت کی وادی سے بہت دور نکل گئے ہیں انہیں یا تو دیانت نام کا کوئی سبق اساتذہ نے پڑھایا ہی نہیں یا پڑھ کر بھول گئے ہیں۔ شرافت نام کی کوئی گردان انکو آتی ہی نہیں یا پھر یہ گردان یاد کر کے بھلا دی ہے۔ علمی کمال نام کا کوئی حصہ انکو میسر ہی نہیں آیا یا پھر آنے کے بعد اس سے دامن کو خالی کر لیا ہے۔ اگر مطالعہ کو وسعت دی ہوتی اور کچھ وقت نکال کر اپنے ہی بزرگوں کی سیرت کو پڑھا ہوتا تو کم از کم یہ انداز تحریر تو نہ ہوتا جو "مذہبی و سیاسی باوے" "شاہراہ بہشت" اور "آسمانی جنت اور درباری جہنم" میں ہے۔

## مدعا ثابت نہ کر سکا:

آپ کی کتابوں کے مطالعہ کے دوران غصہ تو بہت آتا تھا مگر میں نے آپکو علمی یتیم سمجھ کر آپ کی زبان میں جواب دینا مناسب نہ جانا لہٰذا میں نے اپنی ساری بات اپنی ہی زبان میں کی ہے ورنہ طنز و مزاح نام کی وادی سے میرا بڑا گہرا تعلق رہا ہے میں

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



جب جی سی لاہور میں پڑھتا تھا تو (DEBATES) کیلئے پورے پاکستان میں جاتا تھا مختلف کالجز، یونیورسٹیز، اور دیگر انسٹیٹیوٹس میں اپنی بات کہنے کا موقع ملا اکثر ہی فرسٹ (First) انعام جیت لاتا تھا۔ خصوصا پنجابی میں جو مزہ آتا تھا وہ اردو میں انگریزی میں نہیں آتا تھا۔

مجھے آج بھی یاد ہے ایک (DEBATES) مقرر نے اپنی تقریر کو خواہ مخواہ طول دیا اور بولتا ہی چلا گیا مگر وہ اپنا مدعا ثابت نہ کر سکا مجھے آج تک یاد ہے اسلامیہ کالج ریلوے روڈ لاہور میں مباحثہ تھا یہ 83-1982 کی بات ہے جس کا عنوان تھا۔

''اعلیٰ زندگی کیلئے علم کی نہیں دولت کی ضرورت ہے''

اس قرارداد کے حق میں اور مخالفت میں مقررین (DEBATER) دلائل دے رہے تھے۔ اس قرارداد کی حمایت میں مجھ سے پہلے ایک نوجوان تشریف لائے اور آپ کی طرح بڑا شور مچایا اور یوں لگتا تھا یہ لڑکا فرسٹ پوزیشن (First Position) لے جائے گا۔ جیسے ہی اسٹیج پر آیا آتے ہی چیخ چیخ کر کہنا شروع کر دیا علم کی کوئی ضرورت نہیں اگر اعلیٰ زندگی گزارنی ہے۔

تو اس کیلئے دولت چاہیے پس دولت! دلائل دیتے ہوئے وہ صاحب اچانک ایک عجیب وغریب طرز اختیار کرتے ہیں ایک فائل کھول لیتے ہیں اور پھر یوں گویا ہوتے ہیں۔ صاحب صدر! میں کیا کروں اس تعلیم کو میں کیا کروں اس علم کو جسکی بدولت میں اپنا اور اپنے ماں باپ کا پیٹ نہیں پال سکتا بیماری میں ان کا علاج نہیں کروا سکتا ان کو گرمی سردی سے بچانے کے لئے کپڑوں کا انتظام نہیں کر سکتا۔



## مجمع لوٹ لیا:

پھر اچانک رخ بدل کر بلکہ پینترا بدل کر کہنے لگے:

صاحب صدر! میں یہ اسناد، یہ ڈگریاں لیکر مختلف دفاتر میں گیا مختلف آفیسرز کے پاس گیا، کئی دولت مندوں کی خدمت عالیہ میں حاضری دی مگر مجھ کو کہیں نوکری نہ ملی لہٰذا اب وہ صاحب اسٹیج پر تیخ پا ہو کر بولے یہ رہی میٹرک کی سند اور اسکے ٹکڑے ٹکڑے کر دیئے اسی طرح ایف اے اور بی اے کی اسناد و ڈگری کے ساتھ بھی کیا یہ سماں دیکھ کر پورا حال اس کی حمایت میں تالیاں بجانے لگا سارا مجمع اس نے لوٹ لیا حتیٰ کہ ججز نے بھی اس کے حق میں تالی بجا ڈالی۔ لگتا یوں تھا کہ اس کے بعد کوئی کتنا زور صرف کرے اسکو کاٹ نہیں سکتا یہ لڑکا فرسٹ پوزیشن تو یقیناً لے جائے گا۔ بہر حال اسکے بعد میری باری آئی۔ میں نے اسٹیج پر آتے ہی یوں آغاز کیا۔ وہ صاحب ابھی واپس اپنی نشست کی طرف جا رہے تھے میں نے کہا۔

گیا دور سرمایہ داری گیا
تماشا دکھا کر مداری گیا

بس پھر کیا تھا، سارا ہال دوبارہ تالیوں سے گونج اٹھا ایک نیا ولولہ، ایک نیا جوش پیدا ہوا۔ میں نے بھی بڑی متانت اور تیزی کے ساتھ قواعد مباحثہ کے عین مطابق گرج دار آواز میں کہا۔

## صاحب صدر گرامی قدر:

اگر طبع نازک پہ گراں نہ گزرے تو عرض کروں گا خود اٹھ کر یہاں تک تشریف لائیں اور آکر مشاہدہ فرمائیں اگر تو یہ اسناد اور ڈگریاں جو آپ کے سامنے پرزہ پرزہ کی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



گئی ہیں اصلی ہیں تو میں اپنا موقف بدل لیتا ہوں میں بھی یہی نعرہ بلند کرتا ہوں کہ "اعلی زندگی کیلئے علم نہیں دولت کی ضرورت ہے" اور اگر یہ سب اسناد اصلی ہونے کی بجائے انکی فوٹو کاپیاں ہیں تو مجھے یہ کہنے کی اجازت دیجئے کہ اندرون خانہ

میرے (DEBATER) بھائی بھی تسلیم کرتے ہیں کہ اعلیٰ زندگی کیلئے دولت نہیں علم کی ضرورت ہے اور محض انعام جیتنے کیلئے ڈرامہ بازی کر کے گئے ہیں ورنہ دلِ ناتواں تو انکا بھی قائل ہے کہ اعلیٰ زندگی علم کی بدولت ہی نصیب ہوتی ہے نہ کہ دولت سے۔

## زہر آلود تیر:

جب اسناد دیکھی گئیں جو پرزے پرزے کر دی گئی تھیں اور ایسا ماحول کالج ہال کا بنا دیا گیا تھا کہ ایک جنوں نظر آتا تھا اور میرے مدِ مقابل کی کامیابی یقینی نظر آ رہی تھی۔ تو فوراً ہی ماحول بدل گیا اسناد کی فوٹو کاپی پھٹی ہوئی دیکھ کر سارا ہال پکار اٹھا تقریر تو زور دار تھی مگر حقائق سے کوسوں دور لہٰذا سب نے کہا اعلیٰ زندگی کیلئے دولت نہیں علم کی ضرورت ہے ہم نے وہ مباحثہ جیت لیا بلکہ میرے ساتھ جو دوسرے (DEBATER) محمد مبین صاحب تھے، جو آجکل امریکہ میں مقیم ہیں اور وہاں کے (Citizen) شہری ہیں انکو اگرچہ تھوڑے سے نمبر ملے تھے مگر جب میرے اور انکے نمبر جمع کئے گئے تو ٹرافی بھی گورنمنٹ کالج لاہور ہی کے حصے میں آئی جو کہ ایک معینہ مدت تک G.C.Lahore جی سی لاہور کے پاس رہی۔

## شور تو آپ نے بھی خوب مچایا ہے:

امیر حمزہ صاحب آپکو کسی مولوی صاحب نے ہاتھ نہیں ڈالا بلکہ ایک اولڈ راوین



نے آپکی نہایت متانت سے خبر لی ہے اگر صحافی ہی بننے کا شوق ہے تو ضرور بنیے گا مگر دیانتدار صحافی ایک فرقہ کی نمائندگی پوری امت کی نمائندگی نہیں ہوتی اپنے خول سے باہر تشریف لایئے اور اپنے علاوہ اردگرد کی دنیا کا جائزہ لیجئے انشاء اللہ حقیقت حال واضح ہو جائے گی۔ شور تو آپ نے بھی خوب مچایا ہے شرک ہو گیا شرک ہو گیا مگر جب ہم نے آپ کے شرک کا جائزہ لیا تو آپکے اپنے گھر میں بھی ہوتا نظر آیا۔ جس جرم پر آپ نے مسلمانوں پر زہر آلود تیر برسائے اور جہاں آئے وہاں پیوست فرمائے لیکن ہوا یوں کہ وہ سب تیر لوٹ کر آپ ہی کی جانب آئے اب لاکھ بھاگنے کی کوشش کریں، تاویلیں پیش کریں۔ لیکن آپ بھاگ نہیں سکتے کہ جناب سید احمد شہید صاحب کو آپ اپنے کھاتے سے نکال نہیں سکتے اور اگر آپ یہ ہمت فرمائیں گے تو ہم آپ کو داد دیں گے اور آپ کو صحافی مان لیں گے اور اعلان کریں گے کہ امیر حمزہ صاحب ایک دیانتدار صحافی ہیں دیکھئے ہوتا ہے کیا۔

## جو مزاج یار میں آئے:

میں دل کی اتھاہ گہرائیوں سے آپ کو خراج تحسین پیش کروں گا اگر آپ اپنے گھر کی بھی اصلاح فرمائیں گے اور اگر آپ نے آئیں، بائیں، شائیں کر دیا اور رائٹ بنٹ شنٹ کر کے دائیں بائیں ہونے کی کوشش کی تو ہم بھی آپ کی ناکہ بندی کریں گے اور آپ کو بتا دیں گے کہ آپ کا نقطۂ نظر درست نہیں ہے چند جاہل قسم کے لوگوں کے عمل کو دیکھ کر اللہ تعالیٰ کے جلیل القدر اولیاء پر اعتراضات کرنا کوئی مناسب اقدام معلوم نہیں ہوتا۔ اگر آپ نے صرف گکڑ پیر اور ایسے دوسرے مقامات کو مورد الزام ٹھہرایا ہوتا تو شاید میں کبھی بھی قلم پکڑ کر آپ کو راہ دکھانے نہ بیٹھتا مگر افسوس ہوا کہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



آپ نے مسلمہ بزرگوں، حضرت علی بن عثمان ہجویری، ثم لاہوری المعروف بہ داتا گنج بخشؒ، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت امام ربانی خواجہ بابا فرید الدین گنج شکر، حضرت شاہ بہاؤالدین زکریا ملتانی، حضرت شاہ رکن عالم ملتانی، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانیؒ اور ایسے ہی دوسرے بزرگوں پر زبانِ طعن دراز کی مجھ پر لازم تھا میں آپ کو آئینہ دکھاؤں سو دکھا دیا اب آپ کی مرضی ہے حق کو تسلیم کریں اور بزرگانِ دین کی عزت وتکریم کر کے اپنی دنیا و آخرت سنوار لیں یا اپنے غلط ملط موقف پر قائم رہ کر اپنی دنیا و آخرت برباد کر لیں جو مزاج یار میں آئے۔

## کراماتِ اہلحدیث:

جب میں امیر حمزہ صاحب کی کتب کا مطالعہ کر رہا تھا، مجھے پڑھ پڑھ کر نہایت افسوس ہوتا تھا کہ کس طرح بے دردی کے ساتھ بڑے بڑے اولیاء اللہ پر طنزیں کی گئی ہیں اور ان کا مذاق تک اڑانے کی کوشش کی گئی ہے۔ میں چاہتا تھا اس طرز کا کوئی معاملہ ان کے اپنے گھر کا ہو جو ان کو خوب متاثر کرے اور ہمارے لیے مؤید ثابت ہو چنانچہ انہی امیر حمزہ صاحب کے گھر کی کتاب ہاتھ لگ گئی جس کا نام ہے "کراماتِ اہلحدیث" جو کچھ اس کتاب کے سرورق پر لکھا ہے وہ یہ ہے۔ کراماتِ اہلحدیث، مؤلفہ، مولانا عبدالمجید صاحب خادم سوہدروی، شاگرد، مولانا محمد ابراہیم صاحب میر سیالکوٹی، ناشر اسلامی کتب خانہ سیالکوٹ:

## اس کتاب کے صفحہ نمبر ۲ پر لکھا ہے:

"اس مضمون میں ہے پہلے بزرگوں کا تذکرہ نہیں کروں گا بلکہ دورہ حاضرہ کے اہلحدیث حضرات کا نمونہ پیش کروں گا جن میں سے اکثر کو آپ جانتے اور پہچانتے



ہیں اور صاحب کرامت بھی تھے"۔ (کراماتِ اہلحدیث ۲)

غور فرمائیں ان جملوں پر پھر فیصلہ کریں اگر آپ کے بزرگوں سے کرامات کا صدور ہو تو وہ بالکل درست وصحیح اور اگر دوسرے بزرگوں بلکہ مسلمہ حضرات اولیاء کرام سے انہیں کرامات کا صدور مان لیا جائے تو آپ کو بل پڑنے لگتا ہے اور آپ پیچ وتاب کھا کھا کے ان کا مذاق اڑاتے ہوئے ان پر پھبتیاں کستے ہیں جہاز میں بیٹھ کر اپنے ہمسفر سے تخاطب کرتے ہوئے خرقِ عادت وکرامات کا تمسخر کرتے ہیں اور ذرا بھی آپ کو احساس نہیں رہتا کہ آپ کیا کہہ رہے ہیں اور کن لوگوں کے بارے میں کہہ رہے ہیں ابھی آپ کو دکھاؤں گا آپ نے جن اکابر پر زبانِ طعن کھولی ہے ان کے مزارات پر آپ کے اکابر حاضری دیتے رہے ہیں اور ان کو زندہ مانتے رہے ہیں ان سے فیض پانے جاتے رہے ہیں اور آپ کے ایک بزرگ سرہند تک امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کے مزار کی زیارت کو گئے تھے۔ لیجئے مطالعہ فرمایئے تا کہ دل روشن ہو۔

## مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ:

"صوفی حبیب الرحمٰن صاحب کا بیان ہے کہ ۱۹۱۰ء میں جب حضرت ضیاء معصوم صاحب مرشد حبیب اللہ خاں شاہ کابل پٹیالہ تشریف لائے تو انہوں نے سرہند جانے کیلئے قاضی جی کو اپنے ساتھ لیا حضرت ضیاء معصوم جب روضہ حضرت مجدد الف ثانی پر مراقبہ کیلئے بیٹھے تو قاضی جی نے دل میں کہا کہ شاید ان بزرگوں نے آپس میں کوئی راز کی بات کہنی ہو ان سے الگ ہو جانا چاہیے۔ ابھی اپنے جی میں یہ خیال لے کر اٹھے ہی تھے کہ حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ نے آپ کو ہاتھ سے پکڑ لیا اور فرمایا کہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



سلیمان بیٹھے رہو ہم کوئی بات تجھ سے راز میں نہیں رکھنا چاہتے، صوفی صاحب کا بیان ہے کہ قاضی صاحب نے بعض دوستوں سے ذکر کیا اور فرمایا، کہ یہ واقعہ مراقبہ یا مکاشفہ کا نہیں بلکہ بیداری کا ہے"۔ (کرامات اہلحدیث ۱۹)

## حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ نے قاضی جی کا ہاتھ پکڑ لیا:

مجھے اچھی طرح یاد ہے آپ نے جب مزارات اولیاء اللہ پر اعتراضات کی بارش شروع کی ہوئی تھی اس وقت آپ یقیناً ہوش وحواس کھو بیٹھے تھے آپ نے حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کو بھی اپنے قلم کی زد میں لانے کی بھرپور کوشش کی تھی اور اب خود ہی غور کریں اگر ہم مزار مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ پر حاضری دیں تو شرک کا فتویٰ آپ کی پٹاری میں تیار ملتا ہے اور اگر ہم اولیاء کرام صاحبان مزارات کو زندہ مان لیں تو آپ آگ بگولہ ہو جاتے ہیں۔

## دورنگی کیوں؟

آپ دیکھیں اور یقین کی آنکھ سے دیکھیں جب حضرت معصوم صاحب سرہند شریف جانے لگتے ہیں تو قاضی سلیمان صاحب کو بھی ہمراہ لے لیتے ہیں اور جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب چپ چاپ ان کے ساتھ سرہند شریف چلے جاتے ہیں اور دونوں حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کے مزار شریف پر حاضر ہو جاتے ہیں نہ صرف حاضر ہوتے ہیں بلکہ ضیاء معصوم صاحب تو حضرت مجدد الف ثانی کے روضۂ مبارک پر مراقبہ بھی فرماتے ہیں اس ساری صورت حال کو دیکھ کر قاضی سلیمان کے دل میں یہ خیال آتا ہے کہ شاید ان بزرگوں، حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ اور ضیاء معصوم صاحب نے کوئی راز کی بات آپس میں کہنی ہو ان سے الگ ہو



جانا چاہیے اب میں صرف اتنا پوچھنا چاہتا ہوں۔ اگر مرنے والے سنتے نہیں، دیکھتے نہیں، کوئی بات کرنے پر قادر نہیں تو یہ ساری گفتگو آخر کس زمرے میں آتی ہے۔ جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب جو آپ کے یقیناً بزرگ ہیں اور آپ ان حضرات کو اپنے اکابرین میں شمار فرماتے ہیں جناب قاضی صاحب مزار مجدد الف ثانی پر حاضری دیں تو عقیدۂ توحید میں کوئی فرق نہیں آتا وہ پکے موحد اور اللہ والے اور اگر ہم حاضری دے دیں تو مشرک کا فریہ دورنگی کیوں ہے۔

امیر حمزہ صاحب، کراماتِ اہلحدیث کی مندرجہ بالا عبارت بغور مطالعہ فرمائیں آپ خود محسوس کریں گے کہ اس عبارت سے درج ذیل باتیں دو اور دو چار کی طرح عیاں ہوتی ہیں۔

## مزارات والے آنے والوں کو پہچانتے ہیں:

۱) آپ کے رہبر اور مسلمہ عالم جناب قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب نے جناب ضیاء معصوم کی معیت میں حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کے مزار شریف روضۂ انور پر حاضری دی۔

۲) جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب اور جناب ضیاء معصوم صاحب جب امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کے مزار پر حاضر ہوتے ہیں تو ضیاء معصوم صاحب وہاں مراقبہ فرماتے ہیں اور قاضی صاحب کے ساتھ ہی بیٹھے ہوتے ہیں۔ آپ کیا فرماتے ہیں اپنے بزرگوں کے بارے میں۔

۳) قاضی صاحب کے دل میں یہ خیال پیدا ہوتا ہے ان بزرگوں نے آپس میں کوئی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



راز کی بات کہتی ہوگی ظاہر ہے یہ خیال خلاف عقیدہ تو نہ تھا بلکہ عقیدہ قاضی صاحب کا یہ معلوم ہوتا ہے کہ وہ امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کو مرنے کے بعد بھی زندہ ہی مانتے ہیں تبھی تو فرماتے ہیں ان بزرگوں نے کوئی راز کی بات آپس میں کہنی ہوگی پھر یہ صاف صاف معلوم ہو رہا ہے کہ آنے والوں کو امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ جانتے بھی ہیں پہچانتے بھی ہیں۔

۴) یہ خیال تو قاضی صاحب کے دل میں آیا تھا لیکن ہوا کیا ابھی وہ اٹھے ہی تھے کہ ان بزرگوں سے الگ ہو جائیں تا کہ وہ آپس میں راز کی بات کر لیں تو بقول قاضی صاحب حضرت مجدد الف ثانیؒ نے آپ کو ہاتھ سے پکڑ لیا اور فرمایا سلیمان بیٹھے رہو ہم کوئی بات تم سے راز میں نہیں رکھنا چاہتے۔ ہاتھ پکڑ لینا اور پھر فرمانا سلیمان بیٹھے رہو۔ یہ باخبر ہونے کی علامت ہے یا بے خبری کی، یہ زندہ ہونے کی دلیل ہے یا مردہ اور بالکل بے اختیار ہونے کی۔

۵) صوفی صاحب اس امر کی بھی صراحت فرماتے ہیں قاضی صاحب نے اپنے دوستوں میں ذکر کیا کہ یہ سب کچھ مراقبہ یا مکاشفہ نہ تھا بلکہ یہ سب کچھ بیداری میں ہوا۔ یعنی حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ نے بالکل زندوں کی طرح قاضی صاحب کا ہاتھ پکڑا، باتیں کی اور یہ معاملہ محض مراقبہ کا نہیں بلکہ بیداری کا ہے اب خود فیصلہ کریں کہ حق پر کون ہے آپ یا مزارات اولیاء اللہ پر حاضری دینے والے۔ اب تو آپ کے گھر سے ثابت ہو گیا کہ وہی لوگ حق پر ہیں جو مزارات اولیاء اللہ پر حاضری دیتے ہیں ان کو زندہ سمجھتے ہیں اور ان کی مدد



کے قائل ہیں وللہ الحمد۔

اگر ابھی بھی یقین نہیں آیا تو ایک بار پھر قاضی صاحب اور ضیا معصوم کا واقعہ کرامات اہلحدیث میں مطالعہ فرمالیں ان شاءاللہ خوب تسلی ہوگی۔

## فوراً چٹھی حاضر:

مولانا عبد المجید صاحب خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم صاحب میر سیالکوٹی، کرامات مولانا عبداللہ صاحب غزنوی کے عنوان سے رقم طراز ہیں۔ آپ بھی مطالعہ فرمائیں:

''مولینا عبداللہ المعروف غلام نبی الربانی سوہدروی کا بیان ہے کہ ایک بار ایک شخص نے حاضر ہو کر عرض کی کہ حضور میں نے مجاہدین کو ایک چٹھی بھیجی تھی، جو راستہ میں پکڑ لی گئی، چونکہ میں سرکاری ملازم ہوں اور وہ چٹھی میرے افسروں کے پاس پہنچ گئی ہے اس لئے اب مجھ پر مقدمہ چلے گا، اور نہ صرف ملازمت ہی سے برطرف کر دیا جاؤں گا بلکہ سخت سزا بھی دی جائیگی۔ خدا کے لئے دعا کیجئے، اور مجھے اس مصیبت سے بچایئے، راوی کا بیان ہے کہ میرے سامنے عبداللہ صاحب نے مراقبہ کیا، اور کچھ عرصہ کے بعد سر اٹھایا اور اپنی بغل سے وہ چٹھی نکال کر اس شخص کو دی اور پوچھا کہ کیا یہی ہے؟ اس نے کہا ہاں حضور یہی ہے جس کی بناء پر مقدمہ چل سکتا ہے آپ نے فرمایا، اسے جلا دو، اب مقدمہ نہیں چل سکے گا، چنانچہ جب مقدمہ پیش ہوا، اور وہ افسر میری چٹھی پیش نہ کر سکا تو مجھے بری کر دیا گیا۔ (کرامات اہلحدیث ص: ۲۷-۲۶)

## کیا نظر بائی ہے:

اگر اس طرح کا کوئی واقعہ ہمارے علماء بیان کریں تو آپ کا قلم فوراً حرکت میں آجا

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



ہے اور نا معلوم کیا کیا لکھتا جاتا ہے آپ نے مولانا عبداللہ کا کمال مطالعہ فرمایا، خود سوچیں اگر یہ سب کچھ آپ کے گھر کے بزرگوں کیلئے درست ہے، جائز ہے، تو پھر دوسرے بزرگوں کو مورد الزام کیوں ٹھہراتے ہیں خدا کا خوف کریں اللہ تعالیٰ سے ڈریں ورنہ اس کی لاٹھی بڑی بے آواز ہے جب وہ برستی ہے تو برس ہی جاتی ہے۔ آپ کے بزرگ تو ماشاء اللہ دفتری فائلوں سے چٹھیاں تلاش کر کے چشم زدن میں لے آتے ہیں۔ کیا نظر پائی ہے آپ کے اکابر نے اور کیا اختیارات ہیں کہیں دور دراز بیٹھے ہوئے ہیں ایک معتقد کے خلاف جس چٹھی کی بنا پر مقدمہ چلنا تھا وہ چٹھی ہی فائل سے غائب کر دی جب وہ افسر جس نے مذکورہ صاحب کے خلاف مقدمہ درج کروایا ان سے جب اس چٹھی کے بارے اصرار کیا گیا کہ وہ لاؤ تو پیش نہ کر سکا وہ بیچارہ پیش کیسے کرتا وہ تو مولانا عبداللہ صاحب اہلحدیث کمال احتیاط سے نکال کر لے گئے تھے اور پھر جلا دینے کا حکم صادر فرما دیا تھا۔ نہ رہے گا بانس نہ بجے گی بانسری۔

## انوکھا طریق کار:

آپ اس جملے پر غور فرمائیں، جو ایک مصیبت زدہ عرض کرتا ہے اور پھر اس حالِ زار پر ایک اہلحدیث بزرگ کا طرز عمل ملاحظہ کریں وہ کس انداز سے پیش آتے ہیں کیسے مدد کرتے ہیں وہ انوکھا طریق کار بھی نظر میں رکھیے۔ مولانا غلام نبی الربانی بیان کرتے ہیں:

''ایک شخص مولانا غزنوی کی خدمت عالیہ میں عرض کرتا ہے'' خدا کیلئے دعا کیجئے اور مجھے اس مصیبت سے بچائیے''۔

امیر حمزہ صاحب آپ تو اس طرح کے طرز بیان کو شرک و بدعت اور اس قسم کی طرز



عمل کو قابل مذمت کہتے ہیں اور اب اگر کسی بزرگ کے پاس کسی ولی اللہ کے پاس اپنی مصیبت لے کر جانا اور ان سے دعا کروانا واقعی شرک ہے تو اب تامل کیوں بے روک ٹوک لگایئے فتویٰ شرک تا کہ حقِ صداقت ادا ہو اور ہم بھی آپ کو داد تحسین دیں مگر اب تو قیامت تک کیلئے آپ چپ رہیں گے نہ زبان کھلے گی نہ قلم حرکت میں آئے گا نہ صفحات قرطاس پر سیاہی بکھرے گی۔

## صبح کی نماز میں لمبی قرأت:

مولانا عبدالمجید صاحب خادم سوہدروی، کرامات قاضی محمد سلیمان صاحب منصور پوری کے عنوان کے ماتحت لکھتے ہیں مطالعہ کیجئے اور لطف پایئے۔

مولوی حسین احمد تاجر کتب پٹیالہ کا بیان ہے کہ مجھے درد کمر کی شدید شکایت رہتی تھی اور اسی وجہ سے میں نماز با جماعت ادا کرنے سے معذور تھا کیونکہ اکثر اہلحدیث صبح کی نماز میں لمبی قرأت کرتے ہیں اور میں کھڑا نہیں ہو سکتا تھا، ایک دن میں قاضی صاحب کی مسجد میں نماز صبح کے لئے چلا گیا قاضی صاحب سورۂ آل عمران پڑھ رہے تھے دو رکوع پڑھے ہوں گے کہ مجھے درد شروع ہو گی اور میں نے ارادہ کیا کہ اب نماز چھوڑ دوں، معاً قاضی جی نے اللہ اکبر کہا اور رکوع چلے گئے، پھر دوسری رکعت میں بھی مختصر قیام کیا، اور سلام پھیر دیا، لوگ حیران ہوئے کہ آج اتنی مختصر قرأت کیوں کی، کسی نے پوچھا، تو آپ نے فرمایا، کہ بھئی حضور کا حکم ہے، مقتدیوں کا لحاظ رکھا جائے، مولوی حسین احمد کہتے ہیں کہ تین چار یوم کے بعد پھر ایک دفعہ میں نماز میں شامل ہوا، تو ایسا اتفاق ہوا، جب مجھے درد شروع ہوا، اور میں جی میں یہ سوچنے لگا کہ نماز چھوڑ دوں یا نہ! تو قاضی جی نے قرأت ختم کر دی، اور اختصار سے کام لے لیا، قریباً قریباً آٹھ مرتبہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



میں نے آزمایا، حالانکہ میں جماعت کے ساتھ بعد میں شریک ہوتا تھا، اور قاضی جی کو میری آمد کا کوئی علم نہ ہوتا تھا، اس سے میں نے یقین کر لیا کہ آپ صاحب کشف ہیں"۔ (کرامات اہلحدیث ۲۱-۲-۰)

## عین نماز میں اعانت:

کیوں جناب عبارت غور سے پڑھ لی؟ مولوی حسین احمد صاحب کی کمر میں درد تھا وہ نماز باجماعت ادا کرنے سے قاصر تھے ایک دن وہ جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کی مسجد میں چلے گئے۔ وہ سورہ العمران پڑھ رہے تھے انہوں نے دو رکوع پڑھے تھے کہ ان مولوی حسین احمد کی کمر میں درد شروع ہو گیا، انہوں نے ارادہ کیا کہ نماز چھوڑ دوں اب اگلا جملہ ایک بار پھر غور سے پڑھیں:

"معاً قاضی جی نے اللہ اکبر کہا اور رکوع چلے گئے پھر دوسری رکعت میں بھی مختصر قیام کیا اور سلام پھیر دیا"۔ (کرامات اہلحدیث ۲۱)

اگر ہم یہ عقیدہ رکھیں کہ دل کی بات حضور غوث اعظم شیخ سید عبد القادر جیلانی جان لیتے ہیں۔ فوراً بلا سوچے سمجھے ہم سے اس کی وضاحت پوچھے بغیر ہی شور و ہنگامہ شروع کر دیا جاتا ہے اور چیخ چیخ کر کہا جاتا ہے توبہ توبہ شرک شرک اور اس کے لئے شرک فی العلم کا باب تک قائم کرنے سے دریغ نہیں کیا جاتا اور اب کیا خیال ہے لگائیے حکم شرک کیجئے حق دیانت ادا، مگر کیا مجال جواب امیر حمزہ صاحب کا قلم حرکت میں آئے، بلکہ اب تو چپ چاپ بیٹھے رہیں گے نہ ہاں، نہ ناں کیونکہ اب معاملہ اپنے بزرگوں کا ہے اب معاملہ توحید پرستوں کا ہے اب معاملہ اہلحدیث علماء و عوام کا ہے۔ اب کوئی سنی تھوڑا کہہ رہا ہے کسی اپنے عالم دین یا صوفی بزرگ کے بارے میں کہ ہمارے حضرت



نے مقتدی کی عین نماز میں اعانت فرمائی۔

## آپ کی بارگاہ میں استدعا:

بتایئے دورنگی ہمارے ہاں ہے یا آپ کے ہاں، میں نے پلے سے کوئی بات نہیں کی جو کچھ آپ کے بزرگوں نے لکھا ہے اسے آپ کی کتابوں سے نکال کر آپ کی خدمت عالیہ میں پیش کر دیا ہے۔ مزید آپ کی ان عقیدت بھری باتوں کو نقل کرنے کے بعد میں نے آپ کی طرح رف لینگویج (Rough Language) بھی استعمال نہیں کی بلکہ نہایت متانت سے آپ کی بارگاہ میں صرف استدعا کی ہے فیصلہ پھر آپ پر اور قارئین پر چھوڑتا ہوں۔

یہ اگر صرف ایک بار کا واقعہ ہوتا تو اس کو اتفاق کہا جا سکتا تھا مگر ایسا نہیں یہ تو کئی مرتبہ ہوا کہ جیسے ہی مولوی حسین احمد تاجر کتب پٹیالہ کی کمر میں درد شروع ہوتا ویسے ہی قاضی جی قرأت کو مختصر کر دیتے اور اختصار سے کام لے کر سلام پھیر دیتے اب اگر آپ یہ کہیں کہ یہ تو محض اتفاق تھا تو میں عرض کروں گا ذرا غور سے ان جملوں پر نظر کریں اور پڑھنے میں دقت ہو رہی ہو تو بے شک عینک لگا لیجئے مگر پڑھیے گا ضرور لیجئے پیش خدمت ہے مطالعہ فرمایئے:

"قریباً قریباً آٹھ مرتبہ میں نے آزمایا حالانکہ میں جماعت کے ساتھ بعد میں شریک ہوتا تھا اور قاضی جی کو میری آمد کا علم نہ ہوتا تھا اس سے میں نے یقین کر لیا کہ آپ صاحب کشف ہیں"۔ (کرامات اہلحدیث ۲۱)

## ہم تنگ نظر نہیں ہیں:

آپ کے بزرگوں کے ان کمالات کو پڑھ پڑھ کر میرا دل باغ باغ ہو رہا ہے میں واہ واہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کر کے آپ کو دادِ تحسین دے رہا ہوں ہونا بھی یہی چاہیے اگر کسی کو کوئی کمال ملے تو حسد کرنے کی بجائے خوش ہونا چاہیے ہم آپ کی طرح تنگ نظر نہیں ہیں قلم لے کر آپ کے بزرگوں کا مذاق اڑانے لگ جائیں ان پر پھبتیاں کسیں، انکو خواہ مخواہ میدان میں لا لا کر ان کے تذلل کی کوشش کریں۔ یہ تو آپ ہی کو زیب ہے اور کسی نے خوب کہا ہے۔

الٹی سمجھ کسی کو بھی ایسی خدا نہ دے
دے آدمی کو موت پر یہ بد ادا نہ دے

## سوا اس کے کیا کہوں:

اگر ہم کہیں کہ حضرت علی بن عثمان ہجویری المعروف بہ داتا گنج بخش، حضرت شیخ سید عبدالقادر جیلانی، غوث اعظم، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت قطب الدین بختیار کاکی، حضرت بابا فرید الدین گنج شکر، حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء دہلوی، حضرت شاہ نصیر الدین چراغ دہلوی، حضرت سیدی گیسو دراز حضرت خواجہ رضی الدین محمد باقی باللہ، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی، حضرت خواجہ شاہ بہاؤ الدین زکریا ملتانی، حضرت خواجہ شاہ رکن عالم ملتانی، حضرت مولانا سید جلال الدین بخاری، حضرت میاں میر قادری، حضرت مولانا سید امام علی نقشبندی مجددی، حضرت میاں امیر الدین کوٹلوی، حضرت میاں شیر محمد شرقپوری، حضرت عبداللہ شاہ غازی، حضرت شہباز قلندر مولانا حافظ سید محمد عثمان مروندی، حضرت امام احمد رضا خاں قادری، حضرت حجت الاسلام شاہ حامد رضا قادری، حضرت مولانا حسن رضا قادری، حضرت مولانا مصطفیٰ رضا خاں قادری، حضرت مولانا سردار احمد محدث اعظم پاکستان مفتی



حضرت مولانا ابو محمد عبدالرشید قادری، حضرت مولانا شاہ احمد نورانی، حضرت مولانا عبدالقیوم ہزاروی اور حضرت مولانا مفتی محمد عبدالحکیم شرف قادری رحمۃ اللہ علیہم صاحب کشف تھے اور دل کا حال معلوم کر لیتے تھے تو فوراً اس نظریے کو شرک قرار دے دیا جاتا ہے اور اپنے گھر میں بطور کشف یہ سب نا صرف جائز بلکہ مدحت میں شمار ہوتا ہے سوا اس کے اور کیا کہوں۔

## میں اس عارفانہ تجاہل کے صدقے:

آپ کے بزرگ آخر آپ کے اپنے ہیں ان کے لئے تو وہ زبان استعمال نہیں کی جا سکتی نا جو دوسروں کیلئے کی جاتی ہے اپنائیت بھی تو کوئی چیز ہے اس کا تو لحاظ رکھنا ہی پڑتا ہے اگر اتنا لحاظ بھی اپنوں کا نہ رکھا جائے تو پھر لوگ بے وفائی کا طعنہ دیں گے تو ان کو کیا منہ دکھائیں گے بات تو بالکل درست ہے مگر آپ تو حق پرست ہیں آپ کو کیا غرض کوئی اپنا ہے یا پرایا آپ نے تو صرف اتنا دیکھنا ہے صداقت کیا ہے، دیانت کا تقاضا کیا ہے۔

"خنجر اٹھے گا نہ تلوار ان سے یہ بازو میرے آزمائے ہوئے ہیں"۔

## لگاؤ فتویٰ شرک:

اگر ہم بھی کشف کی بات کریں بلکہ بڑے بڑے بزرگوں سے اگر مکاشفہ، مراقبہ اور کشف کا صدور ہو اور اس کا ذکر صحیح اور مضبوط دلائل سے بھی کیا جائے تو آپ طنز و مزاح پر آ جاتے ہیں بلکہ نا معلوم کہاں کہاں سے الفاظ کا تانا بانا بن لاتے ہیں جو پڑھنے والوں کو ہنسنے پر مجبور کر دیتا ہے آپ کو تو کسی سٹیج ڈرامے میں کام کرنے کی کوشش کرنی چاہیے آپ پینترے بدل بدل کر الفاظ کا ہیر پھیر کر کر کے رد کرنے کی کوشش

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کرتے ہیں اب تو کوئی پینترا بدلنے کی ضرورت نہیں کوئی الفاظ کا ہیر پھیر نہیں کرنا پڑے گا بلکہ ڈائریکٹ کھلم کھلا فتویٰ شرک داغ دینا چاہیے مگر اب آپ کبھی زبان نہ کھولیں گے ہم بھی یہی چاہتے ہیں کہ آپ کم از کم چپ تو ہوں اور اگر آپ خاموش نہیں ہوں گے تو ہم نہیں کہ اب بھی کشف کا مذاق اڑائیں گے اور اس پر حکم شرک بدعت اور گمراہی لگائیں گے تو مزا ہی آجائے گا اٹھیے امیر حمزہ صاحب ہمت فرمایئے پکڑیئے قلم دکاغذ اور لکھیے فتویٰ اور زبان بالکل وہی ہو جو "مذہبی و سیاسی باوے" "شاہراہ بہشت" اور "آسمانی جنت اور درباری جہنم" کی ہے"

نہ خنجر اٹھے گا نہ تلوار ان سے
یہ بازو میرے آزمائے ہوئے ہیں

## آپ کو سیر کراؤں:

میں نے بھی تہیہ کرلیا ہے آپ کو آپ کے اپنے خال و مبارک کی پوری سیر کرواؤں گا تاکہ کم از کم آپ کو اپنے گھر کا مکمل جائزہ تو ہوجائے دوسروں کی طرف پتھر پھینکنے سے پہلے آپ اپنے گھر کی خبر لے لیں کہیں دوسرے کا پتھر آپ کے گھر کو عنقا نہ کردے اور سب خیر ہے لیجیے لگے ہاتھوں آپ کو آپ کے گھر کا ایک اور کمال دکھاؤں شاید آپ خود بھی اس کو پڑھ کر ورطۂ حیرت میں مبتلا ہو نگے لیجیے رکھیے اپنے دھڑکتے دل پر ہاتھ اور سنبھلیے ذرا کہیں گر نہ جایئے گا یہ حوالہ دیکھ کر آپ کو چکر ضرور آئیں گے مگر حق اسی کیفیت میں واضح ہوجائے گا۔

صاحب کرامات اہلحدیث نے قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کی کرامات میں ذکر کیا ہے لکھتے ہیں:



## کپڑے لاؤ:

"قاضی عبدالرحمن صاحب پٹیالوی کا بیان ہے کہ نابھہ میں ایک مستانہ فقیر تھا، جو بالکل ننگ دھڑنگ رہتا تھا اور مجذوب تھا کسی نے قاضی صاحب سے اس کا ذکر کیا، آپ نے اسے ملنے کا ارادہ کیا اور فرمایا کہ کل چلیں گے اور اس کے لئے کھانا بھی لے جائیں گے چنانچہ جب آپ گئے اور ابھی اسٹیشن سے اُترے ہی تھے کہ اس نے کہنا شروع کیا کپڑے لاؤ کپڑے لاؤ ایک بزرگ آرہا ہے اور مجھے اس سے حیا آتی ہے چنانچہ قاضی جی کے پہنچنے سے پہلے ہی اس نے کپڑا اوڑھ لیا، جب آپ پہنچے، تو نہایت تکریم سے پیش آیا اور دیر تک آپ سے سلوک اور علم کی باتیں کرتا رہا، کھانا بھی کھایا اور کہا کہ جو آج کھانے کا مزہ آیا ہے عمر بھر کبھی نہیں آیا پھر جب آپ تشریف لے گئے تو اس نے کپڑے اتار پھینکے اور اسی طرح دیوانہ ہوگیا"۔ (کرامات اہلحدیث ۴۰)

## ننگ دھڑنگ:

امیر حمزہ صاحب! آپ نے اپنے ایک عظیم سپوت بہت بڑے اہل حدیث عالم کے کمالات میں سے ایک کمال مطالعہ فرمایا لیا نابھہ کے ایک مستانہ فقیر کا حال اپنی آنکھوں سے اپنی کتاب "کرامات اہلحدیث" میں ملاحظہ فرمالیا۔ آپ کو یاد ہوگا آپ نے حضرت علی بن عثمان ہجویری المعروف بہ داتا گنج بخش رحمۃ اللہ علیہ کے مزار شریف کے باہر مستانوں ملنگوں کا قلابازیاں لگا لگا کر الفاظ کی ترتیبیں بدل بدل کر خوب مذاق اڑایا ہے بلکہ آپ نے تو اپنے ایک دوست کا ذکر بھی کیا ہے جو ان ننگ دھڑنگ لوگوں سے بچ نکلا تھا اور وہ راہ راست پر آگیا تھا آپ کے نزدیک تو ننگ دھڑنگ مست ملنگ قابل طعن لوگ ہوتے ہیں تبھی تو آپ نے بلا روک ٹوک ان کا مذاق اڑایا ہے۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



ان لوگوں سے بچنا ہی آپ کے نزدیک لائق تحسین ہے ان لوگوں کی صحبت میں جانا ان کا ادب کرنا ان لوگوں سے محبت کرنا تو سراسر غلط ہے نا ان سے تو دور بلکہ کوسوں دور بھاگنا چاہیے۔

## قاضی صاحب اور مجذوب:

آپ نے یہ بھی جائزہ لے ہی لیا ہوگا آپ کے اپنے مولانا صاحب میری مراد جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب سے ہے ان کی بارگاہ میں کسی نے عرض کیا ایک ننگ دھڑنگ مستانہ فقیر نابھہ میں رہتا ہے تو آپ نے اس کی گت بنانے کی بجائے اس کی زیارت وملاقات ہی کی ٹھان لی اور باقاعدہ بڑے ہی اعزاز واکرام کے ساتھ ان ننگ دھڑنگ صاحب کی خدمت میں حاضر ہوگئے اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو یاد تازہ فرمایئے خوب رہے گی خوب:

"نابھہ میں ایک مستانہ فقیر تھا، جو بالکل ننگ دھڑنگ رہتا تھا اور مجذوب تھا کسی نے قاضی صاحب سے اس کا ذکر کیا آپ نے اسے ملنے کا ارادہ کیا اور فرمایا، کل چلیں گے اور اس کے لئے کھانا بھی لے جائیں گے"۔ (کرامات اہلحدیث ۲۰)

## ید طولیٰ رکھتے ہیں:

اب ہم اس دورنگی کو کیا کہیں آپ کہتے ہیں کہ اس قسم کے لوگوں کو قریب بھی نہیں بھٹکنے دینا چاہیے اور آپ کے بڑے ملاقاتیں کرتے پھرتے ہیں فیصلہ گھر میں کیجئے آپ کا مؤقف درست ہے یا آپ کے بڑوں کا اگر آپ صحیح ہیں تو اٹھایئے قلم اور اپنے بڑوں کے خلاف اب تو جہالت کیا آڑے آئے گی چونکہ آپ تو پڑھے لکھے آدمی ہیں آپ کو بھلا کوئی جاہل کیسے متاثر کرسکتا ہے۔



بات یہیں تک نہیں رہی بلکہ قاضی صاحب باقاعدہ قصد کرتے ہیں ملاقات کا اور اگلے دن نابھہ روانہ ہوتے ہیں جاتے وقت خالی ہاتھ جانا بھی اچھا نہیں سمجھتے بلکہ کھانا بھی ان مستانہ فقیر ننگ دھڑنگ کے لئے ساتھ لے کر چلتے ہیں۔ کدھر گئیں آپ کی وہ پھبتیاں، تحریری قلابازیاں، قلمی گوھر سازیاں آپ تو ایسے لوگوں کا مذاق اڑانے میں ید طولیٰ رکھتے ہیں کھولیے زبان مبارک، اٹھایئے قلم اطہر اور لکھئے زبردست مضمون جناب قاضی صاحب کے خلاف تاکہ آپ کی حق گوئی وبے باکی واضح ہو۔ وہی نعرۂ حق بلند فرمایئے اور صاف صاف اعلان کیجئے زیارت وملاقات کا قصد وارادہ کرکے نابھہ گئے اس لئے وہ بدعتی ہوگئے، گمراہ ہوگئے، ارتکاب شرک کیا اور اب وہ ہماری جماعت کے اکابرین میں تو کیا اصاغرین میں شمار نہیں رہے پھر تو مزہ آئے گا مگر اب جو آپ خاموش رہے تو ہم بھی اعلان کرتے ہیں آپ نے جو کچھ بڑھکیں اپنی کتابوں میں ماری ہیں وہ سب بے سروپا ہیں اگر آپ نے دائیں بائیں راستہ تلاش کرکے نکلنے کی کوشش کی تو ہم آپ کے تمام راستوں کی ناکہ بندی کرکے پکڑ لیں گے بہر حال اب بھاگنے کا کوئی راستہ باقی نہیں رہا آپ نے جس طرح نوجوانوں کو گمراہ کرنے کیلئے جال بچھایا تھا اور بڑے پر امید تھے کہ اب تو لوگ دھڑا دھڑ ہمارے ہم خیال بنتے چلے جائیں گے مگر افسوس ایسا ہو نہ سکا۔ ہائے حسرت ہی رہی۔

## دل فرحاں وشاداں:

آپ ننگ دھڑنگ لوگوں کو جاہل، گمراہ اور پتا نہیں کیا کیا کہتے ہیں مگر آپ کے بزرگ ان کی ملاقات کو جاتے ہیں نہ صرف ملاقات کو جاتے ہیں ان کیلئے بطور نذرانہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کھانا بھی لے جاتے ہیں اور صرف کھانا ہی پیش نہیں کرتے ان کے ساتھ کھانا کھاتے ہیں اور پھر خوب علم وسلوک کی باتیں کرتے ہیں لیجئے مطالعہ فرمایئے تاکہ آپ کا دل فرحاں وشاداں ہو اور آپ کو کچھ تو روحانیت میسر آئے ہمارے ہاں سے اگر اسی طرح کی کوئی بات ہو جاتی تو آپ نے فوراً مذاق میں ٹال دینا تھا مگر اب تو آپ کے روبرو آپ کے بزرگ آپ کے اپنے عالم، مؤرخ، محقق، مصنف اور صاحب کرامت بزرگ ہیں بھلا ان کی آپ کیسے ٹال سکتے ہیں۔ قاضی عبدالرحمٰن صاحب بیان کرتے ہیں:

"قاضی سلیمان منصور پوری صاحب ابھی اسٹیشن سے اترے ہی تھے کہ اس (مستانہ فقیر ننگ دھڑنگ) نے کہنا شروع کیا کپڑے لاؤ کپڑے لاؤ ایک بزرگ آرہا ہے اور مجھے اس سے حیا آتی ہے چنانچہ قاضی جی کے پہنچنے سے پہلے ہی اس نے کپڑا اوڑھ لیا جب آپ پہنچے تو نہایت تکریم سے پیش آیا اور دیر تک آپ سے علم وسلوک کی باتیں بھی کرتا رہا کھانا بھی کھایا اور کہا کہ جو آج کھانے کا مزہ آیا ہے عمر بھر میں کبھی نہیں آیا"۔ (کرامات اہلحدیث: ۲۰)

## تلاشِ کمالات:

میں نے بھی مجبوراً ہی آپ کے حالات کا مطالعہ کر کے ان کے کمالات کو تلاش کیا ہے اور مجھے پورا یقین ہے آپ کو ان تمام کمالات کا علم نہ تھا ورنہ آپ قلم پکڑ کر کبھی بھی مجذوبوں کا مذاق اڑانے کی ناکام کوشش نہ کرتے۔ آپ تو بڑے پہنچے ہوئے لوگ ہیں قاضی صاحب ابھی اسٹیشن پر پہنچے ہی تھے کہ اس مجذوب ننگ دھڑنگ فقیر مستانہ کو ان حضرت کی آمد کا علم ہو گیا اور کہنا شروع کر دیا کپڑے لاؤ، کیا خیال ہے اب ان لوگوں



کے بارے میں جو حضرات اولیاء کرام کی بابت یہ عقیدہ رکھتے ہیں یہ اللہ والے ایک دوسرے کو جانتے پہچانتے ہیں۔ کیوں جناب اب بھی فتویٰ لگائیں گے اور وہ بھی شرک کا؟

## اندازِ دلبرانہ:

قاضی صاحب نے نہ صرف ان ننگ دھڑنگ سے ملاقات کی اور کھانا کھلایا بلکہ ان سے دیر تک سلوک اور علم کی باتیں کرتے رہے آخر وہ کون سا علم ہے اور وہ کون سا سلوک ہے جو قاضی صاحب کو تو آتا ہے اور ان کے علاوہ تمام اولیاء عظام کیلئے اس کا وجود شرک ہے قابل تردید ہے اور لائق نفرت ہے آپ کے ہاں نہ مستانہ فقیر قابل نفرت نہ اسکی رفاقت لائق الزام، نہ اس کی معیت میں کھانا تناول کرنا جرم اور نہ ہی ان کے پاس بیٹھ کر دیر تک علم وسلوک کی باتیں کرنا شرک مگر ہمارے لئے یہ سب شرک بڑی زبردست تقسیم ہے۔ مذکورہ بالا اعمال اگر ہم غلامان مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم اہلسنت مسلمانوں سے ہو جائیں تو بغیر کسی روک ٹوک شرک اور اگر یہی اعمال آپ کے گھر کے بزرگوں سے انجام پائیں عین توحید میں اس اندازِ دلبرانہ کے صدقے

## لڑکا ہوگا:

آپ کو آپ کے بزرگ قاضی صاحب کی عزت وتکریم ان کے علم یقینی کا ایک اور واقعہ بھی سناؤں کرامات اہلحدیث ہی میں مذکورہ ہے اس کو صاحب کرامات اہلحدیث نے کرامت نمبر 17 کے ضمن میں بیان کیا ہے لیجئے آپ کی نذر کرتا ہوں پڑھیے اور لطف پایئے۔

"جب آپ حج کو جارہے تھے تو فرمایا کہ عبدالعزیز کے ہاں لڑکا پیدا ہوگا (یعنی اپنا

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



پوتا) اس کا نام معزالدین حسن رکھنا چنانچہ ایسا ہی ہوا"۔ (کرامات اہلحدیث ۴۲)

آپ کے بزرگ عالم دین مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی صاحب جو مولانا محمد ابراہیم صاحب میر سیالکوٹی کے شاگرد ہیں۔ جناب قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب کے بارے میں رقم طراز ہیں وہ حج کو جا رہے، تو فرمایا کہ عبدالعزیز کے ہاں لڑکا پیدا ہو گا اس کا نام معزالدین حسن رکھنا چلو یہاں تک تو کسی حد تک بات سمجھ میں آتی ہے اس کو دعا مان لیتے ہیں مگر اگلا جملہ تو آپ کو زہر قاتل ہو کر لگے گا۔" چنانچہ ایسا ہی ہوا"۔

## علم ما فی الارحام:

ہمارے ہاں اگر کسی بزرگ کے حوالے سے کہہ دیا جائے کہ انہوں نے پیدائش سے پہلے کہہ دیا تھا لڑکا ہو گا اور فرزند تولد ہوا تو آپ لٹھ لے کر پیچھے پڑ جاتے ہیں اور ضربیں لگاتے وقت آپکو یہ تک بھی یاد نہیں رہتا کہ آپ اپنے گھر میں ہیں وہاں موجود نہیں جہاں لٹھ مار رہے ہیں۔ لٹھ برسانے کے بعد آپ کو ہوش آتا ہے اور خود یہ وار تو اپنے اوپر پڑ گیا۔

بس سمجھ میں صرف اتنا ہی آتا ہے کہ آپ کے بزرگوں کو تو پتا ہوتا ہے کسی مادہ کے پیٹ میں کیا ہے مگر اللہ کے انبیاء کرام کو پتا نہیں ہوتا۔ جن کا علم قطعی یقینی ہے جن پر وحی نازل ہوتی ہے ان کو خبر نہیں اور آپ کے قاضی صاحب کو سب پتا ہے کمال ہو تو ایسا ہو سوچئے گا آپ نے کیا لکھ دیا ہے اور آپ کے گھر میں کیا ہوتا رہا ہے۔ قاضی صاحب کی فضیلت و کرامت کا بیان کرتے ہوئے کرامات اہلحدیث میں لکھا ہے دل و دماغ حاضر کر کے پڑھیے گا۔ مزہ آئے گا:



"جب آپ حج پر تشریف لے گئے اور مدینہ منورہ پہنچے تو مسجد نبوی کے پیش امام آپ کی بہت مدارات کرنے لگے، ایک دن آپ جو اٹھے، تو امام صاحب جوتیاں سیدھی کرنے لگے، آپ نے فرمایا یہ کیا؟ تو امام صاحب نے کہا کہ مجھے خواب میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ محمد سلیمان ہمارا مہمان ہے اس کی مدارات میں فرق نہ کرنا"۔ (کرامات اہلحدیث ۴۳)

## امام مسجد نبوی ﷺ:

آپ نے غور سے اس عبارت کو پڑھا ہو گا، مجھے طنز کرتے ہوئے بھی شرم آتی ہے اس لیے کہ میں نے ان لوگوں سے تربیت پائی ہے جن کو اللہ تعالیٰ کے ہاں حاضری کا پورا یقین تھا اور اپنے اعمال کی جوابدہی پر بھی ایمان تھا یعنی ان کا یہ عقیدہ تھا کہ قیامت برحق ہے اور اس دن ہمیں اپنے خالق مالک کے روبرو ضرور کھڑے ہونا ہے سچی بات ہے مجھے اولاً تو اس عبارت کو پڑھ کر بڑی ہنسی آئی کہ یا اللہ تیرا شکر ہے تو نے ہماری صداقت ہمارے مخالفین کے منہ سے ظاہر فرمائی۔ ذرا غور سے ایک مرتبہ پھر اس عبارت پر نظر ڈالیں مسجد نبوی شریف کے پیش امام آپ کی بہت مدارات کرنے لگے ایک دن آپ جو اٹھے تو امام صاحب جوتیاں سیدھی کرنے لگے۔ آپ نے فرمایا یہ کیا تو امام صاحب نے کہا کہ:

"مجھے خواب میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے کہ محمد سلیمان ہمارا مہمان ہے اس کی مدارات میں فرق نہ کرنا"۔ (کرامات اہلحدیث ۴۳)

## حافظہ دروغ گو را حافظہ نباشد:

میں اللہ تعالیٰ کی وحدانیت کا واسطہ دیکر پوچھنا چاہتا ہوں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



ذلم نے قاضی سلیمان منصور پوری کو پہچان لیا کہ وہ میری مسجد میں آیا ہوا ہے اور پھر امام مسجد نبوی شریف کو مدارات کو حکم صادر فرمایا یہ سب زندہ ہونے کی دلیل ہے یا نہیں؟ یقیناً زندہ ہونے کی دلیل بینہ ہے۔ اب آپ کا اپنا عقیدہ کدھر گیا اڑ گیا نا لگ گئے نا پَر چڑھ گیا آسمان پر تمہارے پاس تو نہ رہا اب کیا کریں گے آپ روئیں خوب روئیں آنسو خشک ہو جائیں تو ٹیئر ڈراپس (Tear Drops) آنکھوں میں ڈال لیں اگر یہ ڈراپس میسر نہ ہوں تو پیاز کاٹنا شروع کر دیں تاکہ کمی پوری ہو جائے کچھ آپ کا سچ قائم رہے مگر ان حربوں کے باوجود بھی آپ سچے ثابت نہ ہو سکیں گے۔

دروغ گورا حافظہ نبا شد

## سچ بتاؤں:

چونکہ آپ لوگوں نے اپنے بزرگ قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب کا کمال ثابت کرنا تھا اس لئے اس موقع پر آپ کو اپنا عقیدہ یاد نہ آیا۔ بے خودی میں نامعلوم آپ نے کیا کچھ لکھ دیا ویسے سچ بتاؤں یہ کرامات بیان کرنے سے پہلے مولانا عبدالمجید صاحب کو آپ سے مشورہ ضرور کرنا چاہیے تھا مجھے یوں لگتا ہے جب یہ سب لکھا جا رہا تھا اس وقت تو آپ دنیا میں تشریف ہی نہیں لائے تھے۔

کرامات اہلحدیث میں لکھوکی کے مولانا عبدالرحمٰن صاحب کی کرامات کا ذکر کرتے ہوئے مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی صاحب لکھتے ہیں پیش خدمت ہے مطالعہ فرمائیے:

## جلال دین عرف جلّو:

موضع لکھوکی سے کچھ فاصلہ پر ایک جمیل نامی گاؤں تھا جہاں کا سردار جلال الدین



عرف جلّو بڑا زمیندار اور کئی گاؤں کا مالک تھا، جلّو کے ہاں اولاد نہ ہوتی تھی، اس نے کئی بیویاں کر رکھی تھیں، مگر پھر بھی وہ اولاد سے محروم تھا، پنجاب میں یہ رواج ہے کہ جب کسی کے ہاں اولاد نہ ہوتی ہو تو وہ پیروں، فقیروں، جوگیوں، مست قلندر خانقاہوں اور قبروں کی طرف رجوع کرتا ہے، اور ان سے اولاد چاہتا ہے، جلّو بھی اسی خیال کا آدمی تھا، اور جہاں کسی فقیر کا پتہ چلتا تھا، وہیں اٹھ دوڑتا تھا، ایک بار اسے پتہ چلا کہ فیروز پور شہر میں ایک مستانہ ہے، جو مجذوب ہے اور بالکل ننگ دھڑنگ رہتا ہے، وہ اس کے پاس گیا اور اس سے بیٹا مانگا، مجذوب بولا، نالائق: اگر بیٹا لینا ہے تو لکھوکی جا جلّو نے دل میں کہا کہ وہاں تو سب وہابی ہی وہابی ہیں بھلا وہاں سے بیٹا کیسے ملے گا، مجذوب نے کہا، نالائق جاتا نہیں تجھے بیٹا یہاں نہیں، بلکہ وہاں سے ہی ملے گا، جلّو اس مستانہ کے ارشاد پر لکھوکی پہنچا اور مولینا عبدالرحمٰن صاحب سے سارا واقعہ بیان کر دیا۔

## فرزند ہوا:

"آپ نے دعا فرمائی، خدا کی قدرت اگلے ہی سال اس کے ہاں فرزند نرینہ تولد ہوا، وہ دوڑا دوڑا آیا، اور مولینا کو لے جانا چاہا مگر آپ نہ گئے اور کہا کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ عوام یہ سمجھنے لگے کہ عبدالرحمٰن نے بیٹا دیا ہے، پھر اس نے عرض کی، کہ حضور آپ اس کی تردید کر دیں اور توحید کا وعظ کہیں، تا کہ ہمارے گاؤں بھی کچھ توحید وسنت سے آشنا ہو جائیں، چنانچہ اس پر آپ وہاں گئے اور کئی دن تک وہاں وعظ کئے اور سب کے سب گاؤں اہلحدیث ہو گئے روانگی پر سردار نے آپ کو بہت کچھ دینا چاہا، مگر آپ نے ایک حبہ تک قبول نہ کیا"۔ (کرامات اہلحدیث ۱۱-۱۰)

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## نالائق! بیٹا لینا ہے تو لکھو کی جا:

لگتا ہے آپ نے جتنی نفرت مجذوبوں، مستانوں اور ننگ دھڑنگ قسم کے لوگوں سے کی ہے اور اس کا بار بار اپنی کتابوں، مذہبی و سیاسی باوے''' آسمانی جنت اور درباری جہنم'' اور شاہراہ بہشت'' میں اظہار و بیان کیا آپ کے اکابر کو اتنی ہی محبت ان ننگ دھڑنگ لوگوں سے تھی سچا کون ہے آپ یا آپ کے بڑے فیصلہ گھر میں کیجئے گا۔ میں تو صرف اتنا عرض کروں گا کیا مولانا عبدالرحمٰن صاحب کا کمال اس وقت تک پایۂ ثبوت کو نہیں پہنچتا جب تک جلال الدین عرف جلّو کو پہلے ننگ دھڑنگ کے پاس نہ لے جاتا چنانچہ پہلے جلّو صاحب مجذوب کے پاس پہنچے پھر وہ لکھو کی گئے وہاں سے ان کو بیٹا عطا ہوا۔ آپ غور سے اپنے مولانا عبدالمجید سوہدروی صاحب کی عبارت پڑھ لیں تاکہ آپ کو یقین کی وادی تک رسائی حاصل ہو جائے خصوصاً ان جملوں پر خوب غور فرمائیں:

''وہ (جلال الدین عرف جلّو) اس (مجذوب ننگ دھڑنگ) کے پاس گیا اور اس سے بیٹا مانگا، مجذوب بولا، نالائق! اگر بیٹا لینا ہے تو لکھو کی جا جلّو نے دل میں کہا کہ وہاں تو سب وہابی ہی وہابی ہیں بھلا وہاں بیٹا کیسے ملے گا مجذوب نے کہا نالائق جاتا نہیں تجھے بیٹا یہاں سے نہیں بلکہ وہاں سے ہی ملے گا''۔ (کرامات اہلحدیث ۱۱-۱۰)

## لائق نفرت:

امیر حمزہ صاحب مبارک ہو آپ کو آپ نے جو راہ دوسروں کو دکھائی تھی وہ تو اس کے بالکل برعکس تھی راز کی بات ہے کسی کو نہیں بتائیں گے مگر ہمیں تو ضرور بتائیں یہ ننگ دھڑنگ آپ کے نزدیک بھی لائق صد عزت، صاحب کمال، ولایت کی پہچان،



کرامات کی جان اور صداقت کی آواز ہوتے ہیں اور کبھی بالکل قابل نفرت آخر وقت وقت کی بات ہے آپ اتنا ہی بتا دیں وہ وقت کونسا ہوتا ہے جب یہ لوگ لائق التفات ہوتے ہیں اور وہ کونسا وقت ہوتا ہے جب یہ لوگ لائق نفرت بن جاتے ہیں۔ ورنہ ہم آپکو دورنگا کہیں گے اور پتا ہے نا دورنگ والا ہی منافق ہوتا ہے۔

## منازل سلوک:

آپ نے جو اولیاء اللہ کے کمالات کا مذاق اڑایا ہے ان کو کمالات سے بالکل خالی بتایا بلکہ کمالات خداداد تک بھی ماننے سے انکار کر دیا۔ اب آپ کو جب اپنے گھر کے بزرگوں کے بارے میں پتا چلے گا کہ وہ کیسے کیسے کمالات کے حامل تھے تو آپ سر دھننے لگ جائیں گے بلکہ آپ پر وجد طاری ہوگا عین ممکن ہے اسی وجد آفریں کیفیت میں آپ کے لطائف بھی جاری ہو جائیں اور سلوک کی منازل تو خیر آپ کو آپ کے مولانا قاضی منصور پوری صاحب ہی طے کروائیں گے اس لئے کہ وہ آپ کے اپنے بزرگ ہیں اور سلوک انہوں نے نابھہ کے ایک صاحب کمال ممتاز ننگ دھڑنگ سے سیکھا تھا۔ آپ کو یاد ہوگا قاضی صاحب قصد و ارادہ کر کے نابھہ گئے تھے۔ اظہار عقیدت کے طور پر مجذوب کیلئے کھانا بھی لے گئے تھے۔ اسی محبت و پیار نے قاضی کے ساتھ مجذوب کو علم و سلوک کی باتیں کرنے پر مجبور کر دیا تھا واہ واہ وہ بھی کیسی سچی پچی محبت ہوگی جس نے ننگ دھڑنگ مستانہ فقیر کو بھی علم و سلوک کے راز افشاں کرنے پر رضامند کر دیا اور یہ گوہر نایاب جناب قاضی صاحب نے کمال سلیقہ مندی سے سمیٹ لیے اور پھر عمر بھر یہ جوہر بے مثل تقسیم فرماتے رہے۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## مولانا عبدالرحمٰن لکھوی صاحب کا تعارف:

میں یہ بھی چاہوں گا کہ لگے ہاتھوں مولانا عبدالرحمٰن صاحب لکھوی کا تعارف بھی کرواتا چلوں اگر میں ان کے تعارفی کلمات لکھتا تو شاید آپ کو یقین نہ آتا مگر میں آپ کے گھر سے ان کا تعارف پیش کرتا ہوں تاکہ سندر ہے۔ آپ کا قلب مبارک راحت محسوس کرے گا آپ کا دماغ فرحاں وشاداں ہو گا لیجئے پیش خدمت ہے کرامات اہلحدیث ہی میں لکھا ہے:

آپ مولینا حافظ محمد بن بارک اللہ مصنف تفسیر محمدی کے صاجزادہ ہیں۔ آپ ۱۲۵۳ھ میں بمقام لکھو کے ضلع فیروز پور پیدا ہوئے، آپ کا نام تو عبدالرحمٰن تھا مگر محی الدین کے نام سے مشہور تھے۔ ۷ سال کی عمر میں قرآن کریم حفظ کیا، اور ۱۷ سال کی عمر میں علوم درسیہ متعارفہ سے فراغت پائی، طبیعت شروع ہی سے تصوف کی طرف مائل تھی، اور کسی پیر طریقت کی تلاش تھی، ۲۲ سال کے تھے، کہ غزنی پہنچے اور حضرت عبد اللہ صاحب کی بیعت کی، حضرت عبداللہ صاحب غزنی سے پنجاب تشریف لانے اور امرتسر قیام فرمانے پر تو ہزارہا لوگوں نے فیض پایا مگر غزنی پہنچ کر السابقون السابقون کا مرتبہ آپ ہی نے حاصل کیا تھا، حضرت عبداللہ صاحب کو آپ سے بہت محبت تھی، چنانچہ آپ اکثر اوقات فرمایا کرتے تھے کہ "ما عبدالرحمٰن یکسیت" پھر آپ کو مخاطب کر کے یہ بھی فرمایا "درمیاں ماوشما مناسبت وراز ل بود" چنانچہ عبداللہ صاحب نے آپ کو اپنا نائب بھی قرار دے دیا تھا آپ کو اکثر الہام ہوا کرتے تھے۔ (کرامات اہلحدیث ۸)

## پیر طریقت کی تلاش:

بہت خوب: مولانا عبدالرحمٰن لکھوی بڑے ہی صاحب کمال تھے ان جملہ کمالات



میں سے ایک کمال یہ بھی تھا، طبیعت شروع ہی سے تصوف کی طرف مائل تھی اور کسی پیر طریقت کی تلاش تھی، اللہ تعالیٰ بھی کتنا کارساز ہے وہ اپنے بندوں کی کیسی مستحکم مدد فرماتا ہے۔ آپ لوگ تو بیعت سلسلہ ہائے طریقت اور ان کے فیوض وبرکات کا صاف صاف انکار کرتے ہیں اور آپ کے بزرگ ہیں کہ پیر طریقت کی تلاش میں رہتے ہیں اور جب موقعہ ملے اور کوئی پیر طریقت مل جائے تو دور دراز سفر کر کے ان کے دست حق پرست پر بیعت کرنے بھی چلے جاتے ہیں اور بیعت کر بھی لیتے ہیں۔

مولانا عبدالرحمٰن صاحب لکھوی کو پتا چلا کہ غزنی میں ایک پیر طریقت ہیں تو غزنی پہنچ کر جناب عبداللہ غزنوی صاحب کی بیعت کی۔

اللہ کا کرنا یوں ہوا کہ جناب عبداللہ غزنوی صاحب امرتسر تشریف لائے۔ پہلے تو فیض ذرا محدود تھا چونکہ آپ ہندوستان سے دور غزنی میں رہائش پذیر تھے اور جب آپ غزنی کو خیر آباد کہہ کر ہندوستان چلے آئے اور آپ کو سرزمین پنجاب بہت پسند آئی اور یہاں ہی رونق افروز ہو گئے۔ مولانا عبدالمجید سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی نے کیا خوب نقل کیا ہے ایک بار پھر مطالعہ فرمائیے تاکہ ذہن میں تازہ رہے۔

"حضرت عبداللہ صاحب غزنوی کے پنجاب تشریف لانے اور امرتسر قیام فرمانے پر تو ہزارہا لوگوں نے فیض پایا مگر غزنی پہنچ کر السابقون السابقون کا مرتبہ آپ ہی نے حاصل کیا"۔ (کرامات اہلحدیث ۸)

## آپ ہی کو زیب ہے:

میں نے ان خیالات کے اظہار کرنے پر آپ کے بزرگوں کو پہلے بھی خراج تحسین

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



پیش کیا ہے اور آئندہ بھی اس روش کو اپنائے رکھوں گا۔ کیا مجال جو میں آپ کی طرح اپناؤں اور اپنے قلم کو مزاح کی وادی میں دھکیل دوں اور رانٹ بنٹ، شنٹ کروں وہ تو آپ ہی کو زیب ہے۔ بہرحال آپ سے اپنے بزرگوں کا فیض تو سنبھالا نہیں جاتا وہ تو جاے سے چھن چھن کر باہر اچھلتا پھرتا ہے اور دوسرے بزرگوں کو قطعاً فیضان سے خالی قرار دیتے ہیں خود ہی بتائیے ہم آپ کو کیا کہیں آپ تو جناب عبداللہ غزنوی صاحب کی خدمت میں پہنچ کر السابقون السابقون کی منزل اور مقام مرتبہ بھی حاصل کر لیتے ہیں یہ تمام مقامات آپ ہی کو مبارک ہوں۔

## اکثر الہام ہوا کرتے تھے:

اور تو اور آپ نے بڑی شدت سے بزرگوں کے روحانی کمالات کا نہ صرف انکار کیا بلکہ تذکرہ کر کر کے مذاق اڑایا ہے مگر اب آپ اپنے گھر کے بزرگوں کے ہاتھوں ایسے پھنسے ہیں کہ دامن چھڑانا ممکن نہ ہوگا۔ اولیاء عظام میں سے اگر کبھی کسی کو بھی القا ہو جائے تو آپ اس کیفیت کا رہ رہ کر مذاق اڑاتے ہیں کٹ حجتیاں کرتے ہیں اس وقت تو آپ یوں لگتے ہیں جیسے کسی سٹیج ایکٹر کے باقاعدہ تربیت یافتہ ہیں۔

مولانا عبدالرحمٰن صاحب کی کرامات کا ذکر کرتے ہوئے کرامات اہلحدیث میں لکھا ہے:

| | |
|---|---|
| مولوی قائم الدین صاحب سکنہ | چک ڈھیڈالہ ضلع لائلپور کا بیان |

”ہے کہ جن دنوں میں مولینا عبدالرحمٰن صاحب کے ہاں لکھوکی پڑھا کرتا تھا، ان ایام کا واقعہ ہے“

”کہ ایک بھنگی چرسی فقیر آیا، جس کی داڑھی تو صفاچٹ تھی اور مونچھیں لمبی لمبی تھیں،



ہاتھ میں چمٹا، بدن پر کملی، شکل صورت خلاف شرع، گاتا تھا اور کہتا تھا کہ مولوی صاحب نشہ ٹوٹا ہوا ہے کچھ دلواؤ، مولوی صاحب نے ایک طالب علم سے کہا کہ اسے پیسہ دیدو، وہ بولا ایک پیسہ سے کیا بنتا ہے اگر دینا ہے تو کچھ آپ دو، فقیر کا عمل ٹوٹا ہوا ہے، نہ بھنگ ملی نہ چرس، مولینا نے ایک نظر اٹھا کر اس کی طرف دیکھا اور فرمایا مجھ سے کچھ لینا ہے جونہی اس کی نظر سے نظر ملی وہ لڑکھڑا کر گرا اور ایسا گرا کہ بیہوش ہو گیا، طالب علم اُسے سنبھالنے کیلئے آگے بڑھے، مگر وہ ایسا بے حس پڑا تھا جیسے مردہ تین گھنٹے وہ بیہوش پڑا رہا، جب ہوش سنبھالا تو اٹھا، مولینا نے پوچھا کیوں بھائی کیا لینا ہے: وہ بولا جو لینا تھا وہ لے لیا وہ لے لیا، بس مجھے مسلمان بنا دیجئے“۔ (کرامات اہلحدیث ۹،۸)

## اس کی نظر سے نظر ملی:

امیر حمزہ صاحب آپ کو اب یقین آ گیا جس نظریے کا رد کرنے کیلئے آپ نے ایڑھی چوٹی کا زور صرف کر دیا وہ سب کچھ آپ کے اپنے گھر سے برآمد ہو رہا ہے، آپ تو قوت نظر کے مخالف ہیں، آپ نے تو اس قسم کے عقیدے کی زبردست مخالفت کی ہے بلکہ مخالفت کرتے کرتے آپ کی زبان خشک ہوئی، گلا خراب ہوا اور اپنی آواز آپ کو خود بھی سنائی دینا بند ہو گئی اب تو جناب والا کے اپنے گھر کے بزرگ بھی نظر ڈالتے بلکہ نظر ڈالکر کایا ہی پلٹ دیتے نظر آتے ہیں اگر نہیں یقین آتا تو تازہ فرمایئے ان جملوں کو تاکہ تفہیم میں آسانی ہو:

## ایک نظر دیکھا:

”مولینا نے ایک نظر اٹھا کر اس کی طرف دیکھا اور فرمایا مجھ سے کچھ لینا ہے جونہی اس کی نظر سے نظر ملی وہ لڑکھڑا کر گر گیا اور ایسا گرا کہ بے ہوش ہو گیا، تین گھنٹے بے ہوش رہنے کے بعد جب اٹھا تو مولینا نے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



پوچھا کیوں بھائی کیا لینا ہے وہ بولا جو لینا تھا وہ لے لیا جو لینا تھا وہ لے لیا بس مجھے مسلمان بنا دیجئے"۔ (کرامات اہلحدیث ۹،۸)

اگر ہم کہیں فلاں بزرگ کی فلاں شخص پر نظر پڑتی تو ان کی نظر نے اس کے دل کی کایا ہی پلٹ دی تو فوراً آپ چیخ پڑتے ہیں نظر میں کوئی کمال نہیں ہوتا یہ سب ڈھونگ ہیں غلط ہے بے اصل ہے اس کی کوئی حقیقت نہیں نظر سے کچھ نہیں ہوتا یہ سب ایسے ہی مزارات پر حاضری دینے والوں نے پلے سے گھڑ لیا ہے ورنہ ہوتا کچھ بھی نہیں۔

## اولیاء اللہ:

بہت خوب حضرت علی بن عثمان ہجویری کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت غوث اعظم شیخ سید عبد القادر جیلانی کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت خواجہ معین الدین چشتی کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت خواجہ بابا فرید الدین گنج شکر کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء دہلوی کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت شاہ نصیر الدین چراغ دہلوی کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت امام احمد رضا قادری کی نظر میں کوئی کمال نہیں، اور حضرت مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی کی نظر میں کوئی کمال نہیں، رحمۃ اللہ علیہم اجمعین۔ لیکن آپ کے مولانا عبد الرحمٰن لکھوی صاحب کی نظر میں بہت کمال ہے اب خدا لگتی کہیے گا کیا ان تمام بزرگان دین سے مرتبہ میں مولانا عبد الرحمٰن لکھوی صاحب بڑے ہیں جو یقیناً ان مذکورہ حضرات اولیاء کرام کی خاک پا بھی نہیں ان کی نظر تو بڑی با کمال ہے لیجئے تازہ فرمایئے تاکہ آپ کے علم میں اضافہ کا باعث ہو:



"جونہی اس کی نظر سے نظر ملی وہ لڑکھڑا کر گر گیا اور ایسا گرا کہ بے ہوش ہو گیا"
(کرامات اہلحدیث ۹،۸)

## نظر ڈال کر بے ہوش کر دیا:

نظر تھی یا کوئی زور آور پہلوان جس نے فوراً اپنے مد مقابل کو گرا دیا اور فتح و نصرت حاصل کر لی صرف گرایا ہی نہیں بلکہ ایسی چپت ڈالی کہ بے ہوش ہی کر کے رکھ دیا اور بے ہوشی بھی دو چار لمحوں کی نہیں تھی ایسی زبردست قوت نظر تھی کہ اپنے سامنے والے کو ٹھیک تین گھنٹوں تک ہوش نہ آنے دیا آخر خدا خدا کر کے جب وہ بے چارہ تین گھنٹوں کے بعد ہوش میں آیا تو پھر اس نظر کا دوسرا کمال ظاہر ہوا اولاً تو نظر کا کمال نمبر ایک تھا ہی جو نظر میں نظر ملی اور سامنے والے کو بے ہوش کر دیا وہ بھی تین گھنٹے کیلئے اور جب ہوش آئی تو فوراً دوسرے کمال کا اظہار ہو گیا بے ہوشی سے ہوش میں آنے والا جب مولانا عبد الرحمٰن لکھوی صاحب کے روبرو ہوا تو فوراً پھر نظر سے نظر ملی مولانا لکھوی پوچھتے ہیں کیا لینا ہے؟ ذرا انہی کی زبانی سنیئے:

"تین گھنٹے بے ہوش رہنے کے بعد جب وہ اٹھا تو مولینا نے پوچھا کیوں بھائی کیا لینا ہے وہ بولا جو لینا تھا وہ لے لیا، جو لینا تھا وہ لے لیا"۔ (کرامات اہلحدیث ۹،۸)

## وسعتِ نظری:

کیوں جناب اب فرمایئے نظر میں اثر ہوتا ہے یا نہیں، اور صاحب نظر، نظر کے ذریعے دوسرے کو کچھ عطا کر سکتا ہے یا نہیں، آپ کے بزرگ نظر ڈالیں تو ایسی عطا ہو کہ بیہوشی سے ہوش میں آنے کے بعد پکار پکار کر سائل کہتا ہے جو لینا تھا وہ لے لیا جو لینا تھا وہ لے لیا آپ کے ہاں تو عنایات بذریعہ نظر بٹتی ہیں اور دوسروں کیلئے تنگ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



نظری کیوں؟ جو وسعت ظرفی اور وسعت نظری اپنے گھر کے بزرگوں کیلئے ہے وہی وسعت باقی علماء امت کیلئے بھی ہونی چاہیے ناں۔ دیکھ لیں میں نے آپ کے بزرگوں کا قطعاً مذاق نہیں اُڑایا مگر اتنا تو عرض کر سکتا ہوں نا یہ کیا ادائیں دکھاتے ہیں آپ، میں یوں بھی تو کہہ سکتا تھا کہ یہ کیا حرکتیں کرتے ہیں آپ مگر کیا مجال جو یوں کہوں بلکہ یوں کہنے پر اکتفا کیا ہے۔ میں ان بے اثر صداؤں کے صدقے، مولانا غلام رسول صاحب قلعوی کی کرامات کے ذکر میں مذکور ہے۔

## میاں چٹو:

میاں محمد چٹو لاہور میں ایک مشہور سوداگر تھا بیان کرتا ہے کہ میں نے بہت سے گھوڑے بغرض فروخت کشمیر روانہ کئے، مگر تین مہینے گذر گئے کوئی گھوڑا فروخت نہ ہوا، میں مولٰنا کی خدمت میں حاضر ہوا کہ حضرت دعا کیجئے، بہت نقصان ہو رہا ہے اور مفت کا روزانہ خرچ پڑ رہا ہے، آپ نے فرمایا میاں! تیرے گھوڑے والیے کشمیر نے خرید لیے ہیں اور تین ہزار روپیہ منافع ملا ہے میاں محمد حیران ہوا، کہ ابھی ابھی تو خط آیا کہ یہاں کوئی خریدار نہیں اور آپ فرماتے ہیں کہ تین ہزار منافع ملا ہے، میاں محمد کہتا ہے، کہ دوسرے دن خط آ گیا کہ سب کے سب گھوڑے فروخت ہو گئے اور تین ہزار منافع ہوا"۔ (کرامات اہلحدیث ۱۳۰)

## کشمیر تک نظر گئی:

آپ کے گھر کے بزرگ تو دور دراز بیٹھ کر کشمیر تک نظر ڈال لیتے ہیں وہاں پر جو سودا ہو رہا ہے وہ بھی ان کی مبارک نظر میں ہوتا ہے کہ گھوڑوں کی تعداد پر نظر، ان کی قیمت پر نظر، اور بزرگی منافع پر بھی نظر تبھی تو بڑے آرام سے فرماتے ہیں:



"میاں تیرے گھوڑے والیِ کشمیر نے خرید لیے ہیں اور تین ہزار روپیہ منافع ملا ہے"۔ (کرامات اہلحدیث ۱۳۰)

تو یہاں پر کہیں شرک فی العلم لازم نہیں آتا، اپنی حد سے کہیں آگے تو نہیں نکل گئے آپ کے بزرگ اگر یہ سب درست ہیں تو پھر آپ کو اولیاء کرام کے کمالات پر کیا اعتراض ہے کم از کم عدل تو قائم رکھنا چاہیے۔ اگر آپ کے بزگ وادیٔ کشمیر تک نظر ڈال لیتے ہیں تو حضرت علی بن عثمان ہجویری کی نظر کا کیا عالم ہوگا، حضور غوث اعظم شیخ سید عبدالقادر جیلانی کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت خواجہ معین الدین چشتی کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت بابا فرید گنج شکر کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت شاہ بہاؤ الدین زکریا ملتانی کی نظر کا عالم کیا ہوگا اور حضرت شاہ رکن عالم ملتانی کی نظر کا عالم کیا ہوگا۔

اپنے گھر کے بزرگوں کو ان اولیاء اللہ کے مقابلہ میں رکھ کر ذرا غور فرمایئے کہ کیا حیثیت بنتی ہے آپ کے اکابر کی۔ آپ کے بڑے تو بڑے تیز ہیں چند لمحوں میں گھوڑوں کا حساب کتاب کر لیتے ہیں اور منافع پر بھی پوری پوری نظر، حساب تو ایسا پکا کہ ایک دو روپیہ کی بھی کمی پیشی سامنے نہیں آتی میں پلے سے نہیں کہہ رہا، اگر ذہن مبارک سے اتر گیا ہو تو ایک مرتبہ پھر تازہ فرما لیجئے:

"میاں محمد حیران ہوا کہ ابھی ابھی تو خط آیا کہ یہاں کوئی خریدار نہیں اور آپ فرماتے ہیں تین ہزار منافع ملا ہے میاں محمد کہتا ہے کہ دوسرے دن خط آ گیا کہ سب کے سب گھوڑے فروخت ہو گئے اور تین ہزار منافع ہوا"۔ (کرامات اہلحدیث)

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## میاں چنو پر عنایت:

امیر حمزہ صاحب کیا سارے کمالات آپ کے گھر کے بزرگوں کیلئے ہی ہیں اور دوسرے بزرگ تو گویا بزرگ بھی نہیں۔ نہ ان کو کوئی کمال حاصل سب کمالات، دور و نزدیک کی سب خبر، حساب کتاب پر پوری نظر یہ تو آپ کے بزرگوں کو زیبا ہے۔ تبھی تو میاں محمد صاحب کو حساب کتاب کرنے کی بھی زحمت نہ دی بلکہ یہ فرض بھی خود ہی ادا کر دیا اور نتیجہ میاں محمد صاحب چنو کے سامنے رکھ دیا واہ بھئی واہ کمال ہو تو ایسا ہو، حساب ہو تو ایسا ہو، نظر ہو تو ایسی ہو، خبر ہو تو ایسی ہو، علم ہو تو ایسا ہو۔

آپ کے مولانا غلام رسول صاحب قلعوی کی نظر سے وادیٔ کشمیر پوشیدہ نہیں وہاں کے معاملات سب کے سب ان کی نظر میں ہیں وہاں کیا ہو رہا ہے کہاں ہو رہا ہے وہ سب جانتے ہیں حتیٰ کہ گھوڑوں کی منڈی تک ان کی مبارک نظر میں ہے گھوڑوں کی خرید و فروخت نیز فی گھوڑا منافع کیا ہے وہ سب معلوم نیز جمع کر کے کل منافع کتنا بنا وہ بھی علم میں ہے اور جھٹ کر کے مالک کو بتاتے ہیں اتنا منافع ملا ہے۔ آپ کے بزرگ روحانی کمالات میں خاصے تاجر (Businessman) معلوم ہوتے ہیں لگتا ہے آپ نے بھی ان سے فیض کا وافر حصہ پایا ہے۔

## ان شاء اللہ کامل شفا ہوگی:

امیر حمزہ صاحب اگر آپ اپنے قلم کو اعتدال تک رکھتے تو میں کبھی آپ کی خاں و تلاشی لینے نہ نکلتا اور نہ یوں آپ کو میدان میں لا کھڑا کرتا اور نہ ہی یوں آپکی اندرونی کاروائیاں طشت از بام کرتا مگر میری مجبوری تھی میں آپ کو آپ کا آئینہ دکھاتا کہ آپ اپنی اصلی صورت خود بھی مشاہدہ فرمائیں تاکہ آپکو احساس ہو جائے آئندہ آپ کا قلم



اتنا بے لگام نہ دوڑے بلکہ اس کو لگام پڑ جائے جہاں آپ روکنا چاہیں رکے اور جہاں آپ چلانا چاہیں چلے یہ بھی آپ کی ہی بہتری کے لئے ہے آئندہ زندگی میں آپ کو بہت فائدہ ہوگا میری اس تحریر سے ان شاء اللہ آپ بقیہ زندگی محتاط قلم چلائیں گے۔ اور اپنا زورِ قلم بزرگوں کے خلاف صرف کرنے کی بجائے اس امت کی اصلاح پر صرف کریں گے نیز پھر دہرا دیتا ہوں اس امت کا مرض جو آپ لوگوں نے تشخیص کیا ہے وہ غلط ہے اس امت کا مرض شرک ہرگز نہیں ہے امت کا مرض خود پرستی ہے خود غرضی ہے اور ہوسِ مال و زر ہے اگر خدا توفیق دے تو اس کا علاج کیجئے ان شاء اللہ کامل شفا ہوگی۔

امت کو مزید کمزور کرنا تو کوئی عقل مندی نہیں ہے دانائی تو یہ ہے کہ اس اُمت کی بگڑتی ہوئی صورت حال کو سنبھالا جائے اس کو تباہی سے بچایا جائے اس کو وحدت کا سبق پڑھایا جائے تاکہ یہ امت مضبوط ہو و مستحکم اُمت بن جائے۔

یوں تو سید بھی ہو مرزا بھی ہو افغان بھی ہو
تم سبھی کچھ ہو بتاؤ تو مسلمان بھی ہو

## مطالعہ فرمایئے دل روشن ہوگا:

لیجئے میں آپ کی خدمت عالیہ میں آپ کے بزرگ جناب قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب کی ایک اور کرامت پیش کرتا ہوں، کھلی آنکھوں سے دن کی روشنی میں مطالعہ فرمایئے دل روشن ہوگا۔ مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی کرامات اہلحدیث میں رقمطراز ہیں:

"مرزا محمد حسین صاحب سکندراہوں کا بیان ہے کہ ۱۸۹۹ء میں قاضی صاحب نے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



جب مرزا قادیانی کی تردید میں رسالہ غائت المرام شائع کیا تو کسی نے آپ سے پوچھا کہ آپ نے کیونکر لکھا جواباً فرمایا کہ ایک روز نماز جمعہ کے بعد مجھے القا ہوا، کہ مرزا جی کے متعلق ایک کتاب لکھوں، چنانچہ اس کا مضمون بھی مجھے بتا دیا گیا، اور یہ بھی کہا گیا کہ اس کا جواب کبھی نہیں دے سکے گا، اس کے بعد آپ نے یہ بھی فرمایا کہ لو میں اب پھر تحری سے کہتا ہوں کہ مرزا قادیانی حج نہیں کر سکے گا، اور یہی اس کی بطالت کی دلیل ہے''۔ (کرامات اہلحدیث ۲۳)

## گھوڑوں کی خرید وفروخت:

آپ کے بزرگوں کو الہام ہو تو بجا، القا ہو تو درست، وہ دور دراز علاقے کی خبر دیں تو صحیح وہ منڈیوں میں گھوڑوں کی خرید وفروخت کے معاملے اور شرح منافع کے بارے میں ارشاد فرمائیں تو بلا شبہ یقینی، میں صرف اتنا پوچھنا چاہوں گا یہ شرک اور اس کے متعلقات کا سارا بوجھ ہمارے سر پر ہی ڈلتا ہے آپ کے بزرگوں پر اس قسم کا کوئی وزن نہیں آیا پاتا وہ اس وزن سے بے نیاز ہیں وہ جو کریں سب درست اور ہم اگر کبھی کہہ دیں ہمارے فلاں بزرگ کو القا ہوا تھا یا الہام ہوا تھا تو فوراً آپ لٹھ لے کر ہمارے پیچھے پڑ جاتے ہیں اور نا معلوم کیا آئیں بائیں، شائیں سناتے ہیں میرا خیال ہے جب آپ حق صحافت ادا کرنے بیٹھتے ہیں تو اس وقت آپ کو وادی خمار کی سیر شروع ہو جاتی ہے اور آپ چونکہ وادی خمار میں ہوتے ہیں اس لئے تمام تر انداز بھی وہی ہوتا ہے۔ جو اس وادی میں جانے والوں کا ہوتا ہے ایسے قابل رحم لوگوں پر کیا قلم چلاؤں اور ان کو کیا قلم کی زد میں لاؤں اسی لیے میں نے الفاظ وجملوں کا زور کم رکھا ہے ورنہ میں ایسی زبان استعمال کرتا کہ آپ اور آپکی جماعت حشر تک یاد کرتی مگر میں ہرگز ایسا



نہیں کروں گا اس لیے کہ آپ میرے نزدیک قابل رحم ہیں آپ کو عرض کروں گا کبھی تنہائی میں اپنے بزرگوں کی کتابوں کا مطالعہ بھی فرمایئے ہماری صداقت آپ پر متیقن ہو جائے گی۔

## القا کا ایک جملہ برداشت نہیں:

ہمارے بزرگوں کو کبھی ایک جملہ ''القا'' ہو جائے تو آپ آسمان سر پر اٹھا لیتے ہیں قیامت برپا کرنے کی کوشش کرتے ہیں کہ دیکھو ستم ہو گیا قرآن وحدیث کے ہوتے ہوئے القا کیا ہے، یہ سب ڈھونگ ہے پیسے بٹورنے کا ذریعہ ہے نذرانے اکٹھے کرنے کا بہانہ ہے اور نجانے کیا کیا کہتے چلے جاتے ہیں۔ ہمارا ''القا'' کا ایک جملہ برداشت نہیں ہوتا اور اپنے گھر میں پورا کا پورا رسالہ ہی القا ہو جاتا ہے۔

''دورنگی چھوڑ دے یک رنگ ہو جا''

اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو میں یاد کروا دیتا ہوں لیجئے پھر مطالعہ فرمایئے تاکہ دل و دماغ فرحاں وشاداں ہو:

> ''قاضی سلیمان منصور پوری صاحب نے مرزا قادیانی کے خلاف ایک رسالہ شائع کیا، تو کسی نے آپ سے پوچھا کہ آپ نے یہ رسالہ کیونکر لکھا جواباً فرمایا کہ ایک روز نماز جمعہ کے بعد مجھے القا ہوا کہ مرزا جی کے متعلق ایک کتاب لکھوں چنانچہ اس کا مضمون بھی مجھے بتا دیا گیا''۔ (کرامات اہلحدیث ۲۳)

## سراسر باطل:

امیر حمزہ صاحب آپ کے ایک بزرگ نے مرزا جی کے خلاف رسالہ لکھنے کا ارادہ کیا تو فوراً القا ہو گیا اور نماز جمعہ کے بعد وہ سارے کا سارا مضمون بھی جناب قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب کو عطا ہو گیا وہ بھی بذریعہ القا اگر آپ کو ضرورت پڑ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



جانے تو القا بھی درست روحانیت بھی ثابت القا کے ذریعے ردّ قادیانت پر دلائل بھی فراہم اور اگر ایسا کوئی کمال مسلمہ بزرگوں کے حوالے سے بیان کیا جائے تو آپ کو ہر گز پسند نہیں آتا بلکہ درد کو نج پڑ جاتا ہے۔ اگر ہم کہیں کہ فلاں بزرگ نے آئندہ ہونے والے واقعات کی اطلاع دی اور ویسے ہی ہوا جیسے انہوں نے فرمایا تو آپ کی زبان بے اختیار ہو جاتی ہے آپ کا قلم جیب سے نکل کر دوڑ پڑتا ہے صفحاتِ قرطاس پر یوں ارقام ہوتا ہے جیسے آپ کے علاوہ باقی سب سراسر باطل ہیں بس آپ ہی ایک حق نواز ہیں۔

## ایک بار پھر مطالعہ فرمائیے:

آئندہ جو ہوگا اس کی اطلاع کیسے یقینی طریق سے دی ہے:

"جو کتاب مرزا جی کے خلاف لکھنا تھی اس کا پورا مضمون بھی القا ہوا قاضی صاحب فرماتے ہیں چنانچہ اس کا مضمون بھی مجھے بتا دیا گیا کہ اس کا جواب نہیں دے سکے گا اور یہ بھی کہا گیا کہ اس کا کوئی جواب نہیں دے سکے گا اس کے بعد آپ نے یہ بھی فرمایا کہ لو اب میں پھر تحریری سے کہتا ہوں کہ مرزا قادیانی حج نہیں کر سکے گا اور یہی اس کی بطالت کی دلیل ہے چنانچہ غایت المرام میں بھی یہ اعلان ہوا اور اس کے بعد مرزا قادیانی کئی سال تک زندہ رہا مگر نہ اس رسالہ کا جواب لکھ سکا نہ حج کو جا سکا"۔ (کرامات المحدیث)

## پر زور اعلان:

ہر عقل مند بخوبی سمجھ سکتا ہے، قاضی صاحب نے اولاً تو نرم سے انداز میں فرمایا یہ رسالہ جو میں نے لکھا ہے اس کا جواب کوئی نہیں دے سکتا پھر محسوس کیا کہ یہ انداز دھیما



ہے ذرا زور دار انداز میں اعلان ہونا چاہیے تا کہ اس کی گن گرج چہار دانگ عالم میں پھیلے اور خوب شہرت ہو، اتنا پر زور اعلان، ایسا قوی دعوئی، اتنی واضح برهان، اللہ اللہ آپ تو ایسے ایسے بزرگ ہیں جو آئندہ ہونے والے تمام واقعات کی یقینی خبر رکھتے ہیں برا نہ مانیے گا اگر یہی انداز ہم اللہ تعالیٰ کے جلیل القدر اولیاء کرام مثلاً حضور سیدی داتا گنج بخش علی بن عثمان، حضرت غوث اعظم شیخ سید عبد القادر جیلانی، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی، حضرت شاہ بہاؤ الدین زکریا ملتانی، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہم اور دیگر بزرگوں کے بارے میں اپنائیں کہ ان کو آنے والے حالات و واقعات کا علم ہوتا تھا تو آپ فوراً بدعتی، گمراہ اور نجانے کیا کیا کہنا شروع کر دیتے ہیں اب آپ کیوں خاموش ہیں اٹھائیں قلم پکڑیں کاغذ اور لکھیں وہی کلمات جو لکھنا آپ کی سرشت میں ہے وہی انداز جارحانہ اپنائیے جو آپ نے ہم گدایان در اولیاء کے خلاف اپنایا تھا اپنی مؤلفات "مذہبی و سیاسی باوے" "آسمانی جنت اور درباری جہنم" اور "شاہراہ بہشت" میں۔

## دعائیں التجائیں:

اب تو آپ شاید کبھی قلم نہ پکڑیں گے بلکہ لکھنا بھی بھول جائیں گے۔ اندر گھس گھس کر دعائیں التجائیں کریں گے کہ یا اللہ جو کچھ میں نے لکھا وہ لکھا ہی رہ جائے

"خدا کرے کچھ نہ سمجھا کرے کوئی"

1) جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب نے یہ اعلان غایت المرام میں فرمایا کہ میری اس کتاب کا جواب کوئی نہیں دے سکے گا۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



۲) مرزا قادیانی حج کونہیں جاسکے گا۔

اب آپ بغور مطالعہ فرمائیں مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی نے کرامات اہلحدیث میں مرزا محمد حسین صاحب کی زبانی لکھا ہے:

"اور اس کے بعد مرزا قادیانی کئی سال تک زندہ رہا مگر نہ اس رسالہ کا جواب لکھ سکا نہ حج کو جاسکا"۔ (کرامات اہلحدیث ۲۳)

## فکر و تنظر کا علاج:

امیر حمزہ صاحب آپ کے گھر کے بزرگوں کی معلومات تو بڑی پکی ہیں جیسے کہہ دیا ویسے ہوگیا کیا مجال جو اس کے ذرا خلاف ہو جائے، بس ان کے منہ سے نکلنے کی دیر ہے ہوتا وہی ہے جو وہ فرما دیا کریں۔ ویسے آپ نے غور فرمایا ہے اگر اس طرح کوئی اور بزرگ کہہ دیں تو آپ لال پیلے ہو جاتے ہیں۔ آپ کی تو گھگھی پھول جاتی ہے اور اس کیفیت میں آپ اپنی اصل ماہیت ہی کھو دیتے ہیں آپ کو ایسی حالت میں اس جہانِ انسانیت کی مخلوق بھی نظر نہیں آتی بلکہ کوئی اور مخلوق محسوس ہونے لگتی ہے یہ حالت آپ پر کیوں طاری ہوتی ہے اس کا تو مجھے پتا نہیں یہ جناب والا کسی ماہر ڈاکٹر سے مشورہ کریں تو پتا چلے گا مگر میں تو صرف اتنا عرض کروں گا آپ اپنی فکر و نظر کا علاج کروائیں تو ذہنی و قلبی کیفیت بالکل نارمل (Normal) ہو جائے گی وگرنہ ذہنی صورت حال مزید بگڑ سکتی ہے چلیں آپ ہمارے کسی بزرگ کے پاس فکر و نظر کا علاج کروانے نہ جائیں مگر مولانا عبدالرحمٰن لکھوی صاحب کے ہاں ضرور جائیں وہاں آپ کی بگڑی بن جائے گی اس لئے کہ وہ نظر میں نظر ڈال کر سب ٹھیک کر دیتے ہیں انہوں نے تو ایک چرسی کی نظر میں نظر ڈال کر معاملہ درست کر دیا تھا آپ کی حالت تو



اس قدر خطرناک بھی نہیں امید ہے آپ جلد ہی صحت یاب ہو جائیں گے۔

## تمام گناہوں سے توبہ:

اب ہم قاضی سلیمان منصور پوری کی ایک اور کرامت کا ذکر کرتے ہیں تاکہ دل حق و باطل کے مابین فیصلہ کرنے میں آسانی محسوس کرے۔ کرامات اہلحدیث میں مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی رقم طراز ہیں:

"عنایت حسین پٹیالوی آپ کے بہت اچھے دوست تھے انہوں نے اپنی بیٹی کی شادی شیخ فضل حق سکنہ سنام کے بیٹے سے کر دی، وہ لڑکا نہایت خراب نکلا، شراب پیتا، جوا کھیلتا، بدکاروں کے ساتھ رہتا اور گھر والوں کو سخت تنگ کرتا، غرضیکہ پرلے درجے کا بے دین نکلا، عنایت حسین کو سخت صدمہ پہنچا "نہ جائے ماندن نہ پائے رفتن" قاضی صاحب سے التجا کی تو آپ نے فرمایا اُسے میرے پاس لے آؤ وہ آیا تو آپ نے اس پر توجہ کی بیہوش ہوگیا، جب ہوش آیا تو استغفار پڑھنے لگا اور تمام گناہوں سے توبہ کر لی، بس ایک ہی صحبت میں اس کی حالت بدل گئی اور وہ نہایت نیک، صالح دیندار بن گیا"۔ (کرامات اہلحدیث ۱۵،۱۷)

## اس پر توجہ کی تو بے ہوش ہوگیا:

امیر حمزہ صاحب غور سے مطالعہ فرمالیا کرامات اہلحدیث کی اس عبارت کا کوئی دقیق عبارت نہیں ہے باآسانی سمجھ آجاتی ہے۔ عنایت حسین پٹیالوی صاحب نے اپنی بیٹی کی شادی جس لڑکے سے کی وہ بڑا بے عمل نکلا اس وجہ سے عنایت حسین صاحب بڑے پریشان ہوئے آخر اس پریشانی کا حل نکالنے کیلئے وہ قاضی سلیمان منصور پوری کی خدمت میں حاضر ہوئے اور التجا کی اس پر قاضی صاحب نے فرمایا:

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



اسے میرے پاس لے آؤ۔

"وہ آیا تو آپ نے اس پر توجہ کی بیہوش ہو گیا، جب ہوش آیا تو استغفار پڑھنے لگا اور تمام گناہوں سے توبہ کر لی، بس ایک ہی صحبت میں اس کی حالت بدل گئی اور وہ نہایت نیک، صالح و دیندار بن گیا"۔ (کرامات اہل حدیث ۱۷،۱۵)

آپ تھوڑی سی توجہ فرمائیں تو میں عرض کروں گا، ایک بگڑا ہوا لڑکا جو شراب پیتا ہے، جوا کھیلتا ہے، بدکاروں کے ساتھ رہتا ہے جس کی شکایت جناب مولانا قاضی سلیمان منصور پوری صاحب سے کی گئی تو وہ فرماتے ہیں اس کو میرے پاس لے آؤ۔ جب اس لڑکے کو قاضی صاحب کی صحبت میں لایا گیا تو کیا ہوا صرف۔

## توجہ کی!

## ذرا اس توجہ کی برکات ملاحظہ فرمائیں۔

۱۔ پہلی توجہ ہی سے وہ لڑکا بے ہوش ہو گیا۔
۲۔ جب ہوش آیا تو استغفار پڑھنے لگا۔
۳۔ تمام گناہوں سے توبہ کر لی۔
۴۔ ایک ہی صحبت میں حالت بدل گئی۔
۵۔ وہ نہایت نیک ہو گیا۔
۶۔ وہ صالح اور دیندار بن گیا۔

## توجہ تھی یا بے ہوشی کا ٹیکہ (Injection)

امیر حمزہ صاحب میں نے جو کچھ نقل کیا ہے وہ من وعن نہایت دیانتداری سے نقل کیا ہے آپ کی کتابوں سے جو جو حوالے میں نے پیش کیے ہیں وہ حرف بہ حرف ہیں



میں نے اپنی طرف سے ان میں کہیں کوئی اضافہ نہیں کیا یہ سب آپکے اپنے گھر کے بزرگوں کے واقعات ہیں سچے ہیں یا جھوٹے۔ یہ تو آپ کے بزرگ ہی آپکو بتا سکتے ہیں۔ مگر میں نے ابھی آپکی نظر سے گزارے ہیں۔ قاضی سلیمان صاحب منصور پوری نے عنایت حسین پٹیالوی کے داماد پر ایک نظر ڈالی، توجہ کی تو وہ وہیں بے ہوش ہو گیا وہ توجہ تھی یا بے ہوشی کا ٹیکہ (Injection)۔ یہ راز تو آپکو معلوم ہو گا یا آپکے بزرگوں کو، میں تو اتنا ہی عرض کر سکتا ہوں دوسروں کی نظر کا مذاق اڑاتے ہیں آپ، بڑے بڑے اولیاء عظام تک کا تذکرہ کرتے ہوئے آپ کا قلم تھرکتا کیوں نہیں اور اب تو ایسا تھرکے گا کہ کبھی لکھنے کے لائق ہی نہ رہے گا۔

توجہ اگر آپ کے بزرگ کریں تو وہ بغیر کسی تاخیر کے اثر کرتی ہے اپنا پورا رنگ دکھاتی ہے۔ توجہ کے کمال کا عالم یہ ہوتا ہے کہ پڑتے ہی نوجوان کو بے ہوش کر کے رکھ دیتی ہے۔ اٹھنے تک دل کی کایا ہی پلٹ دیتی ہے اگر توجہ اثر نہیں دکھاتی تو، حضرت بلھے شاہ کی، اگر توجہ اثر نہیں رکھتی تو حضرت خواجہ محمد معصوم نقشبندی کی اگر توجہ اثر نہیں دکھاتی تو حضرت شاہ بہاؤ الدین زکریا ملتانی کی اور دوسرے بڑے بڑے اولیاء کرام کی مگر آپ کے گھر کے بزرگ تو توجہ کا پاور ہاؤس (Power House) ہیں۔

## لوز ٹاکنگ (Loose Talking):

امیر حمزہ صاحب! آپ دوسروں کو طنز کرتے ہیں۔ بڑے بڑے بزرگوں کا لحاظ نہیں کرتے زبان کو نہایت بے لگام رکھتے ہیں قلم کو بڑی بے احتیاطی سے چلاتے ہیں آخرت کی جوابدہی آپ کو یاد نہیں۔

اگر ہم بیان کریں کہ حضرت میاں شیر محمد شرقپوری رحمتہ اللہ علیہ نے توجہ ڈال کر نظر [illegible] حالت بدل دی، دل کی کایا پلٹ دی تو آپ کا قلم بے سوچ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



سکھے چل دوڑتا ہے ایسا ہونا ممکن ہی نہیں بلکہ آپ لوز ٹاکنگ( Loose Talking) کرنے لگتے ہیں۔ ظاہر ہے میں اولڈ راوین ہوں اور گورنمنٹ کالج لاہور جو پورے برصغیر پاک و ہند کی عظیم درس گاہ ہے اس میں پڑھنے والوں کا طرز گفتار نہایت شستہ ہوتا ہے وہاں کے پڑے ہوئے انٹ، بنٹ، شنٹ بالکل نہیں جانتے۔ آپکی زبان آپکو مبارک ہو مگر میرے ہاں تو اس کا ایک اشارہ بھی نہیں پایا جاتا ویسے اگر آپ کو کوئی ایسا آدمی جواب دیتا جسکی زبان آپ سے ملتی جلتی ہوتی تو زیادہ مزہ آتا۔ آپ کے بزرگوں کی توجہ کامل اور دوسرے سارے بزرگوں کی توجہ کوئی کمال نہیں رکھتی۔

## مدت کا بگڑا پل میں ٹھیک!

قاضی سلیمان صاحب منصور پوری نے جب عنایت حسین پیالوی کے داماد پر نظر کی تو وہ فوراً بے ہوش ہو گیا اور جونہی ہوش میں آیا استغفار پڑھنے لگا مدتوں کا بگڑا ہوا، مدتوں کا خراب لڑکا، خراب بھی ہلکا پھلکا نہیں بلکہ انتہائی بگڑا ہوا مولانا عبدالمجید سوہدروی کی زبانی سنئے۔

وہ لڑکا نہایت خراب نکلا، شراب پیتا
جوا کھیلتا، بدکاروں کے ساتھ رہتا

(کرامات اہلحدیث ۱۷)

## خواجہ نظام الدین اولیاء رحمۃ اللہ علیہ:

آپ غور فرمائیں جو لڑکا اس قدر بگڑا ہوا ہو اس کی حالت بدلنے میں کچھ تو وقت لگتا ہے نا، اگر ہم کہیں کہ فلاں بگڑا ہوا لڑکا حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی کے



پاس آیا تو نیک و صالح بن گیا اس پر آپکو تردد ہونے لگتا ہے آپکو اس پر یقین نہیں آتا بلکہ الٹا آپ مذاق اڑانے لگ جاتے ہیں۔ ہم کہیں کہ ایک انتہائی خراب نوجوان حضرت خواجہ نظام الدین اولیا دہلوی کی مجلس میں آیا تھا اور آپکی توجہ سے بالکل نیک صالح بن گیا تھا۔ تو آپ ایسی واگون ہانکنے لگ جاتے ہیں کہ پڑھ پڑھ کر ہنسی آنے لگتی ہے۔

لیکن اگر ایک بگڑا ہوا لڑکا، آپ کے بزرگ محترم جناب قاضی سلیمان صاحب منصور پوری کی خدمت اقدس میں انکی بارگاہ عالی مرتبت میں لایا جائے تو۔

اولاً (۱) ایک ہی توجہ میں بے ہوش۔

ثانیاً (۲) ہوش آنے پر استغفار کا ورد کرنے لگے۔

ثالثاً (۳) تمام گناہوں سے توبہ کرے۔

رابعاً (۴) ایک ہی صحبت میں حالت بدل جائے۔

خامساً (۵) ایک ہی حاضری میں نہایت نیک ہو جائے۔

سادساً (۶) ایک بار کی توجہ اور نظر سے صالح اور دیندار بن جائے۔

## سند و حجت:

آپ گھر کے بزرگوں کے لئے یہ سب کمالات ثابت، سند، حجت مگر جلیل القدر اولیاء اللہ مثلاً، حضرت داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری، حضرت غوث اعظم شیخ سید عبدالقادر جیلانی، حضرت خواجہ معین چشتی اجمیری، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ ان حضرات کیلئے ایسے ہی کمالات کا اقرار و اعتراف بدعت، گمراہی اور شرک تک جا پہنچتا ہے آخر وہ کونسا کلیہ قاعدہ ہے۔ جو آپکے بزرگوں کو ان اعمال کے کر

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



جانے پر بھی جن کو دوسروں کے حق میں بدعت، گمراہی اور شرک قرار دیتے ہیں آپ پر کوئی اثر بد نہیں پڑتا غور فرمایئے گا ضرور جواب ملنا چاہیے اور اگر جواب نہیں آتا آئے گا بھی نہیں چپ کر کے تسلیم کر لیجئے کہ میں (امیر حمزہ) نے جو کچھ اپنی کتابوں "مذہبی و سیاسی باوائے" "آسمانی جنت اور درباری جہنم" "شاہراہ بہشت" میں لکھا ہے وہ سب کا سب غلط ہے۔

## گہرا تعلق:

صاحب کرامات اہلحدیث، مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی، کرامات مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کے عنوان کے ماتحت رقم طراز ہیں۔ مولانا صاحب ۱۲۲۸ء میں کوٹ بھوانیداس میں پیدا ہوئے ابتدائی تعلیم اپنے والد بزرگوار مولانا رحیم بخش سے حاصل کی، حدیث میاں نذیر حسین محدث دہلوی سے پڑھی۔ روحانی فیض سید میر صاحب سے حاصل کیا جو مولینا سید احمد صاحب بریلوی کے مرید تھے مولانا عبداللہ غزنوی صاحب سے بھی آپ کا گہرا تعلق تھا انہی مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کی کرامت بیان کرتے ہوئے کرامات اہلحدیث میں لکھا ہے۔

اسی فضل الدین زمیندار سکنہ مان کا بیان ہے کہ میرے پاس کوئی گائے بھینس نہ تھی کہ گھر والوں کو دودھ گھی مل سکتا، پاس رقم بھی نہ تھی کہ گائے بھینس خریدی جاسکتی، ایک بوڑھی سی بھینس تھی جس سے ہم مایوس ہو چکے تھے کہ وہ اب گابھن نہیں ہوسکتی کیونکہ بہت بوڑھی اور کمزور ہو چکی تھی میں نے مولینا سے عرض کیا کہ، دعا کریں خدا کوئی دودھ گھی کا انتظام کر دے آپ نے فرمایا کہ تمہاری وہی بھینس گابھن ہو چکی ہے اور عنقریب بچہ دینے والی ہے وہ مدت تک دودھ دیتی رہے گی تم فکر نہ کرو، فضل الدین کا



بیان ہے کہ سچ مچ تھوڑے ہی دنوں میں بھینس دودھ دینے لگی اور قریباً گیارہ دفعہ اس کے بعد سوئی (بچہ دیا) اور مدت دراز تک دودھ دیتی رہی۔ (کرامات اہلحدیث ۱۶)

## بوڑھی بھینس!

امیر حمزہ صاحب بنظر غور و غائر مطالعہ فرمائیں اگر پڑھنے میں دقت محسوس ہوتی ہے تو اچھی سی نظر کی عینک لگالیں تاکہ پڑھتے پڑھتے ہی تفہیم ہوتی جائے۔ فضل الدین بیان کرتا ہے میری بھینس بہت بوڑھی ہو چکی تھی ایک مدت سے اس نے دودھ دینا بند کر دیا ہوا تھا دودھ گھی گھر والوں کو میسر نہ تھا اس وجہ سے کافی پریشانی ہو رہی تھی اور پیسے بھی نہ تھے کہ ہم کوئی گائے بھینس خرید لیں۔ وہ جو بوڑھی بھینس تھی اس کی طرف سے ہم بالکل مایوس تھے اس لئے کہ اب وہ گابھن نہ ہو سکتی تھی پھر کیا ہوا اس کے بعد والی ساری بات جناب فضل الدین صاحب کی اپنی زبان سے سنئے بہت لطف آئے گا نیز آپ کے گھر کے بزرگ کا کمال بڑا واضح طور سے آپ کو سمجھ میں آجائے گا لیجئے ایک بار پھر تازہ فرمائیں۔

میرے پاس کوئی گائے بھینس نہ تھی کہ گھر والوں کو دودھ گھی مل سکتا، پاس کوئی رقم بھی نہ تھی کہ گائے بھینس خریدی جاسکتی، ایک بوڑھی سی بھینس تھی جس سے ہم مایوس ہو چکے تھے کہ وہ اب گابھن نہیں ہوسکتی کیونکہ بہت بوڑھی اور کمزور ہو چکی تھی۔ میں نے مولانا سے عرض کیا دعا کریں خدا کوئی دودھ گھی کا انتظام کر دے مولانا صاحب کی دعا سے بھینس گابھن ہوگئی!

## کیفیات قلبی:

یہ تو وہ سارا منظر ہے جو فضل الدین نے بیان کیا ہے اور ان کیفیات قلبی کا اظہار

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کرنے کے بعد فضل الدین نے بڑی ہی انکساری سے مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کی خدمت اقدس میں عرض کی۔ آپ دعا کریں اللہ تعالیٰ دودھ گھی کا کوئی انتظام کر دے۔ اس بعد والی گفتگو کو ذرا غور سے سنئے اور اس پر علماء اہلحدیث کو اپنی قبولیت دعا اور اپنے معتقد کو یقین کے ساتھ تسلی دینے پر مبارک باد پیش فرمایئے۔ نیز یہ منظر بھی انکو دکھایئے۔

امیر حمزہ صاحب آپ کے گھر کے بزرگ تو بڑے ہی صاحب کمال واقع ہوئے ہیں ان کو تو آئندہ آنے والے حالات و واقعات کا قطعی یقینی علم ہوتا ہے۔ ان کو یہ بھی پتہ ہوتا ہے کہ بوڑھی بھینس جس سے مالک مایوس ہو چکا ہے وہ بھی بچہ دے دے گی آیئے اب آپ بھی ملاحظہ فرمائیں پیش خدمت ہے کرامات اہلحدیث۔

جب فضل الدین نے عرض کیا مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کی بارگاہ میں تو مولانا نے فوراً یوں نوازا ارشاد ہوتا ہے۔ کہ

## بھینس گابھن:

تمہاری وہی بھینس گابھن ہو چکی ہے اور عنقریب بچہ دینے والی ہے وہ مدت تک دودھ دیتی رہے گی تم فکر نہ کرو فضل الدین کا بیان ہے کہ تھوڑے ہی دنوں میں وہ بھینس دودھ دینے لگی اور قریباً گیارہ دفعہ اس کے بعد سوئی (بچہ دیا) اور مدت دراز تک دودھ دیتی رہی۔ (کرامات اہلحدیث ۱۲۱)

آپکے بزرگ نے ایک بھینس کو دیکھا تو فوراً فرمادیا تمہاری بھینس گابھن ہو چکی ہے اور عنقریب بچہ دینے والی ہے وہ مدت تک دودھ دیتی رہے گی۔ تم فکر نہ کرو فرمایئے یہ آخر کونسی علم کی صفتِ مبارک آپ کے تو بزرگ ایسے صاحب کمال ہیں



بھینس تک کے گابھن ہونے سے پوری طرح آگاہ ہیں انکی نظر تو بڑی دور تک اثر کرتی ہے۔

## زبان وادب کے تقاضے فراموش!

مولانا صاحب کا یہ کہنا تھا کہ تمہاری اپنی بھینس گابھن ہو چکی ہے بس یہ کہنا تھا بھینس گابھن بھی ہو گئی تھوڑے دنوں میں بچہ بھی دے دیا، دودھ بھی دینے لگی، پھر مزید کمال یہ کہ وہی بھینس جو پہلے کمزور تھی لاغر تھی، سن یاس کو پہنچ چکی تھی اب مولانا غلام رسول صاحب قلعوی کی توجہ ہوئی تو ایسی جوانی بھینس پر آئی کہ ایک دو مرتبہ کیا قریباً گیارہ مرتبہ سوئی (بچہ دیا) واہ کمال ہو تو ایسا ہو۔ کمزور و لاغر بھینس صحت مند چند دنوں میں گابھن ہو کر بچہ بھی دے اور پھر ایسی راس پڑے کہ بچے پہ بچہ دیتی جائے اور ایک دو تین بچے دینے پر اکتفا نہ کرے بلکہ پورے گیارہ بچے دے۔

ہمارے جلیل القدر اولیاء کی دعاء سے اگر ایک انسان کے ہاں بچہ ہو جائے تو آپ بڑے زور و شور سے تردید پر کمربستہ ہو جاتے ہیں، زبان و بیان تک اپنے مقام و مرتبے سے گر جاتا ہے۔ بوقت تردید آپ زبان وادب کے تمام تقاضوں کو بالکل فراموش کر دیتے ہیں۔

## زمین وآسمان کے قلابے ملادیتا

امیر حمزہ صاحب آپ نے بزرگوں کے مزارات، انکے روحانی کرامات، انکی عنایات اور انکے روحانی کمالات پر جس طرح تنقید فرمائی ہے۔ وہ انداز دیکھ کر تو جی چاہتا تھا میں بھی آپکے بزرگوں اور انکی کرامات پر بات کرتے ہوئے ویسا ہی انداز اختیار کروں۔ مگر میری طبیعت اس طرف کو ہرگز مائل نہ ہوئی۔ ورنہ اگر میں آپ کی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



طرز پر اتر آتا تو زمین و آسمان کے قلابے ملا کے رکھ دیتا۔ فرش کو چھت اور چھت کو فرش کر دکھاتا، نشیب کو فراز بنا دیتا۔ تحت کو فوق اور فوق کو تحت کر دکھاتا، مشرق کو مغرب اور مغرب کو مشرق بنا دیتا، شمال کو جنوب اور جنوب کو شمال بنا دکھاتا، مجھے نہیں معلوم آپ نے "مذہبی و سیاسی باوے" "آسمانی جنت اور درباری جہنم" "شاہراہ بہشت" جیسی کتابیں لکھ کر کونسی خدمت سرانجام دی ہے۔ اتنا البتہ ضرور ہوا ہے۔ کہ اس سے اُمت میں مزید بے چینی پھیلی ہے۔

گنجے کو خدا ناخن نہ دے دے گا عقل کے بخیے ادھیڑ یہ

## لوڈ شیڈنگ:

میں لکھنے بیٹھا ہوں تو بار بار لائٹ آف ہو جاتی ہے آجکل لوڈ شیڈنگ نے انتہائی تنگ کیا ہوا ہے۔ مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کی ایک اور کرامت ملاحظہ فرمائیں دل باغ باغ ہوگا۔ یہ بھی صراحتہً واضح ہو جائے گا جب آپ لوگوں کو کوئی مسئلہ بنے تو آپ دوڑے دوڑے اپنے بزرگوں کے پاس جاتے ہیں اس وقت آپکو اپنے وہ فتوے ہرگز یاد نہیں رہتے جو دوسروں کے خلاف صادر کیے ہوتے ہیں مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی رقمطراز ہیں۔

فضل الدین نمبردار سکنہ مان ضلع گوجرانوالہ کا بیان ہے کہ میں نے ایک ساہوکار سے بارہ سو روپیہ قرض لیا تھا اور وہ مجھے بہت تنگ کر رہا تھا چنانچہ ایک بار تو اس نے مجھے نوٹس دے دیا اور قریب تھا کہ دعوی کر کے مجھے ذلیل کرتا میں مولینا کی خدمت میں حاضر ہوا اپنی غربت اور ناداری کا ذکر کیا، اور دعا کی فرمائش کی آپ نے فرمایا گھبراؤ نہیں جاؤ، چار آدمی ساتھ لے کر اس سے حساب کرو، صرف بائیس روپیہ نکلیں



گے، وہ ادا کر دینا، فضل الدین حیران ہوا کہ میں نے ابھی تک اسے دیا لیا تو کچھ ہے نہیں! بھلا بائیس روپیہ کیونکر نکلیں گے، آپ نے فرمایا جاؤ تو بائیس روپیہ سے زیادہ نہیں نکلیں گے وہ چند دوستوں کو ساتھ لے کر گیا اور ساہوکار سے کہا کہ بہی کھاتہ لاؤ، اور میرا حساب صاف کرلو، ساہوکار نے بہی نکالی تو دیکھا کہ اس کے حساب میں کہیں لکھا ہے فلاں تاریخ کو اتنی گندم لی، اتنا تمبا کو وصول ہوا، اتنی کپاس آئی علیٰ ہذا القیاس سارا حساب جو لگایا، تو بقایا صرف ۲۲ روپیہ نکلے ساہوکار بھی حیران تھا کہ یہ کیا ماجرا ہے، اور فضل الدین بھی حیران تھا مگر بہی کھاتہ کے مطابق بائیس روپیہ دے کر حساب صاف کر دیا گیا۔ (کرامات اہلحدیث ۲۶،)

## مصائب میں کدھر کا رخ کرنا چاہیے!

غور فرمایا، فضل الدین نے قرض دینا تھا ساہوکار کا اور انکی کل رقم تھی۔ (1200) بارہ سو روپے آج سے تقریباً سو سال قبل یہ بہت بڑی رقم تھی وہ ساہوکار ان صاحب کو بہت تنگ کر رہا تھا قریب تھا کہ وہ دعوی کر کے ذلیل بھی کر ڈالے۔

میں صرف اتنا عرض کرنا چاہوں گا۔ جب کسی بندے پر مصیبت پڑے، آفت آئے اور مصائب و آلام اس کو گھیر لیں تو ان حالات میں بندے کو کہاں کا رخ کرنا چاہیے کدھر رجوع کرنا چاہیے کس طرف مائل ہونا چاہیے۔

## ڈر لاحق ہوا:

امیر حمزہ صاحب آپکی تحریروں کی روشنی میں عرض کروں گا اس وقت صرف اور صرف اللہ تعالیٰ کی طرف رخ کرنا چاہیے۔ اللہ تعالیٰ سے رجوع کرنا چاہیے اور اللہ تعالیٰ ہی کی طرف مائل ہونا چاہیے۔ مگر آپ کے چہیتے تو سیدھے اپنے بزرگ مولانا غلام

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



رسول صاحب کی بارگاہ میں جا پہنچے۔ جب یہ ڈر لاحق ہوا کہ وہ دعویٰ کر کے کہیں ذلیل نہ کرے تو فوراً دوڑے دوڑے اپنے بزرگ محترم کی طرف رجوع کیا لیجئے ان کے الفاظ میں سنئے۔

میں مولانا کی خدمت میں حاضر ہوا (کرامات اہلحدیث ۱۳۹)

آپ پر مصیبت پڑے تو جھٹ اپنے بزرگوں کے پاس ہم کبھی اپنے بزرگوں اللہ تعالیٰ کے اولیاء کی بارگاہوں میں حاضر ہو جائیں تو آپکی زبان قابو سے باہر ہو جاتی ہے۔ نہ علم و آگہی کا خیال نہ خدمت دین کا لحاظ نہ دعوت اسلامی کی پرواہ انکی سب خدمات جلیلہ یکدم فراموش قلم تمام حدود وادب سے آزاد اور اپنی ہی راگنی سنائے جانے کی دھن یہ خیال بھی دامن گیر کہ میں نے خدمت دین کا حق ادا کر دیا ہے۔ لیجئے ایک مرتبہ تازہ فرمایئے اپنے موحدین کا عمل اور اپنے بزرگوں کی عنایات سے نقل کا حال۔

میں مولانا کی خدمت میں حاضر ہوا، اپنی غربت اور ناداری کا ذکر کیا اور دعا کی فرمائش کی، آپ نے فرمایا گھبراؤ نہیں جاؤ چار آدمی ساتھ لیکر اس سے حساب کرو صرف بائیس روپے نکلیں گے وہ ادا کر دینا (کرامات اہلحدیث ۱۳۹)

## بہی کھاتہ ہی تبدیل:

اس عبارت سے یہ تو واضح طور پر ثابت ہوا جو کچھ ساہوکار کے کھاتے میں درج تھا وہ سب مولانا کو حرف بہ حرف یاد تھا یا کھاتے کو بدل کر اس طرح کر دیا جس طرح خود ارشاد فرمایا دونوں صورتیں خرق عادت ہی کہلائیں گی مگر آپ تو ان تمام چیزوں کا مذاق اڑاتے ہیں اسباب اسباب کی رٹ لگاتے ہیں کس قدر یقین کے ساتھ آپ کے بزرگ نے کہا کہ چار آدمی ساتھ لے کر جاؤ اور حساب کرو" صرف بائیس روپے نکلیں



گے اور ادا کر دینا"

آئندہ معاملات کس نہج پر جائیں گے آنے والے اوقات میں کیا ہوگا، حساب کتاب کا نتیجہ کیا رہے گا سب قبل از وقت ہی بتا دیا اور بتایا بھی اس یقین کے ساتھ جیسے بہی کھاتہ خود لکھ آئے ہوں یا اس کو تبدیل کر آئے ہوں۔ آیئے اگلے معاملات کا جائزہ لینے کیلئے ایک مرتبہ پھر آپکو کرامات اہلحدیث کی عبارت سناؤں لیجئے ملاحظہ فرمایئے۔

## گندم کی کپاس آئی:

فضل الدین حیران ہوا کہ میں نے ابھی تک اسے دیا لیا تو کچھ ہے نہیں بھلا بائیس روپے کیونکر نکلیں گے۔ آپ نے فرمایا جاؤ تو بائیس روپے سے زیادہ نہیں نکلیں گے وہ چند دوستوں کو ساتھ لیکر گیا اور ساہوکار سے کہا کہ بہی کھاتہ لاؤ اور میرا حساب صاف کر لو ساہوکار نے بہی نکالی تو دیکھا کہ اس کے حساب میں کہیں لکھا ہے فلاں تاریخ کو اتنی گندم لی، اتنا تمہا کو وصول ہوا اتنی کپاس آئی علی ہذا القیاس سارا حساب جو لگایا تو بقایا صرف ۲۲ روپیہ نکلے ساہوکار بھی حیران تھا کہ کیا ماجرا ہے اور فضل دین بھی حیران تھا مگر بہی کھاتہ کے مطابق بائیس ۲۲ روپیہ دے کر حساب صاف کر دیا گیا۔ (کرامات اہلحدیث ۱۴۰)

## جو منہ سے نکل گیا سو ہو گیا!

امیر حمزہ صاحب! غور فرمایا، آپکے گھر کے بزرگ کیسے کیسے کمال رکھتے ہیں۔ بہی کھاتے تک تبدیل کر کے رکھ دیتے ہیں وہ وہ چیزیں اس میں اندراج کرتے ہیں جو قابل درج ہی نہ ہوں۔ فضل دین نے کبھی گندم نہ دی مگر بہی میں لکھا تھا فلاں تاریخ کو

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



اتنی گندم آئی، فضل دین نے کبھی تمباکو نہ دیا مگر بہی میں لکھا تھا فلاں تاریخ کو اتنا تمباکو وصول ہوا اسی طرح فضل دین نے کبھی کپاس نہ دی مگر بہی کھاتے میں درج تھا فلاں تاریخ کو اتنی کپاس وصول ہوئی۔ آخر یہ آپ کے بزرگ جو ہوئے وہ تو جو کریں سب صحیح جو کہیں سب درست ان کی تو کوئی ادا قابل نفرت ہو ہی نہیں سکتی۔ قابل تردید ہو ہی نہیں سکتی بس جو منہ سے نکل گیا سو ہو گیا اور دوسری طرف حضور غوث اعظم شیخ سید عبدالقادر جیلانیؓ کچھ بھی نہیں کر سکتے حضرت داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری کچھ بھی نہیں دے سکتے۔ آخر یہ کیا ہے جو سب کچھ باذن اللہ کرنے پر قادر انکی تردید اور اپنے بزرگوں کی وہ تائید کہ زمین و آسمان کے قلابے ملا دیئے۔

## دیکھئے ہوتا ہے کیا!

ساہوکار نے بہی کھاتہ کیا کھولا اس پر تو قیامت ٹوٹ پڑی، جہاں نظر پڑے کچھ نہ کچھ آیا ہوا نظر آئے کہیں گندم آئی، کہیں، کپاس آئی اور کہیں تمباکو آیا۔ حالانکہ دیا لیا کچھ بھی نہ تھا میں یہ پوچھنے پر مجبور ہوں اگر کچھ دیا لیا ہی نہ ہوا سکو بہی کھاتے میں درج کرنا کیسا عمل ہے؟ اپنے گھر کے بزرگوں کے کمالات بیان کرنے کیلئے کھاتوں کے کھاتے تبدیل کر دیئے جاتے ہیں۔ آخر کار جو نتیجہ نکلا وہ وہی بائیس ۲۲ روپیہ ہی تھا اگر ذہن سے مضمون اتر گیا ہو تو میں ایک بار پھر تازہ کروا دیتا ہوں

لیجئے مطالعہ فرمایئے۔

علی ہذا القیاس سارا حساب جو لگایا تو بتایا صرف ۲۲ روپیہ نکلے ساہوکار بھی حیران تھا کہ یہ کیا ماجرا ہے اور فضل دین حیران تھا مگر بہی کھاتہ کے مطابق بائیس روپیہ دے کر حساب صاف کر دیا گیا (کرامات اہلحدیث ص۱۴)



## بائیس روپے سے ایک دمڑی بھی اوپر نہ ہوئی:

فضل دین بے چارہ انتہائی پریشانی کے عالم میں اپنے بزرگ محترم کی خدمت میں حاضر ہوا تھا۔ قرضہ چونکہ بہت زیادہ تھا اور اسکا اترنا بظاہر ممکن نظر نہیں آتا تھا اس لئے مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کی خدمت عالیہ میں حاضری دی تاکہ مشکل آسان ہو جائے اور پھر واقعی مشکل حل ہو گئی ایسی حل ہوئی کہ بہی کھاتے بھی تبدیل کرنے پڑے تو کر دیئے مگر کیا مجال جو قرض بائیس روپے سے ایک دمڑی بھی اوپر گیا ہو۔ تھا بھی پورا بارہ سو۔ جو ایک خطیر رقم تھی اس زمانے میں مگر جب حضرت صاحب نے کہہ دیا کہ بائیس روپیہ نکلیں گے تو بارہ سو سے ۲۲ روپے ہو گئے یہ کیسے ہوا یہ تو صرف امیر حمزہ صاحب ہی بتا سکیں گے۔ میں تو صرف ناقل ہوں ناقل اور یہ دکھانا چاہتا ہوں جو جرم ہمارے سر تھوپ کر ہم پر گرجنے برسنے کا آغاز کیا تھا وہ ان کے اپنے گھر تک جا پہنچا اگر صداقت نام کی کوئی شے ان کے ہاں ہوئی تو ضرور آئندہ تادم مرگ اپنے مؤقف سے رجوع کر لیں گے یا پھر اپنے گھر کے بزرگوں پر بھی شرک کا کھلم کھلا فتویٰ صادر کر کے حق جوانمردی ادا کریں گے دیکھئے ہوتا ہے کیا۔

## یہ امت وحدت کی لڑی میں پروئی جائے۔

مجھے معلوم ہے اب دم خم کہاں رہے گا جواب کا، اس لئے کہ ہم نے کوئی بات اپنے سے نہیں کی بلکہ امیر حمزہ صاحب کے گھر سے لے لے کر انہی کی خدمت میں پیش کیا ہے اگر حق اور صداقت نام سے بھی وہ واقف ہوں گے تو ضرور اعلانا اپنی مؤلفات کے مندرجات سے رجوع کریں گے اور کہیں گے میں نے اپنے گھر کے بزرگوں کا مطالعہ نہیں کیا تھا۔ اس لئے مجھ سے یہ غلطی سرزد ہو گئی ورنہ میں اس طرح قلم ہرگز نہ چلاتا بہر

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



نوح میں ساری امت مسلمہ کو عرض کروں گا میں نے مجبوراً یہ سب کچھ لکھا ہے۔ ورنہ میں ایک منٹ بھی اپنی عمر عزیز کا اسی طرح صرف کرنے کا قائل نہیں ہوں میں تو دن رات اس امت کی فلاح و صلاح کیلئے سرگرم عمل ہوں اور جب تک دم میں دم ہے سرگرم رہوں گا اللہ کرے میری زندگی میں یہ امت صحت مند امت بن جائے اور وحدت کی لڑی میں پروئی جائے (امین ثم آمین)

اہلحدیث حضرات کے ایک اور بہت بڑے مولانا صاحب سے بھی کرامات کا صدور ہوا ان صاحب کا نام مولوی محمد سلیمان روڑوی تھا، آپ مولانا عبدالجبار بن مولانا عبداللہ غزنوی کے مریدین میں سے تھے ان کی کرامات کا ذکر کرتے ہوئے مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی صاحب کرامات اہلحدیث میں رقم طراز ہیں۔

ایک روز علی الصبح آپ فرمانے لگے کہ لو بھائی آج ہمارے پیر و مرشد (مولوی عبدالجبار صاحب غزنوی) بہشت میں پہنچ گئے ہیں میں نے رات ان کو بہشت میں دیکھا ہے اور یہ شعر بھی سنا ہے جو میری زبان پر جاری ہو گیا ہے لے "او بیلی اللہ بیلی ساڈے ہوئے چلانے" یعنی اے دوست خدا حافظ ہم تو جا رہے ہیں سب حیران تھے یہ کیا ماجرا ہے چنانچہ بعد میں جو اطلاعات آئیں ان سے معلوم ہوا کہ ٹھیک اسی وقت اور اسی دن امام صاحب کا انتقال ہوا تھا جس دن مولوی صاحب نے الصبح ہم سے کہا تھا (کرامات اہلحدیث ۱۸)

## خدا حافظ ہم تو جا رہے ہیں!

مولوی محمد سلیمان روڑوی صاحب، ایک صبح کو اچانک فرمانے لگتے ہیں لو بھائی



آج ہمارے پیر و مرشد مولوی عبدالجبار صاحب غزنوی بہشت میں جا پہنچے اس لئے کہ میں نے رات انکو بہشت میں دیکھا ہے اور یہ شعر بھی سنا ہے۔

لے او بیلی اللہ بیلی ساڈے ہوئے چلانے

مولوی صاحب نے تو یہ ارشاد فرما دیا اور ساتھ ہی پنجابی کا ایک بہترین شعر بھی سنا دیا عین ممکن ہے کہ یہ ایک خواب ہی ہو اور حقیقت سے اس کا کوئی تعلق نہ ہو مگر ایسا نہیں مولوی صاحب نے جیسے فرمایا ویسا ہی ہوا لوگ بے چارے حیران تھے کہ آخر معاملہ کیا ہے۔ مولوی صاحب آج صبح صبح ہی یہ کیا فرما رہے ہیں۔ لیکن بعد میں موصول ہونے والی اطلاعات نے ثابت کر دیا جیسے مولوی صاحب نے ارشاد فرمایا ویسے ہی ہوا ایک بار پھر مولانا سوہدوری کی زبانی سنیے۔

چنانچہ بعد میں جو اطلاعات آئیں ان سے معلوم ہوا کہ ٹھیک اسی وقت اور اسی دن امام صاحب کا انتقال ہوا تھا، جس دن مولوی صاحب نے علی الصبح ہم سے کہا تھا۔

(کرامات اہلحدیث ۲۸)

## الجھا ہے پاؤں یار کا زلف دراز میں!

امیر حمزہ آپکے اپنے گھر میں پیر و مرشد بھی ہیں، مریدین بھی بنتے ہیں سلسلہ بھی جاری ہوتا ہے فیض بھی ملتا ہے بیعت بھی کی جاتی ہے اپنے بزرگوں کی کرامات کا تذکرہ بھی ہوتا ہے۔ پھر یہی نہیں بلکہ دوسروں کو ان کی کرامات سنا سنا کر خوب مائل بھی کیا جاتا ہے کہ اہلحدیث ہو جاؤ یہی بڑے بزرگ ہیں اور دوسری جانب بیعت کا انکار، پیر و مرشد کا انکار، اسلاف کا مذاق، فیض کو تمسخر آخر یہ سب کیا ہے؟ کم از کم میری سمجھ سے تو بالا ہے اور اب میری اس تحریر کو پڑھنے کے بعد اہل اسلام کو ہار ہو جائے گا جھگڑا کیا ہے؟ وہ تو صرف "انا" کا ہے اگر یہ درمیان میں نہ ہو تو سب ٹھیک ہے ساری ملت ایک ہے ساری امت وحدت کی طلبگار ہے۔ آپ نے جو کردار اپنی کتابیں "آسمانی جنت اور درباری جہنم" "شاہراہ بہشت" "مذہبی و سیاسی باوے" لکھ کر ادا کیا ہے میری یہ تحریر [illegible] "میں اہل علم پڑھ لیں گے تو پھر تو آپکی تحریروں کو چار چاند لگ جائیں گے۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



چونکہ پہلے لوگوں کے سامنے تصویر کا ایک رخ ہوگا اور میری اس تحریر کو پڑھنے کے بعد تصویر کے دونوں رخ سامنے آ جائیں گے اور فیصلہ کرنا بھی آسان ہو جائے گا۔ حق کون اور باطل کون۔

## تفرقہ زہر قاتل ہے!

اگر ہم کہہ دیں فلاں بزرگ نے فلاں معاملہ کی اطلاع دی اور جیسے انہوں نے فرمایا ایسے ہی ہوا تو آپ فوراً پیچ پا ہو جاتے ہیں، بدعت، گمراہی اور شرک کی لٹھ برسانے لگتے ہیں اور یہ سب کچھ آپ کے اپنے گھر میں ہو جائے تو نہ بدعت، نہ شرک بلکہ سب فضیلت ہی فضیلت کچھ تو خوف خدا کیجئے اس قدر ستم ظریفی بھی اچھی نہیں ہوتی اب عوام بھی پڑھے لکھے ہیں انکو بھی حق و باطل میں فرق کرنا آ گیا ہے وہ خوب سمجھتے ہیں حق کیا ہے اور باطل کیا۔

آپ نے تو شاید ٹھیکہ لے رکھا ہے اپنے اور اپنے ہم خیالوں کے علاوہ باقی سب کو باطل قرار دے کر ہی رہنا ہے مگر کبھی کبھی لینے کے دینے بھی پڑ جاتے ہیں جیسے آپکو، بس میری یہ تحریر اہل حق کی نظر میں آ تو لینے دو پھر دیکھو کیسا کمال ظاہر ہوتا ہے سچائی کا، دیانت و شرافت کا اور وحدت امت کے جذبے کا میں چونکہ اس دور میں (خصوصاً) تفرقہ کو زہر قاتل سمجھتا ہوں اور وحدت امت کو وقت کی ضرورت سمجھتا ہوں لہٰذا میری اس فکر سے انشاء اللہ ہر کلمہ گو اتفاق کرے گا۔

کرامات اہلحدیث کی اس عبارت پر ذرا ایک بار پھر نظر ڈالیں امید ہے باطن کی آنکھیں بھی روشن ہو جائیں گی لیجئے مطالعہ فرمائیے۔

ٹھیک اسی وقت اور اسی دن امام صاحب کا انتقال ہوا تھا جس دن مولوی صاحب نے علی الصبح ہمیں کہا تھا (کرامات اہلحدیث ۲۹)



## یہ علم کی کون سی قسم ہے!

امیر حمزہ صاحب دونوں آنکھیں کھولیں دن کی واضح روشنی میں پڑھیں نظر کو ذرا ان الفاظ پر روک لیجئے ٹھیک اسی وقت اور اسی دن اب اپنے پر خلوص عقیدہ توحید کی روشنی میں بتائیے آخر یہ علم کی کونسی قسم ہے دور دراز کسی کا انتقال ہو رہا ہو اور دوسرا آدمی بغیر اسباب ظاہری کے ٹھیک اسی وقت اور اسی دن اطلاع دے دے۔

میرا خیال ہے اب تو آپ بھی اپنے بزرگوں کے ہاتھوں سخت تنگ ہوں گے کہ یہ بھی کیسی بزرگی ہے ایسی بزرگی سے توبہ ہی بھلی مگر دل میں اس طرح کے جذبات کسی قدر کے حامل نہیں ہیں ان کو آپ اپنی زبان پر لائیے اور پھر سپرد قرطاس فرمائیے تاکہ سند و حجت قرار پائیں۔ ہاں ہاں کیجئے ہمت فرما دیجئے رڈ بالغ کوئی پرواہ نہ کریں۔ لوگوں کی وہ کیا کہیں گے آپ چھوڑیں لوگوں کو خود حق دیانت ادا کریں چھوڑیں لوگوں کو علم حق بلند فرمائیں۔

## آپ کے بزرگوں کا کہنا ہی کیا ہے!

کھلے کھلے الفاظ میں اعلان کیجئے نہ عبداللہ غزنوی صاحب ہمارے بزرگ ہیں نہ عبدالجبار غزنوی، نہ مولانا غلام رسول قلعوی ہمارے بزرگ ہیں نہ ہی مولوی محمد سلیمان روڑوی۔ تب تو ہم بھی کسی حد تک آپکو صداقت کا پتلا مانیں مجھے معلوم ہے آپ اپنے ان بزرگوں کی تردید کبھی بھی نہ فرمائیں گے چلو نہ کریں تردید اب اتنا تو مان لیں کہ میں نے قلم چلاتے وقت تحقیق کا لحاظ نہیں رکھا ورنہ اس طرح ہرگز نہ لکھتا۔

ویسے راز کی بات ہے آپ کے بزرگ تو بڑے پہنچے ہوئے ہیں وہ جیسے کہہ دیں ویسے ہی ہوتا ہے ٹھیک وقت اور ٹھیک تاریخ دن، ماہ و سال بتاتے ہیں انگلیوں سے انکو

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



تمام راز ہائے باطن ازبر رہتے ہیں اگر کچھ معلوم نہیں ہوتا تو ہمارے بزرگوں سے آپ کے بزرگ تو ہر فن مولی ہیں مرنے کی خبر ہو تو اس میں ید طولی، پیدائش کی خبر ہو تو اس میں مہارت تامہ کسی کے آنے کی خبر ہو تو جھٹ بتائیں گے کسی کے جانے کی خبر ہو تو فوراً وقت، تاریخ، حاضر میں کہتا ہوں آپ کے بزرگوں کا کہنا ہی کیا ہے۔

## آج کل دکانداریاں زیادہ ہیں:

مذکورہ مولوی محمد سلیمان روڑوی صاحب کے حوالے سے مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی صاحب اپنی کتاب کرامات اہلحدیث میں ایک عظیم الشان کرامت کا ذکر فرماتے ہیں اس کرامت کو ضرور پڑھنا چاہیے۔ ظاہری آنکھوں کے ساتھ ساتھ باطن کی آنکھیں بھی کھل جائیں گی اور ساتھ ہی ساتھ وہ تمام راز ہائے پوشیدہ بھی طشت ازبام ہو گئے جن کو آج تک چھپا رکھا تھا لیجئے مطالعہ کیجئے۔

مولوی عبداللہ صاحب کا بیان ہے کہ ایک دن میرے دل میں ایک بزرگ کے ملنے کا خیال پیدا ہوا۔ اور چاہا بھی کہ کچھ دن ان کے پاس جا کر ٹھہروں اور فیض حاصل کروں، ابھی یہ میرے جی ہی جی میں تھا اور میں نے کسی سے اس کا تذکرہ نہیں کیا تھا، کہ مولوی صاحب سامنے سے آگئے اور آتے ہی فرمایا کہ ذرا سوچ سمجھ کر جانا آج کل دکانداریاں زیادہ ہیں اللہ والے بہت کم ہیں چنانچہ بعد میں معلوم ہوا کہ واقعی وہ دکاندار ہی تھے۔

## نوٹ:-

اگرچہ کرامات اہلحدیث ضمن میں بہت سے بزرگوں کی کرامات میرے پاس جمع ہو گئی ہیں مگر فی الحال انہی پر اکتفا کرتا ہوں خادم عفی عنہ (کرامات اہلحدیث ۲۸)



## سارا معاملہ اندرون خانہ!

کیوں جناب امیر حمزہ صاحب بغور پڑھ لیا ان مبارک جملوں کو جو آپ کے بزرگ مولانا سوہدروی نے مولانا عبداللہ صاحب کے حوالے سے نقل کیے ہیں۔ بزرگوں کو ملنے کا خیال تو آپکے اکابر کو بھی آیا ہی کرتا تھا۔ ان کی خدمت میں کچھ دن ٹھہرنے کا ارادہ بھی وہ کیا کرتے تھے اور ان سے فیض حاصل کرنے کا یقین بھی ان کے دل کی اتھاہ گہرائیوں میں پنہاں تھا۔ یہ سارا کا سارا تصور آپ کے گھر کے بزرگوں کا ہے۔ میں نے اپنے پلے سے کچھ بھی اس میں نہیں ملایا یہ بالکل خالص ہے اس میں کوئی ملاوٹ نہیں کی جاتی جو کچھ بھی ہمارے ہاں سے ملے گا وہ سب خالص ہوگا۔

## یہ راز تھا راز:

کسی بزرگ کی خدمت اقدس میں حاضر ہو کر کچھ دن اس کی بارگاہ میں قیام کر کے، ان سے فیض حاصل کرنے کا ارادہ تو آپکے مولوی عبداللہ صاحب نے کر لیا تھا مگر ابھی تک یہ سارا معاملہ اندرون خانہ تھا اظہار و بیان کی دنیا تک نہیں آیا تھا یہ راز تھا راز! اور پنہاں تھا، پنہاں وہ بھی دل کی گہرائیوں میں آپ خود ہی سوچیے ارادہ ابھی دل ہی دل میں ہو کسی سے اس کا اظہار تک نہ کیا گیا ہو۔ اس پر بھی مطلع ہونا یا مطلع رہنا آخر یہ کس کی شان ہے آیئے میں آپکی خدمت میں آپ ہی کے بزرگ کو پیش کرتا ہوں ملاحظہ فرمایئے۔

ابھی یہ میرے جی میں تھا اور میں نے کسی سے اسکا تذکرہ نہیں کیا تھا کہ مولوی صاحب سامنے سے آگئے اور آتے ہی فرمایا کہ ذرا سوچ سمجھ کر جانا آج کل دکانداریاں زیادہ ہیں اللہ والے بہت کم ہیں چنانچہ بعد میں معلوم ہوا کہ واقعی وہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



دکانداری تھے۔ (کرامات اہلحدیث ۲۸)

## نوائے وقت بن کر پوچھنا چاہتا ہوں۔

بہت خوب، آپکے بزرگوں کی بصیرت کو سلام کرتے ہیں، ان کی عظمت کو خراج تحسین پیش کرتے ہیں اس لئے کہ ان کو دل کے راز بھی معلوم ہوتے ہیں اس کے لئے انکو کوئی جدو جہد نہیں کرنا پڑتی بلکہ انکے لئے یہ معمول ہی ہوتا ہے ادھر نظر سے نظر ملی، ادھر دل کے تمام راز طشت از بام ادھر سامنے دل کی ہر بات پر آگاہی ادھر آمنا سامنا ہوا ادھر دل کی تہوں میں چھپی ہوئی بات ان کی زبان پر۔

## آپ جو فرمائیں:

مگر افسوس یہی بات اگر ہم اللہ تعالیٰ کے مقدس گروہ حضرات انبیاء کرام کیلئے کہہ دیں یا ہمارے بزرگ لکھ دیں۔ یہی بات اگر ہم جلیل القدر ائمہ دین کیلئے کہہ یا لکھ دیں، یہی بات اگر ہم اور ہمارے بزرگ اولیاء کاملین کیلئے کہہ دیں تو فوراً شرک جیسا خطرناک فتویٰ تیار ہوتا ہے اور بلاخوف وخطر ہمارے اکابرین پر داغ دیا جاتا ہے اب میں صدائے حق بن کر نوائے وقت بن کر صدائے عام بن کر پوچھنا چاہتا ہوں امیر حمزہ صاحب جو فتویٰ ہمارے اکابر کیلئے صادر کرتے ہوئے آپ ذرا نہ شرمائے نہ ہچکچائے وہی فتویٰ داغ دیجئے۔ مولانا عبدالمجید سوہدروی پر وہی فتویٰ لگایئے مولوی عبداللہ صاحب پر اور ساتھ ہی ساتھ وہی فتوی مولوی محمد سلیمان روڑوی پر بھی چسپاں کر دیجئے۔ تاکہ آپکی جوانمردی ظاہر و باہر ہو جائے اور آپ کو ہم کچھ قریب الصادقین جانیں۔ مگر آپ ایسا کریں گے نہیں اب تو خاموشی چھا جائے گی نہ زبان کو تحرک ہوگا نہ قلم حرکت میں آئے گا نہ قرطاس پہ قرطاس صرف ہوگا ہائے افسوس مولوی محمد سلیمان



روڑوی صاحب کو دل کے راز معلوم اور اس پر کوئی اعتراض نہیں مولوی روڑوی صاحب جو فرما دیں وہ بالکل حرف بہ حرف درست جو انکی زبان اطہر سے نکل جائے وہ ہر طرح قابل اعتماد، لائق یقین بلکہ قابل نقل اور برائے اشاعت عین حق، لیکن ایسا ہی عقیدہ اگر حضور سیدی غوث اعظم شیخ سید عبدالقادر جیلانی کیلئے رکھا جائے، ایسا ہی عقیدہ اگر حضرت داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری کے متعلق رکھا جائے اور ایسا ہی عقیدہ اگر معین الحق والدین حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری کے بارے میں رکھا جائے تو شرک کاش عقل سلیم کو استعمال میں لاتے مگر نہ لائے عشق تو دور کی بات ہے۔

## بزرگ رات کو ملے:

قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کی ایک اور بڑی ہی دلچسپ کرامت ملاحظہ فرمائیں مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی اپنی کتاب کرامات اہلحدیث میں رقمطراز ہیں۔

قاضی صاحب جب کبھی لاہور تشریف لاتے، تو مال روڈ پر حیات برادرس کے ہاں قیام فرمایا کرتے تھے میاں فضل کریم صاحب بن حاجی حیات محمد صاحب مالک فرم کا بیان ہے کہ جس مکان پر آپ ٹھہرا کرتے تھے، اس کے قریب ہی ایک خانقاہ تھی جو اجڑی ہوئی تھی، ایک دن آپ نے مجھ سے پوچھا، کہ کیا یہاں کوئی قبر ہے۔ میں نے عرض کیا جی ہاں آپ نے کہا آج رات ہمیں وہ بزرگ ملے اور کہا کہ قاضی جی آپ اتنی بار یہاں آئے مگر ہمیں ایک بار بھی نہیں ملے پھر فرمایا وہ بہت نیک اور صالح آدمی ہیں، فلاں جگہ کے رہنے والے تھے، ادھر سے گذر رہے تھے کہ انتقال ہو گیا، میاں

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



میاں فضل کریم کہتے ہیں کہ اس کے بعد جب میں نے اس کی تحقیق کی تو وہ باتیں ویسی ہی ثابت ہوئیں جو قاضی صاحب نے بیان فرمائی تھیں، یہاں تک کہ ان کا نام اور پتہ بھی قاضی جی نے مجھے بتا دیا تھا۔ (کرامات اہلحدیث ۱۹، ۱۸)

"میاں فضل کریم صاحب بن حاجی محمد حیات صاحب مالک فرم نے جو کچھ بیان کیا ہے اس سے درج ذیل باتیں بڑی ہی آسانی سے سمجھ میں آ جاتی ہیں"۔

۱۔ قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کی خانقاہ کی طرف توجہ۔

۲۔ خانقاہ میں کسی کی قبر کے بارے استفسار۔

۳۔ صاحب قبر کی قاضی سلیمان منصور پوری صاحب سے ملاقات۔

۴۔ قاضی سلیمان صاحب کو صاحب قبر کی طرف سے دعوت۔

۵۔ صاحب قبر نیک اور صالح آدمی ہیں قاضی صاحب نے انکی شہادت دی۔

۶۔ وہ بزرگ جو قبر میں دفن ہیں وہ کہاں کے رہنے والے تھے انکی تحقیق۔

۷۔ سفر کی حالت میں ادھر سے گزر رہے تھے کہ انتقال ہو گیا۔

۸۔ میاں فضل کریم صاحب کا تائیدی بیان۔

۹۔ وہ باتیں ویسی ہی ثابت ہوئیں جو قاضی صاحب نے بیان فرمائی تھیں۔

۱۰۔ یہاں تک کہ ان کا نام اور پتہ بھی قاضی صاحب نے مجھے دے دیا تھا۔

## مال روڈ لاہور:

رب العالمین کا لاکھ لاکھ شکر ہے اس نے ہماری تائید امیر حمزہ صاحب کے گھر کے بزرگوں سے کروا دی قاضی سلیمان منصور پوری صاحب جب کبھی لاہور تشریف لاتے تو مال روڈ پر حیات برادرس کے ہاں قیام فرمایا کرتے تھے۔ [illegible] 98



سے میں بھی لاہور قطب ارشاد، بلدہ معظمہ میں ہی مقیم ہوں۔ یہ شہر بڑی ہی برکتوں کا حامل ہے اللہ تعالی اس شہر کو ہمیشہ آباد رکھے اسکے ملنے والوں پر اپنا لطف و کرم دائمی فرماتا رہے۔ اس شہر کی ساری برکتیں حضرت داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری کی وجہ سے ہیں کہ یہ داتا کی نگری کہلاتی ہے۔

## قاضی سلیمان منصور پوری کی خانقاہ کی طرف التفات!

قاضی صاحب لاہور آتے تو مال روڈ پر حیات برادرس کے ہاں قیام کرتے۔ جس مکان پر آپ ٹھہرا کرتے تھے اس کے قریب ہی ایک خانقاہ تھی۔ اس کی طرف توجہ رہتی تھی اور اس کے بارے میں متجسس تھے۔ یہ تو ثابت ہو ہی گیا۔ قبروں سے اسقدر نفرت تو آپکے اکابر نہ کرتے تھے جس طرح آپ نے ان کے کھاتے میں ڈال رکھی ہے۔ بہر حال آپ پر کون پابندی لگا سکتا جو من میں آئے سو کیجئے مگر اتنا خیال ضرور رکھیے گا۔ آپکے اکابر بھی آپ کے فتوؤں کی زد سے بچ نہیں سکے جس طرح قبوری عقیدہ، قبوری عقیدہ کی رٹ لگا لگا کر آپ نے اسکو باطل قرار دیا اور شرک سے موسوم کیا یہ تو آپکو مہنگا ہی پڑے گا۔

ظاہر ہے یہ تو ایک فطری سی بات ہے۔ جو دنیا میں آیا اس نے ایک دن واپس بھی جانا ہی ہے اور ہر مسلمان کو مرنے کے بعد قبر میں دفن کیا جاتا ہے یہی سنت ہے اور جب قبر بن جائے تو انسان کو قبر سے نفرت ہرگز نہیں کرنی چاہیے بلکہ قبر سے محبت کرنی چاہیے قبر والے کیلئے فاتحہ پڑھنی چاہیے اظہار ہمدردی کرنا چاہیے تاکہ کل جب ہم بھی قبروں میں چلے جائیں تو بعد میں آنے والے لوگ ہمارے لئے بھی ایصال ثواب کریں فاتحہ پڑھیں دعا مانگیں اور ہماری آخرت بہتر ہو۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



امیر حمزہ صاحب آپ نے تو اپنی کتابوں میں سارا زور ہی قبروں کی مخالفت پر رکھا ہے بار بار اہلِ قبور کا ذکر کر کر کے انکی بے بسی کو یاد کروایا ہے اور قبوری عقیدہ قبوری عقیدہ کہہ کہہ کر اس کا بطلان ثابت کرنے کی بھرپور کوشش کی اور ان گنت مرتبہ کیا ہے قبوری عقیدہ شرک ہے اور اب جب آپکے اپنے بزرگ بھی قبر کی طرف متوجہ ہیں کہا اور انکو باخبر بھی مانتے ہیں تو آپ کس کھاتے میں جائیں گے۔

## خانقاہ میں کسی کی قبر کے بارے استفسار!

قاضی صاحب کی توجہ جو ایک خانقاہ کی طرف ہوئی تو انہوں نے اپنے میزبان جناب فضل کریم صاحب سے پوچھا یہاں کوئی قبر ہے؟۔ اس پر انہوں نے جواب دیا جی ہاں یہاں ایک قبر ہے آپ کے بزرگ قبروں کے بارے استفسار کر کر کے معلومات حاصل کرتے ہیں مگر آپ نے قبروں کے رد میں وہ وہ رنگ اختیار کیا ہے جیسے کبھی آپ نے نہ تو کوئی قبر دیکھی ہے اور نہ ہی خود مر کر قبر میں جانا ہے۔

خانقاہوں کا رد، درباروں کا رد، مزاراتِ کا رد، سلاسل ہائے طریقت کا رد، بزرگانِ دین کا رد اور روحانیت کا رد کرنا آپ نے اپنے اوپر لازم جانا ہے۔ اگر خانقاہیں اور قبریں اتنی ہی خطرناک چیزیں ہیں تو آپ کے بزرگ وہاں کیا لینے جاتے ہیں۔ اگر آپ میں غیرت دینی ہے اور واقعی ہے تو بلا امتیاز فتویٰ شرک صادر فرمایئے تاکہ پتہ چلے کہ آپ غیرت دینی سے سرشار ہیں اب جو فتویٰ شرک و بدعت جناب قاضی محمد سلیمان منصور پوری پر لگے تو مزہ ہی آجائے۔

## صاحب قبر سے جناب قاضی سلیمان منصور پوری کی ملاقات!

امیر حمزہ صاحب! تھامیے دل کو، لگا ہے کو و قیامت [illegible]



ساختہ عقیدہ پر وہ بھی میں نے نہیں توڑا جو مجھے ترس آئے بلکہ آپ پر کوہ قیامت آپ کے اپنے ہی گھر کے بزرگ کے ہاتھوں ٹوٹا ہے بس اب دو ہی صورتیں ہیں یا تو اپنے بیان کردہ عقائد و نظریات سے فوراً تائب ہو کر اپنے بزرگوں والا عقیدہ اپنا لیں اور سابقہ نظریات جو آپ نے اپنی کتابوں "مذہبی و سیاسی یاوے"" "آسمانی جنت اور درباری جہنم"" "شاہراہ بہشت" میں لکھے ہیں ان سے اعلان بریت کریں یا پھر دوسری صورت یہی ہے کہ اپنے ان اکابر پر بتقاضا و دیانت فتویٰ شرک صادر کر دیں تاکہ آپ کی صداقت پر مہر تصدیق ٹھک کر کے لگے جائے۔

## دو ہی صورتیں:

آپ کے سامنے صرف دو ہی صورتیں رہ گئی تھیں وہ دونوں آپکی خدمت میں پیش کر دی ہیں ان دونوں میں سے جو آپ کا جی چاہے اختیار فرمائیں۔ انشاء اللہ ہر صورت میں صداقت اولیاء اللہ سے محبت رکھنے والوں ہی کی ظاہر باہر ہوگی۔ اب اگر ویسی ہی بڑھکیں ماریں جیسی اپنی تحریروں میں ماری ہیں تو ہم آپکو مرد میداں جانیں مگر بڑھک تو در کنار اب تو آپکے گلے سے آواز تک صاف نہ نکلے گی۔

آپکے بزرگ قبر کی طرف اور قبر والے کی طرف مائل ہوئے ہیں تو اب آپ کا نقطۂ نظر کیا ہوگا۔ اگر قبر کی طرف متوجہ اور قبر والے کی جانب ملتفت ہونا شرک ہے تو بلا تامل قاضی صاحب پر فتویٰ شرک صادر فرمایئے کیونکہ اہل قبور نے ان سے ملاقات کی اور اس ملاقات کا تفصیل حال ابھی آپکی نظر سے گزرا ہے۔

## قاضی سلیمان صاحب کو صاحب قبر کی طرف سے دعوت!

امیر حمزہ صاحب آپ تو فرماتے ہیں قبروں والے بالکل بے خبر ہیں انکو کچھ خبر نہیں

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



وہ تو مر گئے۔ آپ نے قبر والوں کی بے خبری پر اتنا زور صرف کیا ہے کہ اگر آپ اتنا زور کسی اور موضوع سخن پر صرف کرتے تو ضرور کوئی نہ کوئی نئی تحقیق سامنے آجاتی مگر آپ کی قسمت میں تحقیق کہاں وہ تو کسی نصیب والے کے حصے میں آتی ہے آپ کے مقدر میں تو امت مسلمہ پر تیر چلانا ہے تیر چلانا سو آپ چلاتے جارہے ہیں ہم آپکو ہرگز نہ روکیں گے اور چلائیں تیر خوب دل بھر کر چلائیں اس قوم پر تیر و تفنگ تاکہ آپکا نام مجاہدین فی سبیل اللہ میں درج ہو جائے اور اپنے اس جہاد پر اترا تو سکیں میں نے آپکی خدمت مقدسہ میں آپ ہی کے بزرگ کو پیش کیا ہے لیجئے مطالعہ فرمایئے تاکہ آپ پر واضح ہو آپ کیا کہتے ہیں اور وہ کیا کہتے ہیں نیز آپکا عمل کیا ہے اور انکا عمل کیا۔

میاں فضل کریم صاحب بیان کرتے ہیں مجھ سے ایک دن آپ نے پوچھا کہ کیا یہاں کوئی قبر ہے میں نے عرض کیا جی ہاں آپ نے کہا آج رات ہمیں وہ بزرگ ملے اور کہا کہ قاضی جی آپ اتنی بار یہاں آئے مگر ہمیں ایک بار بھی نہیں ملے۔ (کرامات اہلحدیث ۱۹،۱۸)

## پوری پوری سی، آئی، ڈی!

قاضی صاحب کو قبر والے بزرگ خواب میں آکر دعوت دے رہے ہیں قاضی جی آپ اتنی بار یہاں لاہور آئے ہیں مگر ہمیں ایک بار بھی نہیں ملے۔ رکھیے ہاتھ اپنے دھڑکتے دل پر اور کلیجہ تھام لیجئے تاکہ آپکو آپکے بزرگ محترم کی عبارت کی تفہیم میں آسانی ہو کیوں جناب قبر والے تو بے خبر ہیں، وہ تو سن نہیں سکتے، وہ تو کسی کو ہرگز نہیں پہچانتے وہ تو کسی کو نہیں دیکھتے مگر صرف آپ کے بزرگوں کی پوری پوری سی، آئی، ڈی رکھتے ہیں انہیں ان کا آنا جانا بھی معلوم ہے بلکہ کتنی بار آئے ہیں اس گنتی کا بھی پورا پورا احساس ہے تبھی تو یوں فرماتے ہیں



قاضی جی آپ اتنی بار یہاں آئے مگر ہمیں ایک بار نہیں ملے (کرامات اہلحدیث ۱۹،۱۸)

گویا صاحب قبر نے آکر قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کو باقاعدہ دعوت دی کہ آپ ہمارے مزار پر آئیں اور ہم سے ملاقات فرمائیں واہ بھئی واہ خود کو صاحبانِ قبور کی طرف سے دعوتیں آتی ہیں وہ ان کو بلاتے ہیں جانتے ہیں پہچانتے ہیں انکا نام مبارک لے لے کر انکو اپنے ہاں آنے کی دعوت دیتے ہیں اب نہ مرنے والا معاملہ یاد، نہ قبر کی بے خبری مستحضر، نہ قبوری عقیدہ یاد، نہ اہل قبور کا بے خبر ہونا مسلم بلکہ اب تو ان کا سننا مسلم، ان کا باخبر ہونا مسلم، ان کا جاننا مسلم ان کا پہچاننا مسلم۔

## ایک بار بھی نہ ملے:

آپ کے گھر کے بزرگوں سے اہل قبور کی ملاقات ہو تو بالکل صحیح وہ انکو پہچانیں تو بالکل درست وہ انکا نام لیکر ان کو اپنی قبر پر اپنے مزار پر آنے کی دعوت دے دیں تو بالکل درست و صحیح اور ان کی طرف سے اگر ذرا دیر ہو جائے تو بھی انکو خوب پتہ اور ان سے شکوہ بھی کرتے ہیں آپ اتنی بار یہاں آئے مگر ہمیں ایک بار بھی نہ ملے۔

اگر اس طرح کی باتیں ہمارے بزرگوں سے ثابت ہو جائیں تو آپ ایک طوفان برپا کر دیتے ہیں۔ جھپٹ جھپٹ کر حملہ آور ہوتے ہیں، پیچ و تاب کھا کھا کر آتے ہیں جیسے آپ نے کسی بڑے مجرم کو عین موقعہ پر رنگے ہاتھوں پکڑ لیا ہو اور اب اس کے جرم ناقابل معافی پر حکم سزا لگانا ہو۔

## صاحب قبر نیک و صالح آدمی ہیں!

آپ کے بزرگ تو قبر والوں کو خوب جانتے پہچانتے ہیں ان کے حق میں بڑی کھلی کھلی شہادتیں دیتے ہیں بڑے یقین انداز میں اہل قبور کی نیکی و پارسائی کا اعلان

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کرتے ہیں انکی مدحت میں رطب اللسان ہوتے ہیں انکے قصیدے پڑھتے ہیں۔

معلوم ہوتا ہے آپکے تو بڑے زبردست تعلقات ہیں اہل قبور سے، ہمارے تعلقات پر کیوں اعتراض ہے، خود تو ان سے راہ رسم رکھتے ہیں ان کے ہاں اپنا تو آنا جانا رہتا ہے باقاعدہ دعوتیں ہوتی ہیں دوسری جانب قبوری عقیدہ قبوری عقیدہ کی رٹ نے سر کھا مارا ہے آخر یہ سب دورخی کیا ہے۔ اگر قبوری عقیدہ واقعی شرک ہے تو اٹھایئے قلم اور لگا یئے فتوی شرک اپنے بزرگ سلیمان منصور پوری پر تا کہ حق ثابت ہو۔ مجھے معلوم ہے اب تو قیامت قائم ہو جائے مگر آپ کا قلم حق توحید ادا نہ کر سکے گا۔

قاضی صاحب کو نہ صرف قبر والے سے ایک سرسری تعلق ہے بلکہ یہ ان کو خوب گہرائی تک جانتے ہیں قلبی تعلق ہے تبھی تو یوں ارشاد فرماتے ہیں لیجئے ایک بار پھر تازہ فرمایئے۔

میاں فضل کریم کہتے ہیں مجھ سے قاضی صاحب نے پوچھا یہاں کوئی قبر ہے میں نے عرض کیا جی ہاں آپ نے کہا آج رات وہ بزرگ ہمیں ملے اور کہا کہ قاضی جی آپ اتنی بار یہاں آئے مگر ہمیں ایک بار بھی نہیں ملے پھر فرمایا وہ بہت نیک وصالح آدمی ہیں۔ (کرامات اہلحدیث ۱۹،۱۸)

## مضبوط تعلقات:

عقل و دانش کی دہلیز پر صداقت کا واسطہ دے کر بھیک مانگنا چاہتا ہوں، ذرا اتنا تو بتا دو جن کے اپنے گھر کے بزرگوں کے اتنے مضبوط تعلقات اہل قبور سے ہوں کیا ان کو مزارات کی مخالفت کرنا زیب دیتا ہے؟ کیا یہ سراسر زیادتی نہیں کیا یہ حق وصداقت کا خون کرنے کے مترادف نہیں؟ کیا یہ سب منافقت تو نہیں خود قبر والوں سے باقاعدہ



رابطہ انکے حالات واحوال سے مکمل آگاہی انکے ہاں آنا جانا سب جائز ہی نہیں بلکہ قطعی یقینی انداز میں گفتگو کرنا آخر ہم پر یہ ستم کیوں ہمیں کیوں روکتے ہیں مزارات پر جانے سے جب خود ان سے رابطہ میں ہیں۔

## صاحب قبر کی ہسٹری (History) بتادی!

قاضی صاحب کو تو اہل قبور سے ایسا پکا تعلق ہے کہ جس قبر پر نظر ڈال دیں صاحب قبر کی مکمل ہسٹری جان لیتے ہیں آپ اپنے ہی مولانا صاحب کی زبانی سنئے امیر حمزہ صاحب ذرا پوری توجہ قاضی صاحب فرماتے ہیں وہ نیک صالح آدمی ہیں ادھر سے گزر رہے تھے انتقال ہو گیا۔

وہ نیک وصالح آدمی ہیں۔ کتنی بڑی اور پکی شہادت ہے جو بغیر علم قطعی یقینی کے ہرگز نہیں دی جاسکتی مگر قاضی صاحب کو تو صاحب قبر کے حالات احوال مقامات سب یاد ہیں اور وہ بھی یقینی طور پر اسی یقین کی بنا پر تو وہ صاحب قبر کو نیک وصالح قرار دے رہے اور ساتھ ہی ساتھ یہ بھی بتا رہے ہیں کہ یہ مسافر تھے اور حالت سفر میں یہاں سے گزر رہے تھے کہ ان کا انتقال ہو گیا اور یہیں دفن ہو گئے۔

تھوڑا سا غور فرمائیں وہ صاحب کب گزر رہے تھے ماضی میں، وہ مسافر تھے، وہ غریب الوطن تھے اس حالت میں انکا انتقال ہوا کیسی پکی اور مضبوط خبر ہے وہ بھی ماضی کی امیر حمزہ صاحب آپ نے کہاں بیٹھ کر اپنی تحریروں کو سپرد قرطاس فرمایا ہے لگتا ہے آپ کی تحریریں کسی اور جہاں میں لکھی گئی ہیں۔

## حواس معطل:

مجھے بڑھکیں مارنے کی عادت نہیں ورنہ موقعہ بڑا زبردست تھا، اگر میں بڑھکیں

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



مارنے پر آجاتا تو آپ کے حواس معطل کر کے رکھ دیتا، آپکی عقل کی بھنبیری گھما دیتا، آپکی دانش کو راو صفا دکھا دیتا۔ آپ پر وہ سکتہ طاری کر دکھاتا کہ ہوش نام کی کوئی چیز آپکے قریب بھی نہ پھٹک سکتی، مگر کیا مجال جو میں شائستگی سے ذرا دور چلا جاؤں اور ہلکی چیٹھی بھی کروں۔

قاضی سلیمان منصور پوری صاحب لاہور میں مال روڈ پر ایک قبر اور صاحب قبر کی ساری ہسٹری بیان فرماتے ہیں باطن کی خوب خبر رکھتے ہیں ماضی میں ہونے والے واقعات کا تو ایسا ادراک ہے جیسے سب ان کی آنکھوں کے سامنے ہی ہو رہے ہیں۔

## ستم ظریفی:

میں رب ذوالجلال کی جلالت کا واسطہ دے کر پوچھنا چاہوں گا آخر دیانت کی یہ کونسی قسم ہے کہ اپنے بزرگوں کو ماضی حال واستقبال سب کی خبر اور وہ قطعی یقینی حتیٰ کہ قبر میں دفن مردوں سے باقاعدہ تعلقات ان سے گفتگو، ان کے ہاں آنا جانا انکی دعوت قبول کرنا اور انکی لائف ہسٹری (Life History) چشم زدن میں بیان کر دینا سب جائز ہی نہیں بلکہ کمالات میں شامل و داخل اور اگر ہم اس طرح کی کوئی بات کہہ دیں تو شرک کا گھڑا گھڑایا فتویٰ ہم پر فوراً چسپاں کچھ تو خوف خدا کیجئے۔ اس قدر ستم ظریفی بھی اچھی نہیں ہوتی۔

قاضی صاحب نے تو جو بتانا تھا بتا دیا مگر میاں فضل کریم صاحب کہتے ہیں میں نے بعد میں باقاعدہ تحقیق کی تو پتہ چلا جیسے قاضی صاحب فرما گئے تھے ویسے ہی نکلا آپ بھی میاں صاحب کی زبانی سنئے۔

میاں فضل کریم کہتے ہیں کہ اس کے بعد جب میں نے اس کی تحقیق کی تو وہ باتیں



ویسی ہی ثابت ہوئیں جو قاضی صاحب نے بیان کیں تھیں۔ یہاں تک کہ ان کا نام اور پتہ بھی قاضی جی نے مجھے بتا دیا تھا۔ (کرامات اہلحدیث ۱۹،۱۸)

## قبر و حشر!

مندرجہ بالا بیان پڑھنے کے بعد بھلا کوئی گنجائش رہ جاتی ہے اس سے انکار کی کہ قاضی صاحب نہ صرف ظاہری تاریخ کے ماہر ہیں، بلکہ وہ تو مردوں کے احوال زندوں سے بھی زیادہ جانتے ہیں گویا اس جہاں کی خبر تو رکھتے ہی ہیں اس سے آگے نکل کر وہ جہاں برزخ و قبر و حشر کا بھی خوب معائنہ فرماتے رہتے ہیں اور جب ضرورت پڑے فوراً وہاں کے سب حالات بھی بیان کر دیتے ہیں بلکہ، قبر والے حضرات کا پورا تاریخی شجرہ بھی بیان کرنے میں کوئی کوتاہی نہیں ہونے دیتے۔

## حق و صداقت:

ان مصدقہ حقائق کو پڑھ لینے کے بعد بھی کوئی صاحب عقل یہ بات کر سکتا ہے کہ قبر والے سنتے نہیں، قبر والے دیکھتے نہیں، قبروں والے پہچانتے نہیں، قبروں والے علم نہیں رکھتے، قبروں والے مردہ ہی پڑے ہوتے ہیں، قبوری عقیدہ شرک ہے قبر والوں کو زندہ سمجھنا شرک ہے انکو آنے والوں سے باخبر ماننا شرک ہے۔

اگر واقعی قبوری عقیدہ شرک ہے اور قبر والے کچھ خبر نہیں رکھتے تو قاضی سلیمان منصور پوری صاحب جو اہلحدیث کے مسلمہ بزرگ ہیں ان کے بارے میں امیر حمزہ صاحب آپ کی رائے کیا ہوگی؟ ذرا سوچئے گا ضرور میں نے بالکل حق سچ آپکی خدمت میں پیش کیا ہے اب پڑھنے کے بعد آپ کا دل اس کو قبول کرتا ہے یا نہیں یہ تو میرے اللہ تعالیٰ ہی کو معلوم ہے مگر مجھے اتنا ضرور معلوم ہے حق وہی ہے جو ہم نے بیان

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کر دیا ہے وللہ الحمد۔

## رازونیاز کی باتیں:

ہمارے عقائد ونظریات پر ہمارے اعمال پر آپ نے جس طرح بڑھ بڑھ کر حملے کئے ہیں اور جو زبان استعمال کی ہے وہ ایک متین شخص کی زبان نہیں ہے، بہر حال میں نے اس طرح کی زبان میں جواب نہیں دیا بلکہ اچھی زبان میں جواب دیا ہے اپنی بات کو دلیل سے پیش کیا ہے اور دلیل بھی انتہائی متانت سے سپرد قرطاس کی ہے آپ نے بڑے بڑے حضرات اولیاء کرام مثلاً حضرت خواجہ بہاؤالدین زکریا ملتانی، حضرت شاہ رکن عالم ملتانی، بابا فرید الدین گنج شکر، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی اور دیگر بزرگان دین پر بڑے بھونڈے اور بے سروپا اعتراضات کئے ہیں، جنکی کوئی وقعت ہی نہیں ہے آپکو حیات انبیاء واولیاء پر بڑے اعتراض ہیں مگر جب میں نے آپکے اپنے گھر کے بزرگوں کا جائزہ لیا تو وہ تو اہل قبور کے ساتھ بڑے زبردست تعلقات کے حامل نکلے بلکہ اگر کبھی آپکے بزرگ کسی قبر پر نہ بھی جائیں تو قبر والے خود آ کر دعوت پیش کر دیتے ہیں اور پھر رازونیاز کی باتیں ہوتی ہیں نام پتہ تک بھی ایک دوسرے کو بتاتے ہیں لیجئے ایک بار پھر کرامات اہلحدیث کی یہ عبارت مطالعہ فرمائیں تا کہ ایمان تازہ ہو۔

میاں فضل کریم صاحب کا بیان ہے، ایک دن آپ (قاضی سلیمان منصور پوری) نے مجھ سے پوچھا کہ کیا یہاں کوئی قبر ہے میں نے عرض کیا جی ہاں آپ نے کہا آج رات ہمیں وہ بزرگ ملے اور کہا کہ قاضی جی آپ اتنی بار یہاں آئے مگر ہمیں ایک بار بھی نہیں ملے، پھر فرمایا وہ بہت نیک وصالح آدمی ہیں فلاں جگہ کے رہنے



والے تھے ادھر سے گزر رہے تھے کہ انتقال ہو گیا میاں فضل کریم کہتے ہیں کہ اس کے بعد جب میں نے اسکی تحقیق کی تو وہ باتیں ویسے ہی ثابت ہوئیں جو قاضی صاحب نے بیان فرمائی تھیں، یہاں تک کہ ان کا نام اور پتہ بھی قاضی جی نے مجھے بتادیا تھا۔ (کرامات اہلحدیث ۱۸، ۱۹)

## فیصلہ قارئین پر موقوف:

امیر حمزہ صاحب مندرجہ بالا عبارت کو ڈالئے اپنے ترازو میں اور تولیے عدل کے ساتھ اور قول میں خیانت کرنا ایماندار کا کام نہیں ہے آپ کو تو معلوم ہی ہے قوم شعیب علیہ السلام کو سزا بھی اسی جرم کی دی گئی تھی کہ وہ کم تولتے تھے کم ماپتے تھے۔ آپ نے جو اصول وضع کر کر کے اپنی مؤلفات "مذہبی و سیاسی باوے" "آسمانی جنت اور درباری جہنم" "شاہراہ بہشت" میں بیان فرمائے ہیں انہی اصولوں پر اس قبر والے سے قاضی سلیمان منصور پوری صاحب جو آپکے مسلمہ عالم اور محقق ہیں کی ملاقات کو پرکھیے اور پھر جو نتیجہ برآمد ہوا سے عین دیانتداری کے ساتھ سپرد قرطاس کیجئے تا کہ حق مبین ہو اور باطل کا سرنگوں ہو جائے۔

## جرم کی پاداش:

غور فرمائیں آپ نے جورٹ قبوری عقیدہ قبوری عقیدہ کہہ کہہ کر لگائی تھی اور اس عقیدہ کو کھلے شرک کے ساتھ تعبیر کیا تھا اب وہی انداز اپنے قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کے لئے بھی اپنائیں گے؟ ان کو بھی اسی لائن میں کھڑا کریں گے جہاں ہم سیدھے سادھے مسلمانوں کو کھڑا کیا ہے؟ ہم پر جو ستم کی چکی آپ نے محض اس جرم کی پاداش میں چلائی ہے کہ ہم حضرت علی بن عثمان ہجویری داتا گنج بخش کی قبر پر چلے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



جاتے ہیں ان کے مزار پر اتوار کی زیارت کرتے ہیں وہی چگی اپنے بزرگ پر بھی چلا لیجئے تا کہ آپ کا حق نما ہونا واضح ہو جائے بلا تبصرہ اس بات کو میں ختم کر رہا ہوں۔ فیصلہ قارئین پر موقوف کرتا ہوں اور مجھے امید ہے فیصلہ یہی ہوگا امیر حمزہ صاحب نے سخت ٹھوکر کھائی ہے۔

قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کی کرامات کے ذکر میں ایک کرامت بڑی ہی دلچسپ اور دل کو موہ لینے والی ہے اللہ کرے امیر حمزہ صاحب کو بھی اس کرامت کا اثر ہو جائے اور راہ ہدایت نصیب ہو۔ میں نہایت دیانتداری کے ساتھ اسکو آپ کی خدمت میں پیش کرنے کی سعادت حاصل کر رہا ہوں۔

مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی اپنی کتاب کرامات اہلحدیث میں لکھتے ہیں۔

خلیفہ ہدایت اللہ صاحب منیجر رحمۃ اللعالمین کا بیان ہے، کہ میرے پاس برما، بنگال، بہاولپور وغیرہ سے کئی ایسے خطوط آئے ہیں جن میں یہ مرقوم ہے کہ رحمۃ للعالمین بھیج دیجئے کیونکہ ہمیں خواب میں آنحضرت صلی اللہ علیہ آلہ وسلم نے ارشاد فرمایا ہے کہ اگر مجھ سے محبت چاہتے ہو تو رحمۃ للعالمین جو قاضی محمد سلیمان نے لکھی ہے، پڑھا کرو۔ (کرامات اہلحدیث ۳۲)

## مالی فوائد:

قاضی سلیمان صاحب منصور پوری کی کتاب رحمۃ للعالمین میری نظر سے گزری ہے اور میرے مطالعہ میں رہی ہے۔ یہ سیرت النبی ﷺ کی کتاب ہے۔ اس کتاب کو چھاپنے کی ذمہ داری جناب خلیفہ ہدایت اللہ صاحب نے لی، چنانچہ انہوں نے اس



کتاب کو دور دراز علاقوں تک پہنچایا۔ چونکہ یہ کتاب جہاں خدمت اسلام ہے وہاں مالی فوائد کی بھی حامل ہے اس لئے بھی اسکی شہرت اور اسکی افادیت لوگوں کے اذہان و قلوب میں راسخ کرنا ضروری تھا تا کہ مالی طور پر خوشحالی میسر آ جائے ابھی یہ کوششیں جاری ہی تھیں کہ اس کتاب کی مقبولیت کو کیسے عام کیا جائے کہ کچھ خطوط مختلف علاقوں اور ملکوں سے جناب ہدایت اللہ صاحب منیجر رحمۃ للعالمین کے نام آنا شروع ہو گئے ان خطوط کے مضامین کیا تھے یہ آپ انہیں کی زبانی سنئے۔

خلیفہ ہدایت اللہ صاحب بیان کرتے ہیں۔ میرے پاس برما بنگال بہاولپور وغیرہ سے کئی ایسے خطوط آئے ہیں جن میں یہ مرقوم ہے کہ رحمۃ للعالمین بھیج دیجئے کیونکہ ہمیں خواب میں آنحضرت ﷺ نے ارشاد فرمایا ہے کہ اگر مجھ سے محبت چاہتے ہو تو رحمۃ للعالمین جو قاضی محمد سلیمان نے لکھی ہے پڑھا کرو۔ (کرامات اہلحدیث ۱۲۳)

اس عبارت سے کم از کم مندرجہ ذیل امور تو بڑی آسانی کے ساتھ سمجھ میں آتے ہیں

۱۔ رحمۃ للعالمین بڑی مقبول سیرت النبی ﷺ ہے۔

۲۔ آنحضرت ﷺ کی نظر مبارک پوری دنیا کے ممالک پر ہے۔

۳۔ نبی اکرم تاجدار عرب و عجم ﷺ کو پورے برصغیر پاک و ہند میں کیا پوری دنیا میں لکھی جانے والی کتابوں کا بالاستیعاب علم ہے۔

۴۔ رسول ہاشمی ﷺ کو یہ بھی علم ہے کہ پوری دنیا میں کون کون سیرت پر کام کر رہا ہے۔

۵۔ حضور [illegible] ﷺ رحمۃ للعالمین کتاب سے بھی باخبر ہیں۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



۶۔ امام الانبیاء حضرت محمد ﷺ قاضی محمد سلیمان صاحب کو بھی جانتے ہیں۔

## کتاب رحمۃ للعالمین کی عظمت!

سبحان اللہ! کیا عزت و شان ہے آپ کے بزرگوں کی اور انکی لکھی ہوئی کتابوں کی داد و تحسین دینے کو جی چاہتا ہے خراج عقیدت پیش کرنے کو دل چاہتا ہے۔ مگر آپکا عقیدہ مانع ہے آپ نے جب عقیدے پر بات کی تو وہ وہ گل کھلائے کہ عقل و دانش دھنگ رہ گئی مگر جب ہم نے آپکے بزرگوں کا جائزہ لیا انکی تصانیف کا مطالعہ کیا تو تب یہ واضح ہوا کہ جو آپ لکھتے ہیں وہ صرف ہمارے لئے ہے جب آپ کے اپنے گھر کے بزرگوں کی باری آتی ہے تو وہ سب جائز ہو جاتا ہے جو کچھ ہمارے حق میں شرک تھا۔

## مجھ سے محبت چاہتے ہو!

• نبی اکرم تاجدار عرب و عجم ﷺ نے، کتاب کا اور اس کے مصنف کا نام لیکر فرمایا، اگر تم لوگ مجھ سے محبت چاہتے ہو تو رحمۃ للعالمین کا مطالعہ کیا کرو۔ امیر حمزہ صاحب کہیے کیسی پکی بات ہے اور کتنی بڑی عظمت ہے آپ کے مولانا صاحب کی اللہ اللہ قاضی سلیمان منصور پوری کی عظمت و شان کا معاملہ رہا تو ایک طرف انکی کتاب رحمۃ للعالمین کی رفعت کا، رسول اللہ ﷺ ڈائریکٹ (Direct) حکم صادر فرماتے ہیں اس کتاب کو پڑھو جو قاضی محمد سلیمان نے لکھی ہے۔ آخر میں اس کو کیا کہوں۔ اگر میرا قلم بھی آپکی طرز پر چلتا تو وہ کچھ کہتا کہ آپ کا سر چکرا کر رہ جاتا مگر میں نہیں چاہتا میری تحریر پڑھ کر آپ کو چکر آنے لگیں اور آپ لڑکھڑا کر گر جائیں اور آپکو سنبھالنے والے، اللہ اکبر اللہ اکبر کہہ کر آپکو ہوش میں لانے کی کوشش کریں مگر یہاں معاملہ کچھ اور ہے۔



## تحریر کا رعب:

بات دراصل یہ ہے آپ نے تحقیق کے جہاں میں قدم رکھا اور سادے سارے مسلمانوں پر اپنی قوت تحریر کا رعب جمانے کی کوشش کی اگر چہ اس طرح بھی ناکام ہی رہے مگر ایک زعم سا آپکو ہو گیا شاید میں نے کوئی بڑا میدان مار لیا ہے۔ اور آپکی خانہ تلاشی لی گئی تو وہ سارا کا سارا سامان آپ کے اپنے گھر سے برآمد ہو گیا جو دکھا دکھا کر آپ نے بڑھکیں ماری تھیں اور دوسروں کو متاثر کرنے کی بھرپور کاوش کی تھی۔

اگر آپکے بزرگوں کی کتاب کی تشہیر کا معاملہ ہو تو رسول اللہ ﷺ کیلئے علم غیب بھی ثابت کل کائنات پر آپکی نظر بھی ثابت، ہر ہر مصنف سیرت کو بھی آپ جانیں انکے نام سے واقف انکی کتاب سے واقف انکے کام سے واقف سبحان اللہ اگر یہی عقیدہ ہم رکھیں تو فوراً فتویٰ شرک تیار اور بڑے آرام سے کہہ دیا جاتا جو فوت ہو گئے انہیں کسی کی کیا خبر، لیں اب آپ اپنی خبر لیجئے گا اپنے عقیدے و نظریے کو سنبھالئے گا کہیں ہاتھ سے چھوٹ نہ جائے۔

انی سمجھ کسی کو بھی ایسی خدا نہ دے
دے آدمی کو موت پر یہ بد ادا نہ دے

## کمال نظر رسول اللہ ﷺ:

سید عالم ﷺ نے بہت سارے لوگوں کی خواب میں تشریف لا کر فرمایا کہ تم لوگ اگر مجھ سے محبت چاہتے ہو تو قاضی محمد سلیمان منصور پوری کی کتاب رحمۃ للعالمین پڑھا کرو، کیا مبارک نظر اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب کریم ﷺ کو عطا فرمائی ہے ساری دنیا کو بیک وقت دیکھ رہے ہیں تمام انسانوں پر نظر ہے، انکے اعمال پر نظر ہے انکی خصوصیات

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



پر نظر ہے اور انکی لکھی ہوئی کتابوں پر نظر ہے تبھی تو فرماتے ہیں کہ اگر مجھ سے محبت چاہتے ہو تو رحمۃ للعالمین پڑھا کرو۔

جو کچھ مولانا عبدالمجید سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی نے لکھا ہے اگر یہ سب سچ ہے تو عقیدہ انہی لوگوں کا سچا ثابت ہوا جو مزرات انبیاء و اولیاء پر حاضری دیتے ہیں۔ انکو بعد از وفات بھی باذن اللہ زندہ ہی سمجھتے ہیں۔

## اقبال کہتے ہیں!

مرنے والے مرتے ہیں لیکن فنا ہوتے نہیں
یہ حقیقت میں کبھی ہم سے جدا ہوتے نہیں
موت کو سمجھا ہے غافل اختتام زندگی
ہے یہ شام زندگی صبح دوام زندگی

## دنیا بھر کے ممالک پر نظر مبارک ہے!

دنیا میں بہت سارے ممالک ہیں جب تک ان سب پر نظر نہ ہو یہ کیسے پتہ چلے کہ قاضی سلیمان منصور پوری کہاں ہیں پہلے ملک ہندوستان پر نظر کامل اور یہاں کا سب حال معلوم دوسرے نمبر پر اس ملک کے تمام صوبہ جات پر نظر اور پھر اس شہر پر نظر جہاں قاضی جی رہتے ہیں اور یہی نہیں تم پورے شہر کے ایک ایک فرد پر نظر تبھی تو قاضی محمد سلیمان منصور پوری کا نام لیکر فرمایا اس کی کتاب پڑھا کرو۔

## داغ صاف:

امیر حمزہ صاحب آپ کے گھر کے بزرگوں کے کمالات بڑے مسلّم ہیں۔ بلکہ آپکو بھی تحقیق تامہ پر ہی لگائیں گے میں نے صرف آپ کے گھر سے آپکو جوابات دیئے



ہیں لیجئے اب عمر بھر صفائی پیش کرتے رہیے گا کبھی آپکے دامن سے انہیں کے لگائے ہوئے داغ صاف نہ ہوں گے۔ اگرچہ صرف ایکسل (Excel) ہی استعمال کیوں نہ فرمائیں۔ اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو یاد کروا دیتا ہوں لیجئے مطالعہ فرمایئے:

خلیفہ ہدایت اللہ صاحب منیجر رحمۃ للعالمین کا بیان ہے کہ میرے پاس برما، بنگال، بہاولپور سے کئی ایسے خطوط آئے ہیں جن میں یہ مرقوم ہے کہ رحمۃ للعالمین بھیج دیجئے کیونکہ ہمیں خواب میں آنحضرت ﷺ نے ارشاد فرمایا ہے کہ اگر مجھ سے محبت چاہتے ہو تو رحمۃ للعالمین جو قاضی محمد سلیمان نے لکھی ہے پڑھا کرو۔ (کرامات اہلحدیث ۴۲)

## سُچّا موتی!

اب میں وہ بات کہنے لگا ہوں جو شاید بہت سی تلخ ہوگی مگر ہوگی سُچّا موتی اسی حقیقت سے سر مو بھی انحراف ممکن نہیں کہ آپ لوگوں نے اپنے آپکو بہت بڑے توحید پرست سمجھ رکھا ہے اور اسی زعم میں نا معلوم کیسی کیسی الٹی سیدھی ہانکتے رہتے ہیں۔ میں قسما کہہ سکتا ہوں اگر آپ انصاف سے کام لیں تو ضرور آپ پر واضح ہو جائے کہ جن امور کو آپ دوسروں کیلئے نہ صرف ناجائز بلکہ شرک تک قرار دیتے ہوئے ذرا نہیں شرماتے وہ امور اگر آپ کے اپنے گھر میں ہوں تو آپ نے کبھی قلم نہیں اٹھایا نہ فتوی کی زبان استعمال کی ہے بلکہ اپنے گھر کے بزرگوں کیلئے زبان کھلنا تو درکنار بلکہ وہ تو گنگ ہو جاتی ہے۔ آپ بہت سیخ پا ہونگے۔ پیچ و تاب کھائیں گے مجھے بھی کوئی پرواہ نہیں ہوتے رہیں سیخ پا، کھاتے رہیں پیچ و تاب میں نے جو بات کہنی تھی وہ کہہ دی اور میں نے اپنا فرض ادا کر دیا اور اس میں کوئی کوتاہی نہیں کی۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



مجھے تو یوں لگتا ہے آپ لوگوں کی روٹی ہی ہضم نہیں ہوتی جب تک آپ اولیاء کرام کے خلاف کچھ کہہ نہ لیں یا لکھ نہ لیں یاد رکھیں آپکو سودا بڑا مہنگا پڑے گا، اپنی زبان اور اپنے قلم کو لگام دیجئے ورنہ قدرت جب انتقام لینے پر آتی ہے تو پھر کوئی اسے روک نہیں سکتا۔ اللہ کے دوستوں سے محبت کرنی چاہیے ان سے دشمنی ہرگز نہیں کرنی چاہیے۔

## حدیث قدسی:

بخاری شریف میں حدیث قدسی موجود ہے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں رسول اللہ ﷺ تاجدار عرب وعجم حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ آلہ وسلم نے ارشاد فرمایا میرا رب عزوجل فرماتا ہے جو کوئی میرے ولی سے دشمنی کرے میں اسکو جنگ کا چیلنج دیتا ہوں۔ میرا بندہ نوافل کی کثرت سے میرا قرب حاصل کر لیتا ہے یہاں تک کہ میں اسکی آنکھ بن جاتا ہوں اس سے وہ دیکھتا ہے میں اسکے کان بن جاتا ہے، ان سے وہ سنتا ہے میں اسکے ہاتھ بن جاتا ہوں ان سے وہ پکڑتا ہے میں اسکے پاؤں بن جاتا ہوں ان سے وہ چلتا ہے۔ جب وہ مجھ سے مانگتا ہے تو میں ضرور عطا کر دیتا ہوں۔

اس حدیث شریف کو پڑھ کر بھی اولیاء اللہ کے کمالات کا انکار سمجھ سے بالا ہے چلیں میرا کام منوانا تو نہیں ہے صرف سنانا ہے سو وہ میں نے سنا دیا میں نے اپنا فرض الحمدللہ بطریق احسن ادا کیا ہے آگے آپ جانیں اور آپ کا کام میرے ذمے جو تھا وہ میں نے نبھا دیا ہے گو میری بات خاصی تلخ ہوگئی ہوگی مگر ہے تو حق اور حق سچا موتی ہوتا ہے۔



## لکھوکی چلے جاؤ!

مولانا عبدالرحمٰن لکھوی صاحب جو اہلحدیث حضرات کے بڑے بزرگ تھے امیر حمزہ صاحب کے اکابرین میں انکا شمار بلند پایہ اور صاحب کرامت بزرگوں میں ہوتا ہے وہ تو ایسے صاحب کمال تھے کہ ننگ دھڑنگ مست ملنگ تک انکی بزرگی کے نہ صرف قائل تھے بلکہ جلال الدین عرف جلو جیسے بے اولاد صاحب جائیداد لوگوں کو انہی کی طرف بھیجا کرتے تھے کہ جاؤ اگر بیٹا لینا ہے تو لکھوکی چلے جاؤ وہاں سے بیٹا مل جائے گا مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگرد مولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی لکھتے ہیں۔

مولینا عبدالرحمٰن صاحب جب سفر حج کے لئے روانہ ہوئے اور بمبئی پہنچ کر جہاز کا ٹکٹ خرید لیا، اور جہاز چلنے کو تھا کہ آپ نے فرمایا میں جہاز پر نہیں جانا چاہتا چنانچہ ٹکٹ واپس کر دیا گیا، پھر ایک ہفتہ کے بعد دوسرے جہاز نادری کا ٹکٹ خریدا، جب وہ تیار ہوا تو آپ نے پھر یہی فرمایا کہ اس جہاز پر بھی نہیں جانا چاہیے، ہمراہی حیران تھے کہ مولینا کیا کر رہے ہیں جان بوجھ کر روانگی میں تاخیر کرتے ہیں، مگر بالآخر آپ کا کہنا مانا، اور وہ ٹکٹ بھی واپس کیا، پھر تیسرے جہاز پر سوار ہوئے جب جدہ پہنچے تو معلوم ہوا کہ پہلے دونوں جہازوں میں بیماریاں پھیل گئی تھی اور حکومت نے انہیں چالیس چالیس دن کے لئے کامران روک لیا ہے یعنی اگر وہ لوگ ان جہازوں میں سوار ہوتے تو ۴۰ دن بعد جدہ پہنچتے۔ کسی نے مولینا سے پوچھا کہ آپ کو کیونکر پتہ چلا تھا تو آپ نے فرمایا کہ الہام ہوا تھا:

---

نوٹ: آپ کے بہت سے الہامات اور کرامات اور بھی ہیں مگر یہاں صرف انہیں پر اکتفا کیا جاتا ہے ۔ خادم عفی عنہ (کرامات اہلحدیث ۱۲)

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی صاحب کی مندرجہ بالا عبارت سے چند باتیں تو بڑی ہی صراحت کے ساتھ اظہر ہوتی ہیں، میں انکو آسان الفاظ میں رقم کرنے کی کوشش کرتا ہوں۔

۱۔ بمبئی سے حج کیلئے جہاز چلنے ہی والا تھا لیکن ٹکٹ خریدنے کے باوجود اس جہاز پر جانے سے مولانا عبدالرحمٰن لکھوی صاحب نے انکار کردیا۔

۲۔ پہلا ٹکٹ واپس کردیا، دوسرا جہاز ایک ہفتہ بعد تیار ہوا جس کا نام نادری تھا، اس کے لئے ٹکٹ خریدا، لیکن مولٰنا صاحب نے اس پر بھی روانہ ہونے سے انکار کردیا ساتھی حیران ہوئے مگر حسب حکم ٹکٹ واپس کردیا۔

۳۔ تیسرے جہاز پر سوار ہوئے۔

۴۔ تیسرا جہاز جب جدہ پہنچا تو معلوم ہوا پہلے دونوں جہازوں میں بیماری پھیل گئی تھی اور حکومت نے انہیں چالیس چالیس روز کے لئے کامران روک لیا تھا۔

۵۔ اگر پہلے جہازوں پر مولانا سوار ہو جاتے تو چالیس دن بعد جدہ پہنچتے۔

۶۔ کسی نے پوچھا تو مولانا نے بتایا یہ سب کچھ مجھے بذریعہ الہام معلوم ہوگیا تھا۔

## دن کی روشنی میں ستاروں کا حساب!

کیسا کمال ہے دن کی روشنی میں ستاروں کا حساب، انکی نقل و حرکت پر نظر، آنے والے حالات و واقعات پر پوری پوری نظر، حج کو جانے کا پختہ ارادہ، جہاز تیار ٹکٹ خرید لیا اور عین موقعہ پر روانہ ہونے سے انکار فرما دیا۔ مولانا عبدالرحمٰن لکھوی صاحب کے اس عمل مبارک پر ساتھیوں کا تحیر مگر انکار حکم کی کوئی جرأت نہیں ان کے حکم کی



مخالفت بھلا کیونکر کی جاسکتی ہے۔ ان کو تو پل پل کی خبر ہے۔

میں کیا عرض کروں آپ خود ہی غور فرمائیں یہ طرز عمل کتنا لائق التفات ہے۔ بزرگوں کی باتوں کو رد نہیں کیا کرتے نہ ہی ان کے سامنے کسی بات کا انکار کیا کرتے ہیں بلکہ جیسے وہ حکم صادر فرمائیں ویسے ہی کرتے ہیں۔ مانا کہ یہی ادب ہے مگر اپنے گھر کے بزرگوں کا اگر ایسا ادب ہم اپنے مسلمہ اولیاء کرام حضرت غوث اعظم شیخ سید عبدالقادر جیلانی رضی اللہ عنہ، حضرت علی بن عثمان ہجویری المعروف بہ داتا گنج بخش رحمتہ اللہ علیہ اور دیگر بڑے بزرگوں کیلئے روا رکھیں تو فوراً مشرکانہ عقائد و نظریات کا لیبل لگ جاتا ہے پتہ نہیں کیا کیا ہمارے کھاتے میں ڈال دیا جاتا ہے۔

امیر حمزہ صاحب اٹھائیے قلم پکڑیے قرطاس اور کیجئے حق دیانت ادا۔ تاکہ آپکی صداقت ظاہر باہر ہو۔ جڑیئے وہی فتوئی اپنے مولانا عبدالرحمٰن لکھوی پر جو فتوئی ہمارے لئے پسند فرمایا تھا لگائیے حکم کہیے کہ یہ بھی شرک فی العلم کے قبیل سے ہی ہے۔

## نادری تیار مولانا لکھوی کا پھر جانے سے انکار!

مولانا عبدالرحمٰن لکھوی صاحب حج کا ارادہ فرما کر گھر سے نکلے بمبئی جا پہنچے وہاں جہاز جدہ جانے کے لئے تیار تھا ساتھیوں نے ٹکٹ خرید لیا مگر مولانا نے اس جہاز پر سوار ہونے سے انکار کردیا اور بعد والا ٹکٹ بھی واپس کردیا۔ ایک ہفتہ بمبئی کی بندرگاہ پر مقیم رہے تو پھر اگلا جہاز تیار ہوا جسکا نام "نادری" تھا اس کیلئے بھی ٹکٹ خرید لیا گیا مگر عین موقعہ پر مولانا صاحب نے پھر جانے سے انکار کردیا اگرچہ ساتھی متحیر بھی ہوئے مگر کسی کو سرتابی حکم کی تاب نہ ہوئی ہوتی بھی کیونکر یہ اپنے بزرگ ہیں انکو آنے والے حالات کا علم ہے اگر نہیں علم تو صرف انبیاء کرام کو صحابہ عظام کو اور جلیل القدر اولیاء اللہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



علیہم السلام والی اللہ عنہم کو تگران سے اپنے گھر کے بزرگوں کو کامل علم ہے لیجئے اسی ضابطے کو معیار بنا کر پرکھیے ذرا۔

## منظرِ عام پر:

ایک طرف اللہ تعالیٰ کے عظیم الشان انبیاء کرام رُسُل عظام، صحابہ کرام، ائمہ دین، بڑے بڑے جید مشائخ، بے مثل علماء حق اور مسلمہ اولیاء اللہ جن میں حضرت شاہ بہاؤالدین زکریا ملتانی، حضرت شاہ رکن عالم ملتانی، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی، حضرت بابا فرید الدین گنج شکر، حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء دہلوی، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی شیخ احمد سرہندی اور دیگر اولیاء عظام رحمتہ اللہ السلام رضی اللہ عنہم ان کو تو آئندہ کا کچھ پتہ نہیں اگر کوئی یہ عقیدہ رکھے کہ انہیں آئندہ آنے والے حالات کا علم ہے تو یہ سب شرک مگر مولانا لکھوی صاحب کو پل پل کی خبر ہے یہ شرک نہیں۔

آپ بیشک تڑپیے، بلکیے، سسکیے، دُھائی دیجئے مگر سنوائی نہ ہوگی اس لئے کہ حوالہ آپ کے گھر کا ہے آپ نے تو عامۃ المسلمین کو راہِ حق سے دائیں بائیں کرنے کی بڑی کوشش کی ہے بڑا زور صرف کیا ہے مگر ہم نے جو آپ کے گھر کی تلاشی لیکر آپ کے اندرونی حالات دلائل قاطعہ کے ساتھ منظرِ عام پر لا دکھائے ہیں اب لوگ قطعاً آپ کی طرف مائل نہ ہونگے بلکہ وہ ان شاء اللہ اولیاء اللہ کی محبت میں غرقاب ہوں گے۔

## تیسرا جہاز!

مولانا لکھوی صاحب نے ایک جہاز مس (Miss) کر دیا اس کے بعد دوسرا بھی جانے دیا تب کہیں جا کر تیسرے جہاز پر سوار ہوئے۔ اب وہ جہاز بمبئی سے سوئے



جدہ چلا، اپنا سفر طے کر کے جدہ بندرگاہ پر جا پہنچا، جب یہ (تیسرا) جہاز اپنی منزل مقصود پر پہنچ گیا تو پھر جو مولانا صاحب کی بصیرت، روحانی قوت، آئندہ ہونے والے واقعات و حالات سے پردہ اٹھا تو ان کے وہ وہ کمالات باطنی سامنے آئے کہ دیکھنے والوں کی آنکھوں کو خیرہ کر کے رکھ دیا۔ ایسا روحانی تصرف ایسی قوت مشاہدہ کہ اللہ اللہ آنے والے پل پل کی آگاہی کھلی کھلی آیات ہو ہو کے رہ گئیں۔

اگر اس طرح کا کوئی کمال ہماری کتب میں منقول ہو جائے تو امیر حمزہ صاحب شور مچا مچا کر آسمان سر پر اٹھا لیتے ہیں حواس باختہ ہو جاتے ہیں، آگے پیچھے دائیں بائیں کی کچھ خبر نہیں رہتی یہ سب تو رہا درکنار انہیں تو اپنی بھی خبر نہیں رہتی وہ زمین پر ہیں یا آسمان پر۔ اگر یقین نہیں آتا تو "مذہبی و سیاسی باوے" "آسمانی جنت اور درباری جہنم" "شاہراہِ بہشت" کو ذرا ایک نظر پھر دیکھ لیں میرے قول کی صداقت ظاہر ہو جائے گی۔

## نظرِ دوربین!

مولانا لکھوی صاحب نے ایک جہاز چھوڑا، دوسرا ترک کیا اور تیسرے میں سوار ہوئے۔ جب آخری جہاز اپنی منزلِ مقصود پر بخیریت پہنچ گیا تو وہاں جا کر معلوم ہوا پہلے چلنے والے دونوں جہاز ابھی جدہ نہیں پہنچے بلکہ وہ تو راہ میں ہی کہیں روک لیے گئے ہیں لیجئے ایک بار پھر مولانا کی کرامت کا ذکر تازہ فرمائیے تاکہ تفہیم میں آسانی ہو۔

> پھر تیسرے جہاز پر سوار ہوئے جب جدہ پہنچے تو معلوم ہوا کہ پہلے دونوں جہازوں میں بیماری پھیل گئی تھی اور حکومت نے انہیں چالیس چالیس دن کے لئے کامران روک لیا ہے (کرامات اہلحدیث ص ۱۴)

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## آئندہ ہونے والے واقعات:

کیوں جناب آئندہ ہونے والے واقعات کی کیسی پکی اور یقینی خبر ہے ایسی خبر اگر کوئی اور اللہ کا بندہ رکھے اور بتادے تو شرک کا وہ طوفان کھڑا ہوتا ہے کہ تھمنے کا نام نہیں لیتا، امیر حمزہ صاحب تو اپنی خاص فنکاری سے اسے ایسا بگولا بناتے ہیں کہ وہ چکر کاٹنے لگتا ہے اور اس بگولے کی زد میں بڑے بڑے جید علماء اور اولیاء تک آجاتے ہیں: اور کوشش انکی یہ ہوتی ہے کہ اس زوردار بگولے کی لپیٹ میں سوائے انکے اور انکے پیشواؤں کے باقی سب کے سب آجائیں اور یہ بگولا ان کو اڑا کر کسی ایسی دور دراز جگہ لے جائے جہاں سے ان کا واپس آنا ممکن ہی نہ رہے۔ اور اگر ایسی کوئی کرامت ان کے اپنے گھر کے بزرگوں سے صادر ہو جائے تو چپ چاپ نہ صرف قبول کر لیتے ہیں بلکہ اس کو عین حق مانتے ہیں اس دورخی کو کیا کہا جائے۔

## اس پر تاسف ہے:

کہنا کیا ہے، جس قدر بھی اس پر ماتم کیا جائے کم ہے، جس قدر بھی اس کا افسوس کیا جائے کم ہے، جس قدر اس پر تاسف کیا جائے کم ہے اگر ہم کہیں کہ آئندہ ہونے والے واقعات کا ہمارے بزرگوں کو باذن اللہ پتہ چل جاتا ہے تو اس قید کے باوجود بھی انکار کر دیا جاتا ہے بلکہ اس پر مناظرہ تک کرنے سے گریز نہیں کیا جاتا اور جب اپنے گھر کے بزرگوں کی باری آتی ہے تو ان کو پیشگی پتہ چل جاتا ہے آئندہ کیا ہوگا اس کو بلا چون وچرا تسلیم کر لیا جاتا۔

یہ کیا ستم ظریفی ہے ایک ہی کمال اگر ہمارے بزرگوں میں ہو تو صاف انکار اور اگر



یہی کمال ان کے اپنے بزرگوں میں ہو تو لائق اقبال۔ آخر کیوں؟ آپ کے گھر کے بزرگوں میں ایسا کونسا وصف ہے جو ان کو تو صاحب کمال رکھے اور ہمارے بزرگوں میں ایسا کوئی نقص ہے جو انکو تمام تر کمالات سے محروم کر دے اگر نہیں یاد رہا تو میں ایک بار پھر یاد کروا دیتا ہوں لیجئے مطالعہ فرمایئے۔

تیسرے جہاز پر سوار ہوئے جب جدہ پہنچے تو معلوم ہوا کہ پہلے
دونوں جہازوں میں بیماری پھیل گئی تھی (کرامات اہلحدیث ۱۲)

## دو جہازوں کو پیش آنے والے حادثہ کی خبر!

مولانا لکھوی صاحب نے حج کیلئے روانگی کے موقعہ پر بمبئی کی بندرگاہ پر ایک جہاز کی ٹکٹ خریدی پھر واپس کر دی کہ میں اس پر نہیں جاؤں گا، دوسرے جہاز کے لئے ٹکٹ خریدی وہ بھی واپس کروا دی کہ میں اس پر بھی روانہ نہیں ہونگا۔ اس کے بعد تیسرے جہاز پر روانہ ہوئے۔ ایک بار ٹکٹ خرید کر واپس کرنا، پھر دوسری بار ٹکٹ خرید کروا پس کر دینا اور روانہ نہ ہونا یہ حکمت سے خالی نہیں تھا۔ مولانا آنے والے حالات سے چونکہ پوری طرح باخبر تھے اس لئے یقین کے ساتھ جہازوں کی ٹکٹ خرید خرید کر واپس کرتے رہے اور اپنی روانگی میں تاخیر کرتے رہے۔

کیوں نہ ہو آخر اہلحدیث ہی کے امام و پیشوا ہیں۔ بھلا ان کی ادائیں غلط کیسے ہو سکتی ہے غلطی کریں تو بڑے بڑے ائمہ دین کریں اولیاء اللہ مثل بہاؤ الدین ملتانی اور شاہ رکن ملتانی رحمتہ اللہ علیہ جنکی ولایت میں کوئی شک نہیں مگر یہ تو غلطی سے پاک ہیں انہیں تو آئندہ ہونے والے واقعات کی پوری پوری خبر ہے۔ خبر نہیں رکھتے تو بہاؤ الدین ذکریا ملتانی نہیں رکھتے۔ خبر نہیں رکھتے تو شاہ رکن عالم ملتانی نہیں رکھتے اسی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



لیئے تو انکے نام پر چلائی گئی ٹرین بقول امیر حمزہ صاحب خسارے میں جا رہی ہے مگر کیا مجال جو مولانا لکھوی صاحب کے روپے بھی ضائع ہو جائیں۔

## موازنہ میں کیا کروں:

موازنہ میں کیا کرواؤں بلکہ آپ خود کر لیں کہاں حضرت شاہ بہاؤالدین زکریا ملتانی رحمتہ اللہ علیہ اور کہاں مولانا عبدالرحمٰن لکھوی صاحب کہاں حضرت شاہ رکن عالم ملتانی اور کہاں مولانا لکھوی صاحب بات بڑی مزے کی ہے آنے والے کل کی رسول ﷺ کو بھی خبر نہیں ہوتی بقول وہابیہ مگر ان کے رہنما کو ضرور خبر ہوتی ہے ذرا غور فرمائیں امیر حمزہ صاحب آپ نے کیا کچھ لکھ دیا شاید ہوش تو آپکو آ ہی جائے گی مگر یہ پڑھنے کے بعد،

"الجھا ہے پاؤں یار کا زلف دراز میں"

## کسی کو کانوں کان خبر نہ ہو!

اگر مولانا لکھوی پہلے دونوں جہازوں میں سے کسی ایک پر سوار ہو جاتے تو بیماری کا شکار ہو جاتے۔ انہوں نے صرف اپنی ذات کو بیماری سے بچالیا بلکہ اپنے ساتھیوں کو بھی مکمل حفاظت عطا فرمائی واہ واہ لیڈر ہو تو ایسا ہو جو آئندہ حالات پر پوری پوری نظر رکھتا ہو اور آئندہ ہونے والے حادثہ کی قبل از وقت پیش بندی کر دے۔

اپنی اور اپنے چاہنے والوں کی ایسی رہنمائی کرے انکو اس طرح حفاظت کے قلعے میں محصور کر دے کہ کسی کو کانوں کان خبر نہ ہو۔ غور فرمائیں قارئین: اپنے گھر کے بزرگوں کیلئے ہمارے بزرگوں کے لئے جن کا کھلا کھلا انکار کیا جاتا ہے۔ وہ وہ کمالات ثابت کیے جاتے اور وہ وہ خرق عادات تسلیم کی جاتی ہیں۔



## مولانا شاہ احمد نورانی رحمتہ اللہ علیہ کی شفقت!

جن کا دوسروں کے حق میں نہ صرف انکار کیا جاتا ہے بلکہ اس کو کھلا شرک تک قرار دینے سے دراگریز نہیں کیا جاتا رہا معاملہ کرامات کا تو امیر حمزہ صاحب جب جہاز پر سوار ہوتے ہیں تو اپنے ایک ساتھی سے انکی بلندئی پرواز کا تک تذکرہ کرتے ہوئے ان لوگوں کا مذاق اڑاتے ہیں۔ جو اولیاء کرام کی کرامات کے قائل ہوتے ہیں۔

میں نہایت ہی متانت سے عرض کروں گا ہم نے آپ کے گھر کے بزرگوں کی ایک نہیں کئی کرامات کا ذکر کیا ہے اب اگر دیانت زندہ ہے شرافت باقی، صداقت کا چراغ گل نہیں ہوا تو کھولیے زبان، اٹھایئے قلم، پکڑیئے کاغذ اور وہی انداز وہی الفاظ وہی گفتار ہو اور اپنے بزرگوں پر طنز و مزاح کی کھری کھری کسیئے تاکہ حق بین ہو مگر کیا مجال ہے جواب ایک جملہ بھی منہ سے نکلے اور سپرد قرطاس ہو۔

## مولانا عبدالرشید قادری رحمتہ للہ علیہ کی تربیت:

اگر میں چاہتا تو یہاں وہ وہ پھبتیاں کستا کہ آپ دیکھتے رہ جاتے، وہ وہ طنز و مزاح کرتا کہ آپ کی ہوائیاں اڑ جاتی مگر میں نے جس ماحول میں تربیت پائی یعنی اولاً اپنے والدین کی آغوش میں ثانیاً گورنمنٹ کالج لاہور (G.C Lahore) میں اور ثالثاً حضرت قائد ملت مولانا شاہ احمد نورانی رحمتہ اللہ علیہ، شیخ کریم مرشدی حضرت مولانا ابو محمد عبدالرشید القادری رحمتہ اللہ علیہ کی شفقت و تربیت میں وہاں مجھے اس طرح کی کوئی کارروائی کرنا سکھایا ہی نہیں گیا بلکہ ہمیشہ حق گوئی ہی کی تربیت کی گئی اس کی نصیحت کی گئی اور اسی پر قائم رہنے کی تلقین فرمائی گئی میں اسی پر قائم ہوں میرا اللہ مجھے مرتے دم تک اسی پر قائم و دائم رکھے۔ (آمین)

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



اللہ اللہ! اگر کسی جلیل القدر ولی کامل کو آنے والے واقعہ کی اطلاع ہو جائے اور وہ اس کا اظہار فرما دیں تو اولاً اس کا سرے سے ہی انکار کر دیا جاتا ہے اور اس کے خلاف طرح طرح کے حیلے بہانے تراشے جاتے ہیں یہ کیسے ممکن ہے وہ کیسے ممکن یہ کیسے ہو گیا وہ کیسے ہو گیا، یہ کیسے مان لیا جائے وہ کیسے مان لیا جائے، اس امر کی تصدیق کیسے ہو، اس معاملہ کی چھان پھٹک کیونکر ہو۔ اگر یہ سب کچھ اپنے گھر کے بزرگوں کے حوالے سے بیان ہو تو پھر کوئی اعتراض نہیں نہ کوئی مخالفت نہ حجت، نہ بیان نہ کلام بلکہ خاموشی کی زبان سے حمایت اور اس کی تصدیق کا اعلان و اظہار، میں چاہوں گا ایک بار پھر مولانا لکھوی کی کرامت تازہ کر دوں۔

## لیجئے زیر نظر لایئے یا کسی سے سن لیجئے!

"جب جدہ پہنچے تو معلوم ہوا پہلے دونوں جہازوں میں بیماری پھیل گئی تھی اور حکومت نے انہیں چالیس چالیس دن کیلئے کامران روک لیا تھا یعنی اگر وہ لوگ ان جہازوں میں سوار ہوتے تو ۲۰ دن بعد جدہ پہنچتے کسی نے مولانا سے پوچھا کہ آپ کو کیونکر پتہ چلا تھا تو آپ نے فرمایا "الہام ہوا تھا"" (کرامات اہلحدیث ۲۱)

## مائل الی الحق!

قارئین غور فرمائیں، اگر ہم انبیاء کرام اور اولیاء عظام علیہم السلام رضی اللہ عنھم کے بارے میں ایسا عقیدہ رکھیں تو شرک شرک کی وہ صلواتیں سنائی جاتی ہیں کہ کان سن سن کر تھکے جاتے ہیں شرک کی مشین گن کھول دی جاتی ہے اور اس زور سے فائرنگ کی جاتی جس طرح حق و باطل کا محاذ گرم ہوا جاتا ہے ایسے بڑھ چڑھ کر حملے کیے جاتے ہیں جیسے کافروں اور ایمانداروں کے مابین جنگ چھڑ گئی ہو۔ نئے نئے مطالعہ کرنے والے اولاً تو حیران ہوتے ہیں اور جب کوئی جواب فوراً چھپا ہوا ہاتھ نہیں لگتا اور نظر سے نہیں



گزرتا تو وہ بیچارے انہی کی سی ہانکنے لگتے ہیں مگر یہ سب کچھ دیرپا نہیں ہوتا جلد ہی ختم ہو جاتا ہے جیسے جواب آن غزل سامنے آتا ہے دل و دماغ فوراً ہی حق کی طرف لوٹ جاتے ہیں جیسے یہ تحریر پڑھنے والے لوٹ رہے ہیں جو کوئی بھی یہ پڑھے گا۔

انشاء اللہ وہ مائل الی الحق ہو گا۔ ہر قلب حق شناس اس کو حق جان کر اسی کی تائید پر کمر بستہ ہو گا ہر زبان حق گو یہ نعرہ مستانہ بلند کرے گی زندہ باد اے اولیاء کاملین زندہ باد، زندہ باد اے غلامان محمد ﷺ زندہ باد، زندہ باد اے مفتیان حق زندہ باد، زندہ باد اے غلامان صحابہ کرام زندہ باد، زندہ باد اے محبان اہل بیت، زندہ باد زندہ باد اے گدایان در اولیاء زندہ باد، زندہ باد اے مسلمانان عالم زندہ باد۔

آیئے اب آپ کو آپ ہی کے بزرگ، جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کی بارگاہ میں لے چلوں تاکہ آپ کو ان کے نظریات پڑھنے کا موقعہ دیا جائے۔ مطالعہ کیجئے۔

از تو میخواہم رسول اللہ مراد خویش را
چشم امیدم نمے گردد بروئے غیر باز

یارسول اللہ میں اپنی مراد آپ کی بارگاہ اقدس سے پوری کروانے کا خواہش مند ہوں مجھے پوری پوری امید ہے۔ کہ کسی اور کے در پر اپنی حاجت لیکر جانے کی ضرورت پیش نہ آئے گی۔

## نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کی التجاء!

امیر حمزہ صاحب میں صرف اتنی گزارش کرنا چاہتا ہوں، اگر ہم رسول اکرم ﷺ تاجدار عرب و عجم کی بارگاہ اقدس میں اپنی کوئی امید لیکر حاضر ہوں اور عرض گزار ہوں۔ یارسول اللہ ہم پر رحم فرمایئے نظر شفقت کیجئے تو آپ کا قلم فوراً بلا سوچے سمجھے دوڑ پڑتا

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



ہے اور بغیر تحری کئے ہم غریبوں پر فتویٰ شرک داغ دیتا ہے اگر آپ اپنے نظریے پر مکمل یقین رکھتے ہیں اور اپنے عقیدے کو برحق سمجھتے ہیں تو اب تقاضا ءِ دیانت یہی ہے کہ آپ اٹھایئے قلم لیجئے قرطاس اور لکھئے فتویٰ شرک اور اس کا انتساب کیجئے جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کی طرف تا کہ احقاقِ حق ہو اور ابطالِ باطل ہو۔

یہ تو کوئی شرافت نہیں اپنے گھر کے بزرگ جو کچھ بھی کریں اور جو کچھ کہیں ان پر کوئی گرفت نہیں ان پر کوئی الزام نہیں اور اگر ہم اپنے آقا مولیٰ علیہ السلام کی بارگاہِ بے کس پناہ میں کوئی التجاء کریں تو مشرک قرار پائیں اور اس پر دلیل یہ قائم کی جائے کہ ہم نے اللہ تعالیٰ کو چھوڑ دیا ہے اب ذرا ایک مرتبہ پھر غور سے پڑھ لیں آپ کے بزرگ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کس ذمرے میں آتے ہیں وہ یوں کہتے ہیں۔

چشم امیدم نمے گردد بروئے غیر باز

یارسول اللہ! مجھے پوری پوری امید ہے کہ کسی اور کے در پر اپنی حاجت لیکر جانے کی ضرورت پیش نہ آئے گی۔

## یہی ہمارا مقصود تھا:

اگر ہم اپنے پیارے نبی ﷺ کی بارگاہ میں کچھ عرض کریں اور انکو خطاب کرلیں تو آپ کے ہاں شرک کا فتویٰ بالکل تیار ملتا ہے اور اگر آپ کے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی صدائیں کریں تو؟

دیانت نام کی کوئی چیز اگر آپ کے ہاں بھی ہے شرافت اگر اس جہان فانی سے رخصت نہیں ہوئی صداقت کا اگر ابھی جنازہ نہیں نکلا تو جو حکم ہم گدایانِ در اولیاء پر لگایا ہے وہی حکم اپنے رہبر و رہنما اپنے امام و پیشوا نواب صدیق حسن خاں بھوپالی پر



لگائیے۔ کہہ دیجئے کہ نواب صاحب نے کھلے شرک کا ارتکاب کیا ہے۔ اگر آپ نے ان پر یہ حکم نہ لگایا تو ہم شکوہ کریں گے آپ دورخی پر عمل کرتے ہیں اور ہمیں آپکی یہ دورخی (Dual Policy) قطعاً پسند نہیں اور اب ان شاء اللہ قارئین کرام خود فیصلہ کردیں گے حق پر وہی ہیں جو یارسول اللہ ﷺ کہتے ہیں الحمد للہ حق مبین ہوا یہی ہمارا مقصد تھا۔ آپ کے لئے تو صرف اللہ ہی کافی ہے۔ ہمارے لئے اللہ اور اس کا رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم۔

میں اس عارفانہ تجاہل کے صدقے

## میرے دل کی صدا:

آپ کے بزرگوں کو اگر ضرورت پڑ جائے تو وہ فوراً اپنی حاجت لیکر سید عالم ﷺ کی بارگاہ میں حاضر ہو جاتے ہیں اور کمال یقین کے ساتھ گویا ہوتے ہیں اور کہتے ہیں اب ہمیں اپنی حاجت لیکر کسی اور کے در پر جانے کی ضرورت نہیں رہی۔ یہی عقیدہ اگر ہم رکھیں اسی نظریے پر عمل اگر ہم کریں تو آپ کے ہاں سے صلواتیں سنائی دینے لگتی ہیں اور وہ اتنی زوردار ہوتی ہیں کہ رکنے کا نام نہیں لیتیں واہ واہ کیا کہنا آپ کا آپ کی تحریریں ہیں بڑی دلچسپ میں نے بھی پہلے تو ارادہ کیا تھا آپ کا جواب آپ ہی کے انداز میں دے دوں مگر میری طبیعت نے مجھے اس جانب جانے نہ دیا اس لئے کہ میں اولڈ راوین ہوں۔ مجھے آپ والا انداز زیب نہیں دیتا اس لئے میں نے انتہائی شائستگی کا مظاہرہ کیا ہے اور واللہ یہ میرے دل کی صدا تھی اس پر عمل کر دکھایا ہے۔

## ہمیں انتظار رہے گا!

امیر حمزہ صاحب، اب بھی قبوری قبوری کی صدا بلند ہونی چاہیے اب بھی بدعتی ہونے کا نعرہ لگنا چاہیے اب بھی گمراہی کا لیبل (LABEL) لگ جانا چاہیے اب

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



بھی بلا خوف وخطر قبوری عقیدہ قبوری عقیدہ کا شور مچ ہی جانا چاہیے اب بھی نام لے لے کر کہنا چاہیے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی قبوری ہو گئے تھے۔ مشرکانہ صدائیں لگانے لگ گئے تھے اس لئے ان کو بھی اسی زُمرے میں شمار فرمایئے جس گروہ میں آپ نے ہم گدایانِ درِ انبیاء واولیاء علیہم السلام ورضی اللہ عنھم کو شمار کیا ہے ہمیں انتظار رہے گا آپ کے دیانتدارانہ فتوٰی کا۔

میں اپنے تیس سالہ تجربہ کی بنا پر قبل از وقت ہی کہہ دیتا ہوں قیامت آجائے گی مگر آپ سے اس کا جواب نہ بن پائے گا۔ پس چارہ آخر کار یہی ہوگا کہ آپ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی پر مشرک ہونے کا فتوٰی صادر فرمائیں۔ اور وہ آپ سے ہو نہ سکے گا۔

## بدعت کا بھوت:

آپ کو بڑی بے قراری تھی، آپ کو امت کا غم کھائے جا رہا تھا، آپ رات دن اس ملت کے درد میں پگھلے جا رہے ہیں آپ پر شرک وبدعت کا ایک بھوت سوار تھا محسوس یوں ہوتا ہے جیسے نیند کے عالم میں بھی آپکو یہی غم ستائے جا رہا تھا کہ کسی بھی قبر والے سے نداء کیوں کی جائے آپ سوتے جاگتے ایک ہی نغمہ الاپ رہے تھے کہ قبر والوں سے کوئی التجاء نہیں کرنی چاہیے اب جو ہم نے آپ کے بزرگ کو یہی کارنامہ سرانجام دیتے دکھایا ہے تو کیوں سر تھام کے رہ گئے ہیں ہمت فرمایئے اور حق سنئے، اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو میں پھر تازہ کرنے کو تیار ہوں لیجئے مطالعہ فرمایئے۔

از تو میخواہم رسول اللہ مراد خویش را
چشم امیدم نمے گردد بروئے غیر باز

یارسول اللہ میں چاہتا ہوں کہ میری مراد آپ ہی پوری فرمائیں مجھے آپ [illegible] امید ہے



کہ اپنی حاجت لیکر کسی اور کے در پر نہیں جانا پڑے گا۔

## مصدقہ اطلاع:

اگر مؤلف ''مذہبی وسیاسی باوے'' ''آسمانی جنت اور درباری جہنم'' اور ''شاہراہ بہشت'' اپنے گھر کا ریکارڈ دیکھ لیتے تو ہرگز وہ انداز اختیار نہ کرتے جو مندرجہ بالا کتب میں کیا گیا ہے۔ میں کبھی بھی محنت کر کے ان کے گھر کا ریکارڈ ان کی خدمت اقدس میں پیش نہ کرتا اگر انہوں نے مسلمہ بزرگوں پر ہاتھ ڈالنے کی کوشش نہ کی ہوتی۔

مجھ پر لازم ہو گیا ہے میں ان کو ان کے گھر کی مصدقہ اطلاع دوں اور یہ واضح کردوں کہ جس جرم کی بنا پر آپ نے ہمیں مغلظات دی ہیں، ہم پر سب وشتم کیا ہے بعینہ وہ جرم آپ کے اپنے گھر میں بھی ہوتا رہا ہے لہٰذا اب آپ پر بھی لازم ہے آپ ان لوگوں کو وہی حکم سنائیں جو ہمیں سنایا ہے لیجئے ہمت کا مظاہرہ فرمایئے اور فتوٰی شرک اپنے گھر کے بزرگ پر صادر فرمایئے اگر آپ نے اب بھی اپنے قلم کو ویسی ہی حرکت دی جیسے پہلے دی تھی تو پھر کچھ کچھ حق صداقت ادا ہو ہی جائے گا اور اگر اب آپ چپ رہے تو ہم بیانگ دہل کہیں گے آپ ظاہر باطن میں ایک نہیں ہیں اور خود سوچئے گا جس کا ظاہر باطن ایک نہ ہو وہ کون ہوتا ہے اسے کیا کہتے ہیں۔ آپ کی خدمت میں آپ ہی کے بزرگ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کا ایک اور تحفہ پیش کرنے کی سعادت حاصل کر رہا ہوں ذرا غور سے مطالعہ فرمایئے تا کہ دل روشن ہو۔

یا رسول اللہ زائر را برائے کس چہ کار
بر سر اغیار زد سنگ ترازوئے شما

(نفح الطیب ۱۱۷ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

یارسول اللہ ﷺ [illegible]ت کرنے والے کو کسی سے کیا غرض وعنایت آپ کے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



دشمنوں کے سر پر آپ ہی کے عدل کا پتھر برسا دینا چاہیے۔

## اظہار مافی الضمیر!

قارئین کرام! اندازہ فرمایئے، نواب صدیق حسن خاں بھوپالی صاحب اپنے جذبات و احساسات کا کیسے دھڑلے سے اظہار کر رہے ہیں کتنا بے باکانہ انداز ہے واہ بھئی واہ کیسی ہمت ہے اظہار مافی الضمیر کی۔ ایسا حوصلہ بھی رب تعالیٰ کسی کسی کو ہی عطا فرماتا ہے۔ یوں محسوس ہوتا ہے نواب صاحب نے ساری دنیا کو یکسر ترک کر دیا ہے انہیں کچھ یاد نہیں اگر ان کو کوئی یاد ہے تو صرف اور صرف اللہ تعالیٰ کے محبوب ﷺ ان کی یاد میں تو وہ ایسا کھوئے ہیں کہ کسی کی کوئی پرواہ ہی نہیں رہی کوئی اپنا ہو یا پرایا کوئی قریب ہو یا بعید جہاں کہیں بھی ہو کوئی انکے اس عمل کو اچھا سمجھے یا نہ سمجھے وہ تو بس ایک ہی دھن میں ہیں اور وہ ہے۔

یارسول اللہ از زائرو ابرائے کس چہ کار یارسول اللہ صلی اللہ علیک وسلم زیارت کرنے والے کو کسی سے کیا غرض وغایت ہے۔

اگر ایسا انداز بیان ہمارا ہو تو ہمیں شرک کی زد میں لایا جاتا ہے اور اعلان کر کر کے کہا جاتا ہے غیر اللہ کو پکارنے والے مشرک ہیں اور یارسول اللہ ﷺ کہنے والوں پر وہ نفرت کے تیر چلائے جاتے ہیں کہ ان سے بچنا ناممکن نہ ہو تو مشکل ضرور ہوتا ہے۔

## مظلوم کی آہ!

امیر حمزہ صاحب آپ نے پہچان لیا ہوگا۔ یہ آپ ہی کے بزرگ ہیں، یہ آپ ہی کے امام ہیں یہ آپ ہی کے لیڈر ہیں، ویسے بھی ایک ریاست کے مالک ہیں ان سے غلطی کا امکان ہی نہیں۔ خود یارسول اللہ ﷺ کہہ کہہ کر دہائیاں دیتے ہیں اور ہم یارسول اللہ ﷺ کہیں تو شرک کا فتویٰ! آخر وہ کونسی چیز ہے جو آپ کو مشرک ہونے سے بچا لیتی



ہے اور ہمیں شرک کی وادی میں دھکیل دیتی ہے خوفِ خدا کچھ تو ہوتا، اس قدر ستم ظریفی بھی اچھی نہیں مظلوم کی آہ عرش تک جاتی ہے۔

جس جرم کو ہمارے سر تھوپ کر ہم پر چڑھائی کی تھی اور بے سوچے سمجھے قلم کو جنبش دے رہی تھی اب پتا چلے گا اس کی حقیقت کیا تھی۔ اس الزام کی حقیقت کچھ بھی نہیں سوائے ہٹ دھرمی کے اور کچھ نظر نہیں آتا۔ آپ خود سوچیں کیا دیانت اسی کا نام ہے خود جو مرضی کرتے چلے جاؤ اور دوسروں پر دھڑا دھڑ الزام تراشی کا بازار گرم کیے جاؤ جھوٹ بولنے کی بھی کوئی انتہا ہوتی ہے آپ نے تو وہ تمام حدیں عبور کر دی ہیں۔

خوفِ خدا اور شرم نبی ﷺ　　یہ بھی نہیں وہ بھی نہیں

## ترازو کا بٹہ!

قارئین محترم! غور فرمائیں ہمیں یارسول اللہ کہنے پر مشرک تک کہنے سے گریز نہیں کیا جاتا۔ اور اپنے گھر کے بزرگوں کا یہ حال ہے کہ یارسول اللہ ﷺ کے نعرے لگاتے ہوئے تمنائے زیارت بھی کرتے ہیں اور پھر دوسروں کی کچھ پرواہ نہیں کرتے اور اگر کوئی ان پر اعتراض کی کوشش کرے تو شریعت مطہر کا زبردست بٹہ اس کو دے مارتے ہیں تاکہ کم از کم سر تو پھٹ جائے مخالفت کرنے والے کا۔ ترازو کا بٹہ دے مارتے ہیں مطلب یہ ہے عدل کا پتھر ایسا زور سے رسید کرتے ہیں کہ مخالفت کرنے والے کا سر چکرا کے رہ جائے اس کے حواس تک معطل کرنے کی پوری کوشش کرتے ہیں مزہ ہوتا ان کی کوئی مخالفت کرے تو سہی دیکھیں کیسے کیسے جواب نکلتے ہیں سانس نہیں آنے دیتے جواب پر جواب سبحان اللہ! اللہ تعالیٰ کے بھی صدقے جاؤں وہ کتنا کارساز ہے اگر ہم بڑے بزرگوں سے ان کے عمل سے انکی سیرت سے دلائل لاتے تو نا معلوم یہ لوگ ان پر بھی کیا کیا الزام عائد کرتے مگر اب معاملہ اپنے گھر پر آ پڑا ہے دیکھئے اب

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



مقام پر آ کھڑے ہوئے ہیں جہاں سے حق بڑا واضح اور بے حجاب نظر آتا ہے قارئین عظام فیصلہ فرمایئے امیر حمزہ صاحب کے اپنے گھر کے بزرگ کس طرح اپنے بزرگوں سے مدد کے طالب ہوتے ہیں توجہ فرمایئے۔

ہوس ما است حدیث از لب جاناں مددے

مددا اے طالع صدیق حسن خاں مددے

(نفح الطیب ص۲۶۱ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

اے قاضی شوکانی آپ ہماری تمنا ہو، لہٰذا محبوبوں کی طرح گفتگو کر کے مدد فرمایئے۔ مددا اے صدیق حسن خاں کے مقدر مدد!

## زمرۂ مشرکین اور بھوپالی!

کمال دیانت ہے، اگر ہم یا رسول اللہ مدد! کہیں تو مورد الزام اگر ہم یا علی مدد! کہیں تو لائق طعن، اگر ہم یا غوث اعظم مدد کہیں تو مرتکب شرک، ہم پر بلا سوچے سمجھے جارحیت مگر اپنے گھر سے اگر یہ سب کچھ صادر ہو اور اس پر سند اور حجت بھی قائم ہو جائے تو نا معلوم کس حکمت عملی کے ماتحت اس سب کچھ کے ہوتے ہوئے بھی نہ کوئی شور نہ ہنگامہ، نہ کوئی زوردار وعظ نہ کوئی زوردار تحریر آخر ایسا کیوں ہے؟

## کھلے لفظوں میں اعلان:

امیر حمزہ صاحب غور فرمایئے نواب بھوپالی صاحب کے طرز سخن پر، اگر آپ واقعی توحید پرست ہیں، اگر آپ واقعی حق شناس ہیں، اگر آپ واقعی اپنے عقیدے پر مستقیم ہیں تو اب وقت آیا ہے شہادت حق کا کھولیے ذہن دیجئے تحرک زبان کو، ہلایئے لبوں کو اور نفیس سی عبارت بنایئے، کیجئے اسکو مسجع اور مقفع الفاظ کی ترتیب سے اس عبارت کا



ایک ایک حرف، ایک ایک جملہ، ایک ایک پیراگراف صرف اور صرف شرک، بدعت اور گمراہی کی منہ بولتی تصویر ہو اور پھر اسکو ذمہ داری سے چسپاں کر دیجئے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی صاحب پر اور ساتھ ہی کھلے لفظوں میں اعلان فرمایئے کہ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی نے چونکہ

"مددا اے طالع صدیق حسن خاں مددے"

کہا تھا اس لئے وہ ارتکاب شرک کر کے زمرۂ مشرکین میں داخل و شامل ہو گئے تھے۔

## بے لگام گھوڑا!!

میں بھی اگر چاہتا تو آپ ہی کی طرح بلکہ آپ سے سوگنا زیادہ سخت، زیادہ کڑے اور زیادہ بھیانک الفاظ کا استعمال کر سکتا تھا۔ میں بھی اگر اسی وادی میں قدم رکھ دیتا جس میں آپ ساکن ہیں تو آپکی خوب گت بناتا مگر میں چونکہ ایسے ماحول میں پڑھا ہوں جہاں ہٹ دھرمی، غیر سنجیدگی نام کی کوئی چیز نہیں ہوتی، وہاں تو نفاست شرافت، دیانت، صداقت اور حق گوئی و بے باکی کا پرچار ہوتا ہے میری مراد ہے قلم کو چلانا ہی کمال نہیں ہوتا بلکہ قلم کو اپنے اختیار میں رکھنا کمال ہوتا ہے لگتا یوں ہے آپ کا قلم آپکے اپنے اختیار میں نہیں رہا وہ تو کسی اور ہی کی بولی بولتا ہے وہ تو کسی اور ہی کی رٹ لگاتا ہے کوئی مسلمان جتنا بھی سخت ہو جائے وہ حدود کو کبھی پامال نہیں کرتا مگر آپ نے تو ادب، متانت، شرافت، دیانت، نفاست اور سنجیدگی کی تمام حدوں کو پامال کر دیا ہے اور ایسے بے لگام ہوئے کہ ہاتھ نہیں آتے، یہ یاد رکھ لیجئے بے لگام گھوڑا جب گرتا ہے تو اس کی ہڈی پسلی نہیں بچتی۔

ہاں ہاں امیر حمزہ صاحب اب بھی تو مضمون نگاری فرمایئے اب بھی تو صحافت کی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



طرز اپنائیے اب بھی تو دیانت داری کا مظاہرہ کیجیے بس اب دو ہی صورتیں ہیں۔

۱- چپ چاپ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو شرک کا مرتکب مان لیجیے۔

۲- یا پھر ان کے مندرجہ بالا عمل کو موافق اسلام مان لیجیے۔

تیسرا راستہ تو آپ کے پاس ہے نہیں جسکو آپ اختیار کر لیں۔

## تمہاری توحید اور ہمارا شرک!

قارئین کرام! آپ کو قسم ہے رب العالمین کی جلالت کی آپ نے ڈنڈی نہیں ماری بلکہ جو کچھ حق ہو، سچ ہو اسی کو اپنا عقیدہ و مسلک بنا لیجیے۔ ایک طرف امام الانبیاء حضرت محمد ﷺ کی ذات اقدس اور دوسری طرف قاضی شوکانی ایک جانب حضرت علی رضی اللہ عنہ اور دوسری طرف قاضی شوکانی، ایک طرف حضرت غوث اعظم شیخ سید عبدالقادر جیلانی رضی اللہ عنہ اور دوسری طرف قاضی شوکانی۔

اب فیصلہ آپ پر چھوڑ رہا ہوں کون زیادہ عزت و عظمت کا مالک ہے اور کس پر الطاف رب العالمین زیادہ نظر آتے ہیں کون رب تعالیٰ کے زیادہ قریب ہے قوت و طاقت کس میں باذن اللہ اقویٰ نظر آتی ہے۔

امیر حمزہ صاحب قاضی شوکانی کو یوں خطاب کرنا۔

ہوس ما است حدیث از لب جاناں مددے
مددے طالع صدیق حسن خاں مددے

اے قاضی شوکانی آپ ہماری خواہش و تمنا ہو لہٰذا محبوبوں کی طرح لبوں کو جنبش دیجئے اور فرمایئے۔ مددے صدیق حسن خاں کے مقدر مدد یہ ہے آپ کی توحید! اور یا رسول اللہ مدد! (صلی اللہ علیک وسلم) یہ ہے ہمارا شرک اب فیصلہ ملت اسلامیہ کرے کون حق پر ہے۔



یا رسول اللہ مدد کہنے والے

یا

اے قاضی شوکاں مدد کہنے والے

اب اگر ذرہ برابر بھی حقانیت آپ کے ہاں ہوگی تو آپ اپنے باطل نظریات سے فوراً توبہ کریں گے آئندہ تادم مرگ اس عقیدہ و نظریہ پر قائم رہیں گے کہ یا رسول اللہ مدد کہنا شرک نہیں ہے بلکہ یہ ایمان کی علامات میں سے ایک کھلی علامت ہے۔

## کتمان حق!

غور کیا قارئین کرام امیر حمزہ صاحب جسکو شرک قرار دیکر ہمارے گلے کی مالا بنا رہے تھے وہ ان کے اپنے ہی گلے کا طوق بن گیا اب اس طوق شدید حدید سے کبھی چھٹکارہ ممکن نہیں۔ کمال درجے کی ہیرا پھیری کرکے عامۃ المسلمین کو ڈرا کر شرک کا خوف شدید دکھا کر۔

یا رسول اللہ مدد! سے روکنا چاہتے تھے مگر جب ہم نے امیر حمزہ صاحب کے گھر کی تلاشی لی تو بڑی آسانی سے انکا پول کھل گیا ان کے بڑے تو اپنے اکابر کو مشکل وقت میں پکارتے ہیں ان سے مدد طلب کرتے ہیں اور ان کے ناموں کی دہائیاں دیتے ہیں۔ یہ سب کچھ امیر حمزہ صاحب کے علم میں ہے مگر اس کے باوجود وہ کمال کتمان حق کرتے ہیں۔

اگر کتمان حق نہیں تو اس کی وضاحت کیسے ہو پوری ملت غور کرے اور اپنا فیصلہ صادر کرے اگر ہمارا "یا رسول اللہ" کہنا معاذ اللہ شرک ہے تو ان کا قاضی شوکانی سے مدد طلب کرنا توحید کی کونسی قسم ہے۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## راہِ اعتدال:

اب وقت فیصلے کا ہے سوچنے کا نہیں، اگر یا رسول اللہ! کہنا معاذ اللہ شرک ہے تو قاضی شوکانی سے امداد طلب کرنا کیسے توحید بن گیا معیار دوہرا نہیں ہونا چاہیے اسکو اکارہ ہی رہنا چاہیے اسی میں خیر ہے۔ اس امر کو تسلیم کرنا ہی ہوگا کہ صحیح سمت وہی ہے جو اہل حق اہلسنت و جماعت کی ہے یہ راہ اعتدال کی ہے اسی راہ پر چل کر کامرانی نصیب ہو سکتی ہے یقیناً ہر صاحب عقل یہ جانتا ہے کہ دوسرے پر اعتراض کرنا آسان ہے اور اعتراض کا جواب دینا بہت ہی مشکل کام ہے۔ بہر نوع ہم نے بڑے کھلے کھلے انداز میں اور بڑے ہی بین طریق سے احقاق حق اور ابطال باطل کیا ہے۔ زبان کو شستہ رکھا ہے، انداز بیان نہایت متین رکھا ہے، طرز سخن کو ادب کی حدود میں پابند کیا ہے آزاد نہیں ہونے دیا اور نہ ہی انداز تکلم میں جارحیت آنے دی ہے بلکہ بڑے ہی نرم نرم مگر دلائل سے بھرپور انداز میں گفتگو کی ہے۔

میں صرف اتنا عرض کرنا چاہوں گا اگر کوئی بندہ حق کی تلاش میں ہو تو وہ کیا کرے امیر حمزہ صاحب کے مؤلفات ''مذہبی و سیاسی باوے'' ''شاہراہ بہشت'' ''آسمانی جنت اور درباری جہنم'' کا مطالعہ کرے یا نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کی نفح الطیب پڑھ لیجئے آپ بھی نواب صاحب کو پڑھیں۔

اندریں دور کہ بازار سخن خاموش است
شور سنت مددے نعرۂ ایمان مددے

(نفح الطیب ۷۶از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

یہ وہ زمانہ ہے کہ جہاں سخن نے چپ سی سادھ لی ہے، اے سنت کا ڈھنڈورا پیٹنے والے، اے نعرۂ ایمان ہماری مدد فرمایئے۔



## عام لام بندی!

امیر حمزہ صاحب یہ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی آپ ہی کے بزرگ ہیں نا، یہ تو بڑے توحید پرست ہیں ان کے دامن سے تو داغ شرک کبھی پیوستہ ہو ہی نہیں سکتا۔ ان لوگوں کو تو صرف اور صرف اللہ تعالیٰ ہی یاد رہتا ہے یہ تو قطعاً غیر اللہ کی طرف رجوع نہیں کرتے مگر اتنا تو بتایئے قاضی شوکانی کو کیا سمجھ کر مدد طلب کی جارہی ہے۔

ہمارا رد کرنے نکلے تو آپ بڑی آن بان سے تھے مگر میرے قلم نے آپ کی آن بان کو بان دان کر کے رکھ دیا ہے آپ نے اپنی مؤلفات ''شاہراہ بہشت'' ''مذہبی و سیاسی باوے'' ''آسمانی جنت اور درباری جہنم'' میں ہمارے خلاف عام لام بندی تک کر دی تھی اور تقریباً تقریباً اپنی فتح و نصرت کا نعرہ تک لگا ہی دیا تھا مگر میرے ہاتھوں آپ کی عام لام بندی سرماندگی میں بدل کے رہ گئی ہے۔

جب حالات دین کی موافقت کی بجائے مخالفت کی طرف بڑھ گئے اور احکامات قرآن و حدیث کی طرف لوگوں کی توجہ نہ رہی زمانہ عجب سراسیمگی میں مبتلا ہوا تو چاہیے تھا اللہ تعالیٰ کی بارگاہ اقدس میں التجاء کی جاتی اس سے مدد طلب کی جاتی مگر آپ کے ہاں تو بالکل اس کے برعکس ہے۔ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی یا اللہ مدد کہنے کی بجائے یوں کہتے نظر آتے ہیں لیجئے ایک بار پھر مطالعہ فرمایئے۔

شور سنت مدد نعرۂ ایمان مددے

## آپ کو مجاہد مان لیں:

یہاں زمانے کو چپ لگنے کی قوت قاضی شوکانی صاحب کو بعد از وفات دین کا ڈھنڈورا پیٹنے والا قرار دے کر ان سے التجاء کی جارہی ہے۔ اب تو آپ ہی زبان

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کھولیں آپ ہی بولیں تو دین کی اشاعت ممکن ہے اگر آپ اب مدد فرمائیں تو احکامات قرآن وحدیث کی طرف لوگوں کی توجہ ممکن ہے۔

امیر حمزہ صاحب اگر آپ کے ہاں رائی کے برابر بھی دیانت موجود ہے تو بغیر کسی تاخیر کے اٹھایئے قلم پکڑیئے قرطاس اور لکھیئے فتوی انداز بھی وہی ہو جو "مذہبی وسیاسی باوے" کا ہے انداز وہی ہو جو "آسمانی جنت اور درباری جہنم" کا ہے انداز بالکل ویسا ہو جیسا "شاہراہ بہشت" کا ہے۔

اگر انداز وہی ہوگا جو آپکی مؤلفات ذکر کی گئی ہیں تو فتوی بھی وہی ہوگا جو وہاں مرتب کیا گیا ہے قبوری قبوری کہہ کر مزاح اڑانے کی کوشش کی گئی ہے اب خود اپنے قلم سے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو قبوری کہیے اور ان پر فتوی شرک داغ دیجئے جب آپ ان کو مشرک قرار دیں گے تو ہم آپ کو مجاہد مان لیں گے مگر آپ سے ایسا ہو نہ سکے گا۔

## احساس ذمہ داری سے سبکدوش کیوں

قاضی شوکانی کو نعرۂ ایمان قرار دے کر ان سے مدد طلب کرنا یہ تو شرک نہیں ہے اب آپ تنہائی میں اپنے ہی گریبان میں منہ ڈالیئے اور سوچیئے آپ نے قلم کو چلاتے وقت احساس ذمہ داری سے سبکدوشی کیوں اختیار کی۔ آپ کے بزرگ قاضی شوکانی سے مدد مانگ کر بھی موحد ہیں اور ہم یارسول اللہ ﷺ مدد کہہ کر مشرک قرار پائیں ستم ظریفی کی بھی کوئی حد ہوتی ہے آپ نے تو تمام حدود کو پامال کر کے رکھ دیا ہے۔

امیر حمزہ صاحب کا کہنا یہ ہے جب بھی کوئی مشکل پیش آئے تو مدد صرف اللہ تعالی سے مانگنی چاہیے مگر ان کے اپنے گھر کے بزرگوں پر جب مصیبت پڑتی ہے تو وہ کیا کرتے ہیں آیئے مطالعہ فرمایئے:



حسرت گریہ براو بار مقلد باقی است
نیست نم در مژہ ام دیدہ گریاں مددے

(نفح الطیب ص ۵۲ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

اس رونے دھونے پر حسرت یہ ہے کہ مقلد کا ایک بوجھ سا رہ گیا ہے روتے روتے میری آنکھوں کی پلکیں تک خشک ہو گئی ہیں الہذا مدد دے۔

## سیلاب کا راستہ روک دیا:

ساری دنیا کے مسلمانوں کی ایک اکثریت امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ کی مقلد ہے۔ غیر مقلدین کو برصغیر میں اپنے نظریے کی اشاعت کرنے میں سخت دشواری اس وقت پیش آئی جب مقلدین نے ان کو دلائل کے جہاں میں مات کر کے رکھ دیا، ظاہر ہے امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ کے مقلدین یعنی احناف نے غیر مقلدیت کے سیلاب کا راستہ روک دیا اس کی ایسی پیش بندی کی کہ سیلاب آنے سے قبل ہی ایک مضبوط بند باندھ دیا۔ دلائل اور براھین کے آگے چونکہ کسی کی نہیں چلتی لہذا غیر مقلدین پر یہ امر انتہائی شاق گزرا کہ ان کو لوگ عزت کی نگاہ سے دیکھنے کی بجائے کم ظرف اور علم وفن سے دور خیال کرنے لگے اور حقیقت بھی یہی تھی۔ ان حالات و واقعات کو دیکھ کر نواب صدیق حسن خاں بھوپالی چیخ اٹھے۔

حسرت گریہ براو بار مقلد باقی است

اس رونے دھونے پر حسرت تو یہ ہے مقلدیت نے ہماری کمر توڑ دی ہے نواب صاحب روتے ہوئے قاضی شوکاں کی بارگاہ میں فریاد لیکر حاضر ہو گئے حالانکہ قاضی شوکانی کو قبر میں گئے ہوئے مدت گزر گئی تھی۔ اور انکی برزخی زندگی سے نواب صاحب آگاہ بھی تھے جب مصیبت پڑی تو نواب صاحب نے قاضی شوکاں

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



سے مدد طلب کی۔

## حملہ پسپا:

امیر حمزہ صاحب آپ نے جس انداز سے بزرگوں سے مدد طلب کرنے والوں پر اعتراضات کیے اور ان پر شقاوت کے تیر برسائے، اس وقت شاید آپ کو یہ بھول تھی کہ ہمارا اندر کا حال کونسا کسی پر افشاں ہوگا جو ہم پر بھی جوابی حملہ ہو جائے گا دوسروں پر حملہ کر کے ان کو پسپا کرنے کی کوشش کرنا اور خود کو ان کے حملے سے محفوظ سمجھنا یہ بہت بڑی جہالت ہوتی ہے۔

ہم بھی آپکو کھینچ کر سرے میداں لائیں گے اور پھر آپ سے دریافت کریں گے پریشانی کے عالم میں اگر کوئی کسی بزرگ کو یاد کرے اس سے استغاثت کرے اس سے مدد کا طالب ہو تو اس کے لئے شرعی حکم کیا ہوگا؟ آپ چونکہ بڑے بہادر ہیں فوراً اپنی مؤلفات "مذہبی و سیاسی باوے" "شاہراہ بہشت" "آسمانی جنت اور درباری جہنم" کی روشنی میں جواب دیں گے شرک ہے شرک دیدۂ گریاں مددے۔

اس وقت جب آپ کسی فوت شدہ بزرگ سے مدد طلب کرنے کو شرک قرار دیں گے ہم فوراً آپ کے سامنے آپ کے بزرگ آپ لیڈر (LEADER) آپکے مصلح (REFORMER) نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو یہ کہتے ہوئے پیش کر دیں گے۔

نیست غم در مشرہ ام دیدۂ گریاں مددے

(نفح الطیب ص۵۷ از نواب صدیق خاں بھوپالی)

روتے روتے میری آنکھوں کی پلکیں خشک ہو گئی ہیں لہٰذا قاضی شوکاں



مددے۔ تمام راستے بند۔ اب پھنسے ہیں نا آپ مضبوط دام میں، نکلنے کے تمام راستے بند ہیں کدھر بھاگیں گے اب لگایئے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی پر فتویٰ شرک ورنہ جہاں جہاں اہل ایمان کو یارسول اللہ ﷺ کہنے پر یا علی مدد کہنے پر، یا غوث اعظم مدد کہنے پر شرک قرار دیا وہاں وہاں اظہار بریت کیجئے اور توبہ کیجئے۔ جب مخالف غالب آ رہے ہوں تو اس وقت کس کی طرف رجوع کرنا چاہیے مدد کہاں سے طلب کرنی چاہیے یہ بھی جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی سے دریافت کیجئے تا کہ امیر حمزہ صاحب کو بھی قلبی تشفی ہو۔

انس بارائے پرستاں نتوانم ورزید
وحشت دل طلبم چشم غزالاں مددے

(نفح الطیب ص۵۷ از نواب صدیق خاں بھوپالی)

میں رائے پرستوں یعنی مقلدین کی محبت ہرگز قبول نہیں کر سکتا، میں دل کی آزادی کا طالب ہوں اے ہرن کی آنکھوں والے مدد فرمایئے۔

## غیر مقلدین کا ناطقہ بند!

جب امام اعظم ابو حنیفہ نعمان بن ثابت بن ثوطی مرزبان رضی اللہ عنہ کے مقلدین یعنی احناف نے غیر مقلدین کا ناطقہ بند کر دیا تو بے چارے غیر مقلدین دلائل سے تو پورے اتر نہ سکے البتہ رونے دھونے پر آ گئے اور روتے روتے انہیں اللہ تعالیٰ تو یاد نہ رہا اگر یاد آئی تو قاضی شوکانی کی وہ بھی اس لئے کہ شاید وہ ان کے مخالفین سے غیر مقلدین کی جان چھڑانے کا باعث بن جائیں گے مگر یہاں بھی الٹا لینے کے دینے پڑ گئے۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## قاضی شوکاں مدد پر قادر ہیں:

امیر حمزہ صاحب اب سنایئے کیسی رہی اب بتایئے قاضی شوکاں مدد کرنے پر قادر ہیں؟ کیا قاضی شوکاں کا مرتبہ ان بزرگوں سے بڑا ہے جن کو اہل ایمان مدد کیلئے یاد کرتے ہیں۔ آخر اس مقام پر کیا تاویل کریں گے، کس طرح آپ اپنے آپکو اور اپنے لیڈر (LEADER) اپنے رہبر، اپنے پیشوا کو بچائیں گے۔ کیا آپ یہ ثابت کر سکیں گے کہ قاضی شوکاں مقام مرتبے میں کسی طرح ان بزرگوں سے اعلی ہیں برتر ہونا تو درکنار انکے برابر آنا تو محال، ان بزرگوں کے پاؤں میں آنے والی جوتی کے برابر بھی نہیں اگر ان بزرگوں سے جنکے پاؤں کی دھول برابر بھی قاضی شوکاں نہیں مدد مانگنا شرک ہے تو ان قاضی شوکاں سے ہرن کی آنکھوں والے سے مدد مانگنا آخر کونسی نص سے ثابت ہوگا۔ لہٰذا اب تقاضاءِ دیانت یہی ہے اگر ایمان نام کی کوئی شے آپ کے ہاں بھی پائی جاتی ہے، اگر دین نام کی کوئی چیز آپکے ہاں ہوتی ہے، اگر شرافت نام کا کوئی کمال آپکے پاس بھی ہے، اگر صداقت جیسی دولت کا کوئی جزو بھی آپکے ہاں تا حال باقی ہے تو پورا کیجئے ان کا تقاضا اٹھایئے قلم، لیجئے کاغذ اور لکھئے فتویٰ اور فتویٰ کی زباں وہی ہو جو آپ نے اپنی کتابوں میں استعمال کی ہے مرد میداں بنیئے اور تحریر کیجئے فتویٰ شرک نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کے نام اور اپنے پرائے کا لحاظ رکھے بغیر فتویٰ صادر کرتے ہیں۔

## نواب بھوپالی بڑا تلملائے!

اجتہاد کے خلاف جب زباں کھولی تو دائیں بائیں کچھ نظر نہ آیا آگے پیچھے کچھ نہ دیکھا حقائق کس طرف جارہے ہیں اس کی کوئی پرواہ نہ کی اور پورا زور رد اجتہاد و تقلید



پر صرف کر دیا۔ زبان بھی شستگی سے بہت دور نکل گئی، ان حالات و واقعات نے احناف کو مجبور کر دیا کہ وہ اپنا دفاع کریں اور ظاہر ہے جب احناف نے زبان و قلم کو اپنے دفاع میں استعمال کیا تو پھر کون انکے دلائل و براھین کی تاب لاتا۔

امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ کے مقلدین کے دلائل نے عوام کا تاثر یہ بنا دیا کہ تمام مسلمانوں کو مقلدین کا احترام کرنا چاہیے امام ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ کی تقلید کرنے والوں کو عزت کی نگاہ سے دیکھنا چاہیے اور ان لوگوں سے محبت کرنا چاہیے جو امام صاحب کے مقلد ہیں اس عوامی حمایت نے برصغیر میں غیر مقلدین کی ترقی کا راستہ تقریباً بند کر دیا اس پر نواب صدیق حسن خاں بھوپالی بڑا تلملائے اور پھر یوں اپنے ارمانوں کو سپرد قرطاس کیا۔ لیجئے انہی کے الفاظ ملاحظہ فرمایئے۔

میں رائے پرستوں یعنی مقلدین کی محبت ہرگز قبول نہیں کر سکتا دل کی آزادی کا طالب ہوں اے ہرن کی آنکھوں والے (قاضی شوکانی) مدد فرمایئے

جب دل تنگ ہو رہا ہو دم گھٹنے لگے، مخالفین پوری آب تاب سے حملہ آور ہو جائیں تو اس وقت کس بارگاہ سے مدد طلب کی جائے یہ عقیدہ بھی جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی سے حل کروا لیجئے آپکی مدد کرتا ہوں فتح الطیب مطالعہ کیجئے۔

دل ما از قفسِ رائے بہ تنگ آمدہ است
ہاں فضائے چمن سنت ماہاں مددے

(فتح الطیب ۷ ۹ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

ہمارا دل اس رائے یعنی اجتہاد سے تنگ آ چکا ہے، اسے چمن کی سی بہار، سنت کی چمک دمک میں کئی چاندوں جیسے مدد فرمایئے۔

لبیک یارسول اللہ (صلی اللہ علیک وسلم)

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ:

قرآن وحدیث کو سمجھنے کیلئے بڑے بڑے ائمہ کرام کی علمی خدمات سے استفادہ کرنا ہر مسلمان کو ہزار ہا منافع عطا کرتا ہے۔ ہزاروں مشکلات کو دور کرتا ہے اور ہزاروں آسانیاں پیدا کرتا ہے۔ سرزمین پاک وہند پر اللہ تعالیٰ کے فضل وکرم سے امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ کے مقلدین کا غلبہ تھا، غلبہ ہے اور انشاء اللہ غلبہ رہے گا۔ میں نے چونکہ اس کتاب کو اس طریق سے ہٹ کر تحریر کیا جو عموماً اختیار کیا جاتا ہے میں نے نہ تو نقل پر نقل سے کام لیا ہے اور نہ ہی حوالے پر حوالہ دیا ہے البتہ میں نے جس طرح متانت کے ساتھ امیر حمزہ صاحب کو پکڑا ہے اور ان کے دلائل کا رد کیا ہے وہ ان کو بہت ہی راس آئے گا نہ زبان میں سختی نہ قلم میں ترشی نہ عبارات میں طوالت، جو پڑھنے میں دشواری کا سبب ہوں بلکہ نہایت سادہ آسان اور عام فہم انداز اپنایا ہے تا کہ ہر ذی شعور پڑھ کر یہ فیصلہ کرنے میں آسانی محسوس کرے کہ حق کس طرف ہے پڑھنے والے یقیناً تصدیق کریں گے کہ حق لبیک یا رسول اللہ صلی اللہ علیک وسلم کہنے والوں کے ساتھ ہے۔ غیر مقلدین نے احناف یعنی امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ کے مقلدین کا رد کرنے کی کوشش تو بھرپور کی مگر اس میں کامیابی قطعاً نصیب نہ ہوئی بلکہ کامرانی دور بھاگ کھڑی ہوئی اس کیفیت کو دیکھ کر ہندوستان میں وہابیہ کے سرخیل جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کا دم گھٹنے لگا اور اس بیقراری کے عالم میں انہیں زندوں میں تو اپنا کوئی مددگار نظر نہ آیا چنانچہ قاضی شوکانی مدتوں پہلے مر کر قبر میں تشریف لے جا چکے تھے وہ یاد آئے اور انہی کی بارگاہ میں فریاد کرنے لگے۔

دل ما از قفسِ رائے بہ تنگ آمدہ است

(نفح الطیب ص۷۵ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)



ہمارا دل اس رائے یعنی اجتہاد سے تنگ آچکا ہے۔

## ظاہر کچھ اور باطن کچھ!

کیوں جناب امیر حمزہ صاحب آپ نے تو رٹ لگا رکھی تھی۔ قبر والے مر گئے بس معاملہ ختم ہوا وہ نہیں سنتے وہ نہیں دیکھتے، وہ نہیں مدد کرتے ہیں اور اگر کوئی قبر والے سے مدد کا طالب ہو تو اسے قبوری قبوری کہہ کر آپ طعنہ دیتے ہیں مزاح کرتے ہیں اور پھر اس پر برس پڑتے ہیں۔ اولاً بدعت کا تیر چلاتے ہیں ثانیاً گمراہی کا نیزہ تاک مارتے ہیں ثالثاً شرک کا راکٹ داغ دیتے ہیں۔

## لب کشائی فرمایئے!

اب تو آپ سے مرتے دم تک جواب نہ بن پائے گا۔ اگر ہے ہمت تو ضرور لب کشائی فرمایئے اب بھی تو وہی جارحانہ انداز ہونا چاہیے وہی زبان تصرف میں لایئے وہی صلواتیں سنایئے جو یا رسول اللہ ﷺ مدد! یا علی رضی اللہ عنہ مدد اور یا غوث اعظم رضی اللہ عنہ مدد کہنے والوں کو سنائی تھیں۔

اب تو آپ پر لازم ہے یا تو یہ مان لیجئے کہ بزرگوں سے مدد طلب کرنا اور انکو باذن اللہ امداد کرنے پر قادر ماننا شرک نہیں بلکہ جائز ہے اور اگر یہ بدعت، گمراہی اور شرک ہے تو پھر کھلے الفاظ میں نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو مشرک قرار دیجئے اور داد تحسین وصول فرمایئے بصورت دیگر آپکو اہل دانش ان کی صف میں کھڑا کرنے پر مجبور ہونگے جن لوگوں کا ظاہر باطن ایک نہیں ہوتا یہ کون نہیں جانتا جو بندہ ظاہر کچھ ہو اور باطن کچھ اسکو منافق کہتے ہیں۔ جب کبھی کسی جماعت کو یہ محسوس ہونے لگے کہ وہ تنزل کی طرف گامزن ہے تو ان حالات میں ترقی کی راہوں کی طرف چلنے کیلئے کس سے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



استعانت کی جائے کسی کو لائق مدد مانا جائے بقول امیر حمزہ مدد صرف اللہ تعالیٰ سے مانگی جائے آئیے اب ان کے امام اور مقتداء جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو دیکھیں کیا کرتے ہیں لیجئے مطالعہ فرمائیے۔

زمرۂ رائے در افتاد بار باب سنن
شیخ سنت مددے قاضی شوکان مددے

(نفح الطیب ص ۵۷ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

جماعت مقلدین سے باب سنن یعنی اہلحدیث کو پالا پڑ گیا ہے لہٰذا شیخ سنت مدد! قاضی شوکاں مدد!

## خجالت اٹھانا پڑی!

امیر حمزہ صاحب رکھیئے اپنے دھڑکتے دل پر ہاتھ کیجئے حق سماعت کرنے کی تیاری ذہنی طور پر اپنے ہی ہاتھوں بوئے کو کاٹنے کیلئے تیار ہو جائیں۔ یہ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی آپ ہی کے بزرگ ہیں نا، یہ تو بڑے ہی متقی ہیں ان کی تو کوئی ادا خلاف قرآن و حدیث نہیں ہو سکتی ان کا تو ایک ایک عمل عین قرآن کی منہ بولتی تصویر ہے۔ اصلاً جب مقلدین نے انکو ستایا اور یہ ان سے مقابلہ نہ کر سکے اور بڑی خجالت اٹھانا پڑی تو بے چارے نواب صاحب کو کوئی اور راستہ تو نظر نہ آیا صرف اور صرف ایک ہی طرف سوجی اور وہ یہ تھی کہ اپنے ایک بزرگ علامہ شوکانی کو بعد از وفات مدد کیلئے پکارا اور خوب التجائیں کیں تاکہ وہ ان کی مدد کریں اور انکو احناف کی جماعت کے سامنے مغلوب ہونے سے بچائیں۔ لیجئے ایک بار پھر تازہ فرمائیں۔

شیخ سنت مددے قاضی شوکاں مددے

(نفح الطیب ص ۵۷ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)



## شیخ سنت مدد! قاضی شوکاں مدد!!

یہ آپ کا وہ عقیدہ ہے جو توحید کے عین مطابق ہے۔ اسکو آپ توحید کہتے ہیں اور اگر ہم یوں عرض کریں۔

یارسول اللہ مدد یانبی اللہ مدد (صلی اللہ علیک وسلم)

تو آپ بلا تامل فتویٰ شرک لگاتے ہیں اب آپ ہی بتائیں تمہاری توحید کو داد تحسین دیں یا تمہارے تجویز کردہ شرک ''یارسول اللہ'' کو سینے سے لگائیں ہمیں تو کوئی ایک لاکھ روپیہ نقد دے کر کہے کہ قاضی شوکانی سے مدد مانگو تو ہم کبھی بھی تیار نہ ہونگے مگر آپ تو بڑے حوصلہ مند واقع ہیں جنکا کلمہ پڑھا ہے ان سے مدد مانگنے کو شرک کہتے ہیں اور ایک عام اُمتی قاضی شوکانی جیسی شخصیت سے مدد مانگنے کو نہ صرف جائز کہتے ہیں بلکہ انکو اپنا نصب العین (MOTTO) قرار دیتے ہیں۔

## راحت جاں!

امیر حمزہ صاحب آپ کو اللہ تعالیٰ کی جلالت اور اسکے پیارے محبوب (جلا و علا صلی اللہ علیہ وسلم) کی رسالت کا واسطہ دیکر پوچھنا چاہوں گا آخر ہمارا وہ کونسا جرم ہے جو آپ کو اس قدر ناپسند آیا کہ آپ نے اپنی مؤلفات میں سارا زور ہمارے بزرگوں بلکہ پوری امت مسلمہ کے مسلمہ بزرگوں کے خلاف صرف کر دیا اور بار بار عبارتوں کا ہیر پھیر کر کے قبوری قبوری کہہ کہہ کر لوگوں کو ہم سے متنفر کرنے کی کوشش کی مگر وہ تمام الزامات جو آپ نے ہم پر لگائے تھے آپ پر بھی بعینہٖ ثابت ہو گئے تو پھر آپ نے اپنے ان بڑوں کو مشرک قرار کیوں نہ دیا جنہوں نے اللہ و رسول اللہ جل و علا و صلی علیہ وآلہ وسلم کو چھوڑ کر قاضی شوکانی سے مدد مانگی اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو میں از سر نو تازہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کروادیتا ہوں لیجئے مطالعہ فرمایئے تاکہ راحت جاں کا باعث بنے۔

شیخ سنت مددے قاضی شوکاں مددے

(فخ الطیب ۷۲ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

قارئین محترم ایک طرف "یارسول اللہ مدد" اسکو امیر حمزہ اینڈ پارٹی شرک قرار دیتی ہے۔ اور دوسری طرف "قاضی شوکاں مددے" اسکو نہ صرف جائز رکھا بلکہ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی نے اس طرح وہابیاں دیں قاضی شوکاں مدد!! اس کو توحید کے عین مطابق قرار دیا۔ فیصلہ آپ کریں حق پر کون ہیں "یارسول اللہ" مدد والے یا قاضی شوکاں مدد والے دل حق شناس کا مؤقف یہی ہوگا یارسول اللہ مدد کہنے والے ہی یقیناً حق پر ہیں۔

امیر حمزہ صاحب کا کہنا ہے جب کچھ طلب کرنا ہو تو صرف اور صرف رب تعالیٰ کی بارگاہ اقدس سے طلب کرنا چاہیے اب دیکھنا ہے ان کے اپنے بزرگ کیا کرتے ہیں آیئے جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کی فخ الطیب کو ذرا نظر سے گزاریں لیجئے مطالعہ فرمایئے۔

ارحم فقیراً جاءَ بابک راجیاً
اَنتَ القَمِینُ بحرمة الفقراء

(فخ الطیب ۹۱ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

آپ کے دروازے پر محتاج حاضر ہے، امید لیکر آیا ہے آپ رحم فرمایئے آپ ہی فقراء کی عزت کو استحقاق بخشنے والے ہیں۔

## کھلے لفظوں میں طعن!

امیر حمزہ صاحب کھولیے آنکھیں اور پڑھیے دن کے اجالے میں اور اگر دن کی



روشنی میں بھی نظر نہیں آتا تو عینک لگا لیجئے تاکہ واضح اور صاف نظر آنے لگے پڑھنے میں آسانی ہو۔ غور فرمایئے نواب صاحب کے اس شعر پر کیا خوب انداز بیان ہے۔ اگر ہم کبھی اپنے آقا اپنے مولیٰ حضرت محمد ﷺ کی بارگاہ اقدس میں یوں عرض کریں تو مشرک قرار پائیں اور ہمارے لئے کوئی نرم گوشہ نہ رہے بلکہ ظلم وستم کی انتہا کر دی جائے اور ہمیں کھلے لفظوں میں طعن کیا جائے اور پھر یہاں تک بھی چین نصیب نہ ہو تو ہم یارسول اللہ ﷺ کہنے والوں کو مشرک تک قرار دیا جائے۔

اتنی نہ بڑھا پاکی داماں کی حکایت
دامن کو ذرا دیکھ ذرا بند قبا دیکھ

## دررسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا منگتا!

اپنی باری آئی تو فقیر بھی بن گئے، در مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر حاضر بھی ہو گئے، امید بھی بندھ گئی یہ بھی یقین ہو گیا کہ آپ فقراء کے قدردان ہیں اور یہ بھی تسلیم کرلیا کہ نبی پاک ﷺ رحم بھی فرماتے ہیں۔ واہ واہ کیا حسن عمل ہے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی صاحب اگر یوں عرض کریں کہ:

یارسول اللہ: صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم یہ محتاج، یہ منگتا آپکی خدمت عالیہ میں، آپ کے دروازے پر آپکے در اقدس پر ایک محتاج کی حیثیت سے حاضر ہے اور امید لیکر آیا ہے کہ آپ مجھ پر رحم فرمائیں گے اس لئے کہ آپ فقیروں محتاجوں کی پناہ گاہ ہیں اس لئے مجھ فقیر (نواب صدیق حسن خاں بھوپالی پر) پر بھی رحم فرمایئے۔ اگر ذہن سے اتر گیا ہے تو پھر تازہ فرمایئے۔

ارحم فقیراً جاءَ بابک راجیاً
انت القمین بحرمة الفقراء

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



(نخ الطیب ص۲۵ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

یارسول اللہ یہ منگتا آپکے دروازے پر امید لیکر حاضر ہے رحم فرمایئے کہ آپ ہی محتاجوں کی پناہ گاہ ہیں۔

## رحم کی بھیک!

امیر حمزہ صاحب اب آپ کا قلم ضرور حرکت میں آنا چاہیے وہی کھری کھری (بزعم خویش) نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو بھی سنا دیجئے جو ہم فقیروں کو سنائی ہیں اور پورے زور سے حق دیانت ادا کرتے ہوئے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی پر فتویٰ شرک لگایئے اگر ہم یارسول اللہ ﷺ کہیں، اگر ہم مدد کیلئے اپنے پیارے رسول اللہ ﷺ کو پکاریں اگر ہم انکی بارگاہ اقدس میں منگتے بن کر حاضر ہوں تو آپ کی سانس اکھڑی جاتی ہے آپکو دمہ کی بیماری لاحق ہو جاتی ہے اور بڑ بڑاتے ہوئے انداز میں بولنے کی کوشش کرتے ہیں اور شرک شرک کی گردان شروع کر دیتے ہیں اور اب جو آپ کے اپنے بزرگ بالکل اسی طرح بلکہ اس سے بھی دو ہاتھ آگے بڑھ کر مدد مانگ رہے ہیں التجائیں کر رہے ہیں امیدیں لگا رہے ہیں اور رحم کی بھیک طلب کر رہے اور رسول اکرم ﷺ کو تمام محتاجوں کی پناہ گاہ قرار دے رہے ہیں اب کیوں فتویٰ شرک پٹاری سے برآمد نہیں ہوتا آخر وہ کونسی حکمت و دانائی کی صعفِ نازک ہے کہ ہم یارسول اللہ کہیں تو مشرک قرار پائیں اور آپکے نواب صاحب کہیں تو پکے موحد رہیں۔ آخر یہ فرق کیوں ہمیں بھی سمجھا دیں۔ ورنہ ہم سے سمجھنے کی کوشش کیجئے ہم آپکو وضاحت سے سمجھائے دیتے ہیں۔



## لغاتِ عرب:

میں نے اس عربی شعر کا ترجمہ کرنے کیلئے عربی لغات دیکھی ہیں۔ کافی محنت کر کے یہ شعر ترتیب دیا گیا ہے الفاظ کو چن چن کر لایا گیا اور ان کو خاصی مشقت اٹھا کر جوڑا گیا اور قافیہ ردیف کا بھی کافی حد تک خیال رکھا گیا۔ سب سے بڑی خوبی اس شعر کی یہ ہے کہ اس میں نہایت عاجزانہ طور سے اپنے آپکو بارگاہ رسالتِ مآب صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں پیش کیا گیا ہے یوں محسوس ہوتا ہے گزارشات کرنے والا دل کی اتھاہ گہرائیوں سے اپنے پیارے نبی ﷺ اپنے ملجا و ماویٰ کو زندہ یقین کرتا ہے اور فریاد سننے پر پوری طرح قادر مانتا ہے اور پھر سننے تک ہی بات نہیں رہتی وہ سن کر مدد فرمانے کی پوری طاقت کے ہونے پر بھی یقین رکھتا ہے اس کو یقین کامل ہے میں جس کی بارگاہ میں ملتجی ہوں وہ مجھ سے اور میری حالت زار سے بے خبر نہیں ہے بلکہ پوری طرح باخبر ہے۔

فریاد جو کرے امتی حال زار میں
ممکن نہیں کہ خیر بشر کو خبر نہ ہو

## نہ واویلا نہ دہائی!

امیر حمزہ صاحب آپ تو قبر والوں سے سوال کو شرک قرار دیتے ہیں آپ تو اہل قبور سے استعانت کرنے والوں کو قبوری قبوری کہہ کہہ کر طعنے دیتے ہیں اور اسطرح کے نظریے کو شرک کہتے ہیں اب بھی تو آپکو خاموش نہیں رہنا چاہیے جب جرم ایک ہے تو سزا بھی ایک ہی ہونی چاہیے یہ تو کوئی انصاف نہیں ہم یہ جرم کریں تو سزا برملا۔ اور اگر یہی جرم آپکے اپنے بزرگ آپکے اپنے نواب صاحب کریں نہ تو تقریر نہ سزا نہ واویلا نہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



وہابی نہ شرک کا فتویٰ نہ قابلِ نفرت آخر کیوں؟ ہمیں بھی تو سمجھ آنی چاہیے۔ اگر ہم کہیں یارسول اللہ ﷺ کرم کیجیے تو شرک اور آپ کے نواب صاحب کہیں اِرْحَـمْ رسول اللہ رحم فرمایئے تو عین توحید۔

## آخر یہ راز کیا ہے؟

لگتا ہے آپ نے صحافی بننے کے شوق میں اپنے گھر کے بزرگوں تک کا مطالعہ نہیں کیا اور قلم پکڑ کر کاغذ پر دوڑ پڑے ورنہ آپ کبھی بھی اس طرح کی مالایعنی حرکت نہ کرتے۔ اگر آپ کو پتا ہوتا کہ آپ کے نواب صاحب، آپکے مولانا صاحب آپکے مصنف صاحب، آپکے محقق صاحب آپکے شاعر صاحب اور آپکے اپنے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی صاحب۔ نبی کریم رؤف ورحیم حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ اقدس میں یوں التجائیں کرتے ہیں یوں استعانت کرتے ہیں اور یوں ندائیں کرتے ہیں اور صدائیں لگا لگا کر اپنے مسائل پیش کرتے ہیں اور یوں برملا کہتے ہیں۔

ارحم فقیراً جاءَ بابک راجیاً
انت القمین بحرمة الفقراء

(نفح الطیب ۷۵ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

یارسول اللہ! یہ محتاج امید لیکر آپ کے دروازے پر حاضر ہے کہ آپ ہی فقراء کی عزت کے نگہبان ہیں۔

## معاملہ طشت از بام!

اللہ تعالیٰ کا لاکھ لاکھ شکر ہے اس نے میری دستگیری فرمائی کہ آپ کے اپنے گھر سے ہماری تائید ونصرت میں براہین میسر آئے ورنہ آپ کی سی زبان استعمال کرنا ہمارے



لئے خاصا مشکل کام ہو جاتا۔ بہر نوع میں نے آپ والا انداز اپنانے کی بجائے صاف ستھرا انداز اپنایا اور انتہائی دیانت داری سے آپ کے مبارک خانہ کی تلاشی لیکر وہ سب سامان آپکی خدمت میں پیش کر دیا جس کی بنا پر آپ نے ہمیں مشرک تک قرار دینے سے گریز نہیں کیا تھا اور ساتھ ہی ساتھ یہ کوشش بھی پورے زور سے کی تھی کہ جو نیا بندہ جو نوجوان اس تحریر کو پڑھے فوراً وہ یقین کرے کہ جو کچھ امیر حمزہ صاحب لکھتے ہیں وہ سب درست و صحیح ہے مگر افسوس ایسا ہو نہ سکا کہ ہم نے بروقت آپکی خبر لیکر معاملہ طشت از بام کر دیا۔

امیر حمزہ صاحب آیئے میں آپکو آپ ہی کے بزرگ، جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی صاحب کی خدمت عالیہ میں لے چلوں اور دکھاؤں کہ وہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ اقدس میں کس طرح عرض گزار ہیں لیجئے آپ بھی مطالعہ فرمائیں اور مخلوظ ہوں۔

احسن الی عبد بحبک لائذ
اوی الیک مخافة الاعداء

(نفح الطیب ۷۱ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

آپ اپنی محبت کے سبب بندہ پر احسان فرمایئے دشمنوں کے ڈر سے آپکی حفاظت و پناہ میں آیا ہوں بچا لیجئے۔

## دولت لازوال:

کیا انداز کیمیا گر ہے۔ کیا فکر اعلیٰ وارفع ہے۔ کیا اظہار عقیدت ہے کیا اظہار محبت ہے، کیا اظہار صداقت ہے اور کیا اظہار زاہد ہے۔ اس شعر کو پڑھنے کے بعد دل میں یہ احساس پوری آب وتاب سے رچنے بسنے لگتا ہے کہ رسول اکرم تاجدار عرب وعجم صلی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



اللہ علیہ وآلہ وسلم کی محبت ایک ایسی دولت ہے جو لازوال ہے اس کو سینے میں بسا رکھنا سعادت مندی ہے اور اس سے محرومی نہایت بدقسمتی ہے۔ مولانا حسن رضا رحمتہ اللہ علیہ نے بھی اپنے جذبات واحساسات کا اظہار کیا خوب انداز میں فرمایا ہے آپ بھی پڑھیے۔

موت آ جائے مگر آئے نہ دل کو آرام
دم نکل جائے مگر نکلے نہ الفت تیری

(ذوقِ نعت)

## اظہارِ عقیدت:

امیر حمزہ صاحب اگر آپ کے بزرگ جناب نواب صدیق خاں بھوپالی صاحب اپنی عقیدت کا اظہار کریں تو وہ بالکل درست ہے اگر وہ اس طرح گویا ہوں کہ یا رسول اللہ ﷺ میں آپ کی محبت میں بے تاب ہوں آپ اپنی محبت ہی کے سبب سے مجھ پر احسان فرمایئے میں دشمنوں کے نرغے میں پھنس چکا ہوں اس مشکل ترین گھڑی میں میری مدد فرمایئے مجھے اپنی حفاظت کے قلعہ میں لے لیجیے میں آپ کی پناہ حاصل کرنے آیا ہوں مجھے دشمنوں سے بچا لیجیے، تو یہ سب عین توحید کے مطابق شرک کی آلائش تک یہاں نہیں پائی جاتی اور اگر ہمارے بزرگ کہہ دیں۔

میں تو مالک ہی کہوں گا کہ ہو مالک کے حبیب
یعنی محبوب و محب میں نہیں میرا تیرا

## زبان وادب کے ضابطے معطل:

تو آپ کو اپنے حواس پر قابو رکھنا مشکل ہو جاتا ہے۔ عقل کے تمام تقاضے بالائے



طاق ہو جاتے ہیں۔ اپنے قلم پر ہرگز کنٹرول نہیں رہتا وہ بے لگام دوڑا جاتا ہے حقائق کی پرواہ تک نہیں رہتی زبان وادب کے تمام ضابطے معطل ہو کے رہ جاتے ہیں۔ آپ اس طرح کی عبارات لکھتے ہیں جو دوسروں کو کیا سمجھ آئیں گی خود آپکو بھی وہ سمجھ نہیں آتی ہوں گی۔

چند الفاظ تو آپکے پسندیدہ ہیں۔ بدعت، گمراہی اور شرک انکا استعمال تو آپکو ہر حال میں کرنا ہوتا ہے۔ موقعہ بنے نہ بنے آپ نے ان الفاظ کو ضرور استعمال کرنا ہوتا ہے شاید ان کے استعمال سے آپکو خاصا سکون میسر آتا ہے ہم بھی اس کے مخالف نہیں ضرور ان الفاظ کو استعمال میں لایئے مگر یہ صرف ہمارے لئے اور ہمارے اکابر کے لئے ہی نہ ہوں بلکہ ان سب کے لئے ہونے چاہیے جو ان کا مصداق ہیں آپ کا نظریہ یہ ہے کہ مدد کیلئے صرف اللہ تعالیٰ ہی کو پکارنا چاہیے اور اگر اللہ تعالیٰ کے علاوہ کسی اور کو یاد کرے تو وہ بدعت ہے، گمراہی ہے اور یہاں تک کہ آپ مشرک کہنے سے بھی گریزاں نہیں ہوتے تو اب آپ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو کیا کہیں گے۔ ہاں ہاں لگا دیئے وہ فتویٰ جو ہم غریبوں پر لگایا تھا۔ اگر ذہن سے اتر گیا ہے تو میں ایک بار پھر دہرا دیتا ہوں تا کہ تازہ ہو جائے۔ لیجیے مطالعہ فرمایئے۔ نواب صاحب یوں عرض کرتے ہیں۔

## حالِ دل سنایئے:

"آپ اپنی محبت کے سبب بندہ پر احسان فرمایئے دشمنوں کے ڈر سے آپکی حفاظت و پناہ حاصل کرنے آیا ہوں لہذا بچا لیجیے"۔

(نفح الطیب ص ۱۱ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



قارئین محترم! آپ نے مطالعہ فرمالیا ہمارا نقطہ نظر کیا ہے اور امیر حمزہ صاحب کا نقطہ نظر کیا۔ ایک ہی بات، ایک ہی نظریہ، ایک ہی عقیدہ، ایک ہی اظہار بیان مگر فتوی میں تضاد، اگر ہم کہیں یارسول اللہ ﷺ آپکی بارگاہ میں گھبرائے ہوئے آئے ہیں دشمن پیچھا کررہے ہیں۔ آپ تحفظ عطا فرمایئے تو یہ شرک اور اگر یہی بات اہلحدیث کے بزرگ امام نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کہیں تو توحید فیصلہ آپ فرمایئے۔

بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں کس طرح عرض حال پیش کی جاتی ہے۔ حال دل سنانے کیلئے دلی جذبات کس طرح کی ہونے چاہیں۔ آیئے جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی صاحب کا ایک انداز آپکی خدمت میں پیش کردوں مطالعہ فرمایئے دل باغ باغ ہوگا۔

کن انت مخرون جارجنة
من هذا البلوی وذی الاواع

(نفح الطیب ۲۷ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

یارسول اللہ ﷺ آپ ہی پریشان حالوں کے محافظ ہیں اس بلوی کی سختی ورنج والم میں۔

## مصائب وآلام کا علاج!

جب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی پر مصیبت ٹوٹی، مصائب وآلام نے ان کی طرف رخ کیا تو اب ہوش ٹھکانے آئے اور یقین آگیا کہ اب کوئی اور مدد نہیں کرسکتا، اب مال ومنال بھی نفع نہیں دے سکتا اب اگر کوئی مددگار ثابت ہوسکتا ہے اور اب اگر کوئی مشکل میں کام آسکتا ہے اب اگر کوئی مصائب وآلام کی شدت کو ختم کرسکتا ہے اب اگر کوئی مصیبت ٹال سکتا ہے اب اگر کوئی بگڑی بنا سکتا ہے تو وہ فقط امام الانبیاء



حضرت محمد رسول اللہ ﷺ ہی ہیں جنکے دم قدم سے مصائب وآلام ختم ہوسکتے ہیں جنکی یاد سکون قلب کا باعث بن سکتی ہے، جنکی محبت تمام مصیبتوں کا مقابلہ کرنے کی جرأت پیدا کرسکتی ہے۔

اب نواب صاحب نے قلم اٹھایا اور اپنے قلبی جذبات واحساسات کا اظہار کیا۔ آپ بھی اس کا مطالعہ فرمائیں۔

"یارسول اللہ ﷺ آپ ہی، پریشان حالوں، بلوی زدوں، رنج والم کی سختی برداشت کرنے والوں کی ڈھال ہیں"۔

(نفح الطیب ۲۱ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

## مصیبت کسی پر بھی آسکتی ہے:

مجھے کہنا صرف یہ ہے۔ کیا مصیبت صرف اہلحدیث حضرات پر ہی آتی ہے کسی اور پر نہیں آتی۔ کیا مصائب وآلام کا بازار اہلحدیث ہی کیلئے گرم ہوتا ہے کسی اور کیلئے گرم نہیں ہوتا۔ کیا مشکل صرف انہی پر آتی ہے کسی اور پر وارد نہیں ہوتی۔ کیا کام صرف اہلحدیث ہی کے بگڑتے ہیں کسی اور کے کام نہیں بگڑتے۔ اس کا جواب درکار ہے اور جواب یقیناً یہی ہے کہ کیوں نہیں مصیبت کسی پر بھی آسکتی ہے، مصائب وآلام کا بازار کسی کیلئے بھی گرم ہوسکتا ہے۔ مشکل کسی پر بھی پڑسکتی ہے اور کام کسی کا بھی بگڑسکتا ہے۔

اگر مصیبت کا آنا، کام کا بگڑنا، مشکل پڑنا یہ رسول کریم ﷺ کو پکارنے کی دلیل ہے جیسا کہ مصائب کے وقت نواب صدیق حسن خاں بھوپالی نے پکارا ہے تو جب یہ نعرہ انکے لئے شرک نہیں تو دوسروں کے حق میں شرک کیوں ہوگا کیوں جناب نواب صاحب نے کوئی خاص قسم کا لباس زیب تن کیا ہوا تھا جو وہ شرک پروف (SHIRK

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



انکے لئے شرک نہیں تو دوسروں کے حق میں شرک کیوں ہوگا کیوں جناب نواب PROOF) ہوگئے تھے۔

## یارسول اللہ ﷺ کہنا تقاضاءِ ایمان ہے۔

جواب درکار ہے امیر حمزہ صاحب سے، مجھے انتظار رہے گا۔ میں اپنے تیس سالہ تجربے کی بنا پر قبل از وقت کہے دیتا ہوں۔اب قیامت تک جواب نہیں آئے گا کیونکہ جو شرک ہمارے کھاتے ہیں ڈال کر اپنے تائیں کامرانی کا دروازہ کھٹکھٹایا تھا اور ہمارے خلاف پوری طرح عام الام بندی کرنے کی کوشش کی تھی شرک کی جو مالا ہمارے گلے میں ڈالنے کی کوشش کی تھی امیر حمزہ صاحب کے اپنے ہی گلے کا طوق بن گئی اب آزادی کا صرف ایک ہی راستہ ہے یا تو نواب صدیق حسن خاں بھوپالی صاحب پر شرک کا فتویٰ لگا کر انکو اپنی صفوں میں سے خارج کریں اور انکو مشرک قرار دیں اور خود دونوں ہاتھ کھڑے کر کے اعلان کریں ہمارا ایسے نواب سے جو شرک کرتا ہو کوئی تعلق نہیں لہٰذا ہم نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو اپنے زمرۂ اہلحدیث سے خارج قرار دیتے ہیں۔

دوسری صورت پھر صرف یہ ہے کہ کھلے لفظوں میں امیر حمزہ صاحب تسلیم کریں اور اس مسلمہ حقیقت کا اعلان کریں کہ مجھ سے غلطی ہوئی ہے میں توبہ کرتا ہوں اور عقیدہ و نظریہ وہی درست ہے جو نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کا ہے اور ہم اعلان کرتے ہیں کہ اپنے آقا اپنے مولی امام الانبیاء، حضرت محمد ﷺ کو یارسول اللہ کہہ کر یاد کرنا اور بوقت مصیبت رسول اللہ سے مدد طلب کرنا شرک نہیں بلکہ عین تقاضاءِ ایمان ہے۔

یہ رسول اکرم تاجدار عرب و عجم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی شانِ رفعت کو کس طرح بیان کرتے ہیں اور آپکی بارگاہ میں کن جذبات و احساسات کا اظہار کرتے ہیں تاکہ آپ کی توجہ کی برکات حاصل کی جاسکیں، امیر حمزہ صاحب آیئے آپکو آپکے نواب



صدیق حسن خاں بھوپالی صاحب کا ایک اور انداز دکھاؤں مطالعہ فرمایئے دل راحت پائے گا۔

یا ایھا الشمس الرفیع مکانہ
ضاءت بنورک ساحة الرباءِ

(مع الطیب از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

اے بہت ہی بلند و بالا مقام والے آفتاب آپ ہی کے نور سے زمین و آسمان کی وسعتیں روشن و تاباں ہیں۔

## بناوٹی گرج:

اگر ہم اور ہمارے بزرگ اپنے آقا مولیٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے لئے ایسے جذبات و احساسات کا اظہار کریں تو امیر حمزہ صاحب لٹھ لیکر ہمارے پیچھے پڑ جاتے ہیں اور دوڑتے ہوئے وہ ہانپنے لگ جاتے ہیں پیچ و تاب کھا کھا کر ہم پر گرجتے ہیں اور اپنی بناوٹی گرج سے ہمیں ڈرانے دھمکانے کی بھرپور کوشش کرتے ہیں۔

(وہ ایک جگہ اس قدر برہم نظر آتے ہیں گویا عقل و دانش سے پیدل ہی ہوگئے ہوں)

## شکستِ فاش:

اگرچہ وہ اس کوشش میں قطعاً ناکام ہی رہتے ہیں مگر پورا زور صرف کر کے وہ دوسروں کو اپنی طرف مائل کرنا چاہتے ہیں مگر ہمارے دلائل کے سامنے انکی چلتی نظر نہیں آتی میرے رب نے چاہا تو انکو اس میدان میں ایسی شکست فاش ہوگی کہ دوبارہ کبھی ان بزرگوں، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی، حضرت بابا فرالدین گنج شکر، حضرت علی بن عثمان ہجویری المعروف بہ داتا

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



گنج بخش، حضرت شیخ سید عبدالقادر جیلانی غوث اعظم، حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء دہلوی، حضرت شاہ بہاؤالدین ذکریا ملتانی، حضرت شاہ رکن عالم ملتانی، حضرت خواجہ رضی الدین محمد باقی باللہ، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی، حضرت بابا بھلے شاہ اور حضرت شہباز قلندر رضی اللہ عنہم کے خلاف لکھنے اور ان پر تنقید کرنے کی جرأت نہ ہو گی۔

## نداء یارسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم!

نواب صدیق حسن خاں بھوپالی اگر "یا" کے صیغے سے نداء کریں تو بالکل درست وہ اگر یوں عرض کریں۔

**یاایھاالشمس الرفیع مکانه ضاء ت بنورک ساحة الریاء**

(نفح الطیب الخ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

اے بلند و بالا مقام کے حامل اے آفتاب آپ کے نور سے ہی زمین و آسمان کی وسعتیں روشن وتاباں ہیں۔

اس پر کوئی اعتراض نہیں اور اگر ہم "یارسول اللہ ﷺ" کہیں یوں عرض گزار ہوں اور معروضات بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں پیش کریں تو ہم پر پوری آب وتاب سے چڑھائی کردی جاتی ہے۔ اعتراضات کی بارش کردی جاتی ہے اور سانس تک لینے کی فرصت مفقود ہوئی جاتی ہے۔ اگر رسول اکرم تاجدار عرب وعجم حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو یارسول اللہ کہہ کر پکارنا شرک ہے اور "یا" کے صیغے سے شرک لازم آجاتا ہے تو نواب صاحب نے کوئی خاص قسم کا میک اپ کیا ہوا تھا جوان پر شرک لازم نہیں آیا۔



## دلائل کی قوت:

امیر حمزہ کچھ تو خوف خدا دامن گیر ہونا چاہیے اس قدر ستم ظریفی بھی اچھی نہیں ہوتی اگر آپ واقعی سچے ہیں تو "یاایھاالشمس" کہنے پر نواب صدیق حسن خاں بھوپالی پر شرک کا فتویٰ صادر کریں اور حق توحید ادا کریں اور اگر آپ کے نواب صاحب "یا" کے صیغے سے رسول اکرم ﷺ کو پکارنے سے یاد کرنے سے شرک نہیں ہوا تو ہم غریبوں پر بھی رحم فرمایئے اور اپنی توپ کا دہانہ کسی اور جانب موڑ لیجئے ورنہ آپ کی توپ کا دہانہ ہم دلائل کی قوت سے نہ صرف موڑ دیں گے بلکہ توڑ کے رکھ دیں گے۔ لیجئے یہ ہوا، وہ ہوا، ہُوا، ہوا۔

## اندازِ محبت:

اپنے آقا و مولی حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو کس انداز محبت و عشق سے پکارا جائے کہ آپکی شفاعت کبریٰ سے حصہ وافر پایا جا سکے آیئے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی ہی کو دیکھیں وہ کیا انداز اختیار کرتے ہیں امیر حمزہ صاحب لیجئے اپنے قائد کو پڑھیے اور حسن قلم پر داد کردیجئے۔

**ولک الشفاعة والمکانة وفی غدٍ**
**ولانت اکرم معشر الشفعاءِ**

(نفح الطیب الخ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

کل قیامت کے دن (مقام محمود) پر شفاعت آپ ہی کو زیبا ہوگی۔ شفاعت کرنے والی ساری جماعت کی امامت کی عزت وعظمت بھی آپ ہی کو حاصل ہو گی۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## دلائل راکٹ: (Rocket of Arguments)

نواب صدیق حسن خاں بھوپالی نے جس طرح رسول اکرم ﷺ کے مقام شفاعت، مقام محمود، علو مرتبت، روز قیامت آپکی شان بے مثال، آپکی بزرگی، آپکی شان جماعت انبیاء میں، اور آپکی عظمت و رفعت شفاعت کرنے والوں کی صف میں، کا بیان کیا ہے وہ واقعی قابل داد ہے۔

## ترکش ٹوٹ گیا:

امیر حمزہ صاحب اگر آپ تھوڑی سی فرصت اپنے معروف ترین اوقات میں سے نکال کر اپنے بزرگ، اپنے لیڈر، اپنے رہبر، اپنے امام اور اپنے نواب صاحب کی تحریروں کا مطالعہ فرما لیتے تو کم از کم آپ کو وہ ہزیمت تو نہ اٹھانا پڑتی جو اب ہمارے ہاتھوں اٹھانی پڑ رہی ہے۔

اب کیا کیا جا سکتا ہے، ہم کبھی بھی یوں دلائل کے راکٹ آپ کی جانب نہ برساتے اگر آپ نے جلیل القدر اولیاء کرام، محدثین عظام، مصنفین ذی احتشام اور عاشقان رسول ﷺ کو مورد الزام نہ ٹھہرایا ہوتا۔ مجھے معلوم ہے اب آپ کو بہت پشیمانی ہوگی کہ میں نے کیا کیا لکھ ڈالا ہے کاش میں اس طرح نہ لکھتا مگر اب وقت گزر چکا ہے تیر کمان سے نکل چکا ہے اب اس کو ترکش میں واپس ہرگز نہیں لایا جا سکتا۔ جس طرح اعمال اعمال کی رٹ لگا لگا کر عام مسلمانوں کو یہ باور کروانے کی کوشش کی تھی کہ سب کچھ اعمال ہی سے ہوگا اب جب لوگ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کے اشعار پڑھیں گے تو ان پر یقین ہو جائے گا کہ اہلحدیث غیر مقلدین کہتے کچھ ہیں اور کرتے کچھ ہیں۔ سب لوگوں پر یہ حقیقت اظہر من الشمس ہو جائے گی کہ جب



مصیبت پڑتی ہے تو سب غیر مقلد اپنی مشکل کو دور کروانے کیلئے محبوب رب غفور دانائے کل غیوب حضرت محمد رسول اللہ ﷺ ہی کی بارگاہ اقدس میں ملتجی ہوتے ہیں۔ انہی کی بارگاہ میں التجائیں کرتے ہیں انہی کو اپنا شافع نافع تسلیم کرتے ہیں یہ الگ بات ہے جب دوسروں پر تنقید کا بازار گرم کرنا مطلوب ہو تو پھر سارے ضابطے بھول جاتے ہیں انکو کچھ یاد نہیں رہتا یہ تک بھی مستحضر نہیں رہتا کہ ان کے اپنے بزرگ کیا کچھ لکھ گئے ہیں۔

اگر ان کو اپنے گھر کے بزرگوں کا مطالعہ ہوتا اور انکو یہ یاد ہوتا کہ انہوں نے اللہ تعالیٰ کے محبوب صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ عالیہ میں کس کس انداز سے معروضات پیش کی ہوئی ہیں تو کبھی بھی اہلسنت کے خلاف یوں زبان نہ کھولتے اور یوں قلم کو تحرک نہ دیتے۔

## حاجت مند:

امیر حمزہ صاحب رسول اکرم ﷺ کی بارگاہ اقدس میں اپنے آپکو اس طرح پیش کرنا جیسے ایک نہایت مجبور بے کس اور حاجت مند کو کیا جاتا ہے۔ یہ آپ ہی کے بزرگوں کو زیب دیتا ہے۔ اس لئے کہ وہ تو اللہ والے ہیں، وہ تو کسی غیر کی طرف رجوع کرتے ہی نہیں بس اتنی بات ضرور ہے اگر کوئی سنی مسلمان انکی بارگاہ عالیہ میں عرض گزار ہو وہ التجا کرے وہ ان کو مدد کیلئے پکارے تو شرک شرک کا وہ طوفان آتا ہے کہ تھمنے کا نام نہیں لیتا اور اگر آپ کے اپنے بزرگ یہ سب کچھ کریں تو نہ شرک نہ بدعت نہ گمراہی اور نہ ہی مورد الزام کیا سٹائل ہے کام کرنے کا کیا طریق کار ہے تبلیغ دین کا۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



اگر امام الانبیاء حضرت محمد رسول اللہ ﷺ کی بارگاہ معتبر سے ہم سوال کریں بھیک مانگیں تو اعتراضات کی بھر مار کر دی جاتی ہے اگر اپنے بزرگ یہ عمل کریں تو ان کی فضیلت بیان کی جاتی ہے انکی مدحت کا ایسا ترانہ الاپا جاتا ہے کہ جس کی دھن بھی بالکل نئی نویلی ہوتی ہے اس جدید دھن پر امیر حمزہ صاحب نے اپنا ترانہ گایا ہے مگر ہم نے پکڑ لیا ہے۔

ع کیا ایک امتی اپنے آپ کو رسول اکرم ﷺ تاجدار عرب و عجم ﷺ کا بندہ کہہ سکتا ہے؟ اگر کہہ سکتا ہے تو کوئی دلیل، امیر حمزہ صاحب آیئے آپکے نواب صدیق حسن بھوپالی صاحب کی نفح الطیب کی سیر کرواؤں تاکہ آپکو حق آسانی سے نظر آنے لگے۔

ورجاء عبدک من جنابک سیدی

نیـل الشـفـاعـة زبـدة الا لا ء

(نفح الطیب ۱۲ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

سیدی آپ کا بندہ آپکی جناب میں امید لیکر حاضر ہے سختیوں کی نہایت کے عالم میں آپ ہی شفاعت کا مرکز ہیں۔

**عبد مصطفےٰ (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم):**

امیر حمزہ صاحب دیکھا انداز بیان اپنے بزرگ محترم کا، اندازہ لگایئے ان جذبات واحساسات کا جن میں اللہ تعالیٰ کے پیارے رسول امام اولین وآخرین کو پکارا جارہا ہے طرز تکلم بتا رہا ہے بات کرنے والا دل وجان سے یہ عقیدہ رکھتا ہے کہ میں ”عبد مصطفےٰ“ ہوں یہی وہ مبارک نسبت ہے جس کو آپ شرک تک قرار دینے سے ذرا گریز نہیں کرتے اب میں بھی نہایت سادگی سے عرض کروں گا۔

جناب من اٹھایئے قلم پکڑیئے کاغذ اور لکھیے فتوئی نواب صدیق حسن خاں بھوپالی



کے خلاف اور وہ فتوئی وہی ہونا چاہیے جسکے صادر کرنے کے آپ عادی ہیں آپکی عادت ہے کہ ذرا سی بات خلاف مزاج ہوئی تو فوراً شرک شرک کی رٹ لگادی اب بھی سرعت سے آگے بڑھیے اور بلا تامل شرک شرک شرک کی اولاً حسب عادت گردان فرمایئے اور پھر ابھی گردان کی گرج تھمنے بھی نہ پائے تو عجلت سے نواب صاحب پر شرک کا فتوئی داغ دیجئے تاکہ حق توحید ادا ہو اور ہم بھی آپکو داد تحسین دیں۔

یہ تو کوئی انصاف نہیں آپ کے بزرگ نواب صدیق حسن خاں بھوپالی اپنے آپ کو عبد رسول ﷺ عبدالنبی اور عبد مصطفےٰ کہیں تو عین توحید اگر امام احمد رضا خاں قادری محدث بریلوی نور اللہ مرقدہ اپنے آپ کو عبد مصطفےٰ کہیں کھلا شرک کیا منافقت اسی کو تو نہیں کہتے اگر ذہن سے اتر گیا ہو تو میں پھر یاد دلا دیتا ہوں۔

جاء عبدک من جنابک سیلی

(نفح الطیب ۱۱ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

سیدی آپکا بندہ آپ کی جناب میں امید لیکر حاضر ہے کیا کہنا آپکا اور آپ کے اکابر کا۔ امام احمد رضا لکھتے ہیں

خوف نہ رکھ رضا ذرا تو تو ہے عبد مصطفےٰ
تیرے لئے امان ہے تیرے لئے امان ہے

(حدائق بخشش)

**شرک کی وادی:**

امیر حمزہ صاحب بھاگنے کا کوئی راستہ ہے تو نکال لیجئے اور سارا زور لگا کر بھاگیے تاکہ آپ اس خطرناک وادی سے نکل جائیں مگر آخر نکلیں گے کدھر ہم نے تو الحمد للہ آپکی

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



عام لام بندی کر دی ہے۔ جدھر رخ کریں گے دلائل کی آڑ اور فصیل قائم ہو گی آپ کو نکلنے نہ دی گی اب صرف دو ہی راستے ہیں یا تو نواب صدیق حسن خاں بھوپالی پر اسی طرح اعتراضات کا مینہ برسایئے اور آخر کار ان کو شرک کی وادی میں دھکیل دیجئے یا پھر اس بات کا کھلم کھلا اعتراف کر لیجئے کہ میں نے اپنی مؤلفات ''شاہراہ بہشت''، ''آسمانی جنت اور درباری جہنم'' اور ''مذہبی و سیاسی باوے'' میں جو کچھ لکھا ہے وہ میرا سہو ہے مجھ سے غلطی ہوئی ہے جو میں نے اظہار ادبی کیلئے عبارات لکھ ڈالی ہیں دراصل وہ حقائق سے دور ہیں۔

## قطعاً زیب نہیں دیتا!

امیر حمزہ صاحب آپ کو قطعاً زیب نہ دیتا تھا کہ آپ اپنے قلم کو اس قدر بے احتیاطی سے چلائیں کہ دوسروں پر آپکے قلم سے نکلے ہوئے الفاظ اور جملے تیر بن بن کر لگیں آپ کا انداز بیان انتہائی لوئر (LOWER) درجے کا ہے مگر میں نے باوجود اسکے کہ آپ کا جواب اسی لب و لہجے میں آنا چاہیے تھا نہ دیا اور نہایت متین انداز میں آپ کا جواب لکھا ورنہ میں الفاظ اور جملوں کی وہ بھرمار کرتا کہ آپکو اپنے حواس قائم رکھنا مشکل ہو جاتے۔ اب فیصلہ قارئین خود کر لیں گے حق کیا ہے اور باطل کیا؟ میری یہ تحریر اہل حق پر پڑنے والے سارے غبار کو ہٹا دے گی اور مطلع بالکل صاف کر دے گی اور حق کی راہ بہت واضح اور بین نظر آنے لگے گی ہر مسافر راہ حق کو منزل مقصود تک پہنچنا آسان ہو جائے گا۔

## وسیلہ:

کیا رسول اکرم حضرت محمد رسول اللہ ﷺ کے بارے یہ کہا جا سکتا ہے کہ آپ



میرے وسیلہ ہیں؟ اگر کہا جا سکتا تو دلیل لایئے؟ جناب امیر حمزہ صاحب آپکو اس مسئلہ میں بھی جناب نواب صدیق حسن خاں بھوپالی ہی کی خدمت میں لئے چلتا ہوں ان شاء اللہ حق قریب سے نظر آنے لگے گا لیجئے مطالعہ کیجئے۔

وعظیم رجوی ان تکون وسیلتی
فی عفو زلاتی بیوم جزائی

(ختم الطیب الخ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

مجھے (نواب حسن خاں کو) بڑی امید ہے آپ میرے وسیلہ ہو نگے یوم جزا کو میری کوتاہیوں کی معافی کیلئے۔

## بانسری ٹوٹ گئی!

امیر حمزہ صاحب آپ نے جو زبان وسیلہ پکڑنے کے خلاف چلائی ہے، اہل قبور سے کسی طرح کی بھی امداد جائز رکھنے والوں پر جو طنزیں کی ہیں قبوری قبوری کہہ کر جو اپنی کامرانی کا جھنڈا لہرانے کی کوشش کی ہے وہ آپ کے نواب صدیق حسن خاں بھوپالی نے تار تار کر دیا ہے اب آپ کا جھنڈا لہرانا تو درکنار اس کے چیتھڑے بھی اس لائق نہیں رہے کہ وہ ہوا میں حرکت کر سکیں۔

جس بانسری پر آپ نے اپنا پرانا راگ نئی دھن بنا کر الاپنا چاہا وہ بانسری ہی ٹوٹ گئی لہٰذا اب دھن نئی راگ پرانا ہو یا راگ نیا ہو دھن پرانی دونوں ہی نہیں گائے جا سکتے۔ وہ بانسریاں جن پر آپ نے اپنے راگ الاپے تھے وہ سب ہی ٹوٹ گئی ہیں اور واللہ ضربیں ہم نے نہیں لگائیں بلکہ ضربیں بھی آپ کے اپنے ہی ہاتھوں لگی ہیں بس یہ اللہ تعالیٰ کی قدرت ہے اس نے آپکی بانسری آپ کے اپنے ہی ہاتھوں تڑوا دی ورنہ ہم زیر عتاب آتے۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## آپ کی خواہش کے برعکس ہوا:

ویسے آپ نے راگ تو پورے زور پر الاپا ہے اور دھن بھی زبردست بنانے کی کوشش کی ہے چاہتے آپ یہ تھے دو دو ہاتھوں سے لوگوں کو اپنے قریب کیا جائے۔ کسی کو دھن سنا کر قابو کیا جائے اور کسی کو راگ الاپ کر مگر ہوا بالکل اس کے برعکس نہ تو کوئی آپکی دھن سے متاثر ہوا اور نہ ہی کسی کو آپ کا راگ راس آیا۔ مجمع تو بنا نہیں لہذا اپنی ڈگڈگی بجا کر خود ہی کھسیانے ہو کر چپ چاپ بیٹھ گئے۔

## زبان ہے یا کرائے کی موٹر سائیکل (Rent A Bike):

اگر عام مسلمان رسول اکرم نبی محتشم حضرت محمد مصطفےٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو اپنا وسیلہ بنائیں اُنکی وساطت سے رب تعالیٰ کے حضور دعائیں مانگیں انکو شافع نافع مانیں تو آپ کی زبان اپنے اختیار میں ہی نہیں رہتی وہ اس طرح چلتی ہے جیسے لڑکے کرائے کی موٹر سائیکل لیکر چلاتے ہیں بلکہ اس سے بھی دو قدم آگے ہی نکل جاتی ہے، یوں محسوس ہوتا جیسے جب سے آپ نے بولنا شروع کیا تھا اس وقت سے لیکر آج تک کوئی اور بولی آپ کو سکھائی ہی نہیں گئی سوائے اس کے فلاں کام بدعت، فلاں کام گمراہی اور فلاں عمل شرک، یہ وہ الفاظ ہیں جنکے آپ پکے حافظ ہیں اور ان کو ترکیبیں بدل بدل کر استعمال کرنے کے ماہر ہیں اگرچہ انکے اطلاقات سے آپ بالکل بے خبر ہی کیوں نہ ہوں۔

الٹی سمجھ کسی کو بھی ایسی خدا نہ دے
دے آدمی کو موت پر یہ بد ادا نہ دے



## درگزر:

آپ اب بڑی مضبوطی سے قابو آئے ہیں نکل کر تو دکھایئے گا اگر آپ کے نواب صاحب کی التجاء جو انہوں نے بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں کی ہے۔ ذہن سے اتر گئی ہو تو میں دوبارہ یاد کروا دیتا ہوں لیجئے تازہ فرمایئے۔

یارسول اللہ! مجھے، نواب صدیق حسن خاں بھوپالی کو پکی امید ہے کہ آپ میرے لئے وسیلہ ہونگے۔ قیامت کے دن آپ ہی کے سبب میری نافرمانیوں سے در گذر ہوگا۔

(نفح الطیب ۱۱۔ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی)

امیر حمزہ صاحب اگر آپ کے نواب صاحب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو وسیلہ مانیں انکی بارگاہ اقدس سے پکی امید وابستہ کریں کہ انکی بخشش اور انکی لغزشوں سے درگزر محض رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہی کے وسیلہ سے ہوگا تو عین توحید اور اگر ہم یہی بات کہہ دیں تو شرک آخر کیوں یہ دورخی کیوں پوری ملت اب فیصلہ کردے گی جو جو الزام ہم پر امیر حمزہ نے لگائے ہیں سب جھوٹے ہیں جن اعمال و افعال کو وہ شرک قرار دیتے ہیں خود انکے بزرگ وہ عمل کرتے رہے۔

وسواک مالی فی القیامۃ شافع
انت المخلص لی من الباساءِ

(نفح الطیب ۱۱ از نواب صدیق حسن خاں بھوپالی

قیامت کے دن آپ کے علاوہ میرے لئے کوئی شافع نہ ہوگا، بس آپ ہی مصیبتوں میں میری خلاصی کا باعث ہوں گے۔

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



## آج لے انکی پناہ!

امام احمد رضا خاں قادری محدث بریلوی نور اللہ مرقدہ، اپنی مشہور زمانہ نعت، نعمتیں بانٹتا جس سمت وہ ذیشان گیا ساتھ ہی منشی رحمت کا قلمدان گیا، میں ایک شعر اس طرح سے لکھا ہے۔

آج لے ان کی پناہ آج مدد مانگ ان سے
پھر نہ مانیں گے قیامت میں اگر مان گیا

(حدائق بخشش)

امیر حمزہ صاحب امام احمد رضا رحمۃ اللہ علیہ کے کلام پر آپ نے اعتراضات کیے ہیں اب دیانت داری سے مولانا شاہ احمد رضا قادری کا اردو کا شعر اور نواب صدیق خاں بھوپالی صاحب اپنے لیڈر، اپنے بزرگ کا عربی شعر آمنے سامنے رکھ لیں اور موازنہ کریں کیا دونوں جگہ فکر ایک جیسی نہیں کیا دونوں کا مرکزی خیال ایک نہیں کیا دونوں میں رنگ الفت ایک نوعیت کا نہیں کیا دونوں میں قیامت کے دن شفاعت کی طلب کا جذبہ ایک سا نہیں اگر ہے اور یقیناً ہے تو پھر اعتراض کیا۔ اگر آپ اور آپ کے بزرگ اندر بیٹھ کر امام الانبیاء کی شفاعت کے قائل ہیں انکی مدد کو برحق سمجھتے ہیں تو آخر اس کا اعلان کرنے میں کیا حرج ہے دوسری طرف مولانا احمد رضا خاں قادری رحمۃ اللہ علیہ ہیں وہ اندر بیٹھ کر رسول اللہ ﷺ کے کمال اور آپکی امداد باذن اللہ کے قائل ہیں تو منظر عام پر بھی اسی کا اعلان واظہار کرتے ہیں مگر آپ کا حال یہ ہے اندر بیٹھ کر وہ سب کچھ تسلیم بھی کرتے ہیں اور انہی کیفیات کو قلم بند بھی کرتے ہیں مگر جب اعلان واظہار کا وقت آئے تو آپ لوگوں کو سانپ سونگھ جاتا ہے نامعلوم اس میں راز کیا ہے۔



## نفرت کی مالا!

ہم کبھی بھی یوں آپ کی خاں دتلاشی نہ لیتے اور نہ ہی آپ کا اندرونی حال طشت از بام کرتے مگر آپ کے مضامین میں کچھ ایسی تندی آ گئی تھی جو حدود اخلاق کو پامال کر رہی تھی اس میں شستگی نام کی کوئی چیز نہ رہی تھی بلکہ یوں لگتا تھا جیسے آپ نے ہمارے بزرگوں کے خلاف لکھ لکھ کر جھوٹ بولنے میں اول انعام کہیں سے جیتنا ہے یہ تو مجھے معلوم نہیں انعام آپ نے جیتا یا نہ جیتا اتنا ضرور معلوم ہے کہ نفرت کی ایک لمبی مالا آپ کے گلے میں ضرور آن پڑی اور اس کو سنبھالتے سنبھالتے آپکی گردن میں وہ خم آیا کہ اب شاید مرتے دم تک دوبارہ سیدھی نہ ہوگی۔

## تشفی قلب نصیب ہو!

لحاظ نام کی کوئی چیز آپ نے مروت کے طور پر بھی پاس نہ رکھی ظاہر ہے جب آپ نے اس طرح کا طرز عمل اپنایا تو اب آپ کو جواب آن غزل تو دینا ہی ہوگا تو سننے کی ہمت پیدا کیجئے۔

امیر حمزہ صاحب آپ نے تو اولیاء کرام صوفیاء عظام کے خلاف زبان وقلم چلانے کا ٹھیکہ لے رکھا ہے اہل ایمان کو مشرک بناتے بناتے آپ خود بے حمیت ہو گئے ہیں تو اب کیا کیا جائے آیئے میں آپکو آپکے گھر کا حال سناؤں تاکہ تشفی قلب نصیب ہو۔ آپ بزرگوں کے کمالات کا تو انکار کرتے ہیں مسلمانوں کو مشرک بنانا اور ان پر شرک کے فتوے صادر کرنا آپکا دل پسند مشغلہ ہے دوسری طرف آپ لوگ مشرکوں کی تعریف وتوصیف میں خوب خوب رطب اللسان ہیں رکھیے دل پر ہاتھ گھبرانہ جایئے گا ہمت و جرأت کر کے حق سنئے گا۔ آپ کے بڑے تو مہاتما گاندھی جیسے مشرک جلی کے لئے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



بڑے نیک جذبات رکھتے ہیں مطالعہ فرمائیے۔

سلام النیل یاغاندی
وهذاالزهر من عندی

(القراۃ الاعدادیہ جز ثانی ۲۳۵)

یاگاندھی دریائے نیل کی طرف سے بھی سلام ہو اور میری طرف سے یہ پھول قبول فرمائیں۔

## صحافت کی ڈگری!

امیر حمزہ صاحب کیوں دم گھٹنے لگا ہے، سانس کا تسلسل کیوں اکھڑا جاتا ہے جب آپ کسی پر حملہ کریں گے تو کیا وہ آپکو پھولوں کا تحفہ پیش کرے گا چاہیے تو یہ تھا آپ بزرگوں کے خلاف قلم نہ چلاتے مگر آپ نے مزے لے لے کر بڑے بڑے اکابر اولیاء اللہ کے خلاف جھوٹی باتیں بنا بنا کر مذاق اڑانے کی کوشش کی ہے تو جواب بھی سنئے تاکہ آئندہ آپکو نصیحت ہو جائے اور آپ بزرگوں کے خلاف ایک جملہ بھی لکھنے سے پہلے سو بار سوچیں پھر کہیں جا کر اسے سپرد قرطاس کریں یہ آپکی بھول تھی کہ میں جو مرضی لکھ دوں میرے مخالفوں کو کونسا لکھنا آتا ہے جو جواب آں غزل ہوگا آپ کو بھی صحافی بننے کا شوق اس میدان ناشناسا میں لے آیا اور آپ نے صحافت کی ڈگری لینے کے چکر میں، اپنے مضامین لکھ ڈالے مگر صحافت کی ڈگری ملنا تو درکنار الٹا آپ کے گلے میں لعنت کا میڈل لٹک گیا۔

## پھولوں کے تحفے:

گاندھی جیسے جلی مشرک کو سلام، پھولوں کے تحفے اور اولیاء اللہ کے خلاف سخت



زبان کا فلسفہ تو آپ ہی جانتے ہیں ہم تو اس کی ابجد سے بھی آگاہ نہیں ہیں۔ شرک کا رد کرنے میں جو آپ کا ظاہر نظر آتا ہے وہ باطن نہ تھا ظاہر میں رد شرک اور باطن میں مشرکوں سے دوستیاں انکو تحفے لینے دینے کی رسم اور اسکا اظہار انداز عاشقی اگر بھول گیا ہو تو میں یاد دلاتا ہوں لیجئے مطالعہ فرمائیے اور تازہ دم ہو جائے۔

سلام النیل باغاندی
وهذاالزهر من عندی

(القراۃ الاعدادیہ جز ثانی ۲۳۵)

یاگاندھی جی دریائے نیل سلام پیش کرتا ہے اور یہ سلام میری جانب سے پھول کی طرح تحفہ ہے۔

قارئین محترم! فیصلہ آپ فرمائیے ایک مشرک بت پرست کیلئے جو جذبات ان حضرات کے ہیں کیا وہ کسی توحید پرست کے ہو سکتے ہیں اہل ایمان کی قبروں پر پھول ڈالنا، وہاں حاضری دینا قصد کر کے جانا سب غلط اور ایک بت پرست گائے کی پوجا پاٹ کرنے والے کو پھولوں کا تحفہ واہ کیا صداقت ہے، مسلمان کی قبر پر حاضری شرک، وہاں سے تبرک حاصل کرنا شرک اور ایک مشرک کی تعریف جائز اس سے دوستی نہ صرف جائز بلکہ اسکو تحفہ لینا دینا بالکل درست اور اظہار محبت کا ذریعہ، معاملہ یہاں تک ہی نہیں رہا بلکہ اس نے آگے نکل گیا دیکھئے مطالعہ کیجئے۔

نبی مثل کو نفیشو
سن او من ذلک العهد

(القراۃ الاعدادیہ ۲۳۴)

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



مسٹر گاندھی کونفیشوس (چین والوں کا نبی) یا اسی کی مثل اس زمانے کا نبی ہے۔

## صاف صاف انکار!

امیر حمزہ صاحب آپ لوگوں کی قبولیت اور رد کا معیار سمجھنے سے میں قاصر ہوں ایک طرف تو آپ کو شرک کا ہیضہ ہوا رہتا ہے اگر ذرا طبیعت سنبھل جائے تو بدعت کی بد ہضمی ہو جاتی ہے آپ نہ مانیں تو بڑے بڑے ائمہ دین کو نہ مانیں انکی بزرگی کا صاف صاف انکار حتیٰ کہ امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ کی فقاہت کا انکار انکے اجتہاد سے راہ فرار امام مالک بن انس رضی اللہ عنہ کی قوت اجتہاد پر اعتراضات، حضرت امام شافعی محمد بن ادریس رضی اللہ عنہ کی علمی وفنی حیثیت پر جرح اور امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ جیسی جلیل القدر ہستی پر عدم اعتماد حضرت علی بن عثمان ہجویری داتا گنج بخش، حضرت شیخ سید عبدالقادر جیلانی غوث اعظم، حضرت سید الطائفہ جنید بغدادی، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی، حضرت بابا فرید الدین گنج شکر، حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء دہلوی، حضرت شاہ نصیر الدین محمود چراغ دہلوی، حضرت خواجہ بہاؤالدین ذکریا ملتانی، حضرت خواجہ شاہ رکن عالم ملتانی، حضرت خواجہ رضی الدین محمد باقی باللہ، حضرت مولانا سید حافظ محمد عثمان مروندی المعروف شہباز قلندر، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی اور امام احمد رضا قادری رحمۃ اللہ علیہم کی خدمات کا انکار۔ اور اگر ماننے پر آجائیں تو صریح مشرک مہاتما گاندھی جیسے شخص کی نہ صرف خدمات کا اعترافات بلکہ اس مشرک جلی کو ان القابات سے نوازتے ہیں کہ انسان حیرت زدہ ہو کے رہ جاتا ہے۔ الٰہی یوں بھی ہوتا ہے۔



## موحد کہیں یا شرک نواز!

ایک مشرک کو، ایک بت پرست کو، ایک منکر اللہ و رسول جل وعلا و صلی اللہ علیہ وسلم کو، نبی تک کہنے سے گریز نہیں کیا اب میں کیا کہوں قارئین ذی شعور فیصلہ آپ پر چھوڑتا ہوں آپ فرمایئے ان لوگوں کو ہم موحد کہیں یا مشرک نواز؟ اگر ذہن سے اتر گیا ہے تو میں پھر یاد کروا دیتا ہوں لیجیے تازہ مطالعہ فرمایئے۔

مسٹر گاندھی تو کونفیشوس یا اسی کی مثل اس زمانے کا نبی ہے۔

(القرآۃ الاعدادیہ ۲/۲۳۴)

## عقل ماؤف!

کبھی گاندھی کو دریائے نیل کا سلام ارسال کرتے ہیں، کبھی اس کو پھولوں کا تحفہ پیش کرتے ہیں کبھی اس کو نبی تک قرار دینے سے ذرا نہیں ہچکچاتے، عقل ماؤف ہو چکی ہے، دماغ چل گیا ہے۔ سوچنے سمجھنے کی تمام صلاحیتیں معطل ہو چکی ہیں جن لوگوں کی توحید کا یہ حال ہو ان کا اللہ ہی حافظ ہے۔

میں اللہ تعالیٰ کی جلالت کا واسطہ دے کر عرض کرنا چاہوں گا کیا اللہ تعالیٰ کے اولیاء کی حیثیت معاذ اللہ گاندھی جی سے بھی گر گئی ہے۔ گاندھی کو سلام، پھول بطور تحفہ اولیاء اللہ کے مقامات خداداد کا صاف انکار، انکی عزت وعظمت سے بالکل انحراف میں نے آپ کی یہ اندرونی صورت حال صرف اس لئے لوگوں کے سامنے رکھی ہے تاکہ انکو یہ فیصلہ کرنے میں آسانی ہو حق پرست کون اور باطل سے مخلوط کون۔

قارئین کرام! میں اب ایک اور تحفہ پیش کرنے لگا ہوں اس تحفے کو بغور ملاحظہ فرمایئے گا ان شاء اللہ دل گواہی دے گا شرک کا رد کرنے والے اور توحید کے دعوے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



داروں کی اپنی پوزیشن (Position) کیا ہے۔ مطالعہ فرمایئے

## قریب القول والفعل
## من المنتظر المہدی

(القراۃ الاعداویہ ۲۳۳)

**گاندھی یا مہدی منتظر:**

امیر حمزہ صاحب کیا نظر ہے کیا اعتراف حقیقت ہے، کیا خوب طریق استدلال ہے۔ کیا عمدہ انداز بیان ہے کیا ہی اعلیٰ طرز سخن ہے اظہار محبت میں گاندھی جی جو کہ قطعی مشرک ہیں انکی مدحت اور مدحت بھی اس انداز سے کہ جو صرف آپ لوگوں کو زیبا ہے۔ ایک طرف ردِ شرک، ردِ مقامات اولیاء اللہ اور دوسری طرف گاندھی جی کی جے کا نعرہ چلو اگر یہاں تک ہی رہتا کہ گاندھی جی کی جے تو بھی شاید معافی کی کوئی راہ نکل آتی مگر آپ لوگوں نے تو گاندھی جیسے انجث کو امام مہدی موعود علیہ السلام کی شبیہ قرار دیکر ساری ملت اسلامیہ کو سخت رنج پہنچایا ہے بلکہ شبیہ ہی کیا یوں کہہ دیا

## قریب القول والفعل
## من المنتظر المہدی

قول وفعل میں قریب قریب مہدی منتظر ہی ہیں۔ جن لوگوں کو گاندھی جیسی شخصیت مہدی منتظر نظر آنے لگے ان کی نظر کیمیا گر کو داد تحسین دینی چاہیے۔ میں بھی یہی محسوس کر رہا ہوں اس پر مجھے زیادہ تبصرہ کرنے کی ضرورت نہیں پڑھنے والے خود ہی سمجھ جائیں گے جن لوگوں کے نزدیک گاندھی جی کی ایسی تعظیم ہو ان کے نزدیک اولیاء اللہ کا کیا مقام ہو سکتا ہے۔ مزید مطالعہ فرمایئے۔



## شبیہ الرسل فی الدود
## عن الحق وفی الزہد

(القراۃ الاعداویہ ۲۳۲)

گاندھی جی اپنے اعمال، اظہار حق زہد وتقویٰ میں رسولوں سے مشابہت رکھتے ہیں۔

**کاش مٹ جائے یہ طرز فکر!**

ہائے ستم بالائے ستم، ہائے ظلم پر ظلم، ہائے بدعت، وائے گمراہی، تائے بے بضاعتی مجھ کو کچھ سمجھ نہیں آ رہا میں کلمات درد کو کس کس انداز میں استعمال کروں میں کیا کیا ضبط کروں اور کیا کیا اظہار کروں۔

قارئین کرام! میرا حوصلہ میرا ساتھ چھوڑ رہا ہے۔ میری ہمت جواب دے رہی ہے میرے اعصاب قوت برداشت سے کوسوں دور ہو رہے ہیں میں ان کو کس طرح اپنے امور کی انجام دہی پر بحال رکھوں کیا کروں کدھر جاؤں میں ان نام نہاد توحید پرستوں پر کن الفاظ سے تبصرہ کروں، کیا عبارات لکھوں، کیا انداز تحریر اپناؤں قسم ہے رب ذوالجلال کی میں تو کچھ لکھنے کی ہمت ہی نہیں پا رہا بس اب تو صرف آپ کو یہ دکھانا ہے جن لوگوں کے نزدیک گاندھی جسے مشرک کے اعمال رسولوں کے اعمال سے مشابہت اختیار کر جائیں ان کے اپنے نظریات کس نوعیت کے ہونگے۔

ہائے! کاش مٹ جائے یہ طرز فکر!

وائے!! فنا ہو جائے یہ طرز تحریر!!

تائے!!! عنقا ہو یہ انداز استدلال!!!

فیصلہ ہو گیا، گاندھی کی تعریف کرنے والے اور اسکو رسولوں سے مشابہت دینے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



والے قطعاً باطل ہیں اور الحمدللہ "یارسول اللہ" صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کہنے والے ہی حق پر ہیں خدا ان نعرۂ رسالت۔ (یارسول اللہ ﷺ کہنے) لگانے والوں کو سلامت رکھے ان کے اعمال اور معاملہ میں برکتیں عطا فرمائے ان کی اولادوں میں برکت دے، ان کے رزق میں اضافہ فرمائے ان کی عزت کو چار چاند لگائے اور ان کو دنیا و آخرت دونوں جہانوں میں سرخروئی نصیب کرے۔ (آمین ثم آمین)

## مشرکوں کی تعریف وتوصیف!

آپکی مؤلفات "آسمانی جنت اور درباری جہنم" "مذہبی وسیاسی باوے" "شاہراہ بہشت" کو پڑھ کر میں مجبور ہو گیا تھا اس لئے آپکی وہ خصوصیات جو آپکے ریکارڈ میں تھیں انکو تلاش کر کے منظر عام پر لایا ہوں۔ آپ کو جو درد بے نام کے دورے پڑ رہے تھے ان کا علاج بھی تو کرنا تھا اس لئے میں نے آپکی مشرکین نوازیاں دلائل کے ساتھ آپکی خدمت میں پیش کردی ہیں۔

قارئین محترم! فیصلہ آپ کریں، کیا توحید پرستوں کے انداز یہی ہوتے ہیں؟ کیا اہل حق کا کردار اسی نوعیت کا ہوتا ہے؟ کیا اہل دین کے نظریات اور عمل اسی طرز کا ہوا کرتا ہے۔ کلمہ پڑھنے والوں کے خلاف وہ وہ طنزیں، مزاح اور گھٹیا درجے کے الفاظ وہ جملے اور بت پرستوں، مشرکوں اور کافروں کیلئے نہایت عمدہ الفاظ پر جملے اور عبارات ان کو خراج تحسین انکی تعریف وتوصیف کبھی انکو پھولوں کے تحفے کبھی دریائے نیل کا سلام اور اولیاء اللہ کے لئے انتہائی ہلکے درجے کے الفاظ اور ساتھ ہی ساتھ ان کا مذاق اڑانے کی بھی کوشش۔



## عالم ماکان وما یکون:

ظاہر ہے اب تو دل دماغ دونوں نے ہی فیصلہ صادر کردیا ہے حق پر وہی لوگ ہیں جو اولیاء کرام کے ماننے والے ہیں، جو اہل دین کی قدر کرتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ کے محبوب دانائے کل غیوب عالم ماکان وما یکون حضرت محمد رسول اللہ ﷺ کے سچے پکے غلام ہیں اور محبت وعقیدت کے ساتھ، دل وجان سے کہتے ہیں لبیک یا رسول اللہ ﷺ

## امیر حمزہ صاحب کے گھر سے گواہی!

میں چاہتا تو نہیں تھا مگر مجبوراً مجھے آپ کی خدمت میں آپکے گھر سے ایک ایسی شہادت بھی پیش کرنا پڑی جو انتہائی دردناک ہے۔

امیر حمزہ کی اپنی جماعت "اہلحدیث" کے ایک معروف عالم قاری عبدالحفیظ صاحب کا "الدعوۃ والارشاد" کے مرکز طیبہ کے خلاف احتجاج، ماہنامہ صراط المستقیم سے قاری عبدالحفیظ صاحب کے انٹرویو کا ایک اقتباس پیش خدمت ہے لیجئے آپ بھی مطالعہ فرمایئے۔

سوال:- قاری عبدالحفیظ صاحب! آپ عوامی اجتماعات میں سخت اور نامناسب الفاظ میں ضیاء الحفیظ شہید کے قتل کا ذمہ دار مرکز الدعوۃ اور اسکی قیادت کو ٹھہرا رہے ہیں۔ آپ کے پاس کیا ثبوت ہے؟

جواب:- میں پوری ذمہ داری اور اعتماد کے ساتھ اس سوال کا جواب دے رہا ہوں۔ آپ اگر شائع کردیں گے تو میں سمجھوں گا آپ میرے دکھ میں شریک ہیں اور میں آپ کے اس دعوے پر یقین بھی کروں گا کہ آپ اہلحدیث جماعت

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کے خلاف ہونے والی ہر سازش کو بے نقاب کریں گے۔

سوال:- قاری صاحب! آپ جواب دیں۔ ہماری کوشش ہوگی کہ ہم من وعن شائع کریں؟

جواب:- اصل واقعہ یہ ہے کہ ۲۵ اگست ۱۹۹۱ء کو ان لوگوں نے میرے بیٹے ضیاء الحفیظ کو قتل کیا۔ جس جگہ ان لوگوں نے اپنا معسکر بنایا ہے اور جہاں یہ لوگ رہ رہے ہیں، وہاں کسی مخالف سے دو بدو جھڑپ کا کوئی خدشہ نہیں دھوکا ہے دھوکا۔ عوام کی آنکھوں میں دھول جھونکی جا رہی ہے۔ کاروباری مقاصد کے لئے کی جانے والی جدو جہد کو جہاد کا نام دیا جا رہا ہے۔ ناول نگاری اور افسانہ نگاری کی طرز پر جھوٹی ٹیبل سٹوریاں اپنے رسالہ میں شائع کرتے ہیں۔ قطعاً کوئی دشمن کی گولی لگ کر شہید نہیں ہوتا، یہ دھوکا دیتے ہیں۔

☆ عطا اللہ نامی لڑکے کو دریا میں اٹھا کر لے گئے اور بیچ منجدھار میں لے جا کر چھوڑ دیا کہ تقریباً شہید ہوا۔ مولانا عبدالرشید راشد کے بچے عبدالرؤف جانباز کو اس طرح مارا کہ وہ کتاب پڑھتے ہوئے جا رہا تھا۔ ان کی اپنی ایک چھوٹی سی توپ ہے، اس میں سے چھوٹا سا گولہ نکلتا ہے اس کے لگتے ہی وہ دریا میں گر جاتا ہے اسی طرح مولانا عبدالرفیق سلفی کے بچے اور دیگر بچوں کو یہ مارتے رہے ہیں۔

سوال:- اگر آپ کی بات صحیح بھی مان لیں تو بچوں کے قتل سے ان کو کیا فائدہ پہنچ رہا ہے؟

جواب:- یہ وسائل گاڑیاں، ائرکنڈیشن دفاتر دولت یہ سب انہی شہداء کے قتل کی قیمت ہی تو ہے جو انہوں نے عربوں اور پاکستان کے سادہ لوح



''اہلحدیثوں'' سے وصول کی ہے، یہی فائدہ ہے۔ بچوں کے قتل کا مسئلہ بحرین کویت اور دیگر بیرون ممالک ان کے بینک بیلنس موجود ہیں حقیقت یہ تھی کہ احمد مسعود نامی انہی کے ایک لڑکے کی فائرنگ سے میرا بچہ شہید ہوا۔ اس نے دو فائر کیے آپ بھی سمجھتے ہیں کہ اگر ایک فائر ہو تو اسے قتل خطا کہا جاتا ہے۔ لیکن دو فائر سے تو قتل خطا والی بات نہیں رہی۔

سوال:- آپ کو کس ذریعے سے پتہ چلا کہ آپ کا بیٹا احمد مسعود نامی لڑکے کی فائرنگ سے ہلاک ہوا ہے؟

جواب:- بعد میں ''الدعوۃ'' کے ہی کچھ افراد ان کے بڑے لیڈروں کے کرتوت دیکھ کر ان سے علیحدہ ہو گئے تھے۔ ان میں معسکر طیبہ کے امیر یاسین اثری اور معسکر اقصیٰ کے امیر محمد اشتیاق اور ایک دو اور افراد شامل تھے انہوں نے مجھے حقیقت حال سے آگاہ کیا یہ لوگ وہیں ہوتے تھے جہاں میرا بیٹا شہید ہوا ہے۔ یہ ساری صورت حال سے واقف تھے۔ لیکن جب مجھے حقیقت حال کا علم ہوا تو میرے دل کو شدید دھچکا لگا۔ میں نے پروفیسر سعید صاحب (سربراہ پروفیسر مرکز طیبہ۔ مریدکے) سے پوچھا کہ یہ کیا ہے کہنے لگے قاری صاحب وہ بچہ بڑا نیک ہے جس کے ہاتھ سے سہواً فائر ہو گیا جو ضیاء الحفیظ کو لگ گیا۔ وہ کہتا ہے مجھے نہیں پتہ کس طرح مجھ سے فائر ہو گیا۔

سوال:- حافظ سعید صاحب نے آپ کے سامنے اس بات کا اعتراف کیا کہ ضیاء الحفیظ کمیونسٹ کی گولی سے نہیں مرکز الدعوۃ ہی کے کسی لڑکے کے فائر سے شہید ہوا جو غلطی سے چل گیا تھا؟

جواب: ہاں بالکل! پروفیسر سعید صاحب نے اس بات کا اقرار کیا اور جس لڑکے

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



سے گولی لگی اس کا نام بتایا۔ براہ مہربانی آپ اسی طرح لکھیں جس طرح میں کہہ رہا ہوں۔ اگر قوم کا ایک بچہ بھی ظلم و بربریت سے بچ جاتا ہے تو آپ کا بہت بڑا احسان ہوگا۔

سوال:۔ کیا ابتداء میں مرکز میں الدعوۃ والوں کو بھی واقعہ کا صحیح علم نہیں تھا جس کی وجہ سے انہوں نے مجلہ الدعوۃ میں حقیقت کے برعکس رپورٹ شائع کی؟۔

جواب:۔ پتہ کیوں نہیں تھا جناب سب پتہ تھا مجلہ الدعوۃ میں جان بوجھ کر جھوٹی رپورٹ بڑی مہارت سے بنا کر چھاپی گئی۔ یہ مجلہ الدعوۃ والوں کی عادت ہے۔ وہ عوام کو کیش کرانے کے لئے جھوٹے اور من گھڑت شہادتوں کے واقعات بالکل افسانوی انداز میں لکھ کر چھاپتا ہے۔ یہاں آپ مجلہ الدعوۃ میں چھپنے والی رپورٹوں کی صحت کا اندازہ کر سکتے ہیں۔ جب وہ ایک عالم دین کے بیٹے سے متعلق جھوٹی اور من گھڑت رپورٹ شائع کر سکتے ہیں تو عام اہلحدیث خاندان کیا حیثیت رکھتے ہیں۔

سوال:۔ اس بات میں کہاں تک صداقت ہے کہ مرکز الدعوۃ نے آپ کو بطور دیت کچھ رقم ادا کر دی ہے؟

جواب:۔ یہ جھوٹ ہے۔ انتہا کر دی ہے چالبازی کی۔ انہوں نے ۴۰ ہزار روپے کا ڈرافٹ چھپوا کر ہزاروں کی تعداد میں پنجاب اور کراچی میں بھی تقسیم کئے ہیں۔ مجھے بتائیں ایسا دنیا میں کون سا بینک ہے جو مجھے پیسے دیدے اور چیک ان کے حوالے کر دے۔ کتنا بڑا مذاق ہے اس شخص کے ساتھ جس کا کلیجہ چھیدا گیا ہے۔ ضیاء الحفیظ کی والدہ اس غم میں پاگل ہو گئی ہے۔

سوال: الدعوۃ والوں کی شرعی عدالت میں بھی اس مسئلے کو اٹھایا گیا؟



جواب: ایسی شرعی عدالت جس کے جج مفتی عبدالرحمٰن صاحب تھے جو ان کے اپنے آدمی تھے جن کو میں قتل میں ملوث کہتا ہوں ان کا کھا کر ان کا پی کر ان سے تنخواہ لے کر ان کے اے سی کمروں میں بیٹھ کر فیصلہ کریں ہم مقتولوں کا، کہاں کا انصاف ہے؟ مفتی عبدالرحمٰن صاحب نے راولپنڈی میں یہ جھوٹ بولا کہ میں نے قاری عبدالحفیظ کو پانچ لاکھ یا غالباً دس لاکھ کہا تھا، دس لاکھ روپے دیئے ہیں۔ اسی طرح مرکز الدعوۃ کے ہی آدمی عبدالغفار اعوان صاحب نے میرے داماد کو کہا کہ اگر ہم نے اسے مارا ہے تو اس کی قیمت بھی ادا کر دی ہے۔

سوال: شرعی اصطلاح میں لفظ جہاد کن معنوں میں استعمال ہوتا ہے۔

جواب: جد و جہد کے معنوں میں کوشش کے معنی میں، ہاتھ سے تلوار سے، زبان سے قلم سے کی جانے والی ہر وہ کوشش جس کا مقصد اللہ کے دین کی سربلندی ہو جہاد کے مفہوم کو ایک خاص مقصد کے تحت محدود کیا جا رہا ہے۔ وہ خاص مقصد دولت اکٹھی کرنا ہے۔ مرکز الدعوۃ اور اس کے لیڈر خود اچھی طرح سمجھتے ہیں کہ جو کچھ یہ کر رہے ہیں جہاد و ہاد نہیں بلکہ یہ ان کا کاروبار ہے۔ اگر یہ جہاد کشمیر کو واقعی جہاد سمجھتے تو ان میں سے کسی کا بچہ وہاں شہید ہوا ہوتا۔ کوئی نہ کوئی زخمی ہوا ہوتا لیکن اپنے بچوں کو بچا کر رکھتے ہیں دوسروں کے بچوں کو مرواتے ہیں۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ خود اس کام میں مخلص نہیں ہیں۔ عوام اہلحدیث بڑی سادہ لوح ہے۔ انہوں نے گہرائی میں جا کر نہیں دیکھا کہ کیا ہو رہا ہے۔ کوئی لمبی داڑھی رکھ لے اور شلوار ٹخنوں سے اوپر کر لے بس اس پر اعتماد کر لیں گے۔ باقی خواہ وہ لڑکیاں بیچتا رہے یا پوری

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



جماعت کو بیچ کر کھا جائے۔ اس کو کچھ نہیں کہیں گے۔

سوال: قرآن ہمیں کسی کی مخالفت میں حد سے آگے نکلنے سے منع کرتا ہے۔ آپ عوامی اجتماعات میں ان کے خلاف بڑی سخت زبان استعمال کرتے ہیں۔ ایسا کیوں کرتے ہیں؟

جواب: میرے ساتھ ظلم ہوا ہے میرا حق ہے کہ جن لوگوں نے مجھ پر ظلم کیا ہے ان کے خلاف آواز بلند کروں یہ میرا وہ حق ہے جو قرآن نے مجھے دیا ہے، ترجمہ: ''اللہ اس بات کو پسند نہیں کرتا کہ کوئی کسی کو اعلانیہ برا کہے مگر وہ جو مظلوم ہوا''۔ اگر میں عوامی اجتماعات میں اعلانیہ مخالفت کرتا ہوں تو میرا یہ عمل قرآن کے عین مطابق ہے۔

ان لوگوں نے اپنی شلوار پنڈلیوں تک لوگوں کو دکھانے کے لئے کی ہیں ان کے نزدیک بس سارا تقویٰ اسی میں ہے۔ (ماہنامہ صراط مستقیم واہلحدیث اکتوبر ۱۹۹۴ء کراچی)

## اندرون خانہ کیا حال ہے!

آپ نے پورا انٹرویو پڑھ لیا ہوگا، آپ پر یہ بات روز روشن کی طرح عیاں ہوگئی ہوگی کہ ان لوگوں کا اندرونِ خانہ کیا حال ہے کس قدر متقی ہیں یہ لوگ اور کس قدر پرہیزگار ہیں یہ موحدین، ان کا ظاہر کیا ہے؟ اور ان کا باطن کیا ہے؟ ان کے دعاوی کیا ہیں اور ان کا عمل کیا ہے انکی ظاہری وضع قطع کیا ہے اور انکی باطنی صورت حال کیا ہے، اگر اس طرح کی کوئی بات میں سپرد قرطاس کر دیتا تو شاید ان لوگوں کو ایک لمحہ چین نہ آتا اور ہم پر قلم و کاغذ لیکر تابڑ توڑ حملہ کر دیتے۔ مگر اب چونکہ سب کچھ ان کے اپنے ہی گھر سے برآمد ہوا ہے لہٰذا جواب دینے میں نہ صرف مشکل ہوگی بلکہ جواب دینا نا ممکن ہی ہوگا۔



## ایک اللہ کی بارگاہ میں سجدہ ریز!

امیر حمزہ صاحب آپ اگر اولیاء کرام مشائخ عظام اور اس وقت کے عظیم سپوتوں کے خلاف قلم نہ چلاتے انکو خراج تحسین پیش کرنے کی بجائے ان پر اعتراضات نہ کرتے تو ہم بھی آپ کو یوں سر عام طشت از بام نہ کرتے مگر کیا کرتے ہماری تو مجبوری بن گئی تھی۔ آپ نے قلم کو اس طرح چلایا تھا کہ تمام حدود اخلاق کو پامال کر کے رکھ دیا تھا پھر یہ تک بھی نہ سوچا کہ میں جن نفوس قدسیہ کے خلاف زبان و قلم چلا رہا ہوں ان کے اس امت پر بڑے احسان ہیں انہوں نے اپنے وطنوں کو چھوڑا، اپنے اعزہ و اقارب سے جدائی برداشت کی اور تب کہیں جا کر دین کی تبلیغ کرنے میں کامیاب ہوئے ہم سے تو اپنے مسلمان کلمہ گو نہیں سنبھالے جاتے ہم ان کو راہ راست پر لانے میں تقریباً ناکام رہے ہیں اور انہوں نے کافروں، مشرکوں کو کلمہ پڑھا پڑھا کر داخل اسلام کیا، بت پرستوں کو ایک اللہ کی بارگاہ اقدس میں سجدہ ریز کر دیا۔

## معیار حق!

دیگر کمالات تو رہے ایک طرف ان حضرات کا یہ احسان کیا کم ہے کہ انہوں نے ہمیں اللہ تعالیٰ کی توحید سے روشناس کروایا۔ اور محمد ﷺ کے اخلاق کا درس دیا۔

محمد کی غلامی ہے سند آزاد ہونے کی
خدا کے دامن توحید میں آباد ہونے کی

اس میں کوئی شک نہیں، اگر کوئی بندہ راہ حق پر استقامت اختیار کرتا ہے تو وہ لائق صد احترام ہے۔ جاننا تو یہ چاہیے حق کسے کہتے ہیں حق کیا ہوتا ہے، حق کی پہچان کیا ہے، تو سن لیجئے حق کا ایک ہی روپ ہوتا ہے وہ دوہرے روپ کا مالک نہیں ہوتا۔ حق

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



اور دو ہرا روپ یہ دونوں چیزیں کبھی یکجا نہیں ہوتیں حق اگر چار دیواری کے اندر ہو تو ایک ہی روپ میں ہوتا ہے، اگر برسرِ بازار آ جائے تو بھی روپ وہی، اگر کسی جابر سلطان کے سامنے چلا جائے تو روپ واحد، اگر کبھی میدانِ کارزار میں نکل پڑے تو بھی روپ میں کوئی تغیر نہیں آتا۔

آپ کا معیارِ حق ساری ملّت سے جداگانہ لگتا ہے جو کچھ آپ کو پسند آئے وہ حق جو کچھ آپکو پسند نہ ہو وہ حق ہی نہیں بس غور طلب امر یہی ہے کہ آپ کو حق پہچاننا آ جائے اگر آپ حق کو پہچاننے لگ گئے تو کبھی حق شناس بھی ہو جائیں گے اگر حق کی پہچان ہی نہ ہوئی تو حق شناسی کبھی بھی ممکن نہیں۔

## لٹھ مار اندازِ تبلیغ!

امیر حمزہ صاحب میں آپکو مشورہ دوں گا۔ ہمارے اکابر کی کتابیں بیشک نہ پڑھیں مگر اپنے بڑوں کی کتب ضرور پڑھ لیں تاکہ آپکو کم از کم یہ تو پتا چل جائے آپ کے بزرگوں کا طرزِ عمل کس طرح کا رہا ہے انکی سوچ ان کا اندازِ تحریر، انکا اندازِ تبلیغ کیا رہا ہے وہ اپنے گھر کے بزرگوں کے بارے میں کس طرح کے جذبات و احساسات رکھتے ہیں یہ جو آپ نے لٹھ پکڑی ہوئی ہے اور اس کی وساطت سے تبلیغ کر رہیں یعنی لٹھ مار تبلیغ اس طرح کی تبلیغ نہ تو کبھی ماضی میں کامیاب رہی ہے اور نہ ہی اب کامیاب ہے اور آئندہ بھی کبھی کامیاب نہ ہوگی۔

رہ گیا یہ معاملہ کہ آپ جہاد کی طرف بلاتے ہیں دعوت جہاد دیتے ہیں تو اسکا سارا طریق کار اور آپکا طرزِ عمل آپ کے قاری عبدالحفیظ صاحب کے انٹرویو سے ظاہر باہر ہو گیا اب مجھے آپکے اس منبری نعرے سے کوئی خوف نہیں امت کو پتہ چل چکا ہے جہاد صرف آپ کا ایک نعرہ ہی ہے اس کے آگے اس کی کوئی حقیقت نہیں۔ آپ جو بظاہر نظر



آتے ہیں وہ اندر سے ہرگز نہیں ہیں آپ کا ظاہر اور ہے اور باطن اور، ہر ذی شعور میرے ان صفحات کا مطالعہ کرنے کے بعد یہ فیصلہ کرنے میں حق بجانب ہوگا۔ امیر حمزہ صاحب بڑھک باز ہیں، ان کو صرف بڑھکیں مارنی آتی ہیں حقائق سے ان کو دور کا بھی تعلق نہیں ہے اور بزرگانِ دین بڑھکیں نہیں مارتے تھے بلکہ کام کر کے دکھاتے تھے غیر مسلموں کو کلمہ پڑھا کر مسلمان بناتے تھے مشرک کو دولت ایمان سے سرفراز فرماتے تھے اور آپ ہیں کہ مسلمانوں کو مشرک بنانے چلے ہیں۔

## فیصلہ کی گھڑی:

قارئین محترم! اب فیصلہ کی گھڑی آن پہنچی ہے آپ خود فیصل بن جایئے اور کمال دیانت داری سے اس قضیہ کا فیصلہ کیجئے کہ ایک طرف حضرت داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری، حضرت غوث اعظم شیخ سید عبدالقادر جیلانی، حضرت معین الدین چشتی اجمیری، حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی، حضرت خواجہ رضی الدین محمد باقی باللہ حضرت بابا فرید الدین گنج شکر، حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء دہلوی حضرت شاہ بہاؤ الدین ذکریا ملتانی حضرت شاہ رکن عالم ملتانی، حضرت امام ربانی مجدد الف ثانی اور جید اولیاء کرام رحمتہ علیہم اجمعین ہوں اور دوسری طرف ایک غیر معروف مولوی صاحب ہوں تو کس کی بات سند و حجت ہوگی یقیناً مندرجہ بالا اولیاء عظام ہی کی بات سند ہوگی۔

انہی حضرت کا عمل باعث برکت اور لائق التفات ہوگا۔ یہ وہی لوگ ہیں جنہوں نے دن رات ایک کر کے دین اسلام کی تبلیغ فرمائی اور لوگوں کو ظلمتوں سے نکال کر نور

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



کی طرف مائل کیا اور کلمہ حق کی تلقین کی۔ جس کے ان سے باطن روشن ہو گئے اور انکو ایمان کا نور میسر آیا اللہ تعالیٰ ان اولیاء کرام صوفیا عظام کو جزاء خیر عطا فرمائے۔ آمین

امیر حمزہ صاحب آپ نے دوسروں پر تو بڑے بڑھ چڑھ کر اعتراضات کئے ہیں اگر چہ وہ سب صداقت سے کوسوں دور ہیں۔ آپ کو بھی یہ خوش فہمی ہوئی جاتی تھی کہ میں ایک اچھا مضمون نگار ہوں مگر حقیقت اس کے بالکل برعکس ہے آپکو اپنی بات کرنا بھی نہیں آئی اس کا اندازہ اسی سے لگالیں آپ نے کس قدر زور دار طریقے سے اولیاء کرام مشائخ عظام اور اہل طریقت کے خلاف اپنے اندر کا جنون اگلا ہے۔ مگر وہ سب ہوا میں ہوا، ہوا رہا یہ کہ آپ لوگ بڑے خدا ترس حق گو، حق شناس ہیں تو اس دعویٰ کو میں چیلنج کرنے کی بجائے آپکے گھر سے کچھ صداقتیں پیش کرتا ہوں اس لئے کہ گھر کے بارے میں گھر والوں کی گواہی زیادہ معتبر ہوتی ہے۔

آپ کے اپنے ہفت روزہ اہلحدیث ۲۱ اکتوبر ۱۹۹۶ء میں مرقوم ہے۔ لیجئے آپ بھی مطالعہ فرمائیں

## مرکز ''الدعوۃ'' دہشت گردی کی علامت بن کر ابھر رہا ہے

### کارروائی

اہلحدیث جانباز فورس کے ترجمان نے تفصیلات بتاتے ہوئے کہا کہ ۱۸ اکتوبر ۹۴ء کی شب خالد جاوید علوی کی نگرانی میں ایک ٹیم لاہور گوجرانوالہ جی ٹی روڈ ماہنامہ صراط المستقیم



اور اہلحدیث جانباز فورس کی چیکنگ کر رہی تھی کہ مرکز الدعوۃ والارشاد کی دو گاڑیاں ان کے قریب آ کر رکیں اور ان میں سے برآمد ہونے والے افراد خالد جاوید علوی اور جانباز کارکنان پر ٹوٹ پڑے اور انہیں زبردستی اغواء کر کے مرکز طیبہ جنگل ساہداں مرید کے میں واقع ٹارچ سیل لے گئے جہاں انہیں بدترین تشدد کا نشانہ بنایا گیا۔

اہلحدیث جانباز فورس کے ترجمان کے مطابق ماہ اکتوبر کے صراط مستقیم میں مولانا اختر محمد کی جہاد پالیسی منظر عام پر آنے کے بعد اس پالیسی کو جس طرح علماء اہلحدیث اور عوام اہلحدیث میں زبردست پذیرائی حاصل ہوئی ہے۔ اس سے مرکز الدعوۃ الارشاد بوکھلاہٹ کا شکار ہے کیونکہ ان کے پاس اپنی جہاد پالیسی کے دفاع کا کوئی مدلل اور موثر جواب نہیں ہے۔

اہلحدیث جانباز فورس کے ترجمان کے مطابق یہ بات بھی کوئی غیر معمولی نہیں کہ جب کسی کے پاس اپنے موقف کے دفاع کے لئے دلائل نہ ہوں تو پھر وہ تشدد کے ذریعے اپنی بات کرنے کی کوشش کرتا ہے چنانچہ مرکز الدعوۃ الارشاد بھی اس وقت اسی کیفیت کا شکار ہے کیونکہ اہلحدیث جانباز فورس کی جہاد پالیسی کے آئینے میں انہیں اپنے پلڑے میں سوائے وسائل اور توانائیوں کے ضیاع کے اور کچھ نظر نہیں آ رہا۔

اہلحدیث جانباز فورس کے ترجمان کے مطابق خالد جاوید علوی کو عرصہ دراز سے قتل کی دھمکیاں دی جا رہی تھیں۔ خالد جاوید علوی کا یہ جرم تھا کہ وہ مرکز الدعوۃ کے متعدد سرکردہ رہنماؤں کو مختلف موضوعات پر مباحثوں میں لاجواب کر دیتے ہیں، دلائل کے میدان میں شکست کے بعد تشدد کا راستہ اپنایا گیا یہاں تک کہ انہیں واجب القتل قرار دیا گیا، چند ماہ پہلے مرکز الدعوۃ کے ہیڈ کوارٹر میں خالد علوی کے ساتھ انتہائی نامناسب رویہ اپنایا اور انہیں زبردستی مرکز الدعوۃ سے باہر نکال دیا اور اب اغواء جیسی شرمناک

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



حرکت کا ارتکاب کیا۔ مبینہ طور پر تشدد کرنے والوں میں ابونصر جاوید، شبیر احمد، ابو شعیب، عبدالرحمٰن نمایاں تھے تشدد کے بعد زخمی حالت میں خالد علوی کو میو ہسپتال کے ایمرجنسی وارڈ میں داخل کر دیا گیا۔

اہلحدیث جانباز فورس کے ترجمان کے مطابق مرکز الدعوۃ والارشاد کی جانب سے اغواء اور تشدد کی کارروائی کا ایک افسوس ناک پہلو یہ بھی ہے کہ یہ کارروائی مرکز الدعوۃ والارشاد کے امیر پروفیسر حافظ محمد سعید صاحب کی ہدایت پر ہوئی۔ مرکز طیبہ میں موجود اسٹال والے کے بقول حافظ سعید صاحب نے پندرہ بیس کارکنان کا قافلہ بذات خود روانہ کیا..... ''کہ انہیں ایک مرتبہ پکڑ کر یہاں لے آؤ''۔

**مذمت:**

دریں اثناء جماعت اہلحدیث پاکستان کے سرپرست حافظ عبدالقادر روپڑی نے اپنے اخباری بیان میں خالد جاوید علوی اور اہلحدیث جانباز فورس لاہور کے چار کارکنان کے اغواء اور تشدد کی شدید مذمت کی ہے اور انہیں انتہائی شرمناک قرار دیا۔

علاوہ ازیں متحدہ جمعیت اہلحدیث پاکستان کے امیر حافظ یحیٰی عزیز محمد صاحب جماعت اہل حدیث پاکستان کے امیر حافظ زبیر احمد ظہیر صاحب، جمعیت علماء اہلحدیث کے سربراہ قاضی عبدالقادر خاموش صاحب، مرکزی جمعیت اہلحدیث کے پاکستان کے رہنما قاری عبدالحفیظ فیصل آبادی سمیت متعدد علماء کرام اور اہم جماعتی شخصیات نے اغواء اور تشدد کی اس کارروائی کی شدید مذمت کی ہے اور کہا ہے کہ جماعتی اختلافات میں تشدد کا رجحان اہلحدیث جماعت کے لئے خطرناک ثابت ہو سکتا ہے۔

اتفاق سے اہلحدیث یوتھ فورس کے ایک کارکن کے ہاتھ میں موجود ماہنامہ ''صراط مستقیم'' تربیتی اجتماع میں ہفت روزہ اہلحدیث'' مفت تقسیم کر رہے تھے کہ الدعوۃ کے



منتظمین نے نہ صرف ان سے وہ شمارے چھین لئے بلکہ انہیں زدوکوب بھی کیا۔

ماہنامہ صراط مستقیم مرکز الدعوۃ والارشاد کے ذمہ داران کو انتہائی مخلصانہ مشورہ دیتا ہے کہ خدارا آپ اہلحدیث عوام اور اہلحدیث جماعتوں کے لئے اپنائی گئی اپنی پالیسیوں پر نظر ثانی کریں۔ ہر کسی کو اصولی اختلاف کا حق دیں اپنی دعوت کا سچائی اور دلائل کے ذریعے لوگوں کے دل و دماغ کو مسخر کرنے کی جدوجہد کرنا ہر ایک کا حق ہے اسے استعمال کرنا چاہیے لیکن تشدد کے ذریعے اہلحدیث جماعت یا اہلحدیث عوام پر تسلط قائم کرنے کی کوشش کرنا کسی بھی طرح مناسب نہیں ہے۔

۱۸ ستمبر کو لاہور میں ممتاز عالم دین قاری عبدالحفیظ فیصل آبادی پر قاتلانہ حملہ، جامع مسجد اہلحدیث کورٹ روڈ کراچی میں ایک اہلحدیث نوجوان کو تشدد کر کے قتل اور اب اہلحدیث جانباز فورس کے کارکنان کے اغواء اور تشدد سے مرکز الدعوۃ اہلحدیثوں میں دہشت گردی کی علامت بن کر ابھر رہا ہے۔

ماہنامہ صراط مستقیم کو مرکز الدعوۃ والارشاد کے خلاف بہت سے خطوط اور تحریریں موصول ہوتی رہی ہیں جن میں سے بعض کے ساتھ اپنے موقف کو صحیح ثابت کرنے کیلئے دستاویز ثبوت بھی تھے لیکن تاحال قارئین جانتے ہیں کہ ایسی کوئی تحریر شائع نہیں کی گئی۔ (ماہنامہ صراط مستقیم اہلحدیث نومبر ۹۲ کراچی)

## رسالہ اہلحدیث بنام دعوت وارشاد مریدکے

مریدکے میں دعوت وارشاد کے ساتویں سالانہ اجتماع کے موقع پر جمعیت ''اہلحدیث'' کے ترجمان ہفت روزہ ''اہلحدیث'' لاہور نے لکھا ہے کہ اب جبکہ اجتماع کے نام پر ایک اور موقع پیدا کیا گیا ہے جماعت میں انتظام کو مستحکم کرنے کا اور

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



موحدین کو کافر و مشرک بنانے کا۔ جہاد کے نام پر اہلحدیث عوام کو ورغلانے کا اور کشمیری مجاہدین کے خلاف لڑانے کا صرف یہی نہیں بلکہ مدیر "الدعوۃ" امیر حمزہ صاحب جن کے بیان شہید زندہ گھروں کو آ جاتے ہیں نے "عربستان نورستان تک" اسی کتاب میں شیخ جمیل الرحمن کے متعلق لکھا۔

"مسلفیت کے روپ میں سلفیت کا بھیانک دشمن"

سوال یہ ہے کہ حافظ میر محمدی صاحب سے وہ کیا "کفر بواح" ہوا ہے کہ حافظ سعید اینڈ کمپنی نے ان کی "شرعی امارات" چھوڑ دی ہے اور خود کو امیر لکھنے لگے ہیں۔ میر محمد اب بھی امیر ہیں۔ پھر حضرت حافظ سعید بتلائیں گے کہ ایک امیر کے ہوتے ہوئے امیر بننے والے کیلئے شرعی حکم کیا ہے؟ کیا امیر کے ہوتے ہوئے دوسرا امیر بننے والا امیر واجب القتل نہیں؟ (ہفت روزہ اہلحدیث ۲۱ اکتوبر ۹۴ء)

قارئین ذی عزت! آپ نے ہفت روزہ اہلحدیث کے اقتباسات کا مطالعہ فرمالیا ہوگا اور آپکو یقین ہو گیا ہوگا کہ امیر حمزہ صاحب نے جو کچھ ہمارے خلاف لکھا ہے اس کی صداقت کیا ہے اور انکا اپنا کردار کیا ہے۔ انکی اپنی جماعت کے علماء انکے بارے میں کیا رائے رکھتے ہیں اور انکے کام کرنے کے طریق کار کو کیسا سمجھتے ہیں۔ اگر ہم اپنے پلے سے کچھ لکھتے تو امیر حمزہ صاحب نے تو ویسے لٹھ اٹھا لینا تھی۔

آپکے بلند بانگ دعوؤں کا جو جنازہ آپ کے اپنے ہی لوگوں کے ہاتھوں نکلا ہے وہ بہت خوب رہا ہے ہر صاحب عقل یہ اندازہ کرنے میں بڑی آسانی محسوس کرے گا کہ جن لوگوں کا کردار اس طرح کا ہو اور جو اپنے ہی لوگوں کے بارے میں اس قسم کا رویہ رکھتے ہوں انکے بارے میں کیا یہ سوچا بھی جا سکتا ہے۔ وہ ہمارے بارے میں



اپنی سوچ کا دھارا صحیح سمت کو جانے دیں گے ہرگز نہیں ایسی تو کوئی امید ہی نہیں مگر میرے اس کام سے کم از کم بوحکوں کا دروازہ یقیناً بند ہو جائے گا۔

آئندہ امیر حمزہ صاحب کو قلم پکڑتے اور اسکو چلاتے وقت اس بات کا احساس ضرور رہے گا کہ اہل حق اپنا دفاع کرنا جانتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ میری اس کاوش کو پایۂ بارگاہ اقدس میں قبول فرمائے۔ (آمین)

"وصلی اللہ تعالیٰ علی محمد وعلی الہ واصحابہ اجمعین۔ وما علینا البلاغ المبین"۔

**محمد ارشد القادری**

13 اکتوبر 2008ء

۱۱ شوال المکرم ۱۴۲۹ھ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/



☆ عوامِ اہلسنت کے بڑھتے ہوئے اصرار کے پیشِ نظر کتاب کی طباعت کو جلد یقینی بنانے کیلئے فائنل پروف ریڈنگ کے مرحلہ میں فہرست، عنوانات کے نام اور صفحات نمبرز 1 تا 25 پر نظرِ ثانی کی گئی اور اس سلسلہ میں جن افراد سے مشاورت کی گئی۔ اُن میں نمایاں نام مولانا محمد صدیق خان قادری عنصر حمید قادری، غضنفر قادری، حامد رضا قادری، میاں احمد (عبدالشکور سہیل احمد (اے ایس کمپیوٹر سنٹر)، مدنی گرافکس اور وسیم احمد قادری ہیں

☆ ہم نے اس کتاب کی طباعت انتہائی احتیاط سے کروائی ہے۔ تاہم غلطی کی گنجائش رہتی ہے۔ قارئین سے گزارش ہے کہ اپنی آراء سے ہمیں مستفیض فرمائیں۔ تاکہ آئندہ ایڈیشن کو بہتر سے بہتر بنایا جا سکے۔

☆ آپ نے اس کتاب کو پڑھ کر کیا محسوس کیا۔ اپنے تاثرات تحریر کر کے جامعہ اسلامیہ رضویہ مرکز تعلیم و تربیت اسلامی نزد گورنمنٹ ڈگری کالج برائے خواتین فیروز والا رچنا ٹاؤن شاہدرہ لاہور روانہ فرمائیں ان شاء اللہ! تاثرات پر مشتمل رسالہ بھی جاری کیا جائے گا۔

## صاحبزادہ محمد عاکف رضا قادری

سرپرست: مکتبہ تعلیم و تربیت اسلامی پاکستان

سید محمد راشد علی رضا گیلانی خادم جامعہ اسلامیہ رضویہ

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

https://ataunnabi.blogspot.com/

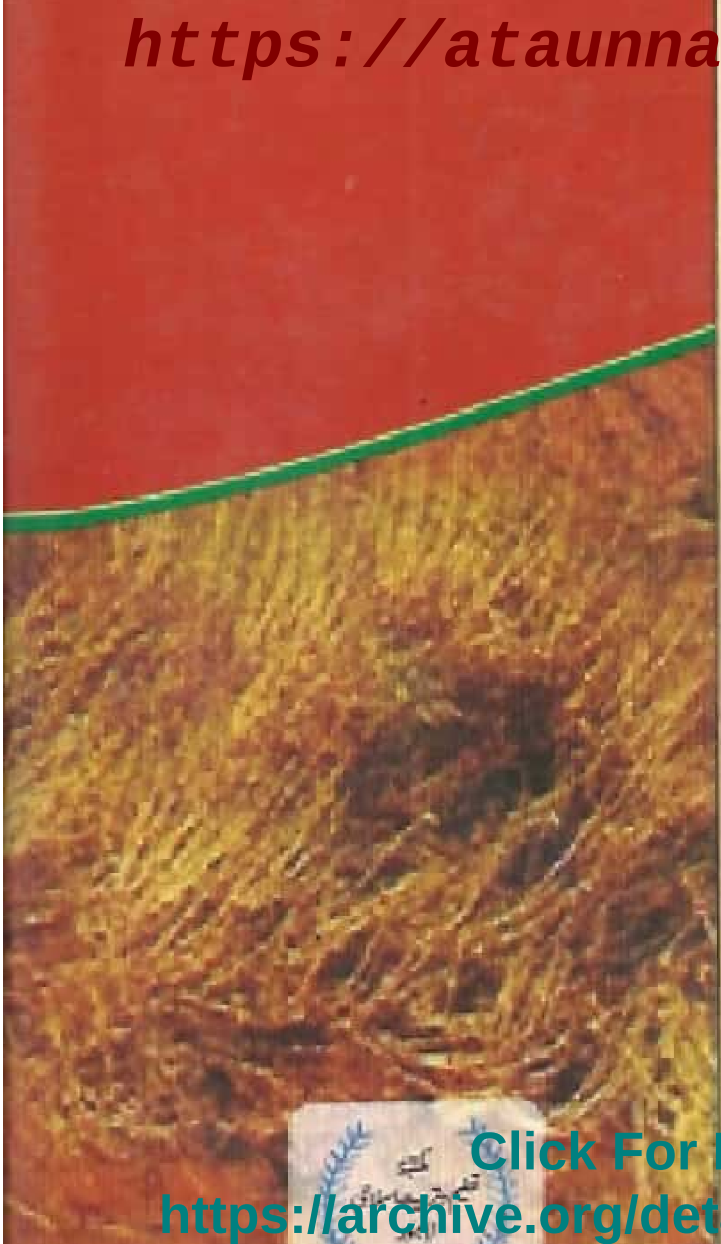

۳۔ حقیقت میلاد [illegible]

۴۔ تعظیم مصطفی ﷺ قرآن کی روشنی میں

۵۔ ندا یا رسول اللہ ﷺ کا جواز

۶۔ غلامی رسول اللہ ﷺ اور اس کے تقاضے

۷۔ شان صدیق اکبر رضی اللہ عنہ

۸۔ جنت کا راستہ

۹۔ امام اعظم ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ

۱۰۔ مولانا محمد بخش مسلم رحمۃ اللہ علیہ کے سو سال

۱۱۔ میاں محمد حیات نقشبندی مجددی رحمۃ اللہ علیہ پر ایک نظر

۱۲۔ پیغام باہو رحمۃ اللہ علیہ

۱۳۔ ڈاکٹر مسعود عثمانی کی خرافات کا علمی محاسبہ

۱۴۔ اسباب عروج و زوال

۱۵۔ نماز میں خشوع [illegible]

Click For More Books
https://archive.org/details/@zohaibhasanattari